UNIVERSAL LIBRARY

OU_180335

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/W45L Accession No. H2439

Author वेल्स, एच. जी.

Title लोकों का युद्ध, 1957

This book should be returned on or before the date last marked below.

लोकों का युद्ध

लोकों का युद्ध

संसार का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक उपन्यास; मंगल-निवासियों द्वारा पृथ्वी पर आक्रमण की भावोत्तेजक कहानी, जो जितनी भयानक है उतनी ही मनोरंजक भी

मूल लेखक

एच. जी. वेल्स

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य : चार रुपये (४.०० नये पैसे)
अनुवादक : रमेश बिसरिया एम० ए०
प्रथम संस्करण : फरवरी १९५७
आवरण : असोसियेटेड आर्टिस्ट्स
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : रामाकृष्णा प्रेस, दिल्ली

१

युद्ध की संध्या

उन्नीसवीं शताब्दि के अन्तिम दिनों में किसीने कल्पना भी न की होगी कि मानव-जगत् की गतिविधि का सूक्ष्म एवं उत्सुकतापूर्ण निरीक्षण, मानव से महान्, परन्तु उन्हींके समान नश्वर बुद्धियाँ कर रही हैं। जब मनुष्य अपने कार्यों में रत रहते थे, उनका निरीक्षण एवं अध्ययन किया जाता था, शायद उतना ही सूक्ष्म निरीक्षण जितना कि कोई मनुष्य अन्वीक्षक यन्त्र द्वारा पानी की एक बून्द में बिलबिलाते एवं गुणित होते अल्पायु कीटाणुओं का कर सकता है। असीम सन्तोष के साथ मनुष्य पृथ्वी के इस छोर से उस छोर तक अपने छोटे-मोटे कार्यों के निमित्त प्रकृति पर अपने एकछत्र साम्राज्य से आश्वस्त यात्रा किया करते थे। सम्भव है कि अन्वीक्षक यन्त्र वाला कीटाणु भी ऐसा ही करता हो। किसीने भी पुरातन नक्षत्रों को मानव-जगत् के निमित्त संकट का कारण नहीं माना था, अथवा यदि कभी उनके सम्बन्ध में विचार भी किया था, तो केवल अपने मन से उन पर जीवन की सम्भावना को असम्भव मानकर निकाल भगाने के निमित्त ही। अतीत के उन दिनों की कुछ विचार-प्रणालियों का परिचय यहाँ आवश्यक है। इस लोक के मानव अधिक से अधिक यह कल्पना करते थे कि मङ्गल-ग्रह में मानव हो सकते हैं, जो शायद उनसे हीन होंगे एवं पृथ्वी के किसी भी सद्भावना-मण्डल का स्वागत करने को तत्पर होंगे। तो भी, आकाश के उस पार, मस्तिष्क, जो हमारे लिये ठीक उसी प्रकार हैं जैसे कि हम उन पशुओं के निकट जो नष्ट होते हैं; बुद्धियाँ, जो विशाल हैं, हृदय-शून्य एवं दया-विहीन हैं, इस लोक को ईर्ष्या की दृष्टि से देखती रहीं, और धीरे-

धीरे निश्चित रूप में हमारे विरुद्ध युद्ध-योजनाएँ प्रस्तुत करती रहीं। और बीसवीं शताब्दि के आरम्भ में वह भयानक वास्तविकता प्रकट हुई।

मङ्गल-ग्रह, मुझे पाठकों को स्मरण कराने की आवश्यकता नहीं, सूर्य से १४०, ०००, ००० मील दूर परिक्रमा करता है, और वह प्रकाश एवं अग्नि, जो वह सूर्य से प्राप्त करता है, इस लोक द्वारा प्राप्त प्रकाश एवं अग्नि का अर्धांश भी नहीं है। यदि तारा-मण्डल-सम्बन्धी अनुमान में कुछ सत्य है, तो यह हमारे लोक से अधिक प्राचीन होना चाहिए, और हमारी पृथ्वी के ठण्डा होने से पूर्व ही इस पर जीवन का क्रम प्रारम्भ हो चुका होगा। इस वास्तविकता ने कि यह कठिनाई से पृथ्वी का सप्तामांश है, उसके ठण्डा होने की उस गति को तीव्रतम कर दिया होगा, जिसमें जीवन प्रारम्भ हो सके। सजीव सृष्टि का पालन कर सकने योग्य वायु-जल एवं अन्य सभी आवश्यकताएँ मंगल-ग्रह में विद्यमान हैं।

परन्तु तो भी मानव इतना दम्भी है, एवं मिथ्या अहंकार ने उसे इतना अन्धा कर रखा है कि उन्नीसवीं शताब्दि के अन्तिम दिनों तक किसी भी लेखक ने इस विचार को कभी भी व्यक्त नहीं किया कि उस लोक में सज्ञान सृष्टि इस लोक से पूर्व ही विकसित हो चुकी होगी, किसी भी अन्य रूप में इस लोक से पूर्व ही। और न यह जन-सम्मत भावना ही थी कि क्योंकि मंगल-ग्रह हमारे लोक से पुरातन है एवं सूर्य से अधिक दूर है, अतः यह प्रमाणित होता है कि वह जीवन-क्रम के प्रारम्भ नहीं वरन् अन्त होने का स्थान है।

पृथ्वी का धीरे-धीरे ठण्डा होना, जो किसी भी दिन हमारे इस लोक को नष्ट कर सकता है, हमारे पड़ोसी के साथ पर्याप्त अंशों में पूरा हो चुका था। उसकी भौतिक दशाएँ इस समय तक रहस्य के आवरण में हैं, परन्तु अब हम इतना अवश्य जानते हैं कि उसकी भू-मध्यीय सीमा में दोपहर का तापमान कठिनता से हमारे मध्य-शीत कालीन तापमान के समान होता है। इस ग्रह की वायु हमारे लोक की वायु से कहीं सूक्ष्म है, उसके समुद्र हमारे तृतीयांश को जल-मग्न कर लेने से

पूर्व सीमित नहीं होते हैं, और जैसे-जैसे उसकी मन्द ऋतुएँ बदलती हैं, हिम की विशाल चोटियाँ उसके ध्रुवों पर एकत्रित होतीं और फिर पिघलती हैं तथा इस प्रकार उसके सम-शीतोष्ण कटिबन्धों में जल-प्रलय के दृश्य उपस्थित करती रहती हैं। प्रलय की वह बेला, जो हमारे लिये अभी पर्याप्त दूर है, मंगल निवासियों के निकट प्रति दिन की समस्या बन चुकी थी। आवश्यकता की निकटतम उपस्थिति ने उनके मस्तिष्क को प्रकाशित, उनकी शक्तियों को अपरिमित एवं उनके मानस को वज्र-कठोर बना दिया। और यन्त्रों एवं बुद्धियों की सहायता से, जिनकी कल्पना मात्र भी हम कठिनाई से कर सकते हैं, शून्य के परे, सूर्य की ओर केवल ३५, ०००, ००० मील की दूरी पर, आशा के देदीप्यमान तारे की भाँति उन्हें हमारा यह ऊष्ण लोक दिखाई पड़ा, जो वनस्पतियों से हरा-भरा, जल से पूर्ण, उर्वरता की घोषणा करने वाली मेघ-राशि से आच्छादित था। और वायु में तैरते इन बादलों से स्थान-स्थान पर जन-संख्या से पूर्ण देशों एवं जलयानों से परिपूर्ण समुद्रों को उन्होंने देखा।

और इस पृथ्वी पर निवास करने वाले हम मानव, उन्हें उतने ही अपरिचित एवं निम्न कोटि के प्रतीत हुए होंगे जैसे बन्दर एवं लीमर (बन्दर के ही समान एक पशु) हमारे निकट प्रतीत होते हैं। मानव-बुद्धि स्वीकार करती है कि जीवन-स्थिति के निमित्त सतत संघर्ष है, और प्रतीत होता है कि मंगल-निवासियों की धारणा भी कुछ ऐसी ही थी। उनका लोक अधिक ठण्डा हो चुका है, और यह लोक जीवन से भरा हुआ है, परन्तु केवल उन्हीं जीवों के द्वारा जिन्हें वह अपने से हीन समझते थे। सूर्य की ओर संघर्ष को गतिशील करना ही, उस विनाश से, जो मन्द गति से उन पर छा रहा है, बच सकने का एकमात्र मार्ग है।

और इससे पूर्व कि हम उनके आचरण को निन्दनीय घोषित कर, हमें स्मरण कर लेना चाहिए कि हमारी ही मानव-जाति ने कितना भीषण

विनाश किया है, केवल बाइसन एवं डोडों पर ही नहीं, वरन् अपनी ही निर्बल जातियों पर भी। मानव सादृश्य के होते हुए भी, टास्मीनियन जाति को, योरुप में प्रवेश करने वाले मनुष्यों द्वारा, पचास वर्ष की अवधि में समूल-विनाश के युद्ध में नष्ट कर दिया गया। क्या हम दया के ऐसे दिव्य दूत हैं कि यदि मङ्गल-निवासियों ने भी उसी प्रवृत्ति से युद्ध किया, तो हम उस पर आपत्ति उठा सकें ?

प्रतीत होता है कि मंगल-निवासियों ने पृथ्वी पर अपने उतरने की गणना आश्चर्यान्वित कर देने वाली सूक्ष्मता से पूर्ण की—स्पष्ट है कि उनका गणित-ज्ञान हमसे कहीं अधिक विकसित है—और उन्होंने अपनी तैयारियाँ एकमतता से पूर्ण कीं। यदि हमारे यन्त्र इतने विकसित होते, तो हम उन्नीसवीं शताब्दि में ही घिरते हुए इस संकट को देख लेते। सिशियेपेरिली के समान मनुष्यों ने रक्त वर्ण इस ग्रह का निरीक्षण किया, और यह विलक्षण बात है कि यह नक्षत्र शताब्दियों तक युद्ध का नक्षत्र माना जाता रहा है, परन्तु वह अपने उन चित्रों में उसके परिवर्तित होती आकृतियों के अर्थ को समझ पाने में नितान्त असफल रहे, जिन्हें वह इतनी कुशलता से चित्रित कर सके थे।

१८९४ के प्रारम्भ में मंगल के प्रकाशमान ग्रह पर एक प्रकाश प्रथम लिस्क अनुसन्धानशाला, और नाइस के पेरोटिन नामक व्यक्ति एवं अन्य अनेक निरीक्षकों द्वारा देखा गया। अंग्रेजी पाठकों ने इस विषय में सर्व प्रथम 'नेचर' नामक पत्रिका के दूसरी अगस्त के अंक में पढ़ा। मैं कल्पना करता हूँ कि इसकी आकृति एक विशाल तोप के समान होगी, जो उनके लोक में धँसी-सी प्रतीत होती होगी, और उससे हमारी पृथ्वी पर अग्नि वर्षा की गयी। विलक्षण चिह्न, जिनका सम्पूर्ण विश्लेषण अभी तक नहीं हो पाया है, इस विस्फोट के अगले दो वर्षों में देखे गये।

यह भयावह तूफान हमारे सर पर अब से छः वर्ष पूर्व टूटा था। जैसे ही मंगल-ग्रह पृथ्वी की सीध में आया, जावा के लावेल नामक व्यक्ति ने ज्योतिष-संसार को मंगल-ग्रह से भूलोक की ओर छोड़ी जाने

वाली अग्निमय एवं तीव्र प्रकाश-युक्त गैस के आश्चर्य में डाल देने वाले समाचार से कँपकँपा दिया। यह घटना १२ की अर्द्धरात्रि के समीप घटी, और किरणों के रूप को पृथक-पृथक देखने वाले यन्त्र सूक्ष्म अन्वीक्षक यन्त्र ने, जिसका आश्रय उसने ग्रहण किया, अग्निमय गैस के एक विशाल पिंड को तीव्र प्रवाह के साथ हमारे लोक की ओर आते चित्रित किया। अग्नि का यह पिंड सवा बारह बजे के समीप अदृश्य हो गया। उसने इसकी तुलना धूम्र के एक विशाल पिंड से की, जो प्रचण्ड एवं आकस्मिक रूप में इस ग्रह से निकला, जैसे अग्निमय गैस बन्दूक से निकलती है।

यह वाक्य नितान्त उपयुक्त वाक्य सिद्ध हुआ। तो भी अगले दिन 'डेली टेलीग्राफ़' में एक संक्षिप्त टिप्पणी के अतिरिक्त किसी भी समाचार-पत्र में इस विषय पर कोई चर्चा नहीं हुई, और संसार मानव-जगत् के इस महानतम संकट के सम्बन्ध में अन्धकार में ही रहा। मैंने भी इस विस्फोट के सम्बन्ध में कुछ न सुना होता यदि अटरशा में मेरी भेंट प्रसिद्ध ज्योतिष-शास्त्र-वेत्ता आग्लिवी से न हुई होती। इस समाचार से वह अत्यधिक उत्तेजित था, और अपनी भावना की उत्तेजना में उस ने उस रात्रि मुझे उस रक्त वर्ण नक्षत्र के अन्वीक्षण में अपने साथ रखा।

उस सबके होते हुए भी, जो उसके पश्चात् हो चुका है, मुझे उस-निरीक्षण की स्पष्ट स्मृति है। वह कृष्ण एवं शान्त अनुसन्धानशाला, कोने में ढकी हुई वह लालटेन, जो फर्श पर धूमिल-सा प्रकाश बिखेर रही थी। टेलीस्कोप की वह स्थिर टिक्-टिक् की ध्वनि, छत का वह छोटा छिद्र, आयाताकार गहनता, जिस पर नक्षत्र की छाया रेखाओं के रूप में चित्रित-सी दीखती थी। अन्धकार में इधर-उधर फिरते आग्लिवी को मैं देख नहीं पा रहा था, परन्तु उसकी बातें सुनाई पड़ रही थीं। टेलीस्कोप से गहन नील वर्ण का एक गोला-सा दिखाई पड़ता था, और वह छोटा-सा नक्षत्र उसमें तैरता-सा दृष्टिगोचर होता था। वह इतना सूक्ष्म, इतना प्रकाशमय एवं स्थिर दीप्त

पड़ता, जिस पर धूमिल-सी तिरछी धारियाँ अंकित प्रतीत होतीं, और पूरा चक्कर काटने में वह कुछ मन्दता प्रदर्शित करता था। परन्तु वह इतना सूक्ष्म था, चांदी की भाँति चमकता प्रकाश का, पिन की मूठ के समान आकार; प्रतीत होता जैसे वह किंचित कँपकँपाता था, परन्तु वास्तव में यह कंपन टेलीस्कोप का कंपन था, जो थरथराते उस यन्त्र से जन्म पाता था जो नक्षत्र को दृष्टि के समक्ष रखता था।

जब मैं अन्वीक्षण कर रहा था, वह छोटा नक्षत्र आकार में घटता, बढ़ता एवं वक्र गति होता प्रतीत हुआ, परन्तु कारण केवल यह था कि मेरे नेत्र थक चुके थे। वह हमसे चालीस मीलियन मील दूर था, शून्य में चालीस मिलियन मील परे। कुछ ही व्यक्ति हैं जो शून्य की इस विशालता का अनुभव करते हैं, जिसमें सृष्टि की क्रियाएँ गतिशील रहती हैं।

उस स्थान में, मुझे स्मरण है, उसके समीप प्रकाश के तीन सूक्ष्म पुंज थे; दूरबीन के आकार के तीन तारे जो विशाल दूरी पर थे, और उनके चारों ओर था शून्य का अतल अंधकार। आप जानते हैं, नक्षत्रों से जगमगाती रात्रि में कालिमा कैसी प्रतीत होती है ? टेलीस्कोप में वह और अधिक गहन प्रतीत होती है। और मेरे नेत्रों से अदृश्य, कारण कि वह मुझसे इतनी दूर एवं इतनी सूक्ष्म थी, मेरी ओर प्रचण्डता एवं तत्परता से उस अप्रमाणभूत दूरी से उड़ती, प्रति मिनट सहस्रों मील समीप आती, वह वस्तु थी जो वह हमारी ओर भेज रहे थे; वह वस्तु जो इस लोक के निमित्त इतना संघर्ष, दुर्भाग्य एवं मृत्यु ला रही थी। जिस समय मैं अन्वीक्षण कर रहा था, मैं उसकी कल्पना भी न कर सका, और भूलोक में कोई भी उस अमोघ अस्त्र की कल्पना न कर सका।

उसी रात्रि को उस सुदूर नक्षत्र से दूसरी बार फिर गैस छोड़ी गई। मैंने उसे देखा। उसका छोर रक्त वर्ण प्रकाश के समान था, जो केवल बाह्य रेखा के रूप में ही था, और जिस समय क्रोनोमीटर ने मध्य रात्रि

की सूचना दी, मैंने श्राग्लिवी से कहा श्रौर उसने मेरा स्थान ग्रहण कर लिया। रात्रि गर्म थी और मुझे प्यास लगी थी। अपने हाथ-पैरों को फैलाते और अन्धकार में मार्ग टटोलते मैं उस मेज की श्रोर बढ़ा जहाँ पानी की नली थी, जब कि आग्लिवी हमारी श्रोर गतिशील उस गैस पर विस्मय प्रकट करता रहा।

उसी रात्रि दूसरा अदृश्य अस्त्र मंगल-ग्रह से हमारी पृथ्वी की श्रोर यात्रा करने लगा। मुझे स्मरण है कि मैं किस प्रकार उस अन्धकार में उस मेज़ पर बैठा रहा श्रौर मेरे नेत्रों के समक्ष हरे एवं गुलाबी तिलूले-से उड़ते रहे। मैं इच्छा करता रहा कि यदि कोई साधन होता तो मैं धूम्रपान करता, श्रौर उस सूक्ष्म प्रकाश-पुंज के वास्तविक अर्थ पर, जिसे मैंने देखा था, तथा सब कुछ जो वह मेरे निमित्त शीघ्र ही ला रहा था, कोई सन्देह नहीं कर रहा था। श्राग्लिवी उसे एक बजे तक देखता रहा, श्रौर तब उसे छोड़कर वह हट आया। हमने लालटेन जलायी, और उसके निवास-स्थान की श्रोर चल दिये। नीचे गहन अंधकार में अटरशा एवं चर्टसी नगर थे, श्रौर उनके सैकड़ों नागरिक शान्ति की निद्रा में मग्न थे।

रात्रि भर वह मंगल-ग्रह की दशा के सम्बन्ध में अटकल लड़ाता रहा, श्रौर इस घृणित विचार का, कि मंगल-ग्रह में निवासी हैं जो हमें संकेत कर रहे हैं, तिरस्कार करता रहा। उसका विचार था कि उस नक्षत्र पर टूटे हुए तारों की भीषण वर्षा हो रही है, अथवा कोई ज्वालामुखी विस्फोट की श्रोर प्रगतिशील है। उसने मुझे यह भी संकेत किया कि यह कितनी असम्भव-सी बात है कि समीपवर्ती दोनों नक्षत्रों के विस्फोट ने एक ही दिशा ग्रहण की।

"मंगल में मानवों के समान जीवों के निवास की सम्भावना लाख में एक अंश के समान है", उसने कहा।

सैकड़ों निरीक्षकों ने उस रात्रि श्रौर उससे दूसरी रात्रि को, मध्य रात्रि के समीप, श्रौर फिर उससे अगली रात्रि को, श्रौर इसी प्रकार

दस रात्रियों तक प्रत्येक रात्रि एक अग्नि-शिखा को देखा। दसवीं रात्रि के पश्चात् विस्फोट क्यों बन्द हो गये, किसीने भी बताने का प्रयत्न नहीं किया। हो सकता है कि इन विस्फोटों की गैसें मंगल-निवासियों के निकट असुविधा का कारण बनी हों। धूम्र अथवा धूल के गहन बादल, जो पृथ्वी के प्रबल अन्वीक्षक यन्त्रों द्वारा भूरे, उड़ते हुए बादल-से प्रतीत होते थे, नक्षत्र के निर्मल वातावरण के चारों ओर छा गये, और उसके सदा सरलता से दिखाई पड़ने वाले भागों को आच्छादित करने लगे।

अन्त में दैनिक समाचार-पत्र इन विघ्नों के सम्बन्ध में जागरूक हो गये एवं सभी स्थानों में मंगल के ज्वालामुखियों से सम्बन्धित लोक-सम्मत टिप्पणियाँ निकलने लगीं। गाम्भीर्य एवं हास्य-रस के मिश्रण वाली 'पंच' नामक पत्रिका ने, मुझको स्मरण है, इसका सुन्दर प्रयोग अपने राजनीतिक व्यंग्य-चित्र में किया। और किसीने भी शंका न की कि मंगल-निवासियों द्वारा चलाये गये वह अस्त्र, हमारे लोक की ओर, प्रति क्षण अनेक मील की गति से, शून्य को पार करके प्रति घण्टा एवं प्रति दिन हमारे समीप ही आ रहे हैं। इस समय यह मुझे अविश्वसनीय आश्चर्य के समान प्रतीत होता है कि सर पर प्रचण्ड गति से घिरते उस दुर्भाग्य के होते हुए भी मनुष्य अपने तुच्छ कार्यों में पूर्व की भाँति निमग्न रहते थे। मुझे स्मरण है कि मंगल-ग्रह का एक नूतन चित्र उस पत्र के निमित्त प्राप्त करके, जिसका सम्पादन वह उन दिनों कर रहा था, मार्कहम कितना प्रसन्न था। बाद के इन दिनों के लोग हमारी उन्नीसवीं सदी के समाचार-पत्रों की प्रचुरता एवं साहसपरता की अनुभूति कठिनता से कर सकते हैं। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं बाइसिकिल चलाने के अभ्यास करने एवं सभ्यता के साथ नैतिकता के सम्भावित विकास पर तर्क करने और लेख लिखने में लगा हुआ था।

एक रात्रि (प्रथम अस्त्र जब पृथ्वी से अधिक से अधिक १०,०००,००० मील दूर होगा) मैं अपनी पत्नी के साथ भ्रमण के निमित्त गया। रात्रि तारों-भरी थी, और मैंने उसे राशियों के सम्बन्ध में बतलाया, और

मंगल की ओर संकेत किया, जो अन्तरिक्ष की ओर गतिशील प्रकाश का एक चमचमाता-सा बिन्दु था, तथा जिसकी ओर अनेक अन्वीक्षक यंत्र लगे थे। रात्रि गर्म थी। घर की ओर लौटते समय चर्टसी अथवा आइलवर्थ से लौटता भ्रमणार्थियों का एक दल गाता-बजाता हमारे पास से निकला। मकानों की ऊपरी खिड़कियों में प्रकाश था, क्योंकि लोग सोने जा रहे थे। दूर के रेलवे स्टेशन से शण्टिग करने वाली गाड़ियों की ध्वनियाँ आ रही थीं—ठनठनाहट और खटखटाहट, जो दूरी के कारण कोमल संगीत का रूप धारण कर रही थीं। मेरी पत्नी ने आकाश में ऊँचे लटकते सिगनलों के लाल, हरे एवं पीले प्रकाश की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। सभी कुछ सुरक्षित एवं शान्त प्रतीत होता था।

२
टूटता तारा

तब आयी उल्कापात की प्रथम रजनी। प्रातःकाल समीप विन्चेस्टर से पूर्व की ओर आकाश में यह उल्कापात देखा गया। सैकड़ों ने इसे देखा होगा और इसे एक सामान्य 'पात' समझा होगा। एल्बिन ने इसे अपने पीछे हरित वर्ण धार-सी छोड़ते बताया जो कई सैकिण्ड तक चमकती रही। उल्कापात के संबंध में हमारे सबसे बड़े विद्वान डेनिंग ने बताया कि उसके सर्वप्रथम दृश्यमान होने की ऊँचाई नब्बे अथवा सौ मील रही होगी। उसे प्रतीत हुआ कि वह पृथ्वी पर उससे सौ मील पूर्व की ओर कहीं गिरी।

उस समय मैं घर में था और अपने अध्ययन-कक्ष में लिख रहा था, और यद्यपि मेरी फ्रेंच खिड़कियाँ अटरशा की ओर पड़ती थीं, और इस समय सभी सिटकनियाँ खुली हुई थीं (कारण कि उन दिनों मुझे रात्रि के आकाश को देखना अधिक प्रिय था), मैंने कुछ भी नहीं देखा। तो भी शून्य से पृथ्वी की ओर आने वाली सभी वस्तुओं में विलक्षणतम यह वस्तु उसी समय गिरी होगी जब मैं वहाँ बैठा था, और दृष्टिगोचर हो गयी होती, यदि मैंने उसी समय अपना सर ऊपर उठा लिया होता जब कि वह नीचे गिरी। कुछ लोग, जिन्होंने उसे गिरते देखा, कहते हैं कि वह सी-सी की ध्वनि कर रही थी। स्वयं मैंने कुछ भी नहीं सुना। बर्कशायर, सरे और मिडिलसेक्स के अनेक नागरिकों ने उसे गिरते देखा होगा, और अधिक से अधिक समझा होगा कि अन्य कोई तारा टूटा है। उसी रात्रि, गिरे हुए पदार्थ को देखने का कष्ट किसीने भी नहीं किया होगा।

परन्तु प्रातः सवेरे ही बेचारा आग्लिवी, जिसने उस उल्कापात को देखा था, और जिसे विश्वास था कि कोई टूटा हुआ तारा हारसेल, अटरशा और वोकिंग के बीच किसी स्थान पर पड़ा है, उसे खोजने के लिये उठ खड़ा हुआ। शीघ्र ही सूर्योदय के कुछ काल पश्चात्, उसने उसे बालू के गड्ढों के समीप खोज निकाला। वायु में फेंकी गयी इस वस्तु ने एक विशाल खड्ड बना लिया था, और बालू एवं कंकड़ प्रचण्डतापूर्वक झाड़ियों से पूर्ण इस स्थान पर इधर-उधर प्रत्येक दिशा में फैल गये थे, और ऐसा ढेर बना लिया था जो मील डेढ़ मील से दिखाई पड़ता था। पूर्व की ओर की झाड़ियाँ सुलग रही थीं और सूक्ष्म नील धूम्र आकाश की ओर उठ रहा था।

वह वस्तु बालू में एक फ़र के वृक्ष की नष्ट-भ्रष्ट शाखाओं में, जिसे गिरते समय उसने खंड-खंड कर दिया था, दबी पड़ी थी। खुले हुए भाग की आकृति एक सिलण्डर के समान थी, जिसका सिरा केक के समान गोल था, और उसकी बाह्य रेखा एक स्थूल श्याम वर्ण परत से ढकी थी। उसका व्यास तीस गज के लगभग था। उसके आकार और उससे भी अधिक

उसकी ग्राकृति पर ग्राश्चर्यान्वित वह उसके समीप बढ़ा, कारण कि अधिकतम टूटे तारे ग्राकृति में गोल ही होते हैं। परन्तु इस समय भी वायु में यात्रा करने के कारण वह इतना अधिक गर्म था कि उसके समीप पहुँचना दुस्तर था। उस सिलण्डर के भीतर की ध्वनियों को उसने ठण्डा होने की प्रतिक्रिया मात्र ही माना, कारण कि उस समय वह यह कल्पना भी नहीं कर सका था कि वह भीतर से खोखला होगा।

वह उस खड्ड के किनारे, जो इस वस्तु ने बना लिया था, उसकी विलक्षण ग्राकृति पर ग्राश्चर्य करता खड़ा रहा; प्रमुख रूप से वह उसकी आकृति एवं वर्ण पर ग्राश्चर्य कर रहा था, ग्रौर विशेष रूप से वह उसके आगमन में एक विशेष रचना का ग्राभास पा रहा था। प्रातः काल पूर्णतः निस्तब्ध एवं शान्त था, और वीब्रिज की ग्रोर देवदार के झुरमुट को चीरकर सूर्य गर्म हो चुका था। उसे स्मृति नहीं कि उस प्रातः उसने पक्षियों की काकली सुनी थी, ग्रौर जो भी ध्वनियाँ सुनायी पड़ रही थीं, वह उस भस्ममय सिलण्डर से ग्रा रही थीं। उस निर्जन स्थान में वह ग्रकेला ही था।

तब सहसा उसने देखा कि उस खंड को लपेटे रखने वाली भस्म में से झनझनाहट की ध्वनि के साथ भूरे रंग का कोई पदार्थ उस गोल सिरे से झड़कर गिर रहा है। वह परत के रूप में चू रहा था ग्रौर भूमि पर गिर रहा था। एक बड़ा भाग सहसा टूटा, ग्रौर ऐसी तीव्र ध्वनि के साथ नीचे गिरा कि भय से उसको अपना प्राण कंठ में ग्राता प्रतीत हुग्रा।

एक क्षण तक वह न समझ सका कि इसका क्या ग्रर्थ है, ग्रौर यद्यपि गर्मी प्रचण्ड थी, वह खड्ड की ओर उस विशाल खण्ड के अधिक समीप स्पष्ट रूप से देख पाने के निमित्त कठिनता से चढ़ गया। उस समय भी वह यही कल्पना कर रहा था कि उस खण्ड के ठण्डा होने के कारण ही ऐसा हो रहा है, परन्तु उसके इस विचार को बाधा पहुँचाने वाला तथ्य केवल यही था कि भस्म सिलण्डर के छोर से गिर रही थी।

ग्रौर तब उसने देखा कि धीरे-धीरे उस सिलण्डर का गोल ऊपरी

भाग उसके ऊपर चक्र के समान घूर रहा है। उसकी गति इतनी मन्द थी कि वह इसका पता उस काले निशान को देखकर ही लगा पाया जो पाँच मिनिट पूर्व उसके समीप था, परन्तु अब उस अर्धव्यास के उस सिरे पर था। परन्तु तो भी वह न समझ सका कि इसका क्या अर्थ है, जब तक कि उसने दबी हुई एक कर्कश ध्वनि न सुनी और काले निशान से एक तीव्र प्रकाश निकलते न देखा। वह सिलण्डर कृत्रिम था—खोखला —जिसके सिरे पर घुमाने वाला यंत्र लगा था। सिलण्डर के भीतर से कोई वस्तु उस सिरे को घुमा रही थी।

"हे ईश्वर !" आग्लिवी पुकार उठा, "उसमें मनुष्य हैं—उसमें मनुष्य हैं ! जो आधे जल चुके हैं ! बच निकलने को प्रयत्नशील !"

सहसा एक मानसिक उछाल से उसने इस वस्तु का संबंध मंगल-ग्रह के आलोक के साथ जोड़ लिया।

उस दहकते खण्ड में बन्दी प्राणी का विचार उसे इतना भयावह लगा कि वह उस प्रचण्ड दाहकता को भूल गया, और सहायतार्थ उस सिलण्डर की ओर अग्रसर हुआ। परन्तु सौभाग्य से अभी तक दहकती उस धातु के धूमिल वर्ण ने उसे अपने हाथ जलाने से पूर्व ही रोक लिया। तब एक क्षण तक वह किंकर्तव्यमूढ़-सा खड़ा रहा, और फिर घूमा, उस खड्ड से बाहर निकला, और प्रचण्ड गति से वोकिंग की ओर भागा। तब समय लगभग छः के समीप होगा। उसे एक छकड़ा हाँकने वाला मिला, और उसने उसे समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु जो कहानी उसने सुनायी एवं उसकी आकृति जो इतनी भयावह हो रही थी—उसका हैट खड्ड में गिर पड़ा था—कि वह मनुष्य आगे बढ़ गया। इसी प्रकार वह उस कुम्हार को समझा पाने में भी असफल रहा, जो हारसेल ब्रिज के सार्वजनिक गृह के द्वार खोल रहा था। उस व्यक्ति ने उसे विक्षिप्त समझा और उसे टेप-रूम में बन्द करने का असफल प्रयत्न किया। इस सबने उसे किंचित संयत कर दिया, और जब उसने लन्दन के सम्पादक

हैण्डरसन को अपने उद्यान में देखा, उसने हाते के ऊपर से उसे पुकारा, और अपनी बात समझायी।

"हैण्डरसन", वह चिल्लाया, "तुमने कल उस टूटते तारे को देखा था ?"

"हाँ", हैण्डरसन ने उत्तर दिया।

"वह इस समय हारसेल कामन पर पड़ा है।"

"हे ईश्वर !" हैण्डरसन ने कहा, "टूटा तारा ठीक है !"

"परन्तु टूटे तारे के अतिरिक्त वह कुछ और भी है। उसमें एक सिलण्डर है—एक कृत्रिम सिलण्डर ! और उसके भीतर कुछ और है।"

"वह क्या है ?" उसने कहा। वह एक कान से ऊँचा सुनता है।

आग्लिवी ने उसे बताया जो कुछ उसने देखा था। एक या दो क्षण हैण्डरसन मनन करता रहा। तब उसने अपना फावड़ा फेंक दिया, अपनी जाकेट उठायी, और सड़क पर आ गया। दोनों व्यक्ति शीघ्रता से उस स्थान की ओर बढ़े, और उन्होंने उस सिलण्डर को पूर्ववत् अवस्था में पड़े पाया। परन्तु इस समय तक भीतर की ध्वनियाँ समाप्त हो चुकी थीं, और चमकती हुई धातु का एक गोला-सा सिलण्डर और उसके सिरे के बीच दिखाई पड़ा। सिरे की ओर हल्की सी-सी की ध्वनि के साथ वायु भीतर प्रवेश कर रही थी अथवा बाहर निकल रही थी।

वह सुनते रहे, उन्होंने एक डण्डे से उस पर खड़खड़ाहट की, और कोई उत्तर न मिलने पर उन दोनों ने समझा कि भीतर का मनुष्य अथवा भीतर के मनुष्य या तो अचेतन हो चुके हैं अथवा निष्प्राण।

वास्तव में वह दोनों कुछ भी कर पाने में असमर्थ रहे। बाहर से वह आश्वासन देते रहे, सहायता की प्रतिज्ञाएँ करते रहे, और नगर की ओर और अधिक सहायता पाने के निमित्त लौट गये। कोई भी उनकी कल्पना कर सकता है—धूलि-धूसरित, उत्तेजित एवं अव्यवस्थित—चमचमाते प्रकाश में उस छोटी सड़क पर भागते, जब कि दूकानदार अपनी दूकानें और लोग अपने शयनागार की खिड़कियाँ खोल रहे थे।

हैण्डरसन तुरन्त ही स्टेशन की ओर इस समाचार को तार द्वारा लन्दन भेजने के निमित्त चला गया। समाचार-पत्रों के लेखों ने मानव-मस्तिष्क को इस विचार को समझ पाने योग्य बना दिया था।

आठ बजते-बजते एक बड़ी संख्या में लड़के एवं स्वेच्छा से सहायता करने वाले लोग उस स्थान की ओर 'मृतक मंगल-निवासियों' को देखने के निमित्त चल पड़े। यह रूप था जो इस कहानी ने प्राप्त किया। सर्व-प्रथम मैंने इस विषय में अपने समाचार-पत्र बेचने वाले छोकरे से पौने नौ के समीप सुना, जब मैं अपना 'डेली क्रोनिकल' लेने गया। स्वाभाविक है कि मैं आश्चर्य से जड़-सा हो गया, और अटरशा के ब्रिज से बालू के उन गड्ढों की ओर जाने में मैंने किंचित् भी विलम्ब नहीं किया।

३
हारसेल कामन पर

मैंने लगभग बीस लोगों की एक छोटी-सी भीड़ को उस विशाल खण्ड को घेरे पाया जिसमें वह सिलण्डर दबा पड़ा था। मैं उस विशाल खण्ड की आकृति का वर्णन कर ही चुका हूँ जो पृथ्वी पर दबा पड़ा था। उसके आसपास की घास एवं कंकड़ इस प्रकार झुलस गये थे जैसे कि यह आकस्मिक विस्फोट हो गया हो। निस्सन्देह उस आघात ने अग्नि-शिखा को जन्म दिया था। हैण्डरसन और आग्लिवी वहाँ नहीं थे। मैं समझता हूँ कि उन्होंने विचार किया होगा कि उस समय कुछ भी नहीं हो सकता है, अतः वह हैण्डरसन के यहाँ जलपान के निमित्ति चले गये थे।

उस खड्ड के सहारे चार-पाँच बालक बैठे हुए थे, जो अपने पैरों को झुला रहे थे, और उस विशाल खण्ड पर पत्थर फेंककर आनन्द मना रहे थे, मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका। जब मैंने उनसे इस सम्बन्ध में कहा, वह बाहर खड़े लोगों में एक दूसरे को छूने का खेल खेलने लगे।

इन लोगों में कुछ साइकिल-सवार थे, भाड़े पर काम करने वाला एक माली था, जिसे कुछ समय पूर्व मैंने रखा था, बच्चे को गोद में लिये एक लड़की, कसाई ग्रेग जो अपने छोटे बालक के साथ था, दो-तीन घुमक्कड़ तथा रेलवे स्टेशन पर चक्कर काटने वाले दो-तीन गोल्फ़ के खिलाड़ी। वार्तालाप कम हो रहा था। उन दिनों इंग्लैंड के कतिपय जनसाधारण के मस्तिष्क में ज्योतिष से सम्बन्धित अनिश्चित विचार होते थे। उनमें से अधिकांश शान्तिपूर्वक उस मेज सदृश सिलन्डर के सिरे को देख रहे थे, जो इस समय भी उसी अवस्था में पड़ा था, जिसमें हैण्डरसन और आग्लिवी उसे छोड़ गये थे। मैं समझता हूँ, सर्वसाधारण का भस्मीभूत शवों को देखने का कौतूहल सजीवता से पूर्ण इस खण्ड को देखकर शान्त हो चुका था। जब कि मैं वहीं था, कुछ चले गये, और दूसरे आ पहुँचे। मैं कठिनतापूर्वक उस खड्ड तक चढ़ गया, और मुझे आभास हुआ कि मैंने अपने पैरों के पास एक हल्की गति का अनुभव किया। निश्चित रूप में ऊपरी सिरे ने घूमना बन्द कर दिया था।

केवल उसी समय, जब मैं उसके इतने समीप पहुँचा, इस वस्तु की विलक्षणता मुझ पर प्रकट हुई। प्रथम दृष्टि में वह एक उल्टी हुई गाड़ी, अथवा सड़क पर आर-पार उखड़े वृक्ष से अधिक कौतूहलप्रद न था। वास्तव में वह ऐसा न था। संसार की किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा वह एक जंग खाये आधे दबे पड़े गैस के पीपे के समान प्रतीत होता था। यह जानने के लिये वैज्ञानिक-बुद्धि की आवश्यकता थी कि उसकी भूरी परत कोई सामान्य आक्साइड नहीं थी और वह श्वेत-पीत वर्ण धातु, जो सिलण्डर एवं उस ढकने के मध्य चमक रही थी, असामान्य-

सी थी।

उस समय मेरे मस्तिष्क में भी यह स्पष्ट था कि यह वस्तु मंगल-ग्रह से आई है, परन्तु उसमें किसी जीवित वस्तु की सम्भावना को मैंने असम्भव ही स्वीकार किया। मैंने कल्पना की कि उसका ढीला होना एवं घूमना स्वचालित आधार पर ही था। आग्लिवी के विचार के होते हुए भी, मैं इस समय भी कल्पना कर रहा था कि मंगल-ग्रह में मानव-निवास है। कल्पना के प्रवाह में मेरा मस्तिष्क उसमें किसी लिखित वस्तु की सम्भावना, उसके अनुवाद की कठिनाइयाँ, जो उपस्थित हो सकती थीं, अथवा क्या हम उसमें मुद्राएँ, प्रतिमूर्तियाँ प्राप्त करेंगे अथवा नहीं, इन्हीं विचारों में चक्कर काटने लगा। परन्तु तो भी इन सम्भावनाओं को आश्वासन प्रदान करने के लिये उसका आकार अधिक विशाल था। ग्यारह के समीप, जब कुछ भी होता प्रतीत न हुआ, मैं इन्हीं विचारों में डूबा लौट पड़ा, मेबरी में अपने घर की ओर। परन्तु अपने इन अव्यावहारिक विचारों पर कार्य करना मेरे निकट कठिन था।

मध्याह्न तक घटना के वर्णन में भारी परिवर्तन हो चुका था। सायं· समाचार-पत्रों ने समस्त लन्दन को अपनी विशाल पंक्तियों से आतंकित कर दिया :

'मंगल-ग्रह से प्राप्त एक सम्वाद'

'वोकिंग की अनोखी घटना'

और इसी प्रकार। इसके अतिरिक्त आग्लिवी के 'एस्ट्रोनोमिकल एस्सचेंज' को भेजे गये तार ने तीनों राज्यों की अनुसन्धानशालाओं का जागरूक कर दिया।

बालू के इन गड्ढों के समीप वोकिंग स्टेशन से आई हुई आधा दर्जन से अधिक फ्लाई गाड़ियाँ, और चोबहम से आई हुई एक बास्केट-चेज़ खड़ी हुई थीं, जो एक शानदार गाड़ी के समान प्रतीत हो रही थी। इसके अतिरिक्त वहाँ साइकिलों का एक ढेर-सा था। साथ ही उस गर्म दिन के होते हुए भी एक विशाल मानव-समूह वोकिंग से चर्टसी की

ओर चला होगा, जिससे भीड़ की संख्या विशाल हो उठी होगी, जिसमें सुन्दर परिधानों में सुसज्जित एक-दो नारियाँ भी थीं।

चमचमाता सूर्य तप रहा था, और आकाश में न एक भी बादल था और न वायु का झोंका ही, और दृष्टि पड़ने वाली परछाइयों में केवल देवदार के कुछ उखड़े हुए वृक्ष ही थे। जलती हुई झाड़ियाँ बुझा दी गयी थीं, परन्तु तो भी अटरशा की ओर की पृथ्वी, जहाँ तक दृष्टि का पसार था, काली पड़ी हुई थी और इस समय भी ऊपर की ओर उठने वाली धूम-धाराएँ छोड़ रही थी। चोबहम रोड के एक साहसी मिठाई बेचने वाले ने अपने पुत्र को एक दोपहिया ठेलागाड़ी में सेब और जिंजर-बीयर लेकर भेज दिया था।

उस खड्ड के किनारे जाकर मैंने उसे लगभग आधा दर्जन व्यक्तियों से घिरा पाया। हैण्डरसन, आग्लिवी और एक लम्बे, कोमल केश वाले मनुष्य को, जो पीछे चलकर मुझे पता चला राज्य-ज्योतिषी स्टेन्ट था, मैंने वहाँ पाया, जिनके साथ कई श्रमिक फावड़े और कुल्हाड़ियाँ चला रहे थे। स्टेन्ट स्पष्ट और ऊँची वाणी में आज्ञाएँ दे रहा था। वह सिलण्डर पर खड़ा था, जो स्पष्ट था कि अब पर्याप्त ठंडा हो चुका था। उसका मुख लाल हो रहा था, जिससे पसीना चू रहा था, और लगता था कि जैसे किसी बात ने उसे व्यथित कर रखा हो।

सिलण्डर का एक विशाल भाग खोदा जा चुका था, यद्यपि उसका निचला भाग अभी दबा पड़ा था। जैसे ही आग्लिवी ने खड्ड के किनारे दीखने वाली उस भीड़ में मुझे देखा, उसने मुझे पास आने को पुकारा, और मुझसे पूछा कि क्या मैं मैनर के लार्ड हिल्टन के पास तक जा सकूँगा।

उसने कहा, बढ़ती हुई भीड़, और विशेषत: लड़के, उस खुदाई में भारी व्यवधान का कारण बन रहे हैं। वह चाहते थे कि एक हल्का घेरा उनके चारों ओर भीड़ को रोकने के लिये लगा दिया जाय। उसने मुझे बताया कि सिलण्डर-केस में एक हल्की सरसराहट की ध्वनि अभी

तक कभी-कभी सुनायी पड़ जाती थी, परन्तु श्रमिक उस सिलण्डर को खोल पाने में असमर्थ थे, कारण कि वह उनकी पकड़ में ही नहीं आ पाता था। यह केस पर्याप्त रूप में मोटा प्रतीत होता था, और सम्भव था कि वह हल्की ध्वनियाँ, जो वह सुन रहे थे, उसके आभ्यंतरिक भाग में हो रहे किसी कोलाहल को व्यक्त करती थीं।

उसके कहने के अनुसार कार्य करने, और इस प्रकार उस स्थान के एक विशेष दर्शक बन जाने में मुझे भारी प्रसन्नता हुई। लार्ड हिल्टन से घर पर भेंट कर पाने में मैं असमर्थ रहा, परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उनके लन्दन से वाटरलू-ट्रेन द्वारा छः बजे तक आने की सम्भावना थी, और क्योंकि इस समय लगभग सवा पाँच बज चुके थे, मैं घर गया, और अल्प चाय लेकर उनसे मिलने के हेतु चल पड़ा।

४

सिलण्डर का खुलना

जब मैं उस स्थान पर पहुँचा, सूर्य डूब रहा था। वोकिंग की ओर से अनेक लोग उस स्थान की ओर शीघ्रता पूर्वक जा रहे थे, और एक-दो व्यक्ति लौट रहे थे। खड्ड के समीप की भीड़ बढ़ गई थी और धुंधले-पीले आकाश के नीचे काली-काली पंक्तियों में सैकड़ों व्यक्तियों का समूह खड़ा था। अनेक ध्वनियाँ सुनायी पड़ रही थीं, और प्रतीत होता था कि वहाँ कोई संघर्ष चल रहा है। मेरे मस्तिष्क में अद्भुत कल्पनाएँ उठने लगीं। जब मैं समीप आया, मुझे स्टेन्ट की वाणी सुनायी पड़ी :

"पीछे हटो, पीछे !"

एक लड़का दौड़ता हुआ मेरे समीप आया।

"वह चल रहा है", भागते हुए उसने कहा, "उसका पेंच खुल रहा है, वह खुल रहा है। मुझे अच्छा नहीं लगता, मैं घर जा रहा हूँ।"

मैं भीड़ के समीप पहुँचा। वहाँ, मैं समझता हूँ, दो-तीन सौ व्यक्ति थे, जो एक दूसरे से धक्का-मुक्की कर रहे थे, और उनमें रहीं एक-दो नारियाँ भी किसी प्रकार कम कार्यशील नहीं दिखाई पड़ रही थीं।

"वह खड्ड में गिर पड़ा है", कोई चिल्लाया।

"पीछे रहो", अनेक चिल्ला उठे।

भीड़ कुछ पीछे हटी, और मैंने अपना मार्ग निकाल लिया। प्रत्येक अत्यधिक उत्तेजित दिखाई पड़ता था। मुझे खड्ड से विचित्र प्रकार की भनभनाहट की ध्वनि सुनायी पड़ी।

"मैं कहता हूँ," आग्लिवी ने कहा, "कृपया इन मूर्खों को रोको। हम नहीं जानते इस सन्देहजनक वस्तु में क्या है।"

मैंने एक नवयुवक को, जो शायद वोकिंग के किसी दुकानदार का सहकारी था, सिलण्डर पर खड़े एवं उस खड्ड से बाहर निकलने का प्रयत्न करते देखा। लोगों ने उसे भीतर धकेल दिया था।

उस सिलण्डर का छोर भीतर से घुमाया जा रहा था। चमचमाता पेंच लगभग दो फीट बाहर निकल चुका था। किसीने मुझे धक्का दिया और मैं उस पेंच के सिरे से टकराते-टकराते बचा। जैसे ही मैं पीछे घूमा, वह पेंच बाहर निकल आया होगा, और सिलण्डर का ढकना कंकड़ों पर एक झटके के साथ गिर पड़ा। मैंने अपने पीछे वाले व्यक्ति को कोहनी मारी और अपना सर उस वस्तु की ओर घुमाया। एक क्षण तक वह गोलाकार छिद्र पूर्णत: काला दिखाई पड़ा। कारण कि अस्त होते हुए सूर्य की किरणें मेरे नेत्रों पर पड़ रही थीं।

मैं समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति उस क्षण सिलण्डर से किसी मानव के बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था; सम्भवत: हम लौकिक प्राणियों से कुछ भिन्न प्रकार का प्राणी, परन्तु वस्तुत: मानव। मुझे स्मरण है कि मैं ऐसी ही कल्पना कर रहा था। तुरन्त ही मैंने उस

छाया-अन्धकार में किसी वस्तु को हिलते देखा—भूरे तरंगाकार कम्पन एक दूसरे के ऊपर, तब दो तश्तरियों के समान आँखें। तब कोई वस्तु, जो एक भूरे सर्प के समान थी, और जिसकी मोटाई एक छड़ी के समान थी, उस कम्पायमान मध्य भाग से पिण्डाकार होकर बाहर निकली, और वायु में कभी मेरी ओर, और फिर दूसरे व्यक्ति की ओर लपलपाने लगी।

मेरी नाड़ियों का रक्त सहसा जम गया। पीछे की एक नारी तीव्र चीत्कार कर उठी। आधा मुड़ा हुआ मैं, अपने नेत्रों को सिलण्डर पर टिकाये, जिसमें से अब स्पर्श-ज्ञान-संयुत वैसे ही अनेक पिण्ड बाहर निकल रहे थे, धक्के मारकर पीछे की ओर अपना मार्ग निकालने लगा। मैंने अनुभव किया कि मेरे चारों ओर के समूह के चेहरों पर अब भय ने कौतूहल का स्थान ले लिया था।

मैंने अपने चारों ओर अस्पष्ट आश्चर्य का भाव पाया। जन-समूह पीछे की ओर हटने लगा। मैंने उस दुकानदार को इस समय भी खड्ड से निकलने का असफल प्रयत्न करते पाया। मैंने स्वयं को अकेला पाया, और लोगों को, जिनमें स्टेन्ट भी था, खड्ड के उस ओर भागते पाया। मैंने पुनः सिलण्डर की ओर देखा, और संयमन न किये जाने योग्य भय ने मुझे घेर लिया। जड़ मूर्ति के समान मैं उसे घूरता खड़ा रहा।

एक विशाल भूरी देह, जिसका आकार शायद रीछ के समान था, सिलण्डर से धीरे-धीरे, परन्तु कठिनतापूर्वक बाहर निकल रही थी। जब वह बाहर निकल आया और प्रकाश उस पर पड़ने लगा, वह एक गीले चमड़े की भाँति चमकने लगा। गहरे काले रंग के दो विशाल नेत्र मुझे स्थिरता से घूर रहे थे। वह गोल था, और कोई भी समझ सकता था कि वह एक चेहरा है। आँखों के नीचे मुँह था, जिसका ओष्ठ-विहीन किनारा फड़फड़ा रहा था, और लार टपका रहा था। वह शरीर ऐंठन के साथ-साथ श्वास ले रहा था। एक पतले एवं स्पर्श-ज्ञान-संयुत शरीर-

भाग ने सिण्डलर को जकड़ लिया, और शेष भाग वायु में इधर-उधर डोलने लगा।

वह, जिन्होंने कभी किसी जीवित मंगल-निवासी को नहीं देखा है, उनकी भयावह आकृति की कल्पना कठिनता से ही कर सकते हैं। नुकीले ऊपरी होंठ वाले 'V' आकार का मुख, भौहों की अनुपस्थिति, चिबुक-विहीन उनके खूँटे के आकार का निम्न ओष्ठ, इस मुख का अनवरत कम्पन, पौराणिक सर्पकेशी नारी के समान स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंगों का समूह, अपरिचित वातावरण में फेफड़ों का तीव्रता से श्वास-क्रिया करना, पृथ्वी की अतिरिक्त आकर्षण-शक्ति के कारण शरीर-संचालन में भारीपन एवं कष्ट और सर्वोपरि उनके नेत्रों की विशालता सभी कुछ मिलकर एक ऐसी अप्रिय इच्छा को जन्म देते थे—जैसे कि वमन करते समय होती है। उनकी तैलमय-सी भूरी त्वचा में और उनके भारी एवं भद्दे अंग-संचालन में ऐसा कुछ था, जो अनिर्वचनीय रूप में भयावह था। इस प्रथम भेंट एवं दर्शन में ही, मेरा मन घृणा एवं भय से भर उठा।

सहसा वह दैत्य अदृश्य हो गया। वह सिलण्डर के छोर से लुढ़का और चमड़े के एक पिण्ड के समान शब्द करके खड्ड में गिर पड़ा। मैंने उसे एक विशेष प्रकार का आर्तनाद करते सुना और शीघ्र ही ऐसा ही एक अन्य जीव उस छिद्र के अन्धकार में चमकता दिखाई दिया।

उस समय मेरी दृढ़ता उड़ चुकी थी, मैं पीछे मुड़ा और अन्धाधुन्ध उन समीप के वृक्षों की ओर भागा, जो सौ गज़ की दूरी पर थे। परन्तु मैं तिरछा और ठोकर खाता भाग रहा था, कारण कि मैं उस ओर से अपना मुख फेर नहीं पाया था।

वहाँ देवदार के कुछ वृक्षों एवं भटकैया की झाड़ियों के मध्य में रुका और तीव्र श्वास लेता हुआ होने वाले विकासों को देखने लगा। बालू के गड्ढों के समीप का स्थान लोगों से भरा था, जो मेरी ही भाँति भयान्वित इन जीवों पर टकटकी बाँधे खड़े थे अथवा कंकड़ों के उस ढेर को देख रहे थे जिसमें यह जीव थे। तब एक नूतन भय के साथ मैंने एक गोल काली

वस्तु को उस खड्ड के किनारे ऊपर-नीचे होते देखा। यह उस दुकानदार का सर था, जो खड्ड में गिर पड़ा था, और जो ऊष्ण काले आकाश के नीचे एक छोटी काली वस्तु के समान प्रतीत हो रहा था। अब उसके कंधे और पैर ऊपर आ चुके थे, परन्तु शीघ्र ही वह पुनः नीचे सरकता-सा प्रतीत हुआ, और केवल उसका सर ही दिखाई पड़ने लगा। सहसा वह अदृश्य हो गया, और मैंने कल्पना की कि एक हल्का चीत्कार मेरे कानों तक आया। मुझे एक क्षणिक प्रेरणा हुई कि मैं पीछे जाकर उसकी सहायता करूँ, जिसे मेरे भय ने उखाड़ फेंका।

तब सभी कुछ उस गहन खड्ड और बालू के उस ढेर के पीछे, जिसे गिरने वाले सिलण्डर ने उभाड़ दिया था, अदृश्य हो गया। उस समय चोबहम अथवा वोकिंग से आने वाला कोई भी व्यक्ति इस दृश्य पर आश्चर्य-चकित हो गया होता—निरन्तर कम होने वाले लगभग सौ व्यक्तियों का समूह, जो टेढ़े-मेढ़े गोले खाइयों में, झाड़ियों के पीछे, द्वारों एवं कुजों के पीछे खड़े थे, जो एक दूसरे से बहुत कम वार्तालाप कर रहे थे, संक्षेप में वह केवल उत्तेजित कोलाहल कर उठते थे और टकटकी लगाये बालू के उन कतिपय ढेरों की ओर देख रहे थे। जिंजर-बीयर का ठेला, विलक्षण रूप से परित्यक्त हुआ एवं एकाकी तपते अम्बर के नीचे खड़ा था, और बालू के गड्ढों में निर्जन सवारियाँ खड़ी थीं, जिनके घोड़े या तो अपने तोबड़े में से जुगाली कर रहे थे अथवा भूमि को कुरेद रहे थे।

५

अग्नि-किरण

मंगल-निवासियों को उस सिलण्डर से, जिसमें वह अपने लोक से इस पृथ्वी तक आये थे, निकलते देखकर मुझ पर एक ऐसी स्तम्भन-क्रिया-सी हुई, जिसने मेरी चेतना को जड़-सा कर दिया। उन झाड़ियों में घुटनों तक गड़ा मैं उस ढेर की ओर घूरता रहा, जिसने उन्हें छिपा रखा था। मेरा मन भय और विस्मय का द्वन्द-क्षेत्र-सा बना हुआ था।

मुझे उस खड्ड तक जाने का साहस न हुआ; यद्यपि मेरे अन्तर में लौटकर उसमें झाँकने की अदम्य लालसा बनी हुई थी। अतः मैंने वक्रगति से, किसी सुलभ स्थान को पाने के लिये चलना प्रारम्भ कर दिया, और मेरे नेत्र उन्हीं बालू के गड्डों की ओर टिके हुए थे, जिन्होंने पृथ्वी के उन नवागतों को छिपा रखा था। एक बार पतले काले कोड़ों की बटी हुई एक रस्सी-सी, अस्त होते सूर्य में चमकी, और उसके पश्चात् एक पतली घड़ी-सी धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठी, जिसके सिरे पर एक गोल तश्तरी चक्कर खाती हुई बाहर निकली। वहाँ क्या हो रहा होगा?

अधिकतम दर्शक एक-एक दो-दो के झुण्डों में बँट गये थे—एक छोटी-सी भीड़ वोकिंग की ओर और दूसरी चोबहम की ओर। स्पष्ट था कि वह भी मेरे समान द्वन्द्व की अनुभूति कर रहे थे। कुछ मेरे समीप थे। मैं एक व्यक्ति के समीप पहुँचा, जो मैं समझता हूँ मेरा पड़ोसी था, यद्यपि मैं उसका नाम नहीं जानता था, और सम्भाषण प्रारम्भ किया। परन्तु यह समय क्रमिक वार्ता का नहीं था।

"कैसे भयानक पशु !" उसने कहा, "हे ईश्वर ! कैसे भयानक पशु !" उसने उन्हीं शब्दों को बार-बार दोहराया।

"क्या तुमने उस खड्ड में किसी मनुष्य को देखा ?" मैंने प्रश्न किया, परन्तु उसने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। हम मौन हो गये, और कुछ काल तक साथ-साथ खड़े उस ओर देखते रहे, और मैं कल्पना करता हूँ, एक दूसरे के साहचर्य्य-जनित सुख की अनुभूति करते रहे। तब मैं एक छोटे ढेर की ओर बढ़ गया, जिसने मुझे शायद एक गज अथवा उससे अधिक आगे बढ़ा दिया, और जब मैंने अपने उस साथी की ओर देखा, वह वोकिंग की ओर चला जा रहा था।

इससे पूर्व कि और कोई नूतन घटना घटती, सूर्यास्त गोधूलि में परिवर्तित हो गया। दूर वाम दिशा वाली भीड़, जो वोकिंग की ओर जा रही थी, बढ़ती-सी प्रतीत हुई, और अब मुझे वहाँ से मन्द भनभनाहट सुनाई पड़ने लगी। चोबहम की ओर की छोटी भीड़ अन्तर्धान हो गयी। खड्ड की ओर से किसीके आने की सम्भावना प्रतीत नहीं हो रही थी।

जहाँ तक मैं सोचता हूँ, यही कारण था जिसने लोगों को उत्साहित किया, और साथ ही मैं समझता हूँ कि वोकिंग की ओर से आने वाले नवागन्तुकों ने उनके हृदय में विश्वास का संचार करने में सहायता की। जो कुछ भी हो, जब तश्तरी ऊपर आ गयी एक मन्द एवं रुक-रुककर होने वाली गति बालू के उन गट्ठों के ऊपर होने लगी—एक गति जो सिलण्डर के समीपवर्ती सन्ध्या की स्तब्धता को भंग नहीं कर रही थी। दो-दो तीन-तीन की संख्या में काली आकृतियाँ आगे बढ़ती, रुकती, देखती और पुनः आगे बढ़ती दिखाई पड़ रही थीं, जो ऐसा करने में एक अर्द्धचन्द्राकार का रूप धारण कर लेती थीं और अपने दुर्बल अंगों से उस खड्ड को घेर लेती थीं। मैं भी उस खड्ड की ओर बढ़ा।

तब मैंने देखा कि कुछ गाड़ीवान तथा दूसरे लोग साहसपूर्वक उन बालू के गड्ढों की ओर बढ़ गये हैं, और मैंने घोड़ों की टापें और पहियों की गड़गड़ाहट सुनी। मैंने एक छोकरे को सेबों के ठेले से लुढ़कते देखा।

और तब, खड्ड से लगभग तीस गज की दूरी पर मैंने लोगों की एक छोटी-सी कतार देखी, जिनका नेता श्वेत झंडा लहरा रहा था। यह एक सद्भावना-मण्डल था। क्योंकि घृणित आकृति वाले होते हुए भी मंगल-निवासी सबुद्ध जीव प्रतीत होते थे, यह निश्चय किया गया कि कुछ संकेतों को लेकर उन तक जाया जाय, और प्रदर्शित किया जाय कि हम भी बुद्धिमान हैं।

लहराता, फरफराता झण्डा पहिले सीधी ओर और तब बायीं ओर चलता दिखाई पड़ा। वह समूह मुझसे इतना दूर था कि उसमें से किसी को पहिचान पाना मेरे लिये कठिन था। परन्तु बाद में मुझे पता चला कि आग्लिवी, स्टेन्ट तथा हैण्डरसन, अन्य व्यक्तियों के साथ भावनाओं का यह आदान-प्रदान करने आये थे। यह छोटा-सा समूह उस गोलाई की ओर बढ़ा जो अब पूरे गोले का रूप धारण कर चुकी थी, और एकाध धुंधली, काली छायाएँ पर्याप्त दूरी पर इस ओर को बढ़ रही थीं।

सहसा प्रकाश की एक चकाचौंध-सी हुई और हरित वर्ण धूम्र के विशाल पिंड उस खड्ड से तीन स्पष्ट स्थानों से उस शान्त वायु में सीधे ऊपर की ओर उठते दिखाई पड़े।

यह धूम्र (अथवा शिखा, जो भी इसका उपयुक्त नाम हो) इतना चमकीला था कि ऊपर का नीलाकाश और चर्टसी की ओर फैला हुआ मैदान, और उसके देवदार वृक्ष, जैसे ही यह पिंड ऊपर उठे, धूमिल होते दिखाई पड़े एवं उनके विलीन हो जाने पर भी धूमिल ही रहे। उसी समय एक मन्द हिस्-हिस् की ध्वनि सुनायी पड़ने लगी।

खड्ड से परे, मनुष्यों की वह छोटी-सी भीड़, एक खूंटे के समान, इन दृश्यों से आकर्षित, अपना श्वेत झण्डा लिये खड़ी थी—काली पृथ्वी पर खड़ी हुई काली आकृतियों का यह छोटा-सा समूह। जब वह हरित-वर्णन धूम्र ऊपर उठा, उनके मुख धुंधले पीले रूप में चमक उठे, और साथ ही पुनः धूमिल पड़ गये। तब धीरे-धीरे हिस्-हिस् की वह ध्वनि मधु-मक्खियों की भनभनाहट में परिवर्तित हो गयी, और तब एक तीव्र

भों-भों के स्वर में। तब एक कुबड़ी-सी आकृति खड्ड से धीरे-धीरे ऊपर की ओर निकली, और उसमें से धूमिल प्रकाश की किरणें निकलने लगीं।

तुरन्त ही अग्नि की वास्तविक शिखाएँ, तीव्र आलोक-युक्त लपलपाती शिखाएँ, उस अस्त-व्यस्त जन-समूह के शरीरों से निकलने लगीं। लगता था जैसे कोई अदृश्य जल का फुहारा उनसे टकरा गया है, और श्वेत लपटों की भाँति उन पर बरस पड़ा है। यह दृश्य ऐसा था जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति सहसा एवं पलक मारते अग्नि-शिखाओं में परिवर्तित हो गया है।

तब उनके ही विनाश की उन शिखाओं के प्रकाश में, मैंने उन्हें लड़खड़ाते, गिरते, एवं उनके सम्हालने वालों को पीछे मुड़कर भागते देखा।

मैं इस दृश्य को घूरता, एवं इस समय तक यह न समझता कि यह विनाश था, जो उस दूरतम समूह में एक दूसरे की ओर लपक रहा था, खड़ा रहा। जो कुछ भी मैं समझ सका वह यह था कि यह सब कुछ विलक्षण-सा है। एक पूर्णतः निःशब्द एवं चकाचौंध कर देने वाला प्रकाश हुआ, और एक मनुष्य धड़ से सर के बल गिरा और निचेष्ट हो गया, और जैसे ही वह अदृश्य आग्नेयास्त्र उनके ऊपर पड़ा, देवदार के वृक्ष अग्नि-शिखाएँ छोड़ने लगे, और प्रत्येक शुष्क भटकैया की झाड़ी धमाके के शब्द के साथ शिखाओं के ढ़ेर में परिवर्तित हो गयी।

शीघ्रता एवं स्थिरता के साथ, यह अग्निमय मृत्यु, अग्नि का यह अमोघ खड्ग चारों ओर को लपलपाता फिर रहा था। उन झाड़ियों को, जिन्हें वह अपने स्पर्श से प्रज्वलित कर रहा था, मैंने उस अदृश्य अस्त्र को अपनी ओर आते देखा, और मैं भी विस्मय एवं भय से जैसे पृथ्वी में गड़-सा गया। मैंने बालू के उन गड्ढों की ओर अग्नि के कड़ाके की ध्वनि सुनी, और फिर सहसा किसी घोड़े की चिल्लाहट, जो तुरन्त ही निष्प्राण हो गया। तब ऐसा लगा कि जैसे कोई अदृश्य, परन्तु नितान्त अग्निमय उंगली, उस विस्तृत मैदान में, मेरे और मंगल-निवासियों के

मध्य फैली हुई है, और बालू के गड्ढों के पीछे की भूमि एक वक्राकार रेखा में सुलग रही एवं कड़कड़ाहट की ध्वनियाँ कर रही थी। दूर बायीं ओर, जहाँ वोकिंग स्टेशन से कामन की ओर सड़क फूटती है, किसी भारी वस्तु के चरचरा कर गिरने का शब्द सुनायी पड़ा। शीघ्र ही हिस्-हिस और भनभनाहट की वह ध्वनि बन्द हो गयी, और वह काली एवं गुम्बद के समान दिखाई पड़ने वाली वस्तु पुनः उस खड्ड में नीचे सरक गयी।

यह सब कुछ इतनी शीघ्रता से घटित हो गया कि मैं गतिहीन, जड़ एवं अग्नि-शिखाओं के मध्य चौंधियाता खड़ा रहा। यदि मृत्यु की वह क्रिया गोलाकार रूप में हुई होती, तो उसने मुझे निश्चित रूप से नष्ट कर डाला होता। परन्तु मुझे जीवित, और अपने पीछे सहसा ही काली एवं अपरिचित रात्रि छोड़कर वह विलीन हो चुकी थी।

लहराकार-सा वह 'कामन' अब पूर्णतः अन्धकार से ढका था, केवल उन सड़कों के अतिरिक्त, जो प्रारम्भिक रात्रि के गहन-नील आकाश के नीचे भूरी एवं पीली-सी दिखाई पड़ती रहीं। ऊपर आकाश में तारे निकल रहे थे, और पश्चिम की ओर का क्षितिज इस समय भी पीला, प्रकाशमय एवं हरित-नील था। देवदार के वृक्षों की चोटियाँ और हारसेल की छतें पश्चिमी आकाश के सान्ध्य-प्रकाश में स्पष्ट एवं काली प्रतीत हो रही थीं। मंगल-निवासी एवं उनके यन्त्र, केवल उस स्तूल को छोड़ कर, जिस पर उनका वह शीशा थरथराता था, इस समय अदृश्य थे। झाड़ियों के समूह, और स्थान-स्थान पर अकेले खड़े वृक्ष कहीं-कहीं अभी तक सुलग रहे थे और धुआँ दे रहे थे, और वोकिंग स्टेशन की ओर वाले मकान, सन्ध्या की शान्त वायु में आग उगल रहे थे।

केवल इस सब, और मेरे मन के भयानक विस्मय के अतिरिक्त, सभी कुछ ज्यों का त्यों था। हाथों में झण्डा लिये खड़ा मानवों का खूँटों के समान दिखाई पड़ने वाला वह समूह नष्ट कर दिया गया था, और सन्ध्या की शान्ति, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ, किसी प्रकार भी भंग नहीं हुई थी।

सहसा मुझे ध्यान आया कि मैं इस अन्धकारमय कामन पर असहाय, असुरक्षित और अकेला हूँ। तुरन्त ही बाहर से उछलकर गिरने वाली वस्तु के समान, मेरे हृदय में भय का संचार हुआ।

शरीर की सारी शक्ति लगाकर, मैं मुड़ा, और लड़खड़ाता हुआ उस मैदान में से भाग निकला।

वह भय, जिसकी अनुभूति मैं इस समय कर रहा था, कोई विचार-युक्त भय न था, अपितु केवल उत्तेजना-जन्य था, और यह मंगल-निवासियों का नहीं, वरन् अपने चारों ओर के अन्धकार एवं निस्तब्धता का था। मुझे भीरु बनाने में इसने मुझ पर ऐसा भीषण प्रभाव डाला कि मैं चुपचाप रोता हुआ भाग रहा था, जैसा कि किसी बालक ने किया होता। एक बार जब मैंने पीठ फेर ली, मुझे पीछे लौटकर देखने का साहस नहीं हुआ।

मुझे स्मरण है कि मैं अपने अन्दर एक प्रबल विचार पा रहा था कि शायद मेरे साथ खेल खेला जा रहा है, और अब जब कि मैं सुरक्षा की सीमा पर हूँ, यह रहस्यमय मृत्यु, जो प्रकाश के समान गतिशील है, खड्ड के उस सिलण्डर से मुझ पर कूद पड़ेगी, और मुझे नष्ट कर डालेगी।

६

चोबहम रोड पर अग्नि-किरण

यह अभी तक आश्चर्य का विषय है कि मंगल-निवासी किस प्रकार मनुष्यों को इतनी शीघ्रता एवं इतनी शान्ति के साथ मार डालते थे। कुछ लोगों का विचार है कि वह किसी सम्भव उपाय द्वारा किसी जन-

प्रवहनशील बन्द स्थान में उग्र अग्नि उत्पन्न कर लेते थे । इस प्रचण्ड अग्नि को वह किसी भी वस्तु के विपरीत समानान्तर किरणों में अज्ञात सम्मिश्रण वाले किसी लाक्षणिक शीशे द्वारा फेंकते थे—ठीक उसी प्रकार जैसे कि प्रकाश-गृह के शीशे प्रकाश किरणों को बाहर फेंकते हैं । परन्तु किसीने भी इसका समग्र विवरण प्रस्तुत नहीं किया है । ऐसा किसी प्रकार भी हो, परन्तु यह निश्चित है कि अग्नि की कोई भी किरण (भौतिक शक्ति) घन पदार्थ का सारभूत होती है । अग्नि और दृश्यमान प्रकाश के स्थान पर अदृश्य । जो कुछ भी ज्वलनशील है, वह उसके स्पर्शमात्र से ही ज्वालपुंज में परिवर्तित हो जाता है; सीसा पानी की तरह बहने लगता है, लोहा नम्र हो उठता है, शीशा चटखने और पिघलने लगता है, और जब वह जल पर पड़ती है तो वह अबाध रूप से भाप का रूप धारण करने लगता है ।

उस रात लगभग चालीस व्यक्ति उस खंड के समीप, तारों-भरे आकाश के नीचे जले एवं न पहिचाने जाने योग्य अंग-भंग हुए पड़े थे, और रात भर हारसेल से मेबरी वाला जन-पथ निर्जन एवं तीव्र आलोक से परिपूर्ण रहा ।

उस विनाश की सूचना चोबहम, वोकिंग और अटरशा में लगभग एक ही समय प्राप्त हुई । जब यह दुर्घटना हुई, वोकिंग की दूकानें बन्द हो चुकी थीं, और दूकानदारों एवं दूसरे व्यक्ति, जो इन कहानियों से, जो उन्होंने सुनी थीं, आकर्षित हो चुके थे, हारसेल ब्रिज एवं उस स्थान तक पहुँचने वाली दोनों ओर की झाड़ियों के मध्य चल रहे थे । आप उन नवयुवकों की कल्पना कर सकते हैं, जो दिन भर के परिश्रम से थके-हारे थे, फिर भी ताजगी दिखा रहे थे । आप अपने समक्ष संध्या के मन्द प्रकाश में सड़क पर होते हुए इस कोलाहल का चित्र उपस्थित कर सकते हैं ।......

परन्तु तो भी, वोकिंग के केवल कुछ व्यक्ति ही यह जान सके कि सिलण्डर खुल चुका है, यद्यपि बेचारे हैण्डरसन ने उसी सन्ध्या को

प्रकाशित होने वाले किसी पत्र के निमित्त इसी आशय का एक विशेष समाचार एक साइकिल-सवार के द्वारा भेज दिया था।

दो-दो, तीन-तीन करके जब यह व्यक्ति उस खुले स्थान पर पहुँचे, उन्होंने स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे समूहों को उत्तेजनापूर्वक वार्तालाप करते एवं बालू के उन गड्ढों पर घूमने वाले उस शीशे को घूरते हुए पाया और नवागत भी तुरन्त ही घटना-स्थल की उत्तेजना से प्रभावित हो चुके थे।

साढ़े आठ बजे जब कि वह सद्भावना-मण्डल विनष्ट हुआ, वहाँ तीन सौ या इससे अधिक व्यक्तियों का समूह उन व्यक्तियों के अतिरिक्त रहा होगा, जो सड़क को छोड़कर मंगल-निवासियों की ओर बढ़ रहे थे। वहाँ तीन पुलिस वाले भी थे, जिनमें से एक घुड़सवार था, जो स्टेन्ट के आदेशानुसार मनुष्यों को सिलण्डर की ओर बढ़ने से रोकने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहा था। विचार-शून्य एवं उत्तेजनशील व्यक्ति, जिनके निकट भीड़ सदैव कोलाहल का कारण होती है, असन्तोषजनक रूप में चिल्ला रहे थे।

स्टेन्ट एवं आग्लिवी ने किसी मुठभेड़ की सम्भावना की कल्पना करते हुए तार द्वारा हारसेल से सेना की बैरक को, मंगल-निवासियों के बाहर निकलते ही, इन विलक्षण जीवों को कोई हिंसात्मक कार्य करने से रोकने के लिये, भेजने की प्रार्थना भेज दी थी। इसके पश्चात् वह उस दुर्भाग्यपूर्ण अभियान का नेतृत्व करने के निमित्त लौट आये थे। भीड़ द्वारा दिया गया उनकी मृत्यु का वर्णन मेरे अनुमान से बिल्कुल मिलता-जुलता है। हरित-धूम्र के तीन पिण्ड, भनभनाहट का तीव्र कोलाहल एवं अग्नि की शिखाएँ।

परन्तु समूह मेरी अपेक्षा अधिक कठिनाई से बच सका था। केवल यह कि बालू के एक टीले ने अग्नि की उन किरणों के नीचे वाले भाग के मध्य आकर उन्हें बचा दिया था। यदि उस लाक्षणिक शीशे का उभार कुछ गज अधिक होता, तो इस कहानी को सुनाने वाला कोई शेष न

रहा होता। उन्होंने शिखाओं को भड़कते और मनुष्यों को गिरते देखा एवं एक अदृश्य हाथ ने झाड़ियों में आग लगा दी, जब कि वह गोधूलि के उस प्रकाश में तीव्रतापूर्वक उनकी ओर झपटा था। तब खंड से निकलने वाले तीव्र कोलाहल के साथ उनके सर के ऊपर सड़क के सहारे लगे वृक्षों को प्रज्वलित करती, ईंटों को खंड-खंड करती, खिड़कियों को ध्वस्त, चौखटों को भस्म करती एवं समीपवर्ती मकान के एक कोने को धम्म से नीचे गिराती चमक उठी।

इस आकस्मिक धमाके, कोलाहल एवं प्रज्वलित वृक्षों के प्रकाश में भय-ग्रस्त वह समूह कुछ क्षणों तक अनिश्चित अवस्था में खड़ा रहा होगा। चिन्गारियाँ और जलते हुए वृक्षों की टहनियाँ सड़क पर आ-आ कर गिरने लगीं; और पत्तियाँ अग्नि के पुंजों के समान। टोपों एवं वस्त्रों ने आग पकड़ ली। तब कामन की ओर से चीत्कार की ध्वनियाँ सुनायी पड़ीं।

चीखें एवं चिल्लाहट सुनायी पड़ रही थीं, और तब सहसा घोड़े पर सरपट दौड़ता एक पुलिसमैन इस अव्यवस्था में आता दिखाई पड़ा, जिसके हाथ उसके सर के ऊपर जकड़े हुए थे, और जो आर्तनाद कर रहा था।

"वह आ रहे हैं," एक नारी ने चीत्कार किया, और असंयत रूप से प्रत्येक व्यक्ति मुड़कर अपने पीछे वालों को धकेल कर पुनः वोकिंग की ओर जाने के निमित्त मार्ग निकाल रहा था। वह परस्पर इतने भिड़े हुए होंगे जितना कि भेड़ों का एक समूह। ऊँचे-ऊँचे किनारों के समीप, जहाँ सड़क संकीर्ण एवं अन्धकारमय थी, यह समीपता रुद्ध-सी होगयी एवं निकल पाने के लिये नैराश्यपूर्ण संघर्ष होने लगा। वह सम्पूर्ण समूह सुरक्षित न निकल सका, और कम से कम तीन व्यक्ति, दो नारियाँ और एक छोटा लड़का भीड़ के पाँव तले कुचल गया, और वह भय एवं अन्धकार में मरने के लिये छोड़ दिये गये।

७

मैं घर कैसे पहुंचा

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे अपने भागने के विषय में केवल इतना स्मरण है कि मैं यथासम्भव पेड़ों से टकराने एवं झाड़ियों में उलझकर गिरने से बचने का प्रयत्न करता रहा। मेरे चारों ओर के व्यक्तियों के हृदय पर मंगल-निवासियों का अदृश्य भय इधर-उधर अधिकार कर चुका था, अग्नि का वह कठोर वज्र मेरे सर के ऊपर इधर-उधर चक्कर काट रहा था, और इससे पूर्व कि नीचे उतरकर वह मेरे जीवन का अन्त कर डालता, मैं चौराहों एवं हारसेल की बीच वाली सड़क पर आ पहुँचा था, और यहाँ से फिर चौराहे की ओर भागा।

अन्त में मैं और अधिक न भाग सका, कारण कि अपनी भावना की उत्तेजना एवं इस पलायन के कारण मेरी भी शारीरिक शक्ति नष्ट-प्रायः हो चुकी थी, और मैं लड़खड़ाकर मार्ग पर गिर पड़ा। यह पुल के समीप का वह स्थान था, जो नहर और गैस-वर्कस को पार करता है। मैं गिर पड़ा एवं अचेतन-सा पड़ा रहा।

मैं वहाँ कुछ समय तक रहा हूँगा।

आश्चर्यजनक रूप से उदभ्रान्त में उठ बैठा। सम्भवतः एक क्षण तक मैं स्पष्ट न समझा कि मैं वहाँ किस प्रकार आ पहुँचा था। इस समय तक मेरा भय विलीन हो चुका था। मेरा हैट गिर पड़ा था और कालर अपने बटन से फट चुका जा। कुछ क्षण पूर्व मेरे समक्ष केवल तीन वास्तविकताएँ ही रही होंगी—रात्रि, शून्य एवं प्रकृति की असीमता, अपनी दुर्बलता एवं पीड़ा, और मृत्यु का निकटतम साहचर्य्य ! अब

लगता था जैसे कुछ बदल-सा गया हो, और मेरा दृष्टिकोण सहसा ही परिवर्तित हो उठा। उस समय मस्तिष्क का एक प्रकार की मनोदशा से दूसरी में तुरन्त ही जाने का कोई विवेक-जन्य परिवर्तन सम्भव नहीं था। तुरन्त ही मैं प्रतिदिन के समान स्वयं को एक शिष्ट एवं साधारण नागरिक समझने लगा। वह सुनसान स्थान, मेरे पलायन की प्रेरणा एवं प्रारम्भ होने वाली वह शिखाएँ, सभी कुछ स्वप्न-सा प्रतीत होता था। मैंने स्वयं से प्रश्न किया कि क्या यह सब बातें वास्तविक रूप में हो चुकी हैं। मैं यह विश्वास न कर सका।

मैं उठा और अस्थिरतापूर्वक पुल के ढलवाँ भाग की ओर चलने लगा। मेरा मस्तिष्क जड़-सा हो चुका था। लगता था जैसे कि मेरी पेशियों एवं शिराओं की शक्ति बह चुकी है। मुझे पूरी तरह स्मरण है है कि मैं किसी मद्यप की भाँति लड़खड़ाकर चल रहा था। आर्क में एक श्रमिक दृष्टि पड़ा, जो एक टोकरी लिये हुए था। उसके पीछे एक छोटा बालक भाग रहा था। मुझसे गुड नाइट कहता वह गुजर गया। मैं उससे वार्तालाप करना चाहता था, परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। उसके अभिवादन का उत्तर मैंने एक ऐसी अस्पष्ट ध्वनि से दिया जिसका कोई अर्थ नहीं था, और पुल पर चढ़ गया।

मेबरी आर्क पर एक ट्रेन कोलाहल-युक्त, प्रकाशमान धूम्र और अनुगमन करती प्रकाश से झिलमिलाती खिड़कियों से दक्षिण की ओर जाती दृष्टिगोचर हुई......खटखटाखट, खटखटाखट, और वह विलीन हो गयी। धूमिल रूप से दिखाई पड़ने वाला मनुष्यों का एक समूह, 'ओरिएन्टल टेरेस' नामक सुन्दर मकानों की उस छोटी-सी पंक्ति के किसी प्रवेश-द्वार के सामने खड़ा वार्तालाप कर रहा था। यह सभी कुछ इतना वास्तविक एवं इतना चिर परिचित था, और वह जिसे मैं अपने पीछे छोड़कर आया था, कितना उच्छृंखल एवं कितना भयावह! ऐसी बातें, मैंने स्वयं को आश्वस्त किया, नहीं हो सकती हैं।

सम्भवतः मैं विलक्षणतम मनः-स्थिति का मनुष्य हूँ। मैं नहीं

कह सकता कि मेरा अनुभव कहाँ तक सामान्य है। कभी-कभी मैं अद्भुत विलक्षणता के साथ स्वयं को चारों ओर के संसार से विरक्त पाता हूँ, लगता है जैसे कि मैं अकल्पनीय दूरी से उस सबका निरीक्षण करता हूँ, समय एवं दूरी के बन्धनों से मुक्त, उस सबके प्रभाव एवं दुःख से नितान्त परे। इसी प्रकार की भावना उस रात्रि मेरे अन्तर में आधिपत्य जमाये हुए थी। यहाँ मेरे स्वप्न का दूसरा रूप प्रस्तुत था।

इस शान्ति की शीघ्रगामी एवं उड़नशील मृत्यु से, जो सामने दो मील से कम दूरी पर थी, यह असम्बद्धता देखकर, मैं कठिनाई में पड़ गया। गैस-वर्क्स से होने वाले काम का कोलाहल सुनाई पड़ रहा था, और बत्तियाँ प्रकाश से जगमगा रही थीं। मैं उस समूह के निकट रुक गया।

"कामन का क्या समाचार है ?" मैंने प्रश्न किया।

उस द्वार पर दो पुरुष और एक महिला थी।

"ऐं ?" उनमें से एक ने मुड़ते हुए कहा।

"कामन का क्या समाचार है ?" मैंने दोहराया।

"क्या तुम वहाँ से नहीं आ रहे हो ?" एक मनुष्य ने प्रश्न किया।

"लोग कामन के सम्बन्ध में पागल-से हो गये प्रतीत होते हैं," द्वार पर खड़ी महिला ने कहा। "वहाँ क्या है ?"

"क्या तुमने मंगल-निवासियों के सम्बन्ध में नहीं सुना है ?" मैंने प्रश्न किया। "मंगल के निवासी !"

"बहुत कुछ", द्वार पर खड़ी महिला ने उत्तर दिया। "धन्यवाद", और तीनों हँस पड़े।

अपने मूर्ख बनने पर मुझे क्रोध हो आया। मैंने प्रयत्न किया, और पाया कि मैं उन्हें वह सब कुछ समझा पाने में असमर्थ हूँ, जिसे मैंने वहाँ देखा था। मेरे भग्न वाक्यों पर वह पुनः हँस पड़े।

"तुम और अधिक सुनोगे", मैंने कहा, और घर की ओर चल पड़ा।

मेरी वेश-भूषा ऐसी अस्त-व्यस्त हो रही थी कि मैंने प्रवेश-मार्ग में

खड़ी अपनी पत्नी को चौंका दिया। मैं भोजन-स्थान पर गया, बैठकर कुछ मदिरा गले से नीचे उतारी, और जैसे ही कि मैं उस सबको पूर्णरूपेण स्मरण कर सका, मैंने उससे उस सबका वर्णन किया जो मैंने देखा था। भोजन जो ठण्डा था, और परोसा जा चुका था, मेज़ पर ज्यों का त्यों धरा रहा, जब तक कि मैं अपनी पत्नी को कहानी सुनाता रहा।

"एक बात है" मैंने उस भय को, जिसे मैंने उसके मन में जगा दिया था, शान्त करने के लिये कहा, "वह नितान्त मन्दगामी हैं—रेंगने वाली सभी वस्तुओं से मन्दगामी। वह उस खड्ड में ही रह सकते हैं, और समीप आने वाले व्यक्तियों को नष्ट कर सकते हैं, परन्तु वह उससे बाहर नहीं निकल सकते हैं ...... परन्तु वह कितने भयावह हैं !"

"नहीं प्रिय", मेरी पत्नी ने अपनी भवों को सिकोड़ते और मेरे हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

"बेचारा आग्लिवी", मैंने कहा, यह विचार कर कि उसका शरीर कहीं पड़ा होगा।

"वह यहाँ आ सकते हैं।" उसने अनेक बार दोहराया।

मैंने उससे अनुरोध किया कि वह कुछ मदिरा ले, और उसे बार-बार आश्वस्त किया।

"वह कठिनता से चल सकते है," मैंने कहा।

मैंने उसके और अपने मन को भी वह सब कुछ दोहरा-दोहरा कर, जो आग्लिवी ने पृथ्वी पर न बस सकने के सम्बन्ध में कहा था, आश्वासन दिया। विशेष रूप से मैंने पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति पर बल दिया। पृथ्वी के धरातल पर मंगल-ग्रह के धरातल से तीन गुना अधिक आकर्षण है। अतः पृथ्वी पर एक मंगल-निवासी का भार मंगल-ग्रह के भार से तीन गुना अधिक होगा, यद्यपि उसकी मांस-पेशियों की शक्ति उतनी ही रहेगी। अतः उसका शरीर उसके लिये एक बोझ के समान होगा। यही सम्मति जन-सम्मति थी। 'दी टाइम्स' एवं 'डेली टेली-

ग्राफ़', दोनों ही समाचार-पत्रों ने अपने दूसरे दिन के प्रातःकालीन अंकों में इसी बात को अधिक महत्व दिया, और दोनों ही ने मेरे समान इस को संशोधित करने वाले दो प्रभावों पर ध्यान नहीं दिया।

पृथ्वी के वायु मण्डल में, जैसा अब हम जानते हैं, या तो मंगल-ग्रह की अपेक्षा आक्सीजन की प्रचुर मात्रा है अथवा आर्गन की न्यूनता। जैसा भी कोई सम्भव माने आक्सीजन की इस प्रचुरतामय प्रभाव ने निस्सन्देह रूप में उनके शरीर के बढ़े हुए भार को कम करने का काम किया और दूसरी बात यह है कि हम सबने इस तथ्य पर ध्यान ही नहीं दिया कि वह यांत्रिक बुद्धि, जिससे कि मंगल-निवासी सम्पन्न थे, किसी भी विशेष स्थान पर की जाने वाली शारीरिक क्रियाओं को रोकने वाली किसी भी असुविधा को नष्ट कर सकने योग्य थी।

परन्तु उस समय मैं इन बातों पर ध्यान न दे सका, अतः आक्रमण-कारियों के संबंध में मेरे तर्क निष्प्राण थे। भोजन एवं मदिरा के द्वारा, अपनी चिरपरिचित मेज पर बैठकर एवं अपनी पत्नी को पुनः आश्वासन देने की आवश्यकता के विचार से मैं अज्ञात प्रकार से, अपने अन्तर में साहस एवं सुरक्षित होने की भावना की अनुभूति करने लगा।

"उन्होंने भारी मूर्खता की है", मैंने अपने मदिरा के गिलास में उंगली फिराते हुए कहा। "वह भयावह हैं, कारण कि निस्सन्देह रूप में वह स्वयं भय से विक्षिप्त-से हो गये हैं। सम्भवतः उनका विचार था कि वह इस लोक में किसी जीवित प्राणी को नहीं देखेंगे—निश्चित रूप से सबुद्धि एवं सप्राण व्यक्ति को तो नहीं ही देखेंगे। खड्ड में पड़ा हुआ वह सिलण्डर", मैंने कहा, "यदि भयानकता का रूप धारण भी करें, तो उन सबको ही नष्ट कर डालेगा।"

घटनाओं की उत्तेजना ने निस्सन्दिग्ध रूप से मेरी स्पर्श-ज्ञान-संबंधी शक्तियों को आश्चर्य में डाल दिया था। असामान्य स्पष्टता के साथ मैं मेज की इस समय भी कल्पना कर सकता हूँ। मेरी प्रियतमा का उत्सुकतापूर्ण चन्द्र-मुख, जो उस लैम्प के गुलाबी शेड से रह-रहकर झाँक

रहा था, वह शुभ्र श्वेत मेजपोश, जिस पर रूपहले एवं काँच की मेज को सुशोभित करने वाली अनेक वस्तुएँ—कारण कि उन दिनों दर्शन-शास्त्र के लेखक भी छोटे-मोटे विलास-प्रसाधनों का प्रयोग करते थे—मेरे गिलास की बैंगनी लाल मदिरा, सभी कुछ मेरे मानस में चित्रवत् अंकित हैं। इसके पश्चात मैं छाली चबाते एवं सिगरेट पीते, आग्लिवी की उतावली तथा मंगल-निवासियों की अदूर-दर्शितापूर्ण कायरता का तिरस्कार करता बैठा रहा।

ऐसा ही मारीशस द्वीप के किसी आदरणीय डोडो ने अपने घोंसले में किया होता, और पशु भोजन की खोज में आने वाले शिकारियों से भरे जलयान के आगमन की आलोचना की होती। "हम कल ही उन्हें चिर-निद्रा में सुला देंगे, प्रियतमे!"

यद्यपि मैं नहीं जानता था, परन्तु आने वाले अनेक नितान्त विलक्षण एवं भयानक दिनों में यह मेरा अन्तिम सभ्य भोज था।

८

शुक्रवार की रात्रि

उन समस्त विलक्षण एवं आश्चर्यजनक घटनाओं में, जो शुक्रवार को घटीं, मुझे असाधारण लगने वाली बात हमारे सामान्य जीवन के सर्व-सामान्य आचरणों का घटनाओं के उस क्रम से सम्मिलित करना था, जो उस सामाजिक व्यवस्था को पूर्णतः भूमिसात् करने वाली थी। उस रात्रि यदि एक परकार लेकर वोकिंग के उन बालू के गड्ढों के चारों ओर पाँच मील का एक घेरा खेंचा होता, मुझे सन्देह है कि शायद वहाँ आपने एक

भी मानव को उस घेरे के बाहर पाया होता, यदि वह स्टेन्ट का संबंधी न होता अथवा तीन-चार वह साइकिल-सवार अथवा लन्दन के वह व्यक्ति जो कामन पर निर्जीव पड़े थे और जिनकी भावनाएँ अथवा क्रियाएँ इन नवागतों से प्रभावित हो सकने के परे थीं। अनेक लोगों ने निश्चित रूप से सिलण्डर के संबंध में सुना था एवं इस संबंध में वह अपने अवकाश के समय वर्तालाप कर लेते थे, परन्तु इसने उनके मन में किसी भी ऐसी उत्तेजना को जन्म नहीं दिया था जितना कि जर्मनी के अल्टीमेटम ने दिया होता।

लन्दन में उस रात्रि बेचारे हैण्डरसन के उस सिलण्डर के शनैः-शनैः खुलने का वर्णन करने वाले तार को केवल एक कल्पित कथा माना गया, और उसके समाचार-पत्र ने उसे पुष्टि करने के निमित्त भेजे गये तार का कोई उत्तर न पाकर—कारण कि वह बेचारा इस संसार से जा चुका था—किसी विशेष संस्करण को न छापने का निश्चय कर लिया।

पाँच मील के उस घेरे वाले मनुष्यों का अधिकांश इस विषय में निष्क्रिय रहा। मैं उन नर-नारियों का वर्णन कर ही चुका हूँ, जिनसे मैंने बात की थी। जिले भर में लोग मध्याह्न एवं रात्रि को यथापूर्व योजना कर रहे थे, श्रमिक दिन भर के परिश्रम के पश्चात् उद्यानों का यथापूर्व आनन्द ले रहे थे, नित्य की भाँति बालकों को उनकी शय्या पर सुलाया जा रहा था, नवयुवक गलियों का चक्कर काटने और प्रणय-क्रीड़ाओं में व्यस्त थे, और विद्यार्थी अपनी पुस्तकों में तल्लीन।

सम्भव है कि ग्राम की गलियों में इस विषय पर फुसफुसाहट होती थी, और सार्वजनिक स्थानों में यह वार्ता का एक नूतन एवं प्रबल विषय बन गया हो और कहीं-कहीं इन बाद की घटनाओं का कोई समाचार-वाहक अथवा साक्षी आश्चर्यजनक उत्तेजना उत्पन्न कर देता हो, भय-जनित कोलाहल एवं हिचकिचाहट भी, परन्तु अधिकांश रूप में लोगों का काम करना, भोजन करना और सोना उसी प्रकार चलता रहा जिस प्रकार कि वह असंख्य वर्षों से चल रहा था—जैसे कि मंगल नाम के

किसी नक्षत्र की स्थिति ही आकाश में न थी। यहाँ तक कि वोकिंग स्टेशन और हारसेल और चोबहम की दशा भी ऐसी ही थी।

वोकिंग जंकशन पर रात्रि के पिछले पहर तक, गाड़ियाँ रुक रही थीं एवं जा रही थीं, दूसरी साइडिंग पर शन्टिग करती रहती थीं, यात्री उतर रहे एवं विश्राम कर रहे थे, और सभी कुछ सामान्यतम रूप में चला आ रहा था। शहर का एक लड़का समय का लाभ उठाकर तीसरे पहर के समाचार वाले समाचार-पत्र बेच रहा था। गाड़ियों की झन-झनाहट एवं डिब्बों के परस्पर टकराने की ध्वनियाँ और जंकशन से आने वाले इंजनों के तीव्र स्वर उसके शब्दों 'मंगल के मानव' में घुल मिल जाती थी। उत्तेजित मनुष्य स्टेशन में नौ बजे के सम्बन्ध में अविश्वसनीय समाचार लेकर भीतर आते थे, और उसी प्रकार का व्यव-धान उपस्थित कर देते थे जिस प्रकार कि मद्यपों ने किया होता। लंदन की ओर जाने वाले लोग, जब अपनी खिड़कियों से बाहर की ओर झाँकते थे, तो वह केवल एक असाधारण हिलते एवं विलीन होते प्रकाश-पुंज को हारसेल की ओर से नाचता-सा पाते थे—एक लाल चमकदार एवं क्षीण धूम्र की रेखा, जो ऊपर उठती-सी प्रतीत होती थी, और समझ लेते थे कि केवल झाड़ियों के सुलग जाने के अतिरिक्त अन्य कोई गम्भीर बात नहीं हो रही है। केवल कामन के छोर से ही इस तथ्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था कि कोई दुर्घटना घट रही है। वोकिंग की सीमा पर लगभग आधा दर्जन ग्राम-गृह जल रहे थे। कामन के तीनों ओर वाले गाँवों के मकानों में प्रकाश था, और लोग वहाँ भोर तक जागते रहे।

व्यग्र एवं बेचैन एक जन-समूह वहाँ एकत्रित रहा, लोग आते रहे और जाते रहे, परन्तु चोबहम और हारसेल के पुलों, दोनों स्थानों पर यह समूह खड़ा ही रहा। एक-दो साहसी, बाद में इस बात का पता चला, उस अन्धकार में चले गये, और मंगल-निवासियों के पर्याप्त समीप जा पहुँचे, परन्तु वह कभी न लौट पाये, कारण कि किसी युद्ध-पोत की सर्च-लाइट के समान प्रकाश की किरणें कामन पर इधर-उधर

चक्कर काट रही थीं, जिनका अनुगमन करने के निमित्त अग्नि-किरण भी तत्पर रहती थी। इन बातों के अतिरिक्त कामन का वह स्थान शान्त एवं निर्जन था, और भस्मीभूत वह शरीर वहाँ रात्रि भर तारों के प्रकाश में और फिर दूसरे सम्पूर्ण दिवस पड़े रहे। खड्ड से हथौड़े की-सी चोटों की ध्वनियाँ अनेक लोगों द्वारा सुनी गयीं।

शुक्रवार की रात्रि को ऐसी ही दशा रही। कामन के मध्य, हमारी इस पृथ्वी के शरीर में धँसे हुए एक विषैले बरछे के समान वह सिलण्डर था। परन्तु विष इस समय क्रियाशील नहीं था। उसके चारों ओर शान्त कामन था, जो स्थान-स्थान पर भीतर ही भीतर सुलग रहा था, और जिसमें कुछ अन्धकारमय एवं धुंधली दृष्टि पड़ने वाली वस्तुएँ थीं, जो छिन्न-भिन्न रूप से इधर-उधर पड़ी हुई थीं। कहीं-कहीं कोई प्रज्वलित वृक्ष एवं झाड़ी थीं। उससे परे उत्तेजना एवं कौतूहल से परिपूर्ण मानव-समाज था, और उस सीमा तक अभी आग नहीं पहुँची थी। शेष मानव-जगत में जीवन की धारा उसी प्रकार प्रवाहित हो रही थी जिस प्रकार कि संख्यातीत काल से युद्ध का वह ज्वर, जो निकट भविष्य में शिराओं एवं धमनियों को शिथिल, नाड़ियों को निष्प्राण एवम् मस्तिष्क को विनष्ट कर देता, अभी विकसित होने को था।

पूरी रात मंगल-निवासी अनथक एवम् जागृत उन मशीनों पर ठोक-पीट करते रहे, जिन्हें वह तत्पर कर रहे थे, और यदा-कदा श्वेत हरित वर्ण का धूम्र तारों-भरे आकाश की ओर भरभरा उठता था।

ग्यारह बजे के समीप सैनिकों की एक टुकड़ी हारसेल की ओर से आई एवम् कामन के किनारे-किनारे रक्षा-पंक्ति के रूप में फैल गयी। बाद में एक दूसरी टुकड़ी चोबहम की दिशा से आई और इसी प्रकार कामन के उत्तरी भाग में फैल गयी। 'इन्करमेन बैरेक' के कतिपय सैनिक अधिकारी दिन में भी कामन पर रहे थे, और उनमें से एक मेजर एडिन का कोई पता नहीं चल रहा था। मध्यरात्रि के समीप रेजीमेन्ट का कर्नल चोबहम पुल पर आया, और उस समूह से प्रश्न करता रहा। सेना

के अधिकारी निश्चित रूप से इस विषय की गम्भीरता के सम्बन्ध में जागरूक थे। लगभग ग्यारह बजे, अगले दिन के समाचार-पत्र कह सके कि अश्वारोही सेना की दो टुकड़ी, दो 'मेक्सिम और कार्डीजन रेजीमेन्ट' के लगभग चार सौ सैनिक एल्डरशाट से प्रस्थान कर चुके हैं।

मध्य रात्रि के कुछ ही सैकिण्ड बाद चर्टसी की ओर वोकिंग की सड़कों वाले जन-समूह ने आकाश से एक तारे को टूटकर उत्तर-पश्चिम की ओर वाले देवदार वन में गिरते देखा। वह एक हरित प्रकाश के साथ गिरा, जिसने ग्रीष्म-कालीन बिजली के समान एक चमक को जन्म दिया। यह दूसरा सिलण्डर था।

९

युद्ध का आरम्भ

अनिश्चितता के रूप में वह शनिवार अभी मेरी स्मृति में सजीव है। वह दिन भी भारीपन से भरा हुआ था; गर्म—और मुझे तीव्रता से घटते-बढ़ते बेरोमीटर के विषय में बताया गया। मैं अल्प निद्रा ही ले पाया था, यद्यपि मेरी पत्नी अच्छी नींद ले चुकी थी, और मैं अन्धेरे ही उठ खड़ा हुआ। नाश्ते से पूर्व मैं अपने उद्यान में गया, और कान लगाकर सुनने लगा, परन्तु कामन की ओर, केवल एक लार्क पक्षी के स्वर के अतिरिक्त पूर्ण निस्तब्धता थी।

निश्चित समय पर दूध वाला आया। मैंने उसके रथ की खड़खड़ाहट सुनी, और मैं पार्श्व द्वार की ओर उससे नवीनतम समाचार जानने के निमित्त गया। उसने मुझे सूचित किया कि रात में मंगल-निवासियों को सेना द्वारा चारों ओर से घेर लिया गया था, और गोली चलने की

सम्भावना थी। तब मन को निश्चिन्त करने वाला एक अन्य साधन मैंने वोकिंग की ओर जाती हुई एक गाड़ी की ध्वनि सुनी।

"वह मारे नहीं जायेंगे", दूध वाले ने कहा, "यदि ऐसा होना सम्भव हो सके।"

मेने अपने पड़ोसी को अपने उद्यान में कार्य-रत देखा, उससे कुछ समय वार्तालाप किया, और फिर नाश्ते के निमित्त भीतर की ओर लौट पड़ा। यह एक अपूर्व प्रातःकाल था। मेरे पड़ोसी का मत था कि सेना दिन भर में मंगल-निवासियों को बन्दी बनाने अथवा नष्ट कर देने में सफल हो जायगी।

"दुःख की बात है कि उन्होंने स्वयं को इतना अप्राप्य बना रखा है," उसने कहा, "यह देखना कि वह अपरिचित वातावरण में किस प्रकार जीवित रहते हैं, कौतूहल-प्रद होगा। हम उनसे एक-दो बातें सीख सकते हैं।"

वह बाड़ तक आया, और उसने मुझे मुट्ठी भर झरबेरी के बेर दिये, कारण कि उसका उद्यान-कार्य उतना ही फलप्रद था, जितना कि श्रम-पूर्ण। उसी समय उसने मुझे बाइफ्लीट गोल्फ़-लिन्क्स के समीप के देवदार वृक्षों के भी जल जाने की सूचना दी।

"लोग कहते हैं," उसने कहा, "कि वहाँ वैसी ही अन्य वस्तु गिरी है—नम्बर दो। परन्तु एक ही पर्याप्त है। यह घटना बीमा वाले लोगों की पर्याप्त हानि करेगी, इससे पूर्व कि सभी कुछ समाप्त हो सके।" वह मुक्त भाव से हँसता रहा, जब कि उसने यह बात कही। "वृक्ष", उसने कहा, "इस समय भी जल रहे हैं," और उसने मुझे दूर उठता एक धुँधला-सा धुँआ दिखाया। "वह कई दिनों तक तपते रहेंगे", उसने कहा, और तब बेचारे आग्लिवी की बात पर वह गम्भीर हो उठा।

नाश्ता करने के पश्चात्, कार्य करने के स्थान पर मैंने कामन की ओर जाने का निश्चय किया। रेलवे के पुल के नीचे, मैंने सैनिकों के एक समूह को देखा—मैं समझता हूँ छोटी गोल टोपियाँ लगाये, खुले बटनों

वाले, मैले लाल जाकेट, और नीली कमीजें और बूट पहिने, अस्त-व्यस्त और मूर्खवत्। उन्होंने मुझे बताया कि नहर पर किसीके जाने की आज्ञा नहीं थी, और पुल वाली सड़क की ओर देखने पर मैंने एक सन्तरी को वहाँ खड़ा पाया। कुछ समय तक मैं उन सिपाहियों से बातचीत करता रहा, मैंने उन्हें पूर्व सन्ध्या को मंगल-निवासियों के अपने दर्शन का वर्णन सुनाया। उनमें से किसीने भी मंगल-निवासियों को नहीं देखा था, एवम् उनके सम्बन्ध में उनके विचार अनिश्चित एवम् सन्दिग्ध थे, और इस कारण उन्होंने प्रश्नों का ढेर-सा लगा दिया। उन्होंने बताया कि वह नहीं जानते थे कि सेना की गति-विधि को किसने निर्धारित किया है, और उनका विचार था कि 'हार्स-गार्ड्स' में कुछ मतभेद हो गया है। एक सामान्य सेपर किसी भी साधारण सैनिक से कहीं शिक्षित होता है, और उन्होंने सूक्ष्मता के साथ सम्भावित युद्ध की विलक्षण परिस्थितियों का वर्णन किया। मैंने उनके निकट अग्नि-किरण का वर्णन किया, और वह आपस में वाद-विवाद करने लगे।

"उन तक रेंग चलो, और उन पर टूट पड़ो, मैं कहता हूँ," उनमें से एक ने कहा। "आगे बढ़ो," दूसरे ने कहा।

"उन खाइयों को उड़ा दो! तुम सदैव खाइयों की ही बात करते हो, अन्धकार में शत्रु पर आक्रमण करने वाले, तुम्हें चूहे का जन्म धारण करना था।"

"और यदि उनके गर्दनें हों ही नहीं, तो?" सहसा एक घण्टे से गम्भीर एवम् साँवले मनुष्य ने पूछा, जो पाइप पी रहा था।

मैंने अपना वर्णन पुनः दोहराया।

"आक्टेपस, मैं उसे इसी नाम से पुकारता हूँ। मनुष्यों के मछेरों की बात करो", उसने कहा।

"उन्हें क्यों न गोले से उड़ा दिया जाय, और बखेड़ा ही समाप्त कर दिया जाय," उस साँवले छोटे व्यक्ति ने कहा। "हम नहीं जानते कि वह क्या कर डालें।"

"तुम्हारे गोले कहाँ हैं ?" प्रथम वक्ता ने कहा। "समय अधिक नहीं है। शीघ्रता करो, यह लो अपना इनाम, और इसे कर डालो।"

और इसी प्रकार वह वाद-विवाद करते रहे। कुछ समय पश्चात् मैंने उन्हें छोड़ दिया, और स्टेशन की ओर अधिक से अधिक संख्या में समाचार-पत्र एकत्रित करने चल पड़ा। उस दीर्घ प्रातः एवम् दीर्घ तृतीय पहर का वर्णन करके मैं अपने पाठकों को थकाऊंगा नहीं, मैं कामन की झलक मात्र भी जानने में सफल न हो सका, कारण कि हारसेल एवम् चोबहम की चर्च-टावर भी सैनिक अधिकारियों के हाथ में थी। वह सैनिक, जिनसे मैंने सम्भाषण किया, इस विषय में अनभिज्ञ थे, और अधिकारी लोग रहस्यमय एवम् व्यस्त। सेना की उपस्थिति में मैंने नगर के लोगों को पुनः आश्वस्त होते पाया, और सर्व प्रथम मैंने मार्शल नामक तम्बाकू वाले से सुना कि कामन पर नष्ट होने वालों में उसका पुत्र भी था। हारसेल की सीमा वाले स्थानों के लोगों को सैनिकों ने अपने घरों को ताला लगाकर छोड़ देने पर विवश कर दिया था।

अत्यधिक थका-हारा, दो बजे के समीप मैं दोपहर का भोजन करने लौटा, कारण मैं बता चुका हूँ कि दिन भारी एवम् गर्म था, और शरीर को स्फूर्ति देने के निमित्त मैंने तीसरे पहर ठण्डे पानी से स्नान किया। साढ़े चार के लगभग मैं सन्ध्या का समाचार-पत्र लेने स्टेशन की ओर गया, कारण कि प्रातःकालीन पत्र ने आग्लिवी, स्टेन्ट, हैण्डरसन एवम् अन्य व्यक्तियों की मृत्यु का एक अपूर्ण-सा वर्णन दिया था। परन्तु उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे मैं नहीं जानता था। मंगल-निवासी इंच भर भी दिखाई नहीं पड़े। वह अपने खड्ड में व्यस्त प्रतीत होते थे, और वहाँ से हथौड़े की खटखट और धूम्र की धारा-सी निकलती दिखाई पड़ती रही। स्पष्ट था कि वह आगामी युद्ध के निमित्त सन्नद्ध हो रहे थे। बिना किसी सफलता के नूतन प्रयत्न दिखाये जा रहे थे, और यही समाचार-पत्रों का दृढ मत था। एक सेपर ने मुझे बताया कि ऐसा खाई के एक व्यक्ति ने एक लम्बे पोल पर एक झण्डा लहरा कर किया।

मंगल-निवासियों ने इस प्रकार की प्रगतियों पर उसी प्रकार ध्यान दिया, जैसा कि हम गाय के रंभाने को देते हैं।

मुझे स्वीकार करना चाहिये कि इस प्रकार की सैनिक तैयारियों और शस्त्रास्त्रों ने मुझे विशेष रूप से उत्तेजित किया। मेरी कल्पना युद्धमय हो उठी, और मैं दर्जनों आक्रमणकारियों को नाना विलक्षण उपायों से परास्त करने लगा; मेरे स्कूल के दिनों के युद्ध एवम् वीरता के सपने पुनः एक बार सजीव हो उठे। उस क्षण मुझे यह कठिनाई से न्यायोचित युद्ध प्रतीत हुआ। अपने ही खड्ड में, वह नितान्त असहाय प्रतीत हुए।

तीन बजे के समीप, निश्चित अन्तर से मुझे चर्टसी अथवा एडलस्टन की ओर से चलने वाली किसी तोप की ध्वनि सुनायी पड़ने लगी। मुझे पता लगा कि भीतर ही भीतर सुलगने वाले देवदार के वृक्षों को, जिसमें वह द्वितीय सिलण्डर गिरा था, तोप से उड़ाये जाने का प्रयत्न हो रहा था, ताकि गिरने वाली वह वस्तु फूटने से पूर्व ही नष्ट हो जाय। जब एक मैदानी तोप चोबहम के समीप मंगल-निवासियों के उस यंत्र को नष्ट करने पहुँची, समय लगभग पाँच के समीप था।

सन्ध्या को छः के समीप, जब कि मैं अपनी पत्नी के साथ, ग्रीष्म-कालीन आवास में, चाय के निमित्त उत्तेजित रूप से उस युद्ध के सम्बन्ध में, जो हम पर निरन्तर मँडरा रहा था, बात करता बैठा था, मैंने गोलियों की बौछार के साथ दबे हुए धमाके का शब्द सुना। उसके पश्चात् ही एक तीव्र धड़ाके की ध्वनि हमारे समीप ही सुनायी पड़ी, जिसने पृथ्वी को कँपा दिया, और बाहर लान पर निकलकर, मैंने आरिएन्टल कालिज के वृक्षों की चोटियों को एक धुआँदार लाल प्रकाश में फूटते, और उसके समीपवर्ती गिरजे की टावर को खंडहर होकर गिरते देखा। गिरजे की चोटी अदृश्य हो चुकी थी, और कालिज की छतों की पंक्ति ऐसी प्रतीत होती थी जैसे कि कोई सौ-टन वाली तोप उस पर अग्नि-वर्षा करती रही है। हमारी एक चिमनी इस प्रकार

फूटी जैसे कि उस पर कोई गोला लगा हो, और उसके खंड अरर्-अरर् की ध्वनि करते खपरैलों पर गिरे, और उनको भी साथ लेते हुए मेरे अध्ययन-कक्ष की खिड़की के समीप वाले बगीचे में गिरे, और स्थान-स्थान पर लाल-लाल ढेर लग गये ।

मैं एवम् मेरी पत्नी मूर्तिवत् खड़े रहे । तब मैंने समझा कि मेबरी पहाड़ी की चोटी भी इस समय मंगल-निवासियों की अग्नि-किरण के घेरे में होगी, जिस कारण कि मार्ग में पड़ने वाला यह कालिज साफ किया जा चुका था ।

मैंने अपनी पत्नी की भुजाओं को अपने हाथों में कस लिया, और बिना किसी शिष्टता का ध्यान रखे, उसे पकड़े बाहर सड़क की ओर भागा । तब मैंने नौकर को पुकारा और उसे बताया कि मैं स्वयं ऊपर उसके सन्दूक को लेने जा रहा हूँ, जिसकी वह रट लगाये हुए थी ।

"शायद हम यहाँ नहीं ठहर सकते," मैंने कहा, और जैसे ही मैं बोला, एक क्षण के लिए कामन से पुनः बन्दूक चलने की ध्वनियाँ आईं ।

"परन्तु हम जायेंगे कहाँ ?" मेरी पत्नी ने भयपूर्ण स्वर में कहा ।

मैंने सोचा, और मैं किंकर्तव्य-विमूढ़-सा हो गया । तब मुझे लैंदर-हैड पर रहने वाले अपने चचेरे भाइयों की याद आई ।

"लैदरहैड !" मैं उस आकस्मिक कोलाहल में पुकार उठा ।

उसने मेरी ओर से मुड़कर पहाड़ी के ढाल की ओर देखा । आश्चर्य से विमूढ़-से लोग, अपने घरों से निकले चले आ रहे थे ।

"हम लैदरहैड किस प्रकार जायेंगे ?" उसने पूछा ।

पहाड़ी के नीचे की ओर, मैंने घुड़-सवारों के एक झुंड को, रेल के पुल के नीचे दौड़ते देखा, तीन ओरिएन्टल कालिज के खुले फाटकों के सामने दौड़ रहे थे, दो घोड़ों से उतरकर एक मकान से दूसरे की ओर दौड़ रहे थे । जलते हुए वृक्षों की चोटियों से आने वाले धुंए के मध्य,

चमचमाता सूर्य रक्त वर्ण-सा प्रतीत हो रहा था, और प्रत्येक वस्तु पर एक अपरिचित-सा भयंकर प्रकाश डाल रहा था।

"यहाँ ठहरो," मैंने कहा, "तुम यहाँ सुरक्षित हो," और मैं तुरन्त ही धब्बेदार कुत्ते को लेने के निमित्त दौड़ा, कारण कि मुझे पता था कि जमींदार के पास एक घोड़ा और एक कुत्ता-गाड़ी है। मैं सम्पूर्ण शक्ति से दौड़ रहा था, कारण कि मैं कल्पना कर रहा था कि किसी भी क्षण पहाड़ी के इस ओर का प्रत्येक व्यक्ति यहाँ से भागने को तत्पर होगा। मैंने उसे अपने मकान के पीछे होने वाली समस्त घटनाओं से अनभिज्ञ अपने कटघरे में पाया। मेरी ओर पीठ किये एक व्यक्ति उससे बातचीत कर रहा था।

"मुझे एक पाउंड मिलना चाहिए," उसने कहा, "और मेरे पास उसे चलाने वाला कोई नहीं है।"

अपरिचित के कन्धे पर से झाँकते हुए मैंने कहा, "मैं तुम्हें दो दूँगा।"

"किसलिये ?"

"और मैं उसे मध्य रात्रि तक लौटा लाऊँगा।"

"हे ईश्वर !" जमींदार ने कहा, "ऐसी जल्दी क्या है ? मैं अपने सूअर का एक भाग उसे बेच रहा हूँ। दो पाउंड, और तुम उसे वापिस ले जाओगे ? क्या समाचार है ?"

मैंने शीघ्रता से उसे बताया कि मैं अपना मकान छोड़ रहा हूँ, और इस प्रकार मैंने कुत्ता-गाड़ी प्राप्त कर ली। उस समय मुझे ऐसा नहीं प्रतीत हुआ कि जमींदार को भी इतना शीघ्र अपना मकान छोड़ना होगा। मैंने तुरन्त ही गाड़ी प्राप्त करने की सावधानी की, और तब उसे लेकर सड़क के ढाल पर शीघ्रता से भागा एवं उसे अपने नौकर और पत्नी की देख-रेख में छोड़कर अपने घर में भागा, और अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को बांधने लगा। मकान के नीचे के 'बीच' वृक्ष जल रहे थे, जिस समय कि मैं यहाँ यह सब कर रहा था, और सड़क के ऊपर के

रेलिंग लाल हो रहे थे। जब मैं इस कार्य में संलग्न था, एक घुड़-सवार पैदल भागता आया। वह प्रत्येक मकान में जाकर लोगों को मकान छोड़ने की चेतावनी दे रहा था। एक मेजपोश में अपने सामान को लपेटे, जब मैं अपने सामने के द्वार पर बाहर निकला, वह लौटकर जा रहा था। मैं पीछे से चिल्लाया :

"क्या समाचार है ?"

वह मुड़ा; मेरी ओर घूरता रहा, और चिंग्घाड़ मारकर किसी रकाबी के ढ़कने के समान वस्तु में रेंगकर निकलने वाली किसी वस्तु के सम्बन्ध में कहता हुआ, चोटी पर बने मकान के द्वार की ओर भागा। आकस्मिक रूप में उठने वाले धुएँ के एक पिंड ने उसे क्षणमात्र के लिये दृष्टि से ओझल कर दिया। मैं अपने पड़ोसी के द्वार की ओर भागा, और स्वयं को पुनः आश्वस्त करने के निमित्त मैंने द्वार खटखटाया, यद्यपि मैं जानता था कि वह और उसकी पत्नी लंदन को जा चुके हैं, और अपने मकान का ताला लगा गये हैं। अपने वचन के अनुसार मैं पुनः अपने सन्दूक को लेने भीतर गया, उसे बाहर लाया, और उसे उसके समीप ही गाड़ी के किनारे पर रख दिया, और तब लगाम पकड़, मैं अपनी पत्नी के समीप वाली कोचवान की सीट पर बैठ गया। और दूसरे क्षण, धुएँ और कोलाहल से दूर, हम मेबरी के दूसरी ओर वाले ढ़ाल पर शीघ्र गति से पुराने वोकिंग की ओर चले जा रहे थे।

सामने मैदान सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहा था। सड़क के दोनों ओर गेहूँ के खेत थे, और हिलते हुए चिह्न वाली मेबरी की सराय। मैंने डाक्टर की गाड़ी को अपने आगे देखा। पहाड़ी के तले पर पहुँच मैंने उस पहाड़ी को देखने को दृष्टि फेरी, जिसे हम छोड़ रहे थे। काले धुएँ की मोटी-मोटी धाराएँ, जिनमें बीच-बीच में अग्नि की लाल रेखाएँ चमक उठती थीं, शान्त वायु में ऊपर को उठ रही थीं, और पूर्व की ओर के वृक्षों की हरी-भरी चोटियों पर गहन काली छायाएँ डाल रही थीं। धुआँ शीघ्र ही पूर्व और पश्चिम तक फैल गया, पूर्व की ओर बाइफ्लीट

के देवदार वन, और पश्चिम में वोकिंग तक । सड़क पर हमारी ओर दौड़ने वाले लोगों की छायाएँ स्थान-स्थान पर थीं। अब अत्यन्त अस्पष्ट परन्तु गर्म एवं शान्त वायु के बीच कोई भी, मशीन-गन की हर-हर की ध्वनि, जो अब शान्त हो चुकी थी, और बीच-बीच में राइफल्स की ध्वनियाँ स्पष्ट सुन सकता था। स्पष्ट था कि मंगल-निवासी अपनी अग्नि-किरण के घेरे में आने वाली प्रत्येक वस्तु को भस्मीभूत कर रहे थे।

मैं एक कुशल कोचवान नहीं हूँ, और मुझे तुरन्त ही अपना ध्यान घोड़े की ओर मोड़ना था। जब मैंने पुनः पीछे फिरकर देखा, दूसरी पहाड़ी ने उस काले धुएँ को छिपा लिया था। मैंने घोड़े को कोड़ा मारा और वोकिंग तक उसकी लगाम ढ़ीली छोड़ दी; हमारे और उस हलचल के मध्य धूल छा गयी। डाक्टर की गाड़ी को मैंने वोकिंग और सैन्ड के मध्य ही पीछे छोड़ दिया।

१०
तूफान में

लैदरहैड मेबरी से बारह मील के लगभग है। पायरफोर्ड का वातावरण भूसे की गन्ध एवं रसीली झाड़ियों वाले चरागाह से परिपूर्ण था, और दोनों ओर की झाड़ियाँ गुलाब के फूलों से सुशोभित थीं। गोले छूटने की वह भीषण ध्वनियाँ, जो हमारे मेबरी से प्रस्थान करने के समय हो रही थीं, सहसा एवं आकस्मिक रूप में समाप्त हो चुकी थीं, और अपने पीछे छोड़ गयी थीं शान्त एवं निस्तब्धता से भरी हुई सन्ध्या। बिना किसी दुर्घटना के हम नौ बजे के समीप लैदरहैड पहुँचे एवं घोड़े को एक

घण्टे का विश्राम मिल सका, और इसी मध्य मैंने अपना भोजन किया, और अपनी पत्नी को उनकी देख-रेख में सौंप दिया।

मार्ग भर मेरी पत्नी उत्सुकतापूर्ण रूप में निःशब्द हो रही थी, और प्रतीत होता था कि वह दुर्घटना के आभास से व्यथित थी, मैंने उसे पुनः आश्वस्त करने के निमित्त बातचीत की, और यह संकेत करते हुए कि अपने भारीपन के कारण मंगल-निवासी उस खड्ड में जकड़-से गये हैं, और अधिक जो कुछ भी वह कर सकते हैं वह यह है कि वह खड्ड से बाहर रेंगने का प्रयत्न करें। परन्तु उसने केवल हाँ या ना में ही उत्तर दिये। यदि सरायवाले से मेरे वचन का प्रश्न न होता, तो मैं समझता हूँ कि उसने मुझसे लैदरहैड में ही रुकने को विवश किया होता। काश! ऐसा होता। मुझे स्मरण है कि उसका सुन्दर मुख वियोग के समय श्वेत दीख रहा था।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं दिन भर उत्तेजित रहा था। युद्ध-ज्वर के समान ही कोई भावना, जो कभी-कभी किसी जाति को प्रभावित करती है, मेरे रक्त में घुल-मिल चुकी थी, और अपने हृदय में मुझे उसी रात्रि मेबरी लौटने में कोई क्षोभ नहीं था। मुझे यह भी भय था कि तोपों की उस अन्तिम ध्वनि ने, जो मैंने सुनी थी, हमारे आक्रमण-कारियों को सदैव के लिये ही नष्ट न कर डाला हो। अपनी दशा का समग्र वर्णन मैं यह कह कर ही कर सकता हूँ कि मैं पुनः मृत्यु के मुख में जाने की कामना कर रहा था।

जब मैं लौटने को तत्पर हुआ, समय ग्यारह के समीप था। अपने बन्धुओं के प्रकाश-पूर्ण घरों से आने के कारण यह रात्रि मेरे निकट अप्रत्याशित रूप से अंधेरी थी, और वह दिन के समान गर्म थी। ऊपर आकाश में बादल द्रुत गति से उड़ रहे थे, यद्यपि हमारे चारों ओर की झाड़ियों एवं वृक्षों में लेशमात्र भी कंपन न था। मेरे बन्धुओं के नौकरों ने दोनों लैम्पों को प्रकाशित कर दिया। प्रसन्नता की बात यह थी कि मैं मार्ग से पूर्णतः परिचित था। मेरी पत्नी प्रवेश द्वार के प्रका-

शित मार्ग में उस समय तक खड़ी रही, जब तक कि मैं उस कुत्ता-गाड़ी में कूद न पड़ा। तब सहसा, वह मुड़ी, और मेरे बन्धुओं को मुझे विदाई देते खड़ा छोड़ भीतर की ओर चली गयी।

प्रथम मैंने अपनी पत्नी के भय-पूर्ण विचारों के स्पर्श से अपने मन को दुर्बल पाया। परन्तु शीघ्र ही मेरे विचार मंगल-निवासियों की ओर मुड़ गये। उस समय मैं सन्ध्या की गोलाबारी के घटना-क्रम से अनभिज्ञ-सा था। यहाँ तक कि मैं उन परिस्थितियों से भी नितान्त अपरिचित था, जिन्होंने उस संघर्ष को जन्म दिया था। मैं आकहम के समीप आया (कारण कि मेरे लौटने का मार्ग यही था, और सैन्ड एवं पुराने वोकिंग के द्वारा नहीं)। मैंने एक रक्त वर्ण प्रकाश को देखा, जो जैसे-जैसे कि मैं समीप आया, आकाश की ओर फैलता प्रतीत हुआ। एकत्रित होने वाले भीषण तूफान के बादल काले एवं लाल धुएँ में घुल-मिल रहे थे।

रिपले स्ट्रीट निर्जन हो चुकी थी, और यदा-कदा किसी प्रकाशित खिड़की के अतिरिक्त यहाँ जीवन का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था, परन्तु पायरफोर्ड के कोने पर मैं एक दुर्घटना से बाल-बाल बचा, जहाँ मेरी ओर मुँह किये मनुष्यों का एक समूह खड़ा था। जब मैं उनके सामने से निकला, उन्होंने कुछ भी नहीं कहा, मैं नहीं जानता कि पहाड़ी के उस पार होने वाली घटनाओं का उन्हें कहाँ तक ज्ञान था, और न मैं यह ही जानता था कि वह शान्त मकान जिन्हें मैं अपने पीछे छोड़ता आ रहा था, सुरक्षित निद्रा में मग्न थे, परित्यक्त थे अथवा जन-शून्य थे अथवा भय-त्रस्त रूप से रात्रि की भयानकता का अनुमान लगा रहे थे।

रिपले से, उस समय तक जब तक कि मैं पायरफोर्ड को पार नहीं कर आया, वे की घाटी में था, और वह लाल प्रकाश मेरी दृष्टि से ओझल हो चुका था। पायरफोर्ड चर्च के बाद जब मैं उस छोटी-सी पहाड़ी पर चढ़ने लगा, वह तीव्र प्रकाश पुनः दृष्टिगोचर होने लगा, और मेरे चारों ओर वृक्ष झंझा की प्रथम सूचना से काँपते-से दिखाई पड़े। तब मैंने अपने पीछे पायरफोर्ड-चर्च से मध्य रात्रि के घण्टों का रव सुना, और

तब मेबरी पहाड़ी का छाया-चित्र सामने दृष्टिगोचर होने लगा, जिसके वृक्षों की चोटियाँ एवं मकानों की छतें उस लाल प्रकाश की पृष्ठ-छाया में काली दिखाई दे रही थीं।

जैसे ही मैंने इस दृश्य को देखा, एक भयानक हरित् वर्ण प्रकाश मेरे सामने की सड़क पर दृश्य मान हो उठा। मैंने लगाम पर किसी झटके का आभास पाया। मैंने देखा कि कि द्रुत गति से उड़ते हुए उन बादलों को एक हरित वर्ण अग्नि सहसा चमक कर चीरती हुई मेरी बायीं ओर गिरी। यह तीसरा टूटता तारा था !

इस चमक के तुरन्त बाद ही, एवं चकाचौंध कर देने वाले तीव्र श्वेत प्रकाश की विभिन्नता के साथ, एकत्रित होते तूफान की प्रथम बिजली कौंध उठी, और किसी राकेट के समान ऊपर आकाश में मेघों का वज्र-घोष सुनायी पड़ा। घोड़े ने लगाम को दाँतों से जकड़ लिया और स्थिर हो गया।

एक ढलुवाँ मार्ग मेबरी पहाड़ी के तल की ओर जाता है, और मैं इसी मार्ग से नीचे की ओर उतरा। एक वार जब बिजली कौंधनी प्रारम्भ हो चुकी, वह निरन्तर चमकती ही रही, जैसा कि मैंने कभी नहीं देखा था। मेघों की गड़गड़ाहट एक दूसरी ध्वनि का अनुसरण करने लगी, जिसमें एक दूसरी प्रकार की ध्वनि भी सम्मिलित थी, और वह अधिकतम रूप में सामान्य विस्फोट के स्थान में किसी विशाल बिजली की मशीन के चलने की ध्वनि-सी प्रतीत होती थी। चमचमाती वह कौंध अन्धा एवं अव्यवस्थित कर देने वाली थी, और जब मैं ढाल से नीचे की ओर आ रहा था, ओलों की एक क्षीण बौछार का अनुभव मैंने अपने चेहरे पर किया।

प्रथम मैंने अपने समक्ष सड़क के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु पर ध्यान नहीं दिया, और तब सहसा मेरा ध्यान मेबरी पहाड़ी के दूसरे ढाल पर द्रुत गति से चलती किसी वस्तु पर केन्द्रित हो गया। पहले मैंने उसे किसी मकान की गीली छत समझा, परन्तु एक के पश्चात् दूसरी चमक

ने उसे तीव्र गति से लुढ़कते हुए प्रदर्शित किया। यह चकित कर देने वाला दृश्य था—एक क्षण संभ्रमित कर देने वाला अन्धकार, और दूसरे ही क्षण दिन के समान प्रकाशपूर्ण चमक में दीख पड़ने वाली चोटी के अनाथालय की इमारतें, देवदार वृक्षों की हरी-भरी चोटियाँ, और फिर यह समस्या का रूप धारण कर लेने वाली यह वस्तु स्पष्ट, तीव्र एवं प्रकाशमय हो उठी।

और यह वस्तु जो मैंने देखी! मैं उसका वर्णन किस प्रकार करूँ? एक दैत्यकार तिपाई, जो आकार में अनेक मकानों से भी ऊँची थी और जो छोटे देवदार वृक्षों को लाँघती-सी तथा मार्ग में आने वालों को उखाड़ फेंकती चल रही थी; चमकदार धातु का चलता हुआ एक विशाल इंजन, जो अब झाड़ियों के ऊपर चल रहा था, उसके ही जुड़े हुए भाग के समान लोहे की रस्सियाँ नीचे लटक रही थीं एवं उसके चलने की तीव्र घड़घड़ाहट की ध्वनि बादलों की गर्जना में मिल जाती थी। बिजली कौंधी और वह स्पष्ट दिखाई पड़ी, एक पैर पर झुकी-सी और शेष दोनों पैर हवा में उठाये, एक क्षण दिखाई देने और उसी क्षण अन्तर्धान हो जाने के लिये, और बिजली के पुनः कौंधने पर वह सौ गज समीप आ चुकी थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी दूध रखने के स्टूल को उठा कर बलपूर्वक पृथ्वी पर गेंद की भाँति दे मारा जाय? ऐसा ही भाव था जो वह बिजली की कौंधें प्रदान करती थीं। परन्तु दूध वाले किसी स्टूल के स्थान पर किसी ऐसी तिपाई की कल्पना करें जिसमें कोई विशाल यंत्र लगा हो।

तब मेरे सामने के देवदार वृक्ष सहसा इस प्रकार विभाजित हो गये, जिस प्रकार कि कड़कीले सरकंडे हो जाते हैं जब कोई मनुष्य उनके बीच से निकलता है। वह चटककर टूट रहे और नीचे गिर रहे थे, और एक दूसरी वैसी ही तिपाई दृष्टि पड़ी, और प्रतीत हुआ जैसे कि वह शीघ्रता से मेरी ओर झपटती आ रही हो और मैं सरपट गति से उसीकी ओर भागा जा रहा था। दूसरी तिपाई को देखते ही मेरी नाड़ियों का रक्त

शिथिल हो गया। पुनः देखने के लिये न रुकते हुए, मैंने बलपूर्वक घोड़े की गर्दन को दायीं ओर मोड़ा, और दूसरे ही क्षण, कुत्ता-गाड़ी घोड़े के ऊपर उछली, गाड़ी का बम तीव्र ध्वनि के साथ टूट गया, और एक ओर को उछलकर, मैं एक उथले पानी के ताल में गिर पड़ा।

मैं तुरन्त ही रेंगकर बाहर निकल आया, और एक भटकैया झाड़ी के गुच्छे को पकड़कर खड़ा रहा, मेरे पैर इस समय भी पानी में ही थे। घोड़ा निचेष्ट पड़ा था (उसकी गर्दन टूट गयी थी, बेचारा पशु !) और बिजली की कौंध से मैंने उल्टी हुई कुत्ता-गाड़ी की काली छाया और धूमिल रूप से इस समय भी धीरे-धीरे हिलते पहियों को देखा। दूसरे ही क्षण, वह विशाल यंत्र मुझे लांघता पायरफोर्ड की ओर निकल गया।

समीप से अवलोकन करने पर वह वस्तु अविश्वसनीय रूप में विलक्षण थी, कारण कि वह केवल चलती हुई कोई जड़ मशीन ही नहीं थी। निस्सन्देह वह एक मशीन ही थी, जिसकी धातु गतिक्रम में ध्वनि करती एवं जिसके विलक्षण आकार से दीर्घ एवं चमचमाते स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग (जिसमें से एक ने एक छोटे-से देवदार वृक्ष को जकड़ लिया था) लटक रहे, और खड़खड़ाहट की ध्वनि कर रहे थे। जब वह कुचलती एवं लाँघती हुई आगे बढ़ती, वह अपना मार्ग निकाल लेती थी, और पीतल का बना उसका वह ढकना इधर-उधर हो रहा था और निश्चित था कि किसी के संकेत पर चल रहा है, जो उसके द्वारा चारों ओर देख रहा है। इस मशीन के मुख्य भाग के पीछे, किसी मछुए की विशाल बास्केट के समान श्वेत धातु की कोई वस्तु थी, और हरित वर्ण धूम्र के पिण्ड उसके जोड़ों से निकल रहे थे, जब कि वह मेरे ऊपर से निकला और दूसरे ही क्षण वह जा चुका था।

बिजली की घटती-बढ़ती कौंध के कारण उस समय मैं इतना ही देख पाया, कारण कि कभी चमक चकाचौंध करने वाली होती, और कभी गहन काली छायाएँ।

जाते समय वह विजय-सूचक ऐसे नाद को जन्म दे रहा था, जिसने

बिजली की गर्जना को दबा दिया, 'एलू एलू' की ध्वनि, और दूसरे ही क्षण वह अपने साथी के समीप पहुँच गया, और डेढ़ मील के अन्तर पर वह मैदान में किसी वस्तु पर झुक रहा था। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि मैदान की यह वस्तु उन दस सिलण्डरों में से तीसरी थी, जो उन्होंने हमारे लोक पर मंगल-लोक से फेंके थे।

उस क्षण में वर्षा और अन्धकार में वहाँ पड़ा, रह-रहकर चमकने वाली बिजली के प्रकाश में झाड़ियों के ऊपर धातु के इन दैत्याकार जीवों को गतिशील देखता रहा। इस समय ओलों की एक हल्की बौछार आती, और बन्द होती थी, यह आकृतियाँ छिपती और फिर स्पष्ट होती दीख पड़ीं। कभी-कभी बिजली की चमक पर्याप्त काल के लिये बन्द हो जाती और तब यह अन्धकार में खो जाती।

मैं ऊपर ओलों से तर हो चुका था, और नीचे से पोखर के पानी से। यह उस समय से पूर्व की बात है, जब मेरा जड़ आश्चर्य मुझे पानी से निकलकर किसी सूखे स्थान तक आ पाने का संघर्ष करने को प्रोत्साहित करता, अथवा सर पर मँडराने वाले इस संकट के संबंध में विचार करने का अवसर प्रदान करता।

मुझसे कुछ ही दूर, सार्वजनिक प्रयोग के निमित्त बनी लकड़ी की एक कमरे वाली झोंपड़ी थी, जो चारों ओर से आलू के पौदों से घिरी हुई थी। अन्त में मैंने प्रयत्न किया, और प्रत्येक सहारे की वस्तु को पकड़ता, मैं इसकी ओर दौड़ा। मैंने द्वार खटखटाया, परन्तु मैं भीतर के लोगों का ध्यान आकर्षित न कर पाया (यदि भीतर कुछ लोग थे भी), और कुछ समय पश्चात् ऐसा करना रोककर, और मार्ग को पर्याप्त रूप में एक खाई के द्वारा पूरा कर, एवं इन दैत्याकार मशीनों द्वारा न देखे जाने में सफल होकर, मेबरी के देवदार वृक्षों की ओर अग्रसर हुआ।

उस खाई की आड़ में, भीगा और अब कँपकँपाता, मैं अपने घर की ओर बढ़ा, पगडण्डी को पाने के निमित्त मैं वृक्षों के सहारे-सहारे आगे बढ़ा। जंगल का यह भाग नितान्त अन्धकारमय था, कारण कि बिजली

की चमक अब केवल कभी-कभी ही रह गयी थी, और वह ओले, जो मूसलाधार बरस रहे थे, अब वृक्षों के घने कुंजों से ढेर का ढेर गिर पड़ते थे।

यदि मैं इन समस्त बातों का, जिन्हें मैंने देखा, पूरा अर्थ समझ गया होता, मैंने तुरन्त ही अपना मार्ग बाइफ्लीट होते हुए स्ट्रीट चोबहम की ओर चुना होता, और इसी प्रकार मैं लैदरहैड में अपनी पत्नी के पास लौट जाता। परन्तु उस रात मेरी अपनी ही विलक्षणतम बातों, मेरी दयनीय शारीरिक स्थिति ने मुझे ऐसा करने से रोका, कारण कि मैं अनेक आघात खा चुका था, थका था, भीगा था, और तूफान मुझे बहरा एवं अन्धा कर चुका था।

मुझे अपने घर जाने का धूमिल-सा विचार था, और यही मेरा उद्देश्य था। वृक्षों के मध्य लड़खड़ाता मैं एक खाई में गिर पड़ा, और लकड़ी से टकरा कर मेरे घुटने चोट खा गये, और अन्त में पानी में छप-छपाता, मैं 'कालिज आर्म्स' से निकलने वाली एक सड़क पर निकला। छपछपाहट मैं इस निमित्त कहता हूँ कि तूफान की वर्षा में पहाड़ी की मिट्टी नीचे कीचड़ के रूप में बह रही थी। वहाँ अन्धकार में एक मनुष्य मुझसे टकरा गया, और लुढ़कता हुआ मैं पीछे जा गिरा।

भय से वह चीत्कार कर उठा, इधर-उधर उछलता रहा, और इससे पूर्व कि संयमित हो मैं उससे कुछ कह सकता, वह भाग खड़ा हुआ। तूफान का प्रभाव इस स्थान पर इतना तीव्र रह चुका था कि पहाड़ी पर ऊपर चढ़ सकना मेरे निकट कठिनतम काम हो गया। मैं बायीं ओर वाले बाड़ के सहारे-सहारे ऊपर चला, और उसीके सहारे मार्ग निकालता रहा।

सिरे के समीप, मैं किसी कोमल वस्तु से टकराया, और बिजली की चमक में मैंने देखा कि काली बनात एवं जूतों का जोड़ा है। इससे पूर्व कि मैं स्पष्ट रूप में देख पाता कि वह मनुष्य किस अवस्था में पड़ा है, चमक समाप्त हो चुकी थी। उसके समीप खड़ा, मैं दूसरी चमक की

प्रतीक्षा करता रहा। जब बिजली पुनः कौंधी, मैंने देखा कि वह एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था, जिसके वस्त्र स्वच्छ किन्तु सादा थे, और वह बाड़ के समीप ढेर-सा पड़ा था, जैसे कि वह प्रबल प्रहार द्वारा उठाकर उस पर पटका गया हो।

अपने उस संकोच एवं भय पर विजय पाकर, जो ऐसे मनुष्य के निकट स्वाभाविक है, जिसने कभी किसी मृत शरीर का स्पर्श न किया हो, मैं झुका, और मैंने उसके हृदय की धड़कन देखने के निमित्त उसे उलट दिया। वह पूर्णतः निष्प्राण था। स्पष्ट था कि उसकी गर्दन टूट चुकी थी। बिजली तीसरी बार कौंधी, और उसका चेहरा मेरी ओर को झुका। मैं स्तम्भित रह गया। यह धब्बेदार कुत्ते वाला जमींदार था, जिसकी गाड़ी मैंने ली थी।

सावधानीपूर्वक उसे लाँघता मैं ऊपर की ओर बढ़ा। पुलिस-स्टेशन और 'कालिज आर्म्स' होता हुआ, मैं अपने घर की ओर चला। पहाड़ी की ओर कुछ जलता दिखाई नहीं पड़ रहा था, यद्यपि कामन की ओर से इस समय भी तीव्र लाल प्रकाश एवं लाल धुएँ का विशाल समूह था, जो गिरते हुए ओलों से टकरा रहा था। बिजली की कौंधों में, जहाँ तक मैं देख सका, मेरे चारों ओर के मकान अधिकांश रूप में सुरक्षित थे। 'कालिज आर्म्स' से टूटा हुआ एक ढेर सड़क पर पड़ा था।

मेबरी ब्रिज की ओर जाने वाली सड़क पर बोलने और चलने की ध्वनियाँ आ रही थीं, परन्तु उनको पुकारने अथवा उन तक जाने का साहस मेरे पास न था। सिटकनी खोलकर मैं भीतर घुसा, मैंने द्वार बन्द किया, और भीतर का बोल्ट गिराकर ताला लगाया, और तब जीने की सीढ़ियों तक स्वयं को घसीटकर, मैं बैठ गया। मेरी कल्पना उन धातुओं के दैत्यों एवं बाड़ों से टकराये उस मृत शरीर से पूर्ण थी।

प्रचण्ड रूप से कँपकँपाते मैं पीठ को दीवाल से टिकाकर जीने का सहारा लिए बैठा रहा।

११

खिड़की पर

मैं पहिले ही बता चुका हूँ कि मेरी भावनाओं की उत्तेजित अवस्था स्वयं को नष्ट कर डालने की कुशल गति जानती है। कुछ समय पश्चात् मैंने पाया कि मैं सर्दी खा चुका था, और भीगा हुआ था एवं मेरे जीने के कालीन पर मेरे आस-पास पानी जमा हो गया है। यंत्र की भाँति मैं उठ खड़ा हुआ, और रसोई-घर में जाकर मैंने कुछ व्हिस्की पी, और तब मुझे कपड़े बदल डालने की प्रेरणा हुई।

जब मैं ऐसा कर चुका, मैं ऊपर अपने अध्ययन कक्ष में गया, परन्तु मैंने ऐसा क्यों किया, मैं नहीं जानता। मेरे अध्ययन-कक्ष की खिड़की पेड़ों एवं हारसेल कामन की रेलवे की ओर खुलती है। हमारे पलायन की हड़बड़ी में यह खिड़की खुली रह गयी थी। मार्ग अन्धकार से भरा था, और खिड़की से दृश्यमान उस स्थान को छोड़कर; कक्ष का वह भाग अभेद्य अन्धकार में डूबा हुआ था। मैं द्वार के बीच में ही रुक गया!

तूफान समाप्त हो चुका था। ओरिएन्टल कालिज की मीनारें और देवदार के वृक्ष नष्ट हो चुके थे, और पर्याप्त दूरी पर एक तीव्र लाल प्रकाश से प्रकाशित, बालू के गड्ढों वाला कामन दिखाई पड़ रहा था। प्रकाश के परे काली आकृतियाँ, विलक्षण एवं विचित्र, शीघ्रता के साथ इधर-उधर चल फिर रही थीं।

ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि उस ओर का समस्त प्रदेश जल रहा था—एक विशाल पहाड़ी चोटी, जिसमें अग्नि की अनेक जिह्वाएँ लप-लपा रही थीं, जो मन्द होते तूफान के कारण इधर-उधर होती एवं

पुकारती प्रतीत होती थीं, और ऊपर अन्तरिक्ष के वाष्पपूर्ण बादलों को रक्त-रंजित कर रही थीं। थोड़े-थोड़े अन्तर पर किसी समीपवर्ती प्रचण्ड अग्नि से उठता हुआ धुएँ का कोई विशाल स्तूप खिड़की के सामने से निकलता और मंगल-निवासियों की उन आकृतियों को दृष्टि-विन्दु से छिपा लेता। मैं नहीं देख सकता कि वह क्या कर रहे थे, और न उनकी स्पष्ट आकृति ही दिखाई पड़ती, और न मैं उन काली आकृतियों को पहिचान पा रहा था, जिन पर वह कार्यशील थे। न मैं समीपवर्ती अग्नि को ही देख पा रहा था, यद्यपि उसकी छायाएँ अध्ययन-कक्ष की दीवालों और छत पर नृत्य कर रही थीं। रालमय पदार्थ के जलने की एक तीव्र टंकार वातावरण में थी।

बिना कोई शब्द किये, मैंने द्वार बन्द कर दिया और खिड़की तक रेंग आया। जब मैंने ऐसा किया, मेरी दृष्टि का पसार एक ओर वोकिंग स्टेशन के समीपवर्ती मकानों, और दूसरी ओर बाइफ्लीट के भस्मीभूत देवदार वृक्षों तक हो गया। पहाड़ी के समीप एक प्रकाश-सा था, और मेबरी सड़क एवं स्टेशन के पास वाली गलियों के मकानों के खण्डहर चमचमा रहे थे। रेलवे के ऊपर के प्रकाश ने प्रथम तो मुझे चक्कर में डाल दिया, वहाँ एक विशाल ढेर और तीव्र चमक थी, और उसकी दाहिनी ओर आयताकार वस्तुओं की पंक्ति-सी। तब मैंने देखा कि यह नष्ट हुई गाड़ी थी, जिसका अगला भाग अग्नि से नष्ट कर दिया गया था, और पिछला अभी भी पटरी पर था।

प्रकाश के इन तीन मुख्य केन्द्रों के मध्य, मकान, गाड़ियाँ, और चोबहम की ओर के जलते गाँव असंयत रूप से फैले हुए अन्धकार के प्रदेश से प्रतीत होते थे, जो स्थान-स्थान पर धूमिल रूप से सुलगती और धुआँ देती भूमि से भग्न होते-से दिखाई पड़ते थे। यह अद्भुततम दृश्य था—शून्य अन्धकार एवं जलती अग्नि। इसने, अन्य किसी वस्तु की अपेक्षा, मेरे मन में रात्रि को दिखाई पड़ने वाले कुम्हारों के अलाव की स्मृति को सजीव कर दिया। पहिले मैं मनुष्यों को भिन्न रूप में न देख

सका, यद्यपि मैं विशेष रूप से उन्हें ही खोज निकालने को प्रयत्नशील था। बाद में मैंने वोकिंग स्टेशन के प्रकाश में पंक्ति के परे एक के पश्चात् दूसरे को शीघ्रतापूर्वक चलते देखा।

और क्या अग्नि में अस्त-व्यस्त यह छोटा-सा संसार था, जिसमें मैं वर्षों से सुरक्षित रूप से रह रहा था। पिछले सात घन्टों में क्या हो चुका है, मैं नहीं जानता था, और साथ ही, यद्यपि मैं अनुमान करने का प्रयत्न कर रहा था, मैं दैत्याकार उन मशीनों एवं सिलण्डर से निकलने वाले उन मन्द जीवों के, जिन्हें मैंने देखा था, पारस्परिक सम्बन्धों से भी अनभिज्ञ था। एक अनूठी अकर्तृक भावना से, मैंने अपनी डेस्क-चेयर को खिड़की की ओर घुमा दिया, और बैठकर अतल अन्धकार में डूबे उस प्रदेश, और विशेष रूप से बालू के उन गड्ढों के ऊपर प्रकाश में शीघ्रता से इधर से उधर जातीं, उन दैत्याकार वस्तुओं को देख रहा था।

वह आश्चर्यजनक रूप में संलग्न थे। मैं स्वयं से प्रश्न करता रहा कि वह क्या हो सकते थे? क्या वह सबुद्ध यंत्र थे? ऐसी बात, मैं समझता था, असम्भव है। अथवा उनमें से प्रत्येक में एक मंगल-निवासी बैठा था, जो आज्ञा दे रहा था, निर्देशन कर रहा था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य का मस्तिष्क उसके शरीर में बैठकर उस पर शासन करता है? जीवन में प्रथम वार स्वयं से यह प्रश्न करने के लिए कि हमारे लौह आवरण अथवा इंजन हमसे निम्नतर जीवों को कैसे प्रतीत होते होंगे, मैं उन वस्तुओं की कल्पना मानव-संसार के यंत्रों से करने लगा।

तूफान अपने पीछे निर्मल आकाश छोड़ गया था, और जलती हुई भूमि के उठते हुए धुएँ के ऊपर, धूमिल होता हुआ, पिन की मूठ के समान मंगल का नक्षत्र पश्चिम में डूब रहा था, जब कि एक सिपाही मेरे उद्यान में आया। चहार दीवारी पर मैंने खड़खड़ाहट की ध्वनि सुनी, और उस तन्द्रा से, जो मुझ पर छा गयी थी, जाग्रत हो, मैंने नीचे झाँक-

कर देखा, और धूमिल रूप में उसे बाड़ पर चढ़ते देखा। एक दूसरे मानव के दर्शन पर मेरी जड़ता समाप्त हो गयी, और उत्सुकतापूर्वक मैं खिड़की पर से नीचे झाँका।

"शी !" मैंने फुसफुसाकर कहा।

बाड़ के समीप ही पैरों को फैलाये, सन्देह से वह रुक गया। तब वह ऊपर चढ़ आया, और लान में होता हुआ मकान के कोने की ओर बढ़ने लगा। वह झुककर सावधानी से चलने लगा।

"कौन है ?" खिड़की के नीचे खड़ा हो ऊपर की ओर देखते हुए वह फुसफुसाया।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?" मैंने पूछा।

"परमात्मा जाने।"

"क्या तुम छिपने का स्थान खोज रहे हो ?"

"हाँ, हाँ।"

"मकान में आ जाओ," मैंने कहा।

मैं नीचे गया, द्वार को खोला, और उसे भीतर करके पुनः ताला लगा दिया। मैं उसका चेहरा नहीं देख पाया। उसके सर पर हैट नहीं था, और उसके कोट के बटन खुले हुए थे।

"हे ईश्वर !" उसने कहा जैसे ही मैंने उसे भीतर खींचा।

"क्या हुआ ?" मैंने प्रश्न किया।

"क्या नहीं हुआ ?" अन्धकार में मैंने देखा कि उसने निराशा की मुद्रा बनायी। "उन्होंने हमें नष्ट कर दिया—केवल सर्वनाश," और उसने यही शब्द बार-बार दोहराये।

यंत्रवत् वह मेरे पीछे-पीछे भोजन-कक्ष तक आ पहुँचा।

"कुछ व्हिस्की लो", मैंने गिलास भरते हुए कहा।

वह उसे पी गया। तब सहसा वह मेज़ के सामने बैठ गया, उसने अपना सर हाथों में ले लिया, और भाव-जनित उत्तेजना से किसी छोटे बालक के समान रोने लगा, जब कि अपने हाल के नैराश्य को आश्चर्य-

जनक रूप में विस्मृत कर, मैं उसके समीप उस पर श्राश्चर्य करता खड़ा रहा।

पर्याप्त समय बीत गया, इससे पूर्व कि वह अपने मस्तिष्क को मेरे प्रश्नों का उत्तर देने योग्य बना सका, और तब उसने अव्यवस्थित एवं टूटे हुए उतर दिये। वह पैदल सेना का ड्राइवर था, और ड्यूटी पर सात बजे से ही आया था। उस समय कामन पर गोली चल रही थी, और कहा जा रहा था कि प्रथम आगत मंगल-निवासी किसी धातु की ढाल के आवरण में अपने दूसरे सिलण्डर की ओर रेंग रहे थे।

बाद में यही ढाल ऊपर उछलकर एक तिपाई के रूप में परिवर्तित हो गयी, और उसने प्रथम युद्ध की मशीन का रूप धारण कर लिया, जिसे मैंने देखा था। वह तोप, जिसे वह चलाकर लाया था, हारसेल के समीप लगायी गयी थी, जिससे कि वह कामन के बालू के उन गड्ढों पर निशाने लगा सके, और उसके आगमन ने युद्ध की सम्भावना प्रकट की। जैसे ही तोपची लोग पिछले भाग में गये, उसके घोड़े का पैर किसी खन्दक में जा पड़ा, गाड़ी लुढ़क पड़ी, और वह गड्ढे में गिर पड़ा। उसी क्षण उसके पीछे की तोप गरज उठी, बारूद में विस्फोट हो गया, और उसके चारों ओर आग ही आग हो उठी, और उसने स्वयं को जले हुए मनुष्यों और घोड़ों के ढेर के नीचे पड़े पाया।

"मैं निर्जीव-सा पड़ा रहा," उसने कहा, "जड़ बुद्धि-सा, और मेरे सामने ऊँचाई पर एक घोड़े का मृत शरीर था। हम नष्ट हो चुके हैं। और वह गन्ध ! हे ईश्वर ! भुने माँस की भांति ! घोड़े के गिरने से मेरी पीठ पर आघात लगा, और स्वस्थ हो पाने तक, मैं वहीं पड़ा रहा। एक परेड की भाँति यह सब एक मिनिट में समाप्त हो गया—और तब लड़-खड़ाहट, घड़घड़ाहट एवं चाबुक की फटकार !"

"पूर्णत : नष्ट !" उसने कहा।

बहुत देर तक मृत घोड़े के शरीर के नीचे, किसी कीड़े की भाँति कामन को झाँकता-सा पड़ा रहा। एक डिम्ब-युद्ध के रूप में, केवल विनष्ट

होने के निमित्त ही, सैनिकों ने उन पर झपटने का प्रयत्न किया। तब वह दैत्य पैरों पर खड़ा हो चुका था, और उसने कामन पर भागते हुए लोगों के सर पर सरलता के साथ इधर से उधर चलना प्रारम्भ कर दिया, जिसका ढकनेदार सर किसी टोपी से ढके मानव सर के समान इधर-उधर घूम रहा था। हाथ के समान की कोई वस्तु किसी धातु के केस को पकड़े थी, जिससे हरित वर्ण की चिन्गारियाँ फूट रही थीं, और इस फनेल से अग्नि-किरण निकल रही थीं।

कुछ ही मिनटों में जहाँ तक कि वह सैनिक देख सका, कामन पर कोई भी जीवित वस्तु नहीं थी, और प्रत्येक झाड़ी एवं वृक्ष, जो उस समय तक भस्म होने से बच चुका था, जलने लगा। 'हुसार' सड़क पर मोड़ से परे थे, और वह उन्हें न देख सका। कुछ समय तक वह मैक्सिम-बन्दूकों की गड़गड़ाहट सुनता रहा, और तब सब कुछ शान्त हो गया। उस दैत्य ने कुछ समय तक वोकिंग स्टेशन एवं उसके समीपवर्ती मकानों को सुरक्षित रहने दिया, परन्तु क्षणमात्र में अग्नि-किरण उस पर पड़ीं, और समस्त नगर प्रज्वलित खण्डहरों में परिवर्तित हो गया। तब उस वस्तु ने अग्नि-किरण को बन्द कर दिया, और सैनिक दस्ते की ओर पीठ फेर कर, डगमगाते हुए सुदूर देवदार वृक्षों की ओर चलने लगा, जो द्वितीय सिलण्डर को घेरे हुए थे। जैसे ही उसने ऐसा किया, एक दूसरा चमचमाता टाइटन (दैत्य) खड्ड के ऊपर निकलता दिखाई पड़ा।

दूसरे दैत्य ने प्रथम का अनुसरण किया, और यह देखकर सैनिकों ने भस्ममय उन झाड़ियों को सतकर्ता पूर्वक रेंगते हुए हारसेल की ओर चलना प्रारम्भ कर दिया। सौभाग्य से सड़क के सहारे वाली एक खाई के द्वारा वह स्वयं को बचा सका, और इस प्रकार वोकिंग जा पहुँचा। इस स्थान पर उसका वर्णन आकस्मिक हो उठा। स्थान अगम्य था। प्रतीत होता था कि केवल कुछ ही व्यक्ति जीवित रहे हैं, जो सामान्यतः विक्षिप्त हो चुके हैं, और अनेक जल-फुँक चुके हैं। अग्नि ने उसे दूर हटा दिया, और एक भग्न एवं तपती दीवाल में छिप गया, जब कि उसने

मङ्गल के उन दत्यों में से एक को लौटते देखा। इसने उसे एक मनुष्य का पीछा करते, अपने एक लौहवत स्पर्श-ज्ञान-संयुत हाथ से उठाकर उसके सर को एक देवदार वृक्ष से टकराते देखा। अन्त में रात्रि हो जाने पर पैदल सेना ने दौड़ लगायी, और वह रेल के घेरे पर चढ़ गये।

तब से छिपता एवं स्वयं को छिपाता, संकट से निकलकर लन्दन पहुंचने की आशा में, वह मेबरी की ओर चलने लगा। लोग खाइयों एवं तहखानों में छिपे थे, और जीवित रह जाने वाले अनेक वोकिंग गाँव अथवा सैन्ड की ओर जा चुके थे। वह प्यास से व्याकुल था, जब कि उसने रेलवे आर्क के समीप किसी वाटर-मेन को नष्ट-भ्रष्ट हुआ, और उससे फूट-फूट कर पानी को सड़क पर बहते देखा।

यही वह कहानी थी जो मैं अनेक भागों में उससे सुनी थी। जो कुछ भी उसने देखा था, मुझे बताकर एवं मुझे उस सबके समझ पाने योग्य बनाने का प्रयत्न करते हुए, वह शान्त हो गया। उसने दोहपर से कुछ भी नहीं खाया था, जो उसने कहानी के प्रारम्भ में ही मुझे बताया था, मैंने रसोई में उसके निमित्त कुछ भोजन पा लिया, और उसे कमरे में ले आया। हमने मङ्गल-निवासियों के ध्यान न आकर्षित करने के भय से कोई प्रकाश नहीं किया, और बार-बार हमारे हाथ रोटी अथवा मांस का स्पर्श करते। जब वह बात कर रहा था, हमारे चारों ओर का धुंधलका मद्धिम पड़ गया, और कुचली हुई झाड़ियाँ एवं भग्न गुलाब के पौदे स्पष्ट दीखने लगे। ऐसा प्रतीत होता कि अनेक पशु अथवा मनुष्य घास के उस मैदान से गुजरे हैं। मैं उसके काले अथवा रुक्ष चेहरे को देखने लगा, और निस्सन्देह मेरा भी वैसा ही था।

जब हम भोजन समाप्त कर चुके, बिना आहट किये ऊपर गये, और अपने अध्ययन-कक्ष में पहुँचकर मैंने पुनः खुली खिड़की से बाहर झाँका। एक ही रात्रि में वह घाटी भस्म के ढेर में बदल चुकी थी। अग्नि-शिखाएँ धीमी पड़ चुकी थीं। जहाँ पहले शिखाएँ थीं, वहाँ अब धुएँ की धारियाँ उठ रही थीं, परन्तु असंख्य नष्ट-भ्रष्ट एवं जीर्ण मकान और

खण्ड-खण्ड हुए एवं काले पड़े-पड़े, जिन्हें रात्रि के आवरण ने छिपा रखा था, ऊषा के निर्मम प्रकाश में क्षीण एवं भयानक रूप से चमक उठे। तो भी स्थान-स्थान पर कुछ वस्तुएँ भाग्यवश बच गयी थीं—एक स्थान पर एक श्वेत रेलवे सिगनल, और दूसरे स्थान पर एक हरे मकान का भाग—जो उन काले खण्डहरों के मध्य श्वेत एवं हरे रूप में चमक रहे थे। इससे पूर्व के किसी भी युद्ध में विनाश इतना भीषण एवं इतना सार्वभौम नहीं हुआ था और पूर्व के उगते प्रकाश में चमचमाते धातुओं के उन दैत्यों में से तीन उस खड्ड के समीप खड़े थे, और उनके टोपाकार मुँह चक्राकार गति में घूम रहे थे, जैसे कि वह उस विनाश को नाप रहे हों, जो उन्होंने उपस्थित कर दिया था।

मुझे ऐसा लगा कि जैसे वह खड्ड लम्बा-चौड़ा कर दिया गया था, और बार-बार हरित धूम्र के पिंड उस खड्ड से प्रकाशपूर्ण ऊषा की ओर उठ रहे थे—वह ऊपर उठते, चक्कर काटते, खण्ड-खण्ड होते, और तब विलीन हो जाते।

सामने चोबहम के समीप अग्नि-शिखाएँ लपलपा रही थीं। सूर्य की प्रथम किरणों का स्पर्श करते ही वह रक्त वर्ण धूम्र के खम्भ से प्रतीत होने लगे।

१२

वीब्रिज और शेपर्टन का विनाश

जैसे ही सूर्योदय होने लगा, हम उस खिड़की से हट गये, जिससे कि हम मंगल-निवासियों को देख रहे थे, और बिना शब्द किये नीचे उतर गये।

वह सैनिक मेरे इस विचार से सहमत हो गया कि वह मकान हमारे ठहरे रहने योग्य न था। उसने लन्दन की ओर चलने का प्रस्ताव किया, जहाँ वह अपनी अश्व-सेना की बारह नम्बर वाली बैटरी में सम्मिलित हो जायगा। मेरी योजना तुरन्त ही लैदरहैड लौट जाने की थी, और मंगल-निवासियों की शक्ति ने मुझे ऐसा प्रभावित किया था कि मैंने अपनी पत्नी के साथ देश को छोड़कर न्यू हेवन चले जाने का निश्चय कर लिया था, कारण कि मैं स्पष्ट रूप से समझ चुका था कि लन्दन का समीपवर्ती भाग भीषण विनाशकारी युद्ध का क्षेत्र बन उठेगा, इससे पूर्व कि इनके समान जीवों को नष्ट कर दिया जाय।

जो कुछ भी हो, हमारे और लैदरहैड के मध्य इन दैत्यों द्वारा आरक्षित, तीसरा सिलण्डर पड़ा हुआ था। यदि मैं अकेला होता, तो मैं मैदानी भाग से जाने का आयोजन करता। परन्तु सैनिक ने मेरे इस विचार को रोक दिया : "किसी भी सुयोग्य पत्नी पर यह कोई करुणा नहीं है", उसने कहा, "कि उसे विधवा बना दिया जाय", और अन्त में उससे विदा होने से पूर्व, मैं जंगली मार्ग से उत्तर की ओर चोबहम स्ट्रीट तक जाने को सहमत हो गया। वहाँ से मैं लैदरहैड पहुँचने के निमित्त एप्सम से एक चक्करदार मार्ग का अनुसरण करता।

मैं तुरन्त ही चल दिया होता, परन्तु मेरा साथी सेना में रह चुका था, और इस विषय में मुझसे अधिक जानता था। उसने मुझे मकान में एक बोतल खोज निकालने को कहा, जिसे उसने व्हिस्की से भर लिया, और प्रत्येक प्रस्तुत जेब को बिस्कुटों तथा मास के टुकड़ों से ठसाठस भर लिया। तब हम मकान से रेंगकर निकले, और फिर सम्पूर्ण शक्ति के साथ उस जीर्ण-शीर्ण ढलुवाँ सड़क पर दौड़े, जिससे होकर मैं रात को लौटा था। मकान निर्जन दिखाई पड़ते थे। सड़क पर तीन भस्म शरीर एक दूसरे के समीप पड़े हुए थे, जो अग्नि-किरण द्वारा नष्ट किये गये थे, और यहाँ-वहाँ वह वस्तुएँ पड़ी थीं, जिन्हें लोग भागते में गिराते गये थे—एक चोगा, एक स्लीपर, एक चाँदी का चम्मच, और इसी प्रकार

की सामान्य वस्तुएँ। पोस्ट-आफिस के समीप के ऊपरी मोड़ पर एक अश्व-हीन छोटी गाड़ी, जिस पर सन्दूक और मेज कुर्सियाँ इत्यादि लदी थीं, एक पहिये के ऊपर भूल रही थी। एक कैश-बक्स शीघ्रतापूर्वक खोला गया था, और मलवे के नीचे फेंक दिया गया था।

केवल अनाथालय को छोड़ कर, जो इस समय भी जल रहा था, इस स्थान के मकानों को कोई भीषण क्षति नहीं पहुँची थी। मकानों की ऊपरी चिमनियों को नष्ट करती अग्नि-किरण शेष को सुरक्षित छोड़ गयी थी। तो भी हम लोगों के अतिरिक्त मेबरी पहाड़ी के इस स्थान में अन्य कोई जीवित आत्मा प्रतीत नहीं हो रही थी। निवासियों की बहुसंख्या, जहाँ तक मैं समझता हूँ, पुराने वोकिंग वाली सड़क से बच निकले थे— वही सड़क, जिसका अनुसरण मैंने किया था। जब मै लैदरहेड को गया था, वह लोग छिप चुके थे।

हम उस काले वस्त्रों वाले मनुष्य के समीप से नीचे गली में उतर गये, जो रात्रि के ओलों के कारण भीगा हुआ था, और पहाड़ी के तले के समीप जंगली मार्ग पर पहुँच गये। हम इसी मार्ग पर आगे बढ़ते रेल की ओर बिना किसी भी जीवित आत्मा से भेंट किये चलते गये। लाइन के सहारे वाले जंगल धब्बोंदार एवं भस्मीभूत खण्डहर-से हो रहे थे; अधिकतर वृक्ष गिर पड़े थे, परन्तु तो भी उनकी एक प्रचुर संख्या अभी खड़ी थी—उदासीन-से भूरे डंठल, जिनकी शाखाओं के कुंजों का वर्ण हरे के स्थान पर गहरा भूरा था।

हमारी ओर वाले स्थान पर अग्नि ने समीपवर्ती वृक्षों को झुलसा देने के अतिरिक्त अन्य कोई भीषण क्षति नहीं की थी, अपना आधिपत्य जमाने मे वह नितान्त असफल रही। एक स्थान पर शनिवार को जंगल के श्रमिक कार्य-रत रहे थे; काटे तथा छांटे हुए वृक्ष साफ किये हुए स्थान पर पड़े थे, जहाँ पर इंजिन तथा आरा मशीन से गिरे हुए बुरादे के ढेर लगे थे। समीप ही एक काम-चलाऊ झोंपड़ी निर्जन पड़ी थी। इस प्रातः वायु में कोई कम्पन न था, और सभी कुछ विलक्षण रूप से शान्त

था। चिड़ियाँ भी निस्तब्ध थीं, और जैसे हम शीघ्रता से आगे बढ़ रहे थे, मैं और सैनिक परस्पर फुसफुसाकर बातें करते, तथा बार-बार अपने कन्धों से इधर-उधर झाँकते बढ़ रहे थे। एक-आध बार हम कुछ सुन पाने के निमित्त रुके।

कुछ समय पश्चात्, जब हम सड़क के समीप आये, और जैसे ही हमने ऐसा किया, हमने घोड़ों की टापों की ध्वनि सुनी, और पेड़ों के ठूँठों के मध्य से झाँककर तीन सैनिकों को देखा, जो मन्द गति से वोकिंग की ओर जा रहे थे। हमने उन्हें पुकारा, और जब हम उनकी ओर दौड़े, वह रुक गये। वह एक लैफ्टीनेन्ट तथा प्रायवेट अष्टम हुसार्स सेना के सैनिक थे, जिनके पास कोण नापने के यंत्र के समान कोई वस्तु थी, जो उन्होंने बताया हेलियोग्राफ था।

"तुम पहले मनुष्य हो जिन्हें मैंने प्रातः इस ओर जीवित आते देखा है", लेफ्टिनेण्ट ने कहा। "क्या हो रहा है ?"

उसकी वाणी एवं मुख उत्सुकता से भरा हुआ था। उसके पीछे के सैनिक हमें उत्सुकतापूर्वक घूर रहे थे। मेरे साथ का सैनिक झपटकर सड़क पर कूद पड़ा और उसने सैनिक अभिवादन किया।

"तोप कल रात्रि नष्ट हो गयी सर ! छिप रहा था। बैटरी से पुनः मिलने का प्रयत्न कर रहा था, सर। आप मंगल-निवासियों को देख सकेंगे, मैं समझता हूँ, इसी सड़क पर आधा मील बढ़ने पर।"

"वह कैसे हैं ?" लेफ्टिनेण्ट ने प्रश्न किया।

"लौह कवच में सुरक्षित दैत्य। सौ फीट ऊँचे। तीन पैर एवं देदीप्यमान शरीर, जिस पर एक टोपे में छिपा विशाल मस्तिष्क है श्रीमान !"

"बको मत", लेफ्टिनेण्ट ने कहा, "कैसी पागलपन की बात है !"

"आप स्वयं देख लेंगे सर। उसके पास एक बाक्स है, जो अग्नि वर्षा करता है, और नष्ट कर डालता है।"

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है—कोई बन्दूक ?"

"नहीं श्रीमान् !" और सैनिक ने अग्नि-किरण पर विस्तृत वर्णन प्रारम्भ कर दिया। लेफ्टिनेन्ट ने उसे बीच में रोक दिया, और मेरी ओर देखने लगा। मैं इस समय तक सड़क के किनारे ही खड़ा था।

"क्या तुमने उसे देखा है ?" लेफ्टिनेंट ने कहा।

" यह सब बिल्कुल ठीक है," मैंने उत्तर दिया।

"ठीक है," लेफ्टिनेंट ने कहा, "मैं समझता हूँ कि उसे देखना मेरा कर्तव्य भी है। देखो," सैनिक से उसने कहा—"हम यहाँ लोगों से मकान खाली कराने में फँसे हैं। अच्छा हो कि तुम आगे आकर बिग्रेडियर-जनरल मारविन से भेंट करो, और जो कुछ भी तुम जानते हो उन्हें बताओ। वह जीवित हैं। क्या जानते हो ?"

"मैं जानता हूँ," मैंने कहा; और उसने अपना घोड़ा दक्षिण की ओर मोड़ दिया।

"आधा मील ?" उसने कहा।

"अधिक से अधिक," मैंने उत्तर दिया, और दक्षिण की ओर के वृक्षों की चोटियों की ओर संकेत किया। उसने मुझे धन्यवाद दिया और घोड़ों को बढ़ा दिया, और हमारी दृष्टि से ओझल हो गये।

आगे बढ़कर हमारी भेंट सड़क पर तीन महिलाओं, और दो बालकों से हुई, जो एक श्रमिक की झोंपड़ी साफ करने मे व्यस्त थे। उनके पास एक हाथ-ठेला था, और वह उसे गन्दे बण्डलों और मेज-कुर्सियों से भर रहे थे। वह सभी अपने कार्यों में इतने व्यस्त थे कि हमसे वार्तालाप का कोई प्रश्न ही नही उठा, और हम आगे बढ़ गये।

बाइफलीट स्टेशन के समीप हम देवदार वृक्षों से बाहर निकले, और हमने देहात को प्रातः कालीन प्रकाश मे स्तब्ध पाया। वहाँ हम अग्नि-किरण क्षेत्र के पर्याप्त बाहर थे, और यदि मकान निर्जन न होते, एक दूसरे में ठसाठस भरते मनुष्यों का कोलाहल न होता, और यदि रेलवे के ऊपर वोकिंग की ओर की लाइन को झाँकते सैनिकों का झुण्ड न होता, तो दिन अन्य रविवारों की भाँति सामान्य दीख पड़ता।

कुछ फार्म-वैगन और गाड़ियाँ खड़खड़ाहट की ध्वनि करती एडल्सटन वाली सड़क पर जा रही थीं, और सहसा एक खेत के गेट पर एक चरागाह के परे, हमने छ टुएल्व-पाउडर्स को देखा, जो समानान्तर दूरी पर वोकिंग की ओर मुँह किये खड़े थे। आज्ञा की प्रतीक्षा करते तोपची लोग तोपों के समीप खड़े थे, और बारूद-गोलों के ठेले कार्यशील रूप में पर्याप्त दूरी पर थे। सभी कुछ इस प्रकार था जैसे कि निरीक्षण के लिये तत्पर हो।

"ठीक है।" मैंने कहा, "कुछ भी हो, उनके निशान ठीक रहेंगे।"

सैनिक द्वार पर कुछ झिझका।

"मैं चला जाऊँगा", उसने कहा।

आगे वीब्रिज की ओर, ठीक पुल के ऊपर श्वेत जाकेट पहिने सैनिक एक दीर्घ सुरक्षा-पंक्ति-सी फैलाये हुए थे, और उनके पीछे और भी तोपें थीं।

सैनिक अधिकारी जो कार्य-रत नहीं थे, खड़े थे, और दक्षिण की ओर वाले वृक्षों की चोटियों को देख रहे थे, और भूमि खोदने वाले लोग भी थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसी दिशा की ओर देख लेते थे।

बाइफ्लीट हलचल से भरा हुआ था, लोग स्थान-स्थान पर भीड़ लगाये हुए थे; और लगभग बीस हजार, जिनमें कुछ घोड़ों से उतरे हुए थे, और कुछ घोड़ों पर सवार, उनको छिन्न-भिन्न करते फिर रहे थे। तीन या चार काली गाड़ियाँ, जिन पर गोलों के मध्य श्वेत क्रास बने हुए थे, एक पुरानी बस एवं अन्य गाड़ियाँ गाँव वाली सड़क पर भरी जा रही थीं। बीसियों लोग वहाँ थे, जिनमें से अधिकतम शरीर पर सुन्दरतम वस्त्र धारण किये हुए थे, प्रदर्शित कर रहे थे कि जैसे वह विश्राम का दिन मना रहे हों। सैनिक उन्हें परिस्थिति की गम्भीरता समझा पाने में महानतम कठिनाई की अनुभूति कर रहे थे। हमने एक झुर्रियों वाले वृद्ध को देखा, जिसके पास बीस या इससे अधिक रंग-बिरंगे फूलों के फूलदान एक विशाल बक्स में थे, उस कारपोरल से झगड़ते देखा, जो

उन्हें पीछे रोक रहा था। मैं रुका, और रुककर मैंने उसकी भुजा पकड़ ली।

"क्या तुम जानते हो कि वहाँ क्या है ?" मैंने मंगल-निवासियों को छिपा रखने वाले देवदार वृक्षों की चोटियों की ओर संकेत करते हुआ कहा।

"उँह", उसने मुड़ते हुए कहा, "मैं समझा रहा था कि यह बहु-मूल्य हैं।"

"मृत्यु", मैं चिल्ला उठा, "मृत्यु आ रही है ! मृत्यु !" और उसे इस भयानक बात को समझ पाने के लिये छोड़कर, यदि वह ऐसा कर सके, मैं शीघ्रतापूर्वक उस सैनिक के पीछे बढ़ गया। कोने में पहुँचकर मैंने पुनः पीछे देखा। सैनिक उसके पास से जा चुका था, और वह अभी भी उस बक्स को, जिसके सिरे से वह रंग-बिरंगे फूल झाँक रहे थे, उठाये खड़ा था, और संशयपूर्वक वृक्षों के परे टकटकी लगाये देख रहा था।

वीब्रिज में हमें कोई भी नहीं बता सका कि सैनिक हैड क्वार्टर्स कहाँ स्थापित किये गये थे; वह स्थान ऐसी असंयमता से परिपूर्ण था, जैसी कि मैंने इससे पूर्व किसी भी नगर में नहीं देखी थी। छकड़ा-गाड़ियाँ—सवारियों एवं घोड़ों की आश्चर्यजनक विभिन्नता। उस स्थान के मान्य लोग, जो गोल्फ़ एवं नौकारोहण के वस्त्रों में सुसज्जित थे; सुन्दरतम परिधान में सुशोभित रमणियाँ भीड़ किये हुए थीं, नदी तट पर निरुद्देश्य घूमने वाले घुमक्कड़, जो तत्परता से सहायता कर रहे थे; बच्चे, जो उत्तेजित दीख रहे थे और विशेष रूप से रविवार के इन विलक्षण-तम विभिन्न एवं विचित्र अनुभवों पर आह्लादित थे। इस सबके मध्य में आदरणीय पादरी साहसपूर्वक उत्सव मना रहा था, और उसके घण्टे का रव इस उत्तेजना को भेदता गूँज रहा था।

मैंने और उस सैनिक ने, पानी पीने वाले फुहारे की सीढ़ियों पर बैठकर, शीघ्रतापूर्वक उस सामान में से कुछ खाया, जिसे हम साथ लाये थे। सैनिक—कारण यहाँ हुसार नहीं थे, वरन् श्वेत परिधान में

ग्रेन्डियर्स—गश्त लगाते लोगों को वापस लौटने अथवा युद्ध प्रारम्भ होते ही अपने स्थानों में छिप जाने का आदेश देते फिर रहे थे। जब हमने रेल का पुल पार किया, हमने देखा कि बढ़ती हुई एक भीड़ रेलवे स्टेशन के भीतर और बाहर एकत्रित हो रही है, और भीड़-भाड़ से भरता हुआ वह प्लेटफार्म बक्सों और सामानों से पटा पड़ा था। सामान्य मार्ग, मैं समझता हूँ, चर्टसी की ओर वाले सैनिक दस्तों और तोपों को मार्ग देने के कारण रुँध-सा गया था, और बाद में मैंने सुना कि उन स्पेशल गाड़ियों में, जो एक घण्टा बाद छोड़ी गयीं, स्थान पाने के लिये बर्बरतापूर्ण संघर्ष भी हुआ था।

हम मध्याह्न तक वीब्रिज में रहे, और उसी समय हमने स्वयं को शेपर्टन लाक के समीप पाया, जहाँ वी और टेम्स नदियाँ परस्पर मिलती हैं। वी का मुहाना त्रिकोणाकार है, और इस स्थान पर नौकाएँ किराये पर ली जाती हैं, और एक दीर्घ नौका नदी के पार दीख पड़ रही थी। शेपर्टन की ओर एक सराय थी, जिसके समक्ष एक लान था, और उससे परे शेपर्टन-चर्च की टावर—जिसके स्थान पर एक आवर्त लगा दिया गया था—वृक्षों के ऊपर चमक रही थी।

यहाँ हमने भागने वालों का एक उत्तेजित एवं कोलाहलशील समूह पाया। इस समय तक पलायन ने अव्यवस्था का रूप धारण नहीं किया था, परन्तु वहाँ इस समय तक इतने अधिक लोग थे, जिन्हें इधर-उधर तैरती वह नौकाएँ पार नहीं कर सकती थीं। भारी बोझों से हाँफते लोग आ रहे थे, एक दम्पति इस समय भी मकान के बाहर प्रयोग किये जाने वाला द्वार पकड़े ले जा रहे थे, जिस पर गृहस्थी में प्रयोग किये जाने वाली असंख्य वस्तुएँ लदी थीं। एक व्यक्ति ने हमें सूचित किया कि वह शेपर्टन स्टेशन से बाहर निकल जाने का प्रयत्न कर रहा है।

लोग कोलाहल कर रहे थे, और एक व्यक्ति परिहास भी कर रहा था। यहाँ के इन लोगों का विचार था कि मंगल-निवासी केवल भयानक मानव हैं, जो नगर पर आक्रमण कर लूट-पाट कर सकते हैं, अनिश्चित

रूप में अन्ततः स्वयं विनष्ट हो जाने के निमित्त ही। हतोत्साहित भाव से लोग बार-बार वी के परे चर्टसी वाले चरागाह की ओर देख लेते थे, परन्तु वहाँ सभी कुछ शान्त था।

टेम्स के पार, केवल उस स्थान के अतिरिक्त, जहाँ नावें घाट पर लगती थीं, सभी कुछ सरे के ओर की स्पष्टतः प्रतिभासित होने वाली विभिन्नता की तुलना में शान्त था। वहाँ उतरने वाले लोग नीचे गली की ओर पैदल चले जा रहे थे। उस दीर्घ नौका ने अभी एक यात्रा की थी। तीन या चार सैनिक सराय के समक्ष लान पर खड़े, भागने वालों को घूरते एवं परिहास करते, किसी भी सहायता के भाव का प्रदर्शन न करते-से खड़े थे। सराय बन्द हो चुकी थी, कारण कि अब उसके बन्द होने का निर्धारित समय हो चुका था।

"वह क्या है ?" एक मल्लाह चिल्लाया, और "चुप रह मूर्ख" एक मनुष्य ने एक भूँकते हुए कुत्ते से कहा। तब वह ध्वनि पुनः सुनाई पड़ी, एक दबे हुए धमाके की ध्वनि—एक तोप की गड़गड़ाहट।

युद्ध प्रारम्भ हो रहा था। तुरन्त ही नदी के पार हमारे दाहिने हाथ की ओर अदृश्य बैटरियों के चलाने की ध्वनि—अदृश्य, कारण कि वह वृक्षों के पीछे थी—उस ध्वनि में मिल गयी, जो एक दूसरे के पश्चात् भीषण अग्नि-वर्षा कर रही थीं। एक नारी चीत्कार कर उठी। प्रत्येक मनुष्य युद्ध के आकस्मिक प्रारम्भ से, जो हमारे इतने समीप था, परन्तु साथ ही अदृश्य मंत्र-मुग्ध-सा हो गया। फैले हुए 'चरागाह' जिनमे इन सबसे पूर्णत: उदासीन गाएँ चर रही थीं, और ऊष्ण सूर्य में चाँदी की भाँति चमकते सरपत के श्वेत ठूँठों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी देखा नहीं जा सकता था।

"सैनिक उन्हें रोक देंगे" मेरे पीछे की एक नारी ने संशय-युक्त स्वर में कहा। वृक्षों की चोटियों के ऊपर एक धुँधलका-सा छा गया।

तब सहसा हमने सुदूर नदी तट पर ऊपर की ओर उठता धुएँ का प्रवाह देखा, जो ऊपर वायु मे हिलता रहा और वहीं पर रुकता-सा

दृष्टिगोचर हुआ, और साथ ही पैरों के नीचे की भूमि हिलती-सी प्रतीत हुई। एक भीषण विस्फोट ने वायु को कँपा दिया, तथा समीपवर्ती मकानों की दो-तीन खिड़कियों को चूर-चूर करते हुए हमें जड़-सा कर दिया।

"वह यहाँ है!" नीली जर्सी पहिने एक व्यक्ति चिल्ला उठा। "सामने! क्या तुम देखते हो? सामने!"

शीघ्र ही एक के बाद दूसरे, एक, दो, तीन, चार लौह कवच-संयुक्त मंगल-निवासी चर्टसी की ओर फैल उस चरागाह के छोटे-छोटे वृक्षों के ऊपर नदी की ओर फलांग लगाते दिखाई पड़े। प्रारम्भ में वह छोटी-छोटी टोपीदार वस्तुएँ-सी प्रतीत हुईं, जो लुढ़कती हुई चिड़ियों के समान गति से जा रही थीं।

तब वक्राकार गति से हमारी ओर बढ़ती पाँचवी दिखाई पड़ी। उनकी कवच-संयुक्त देह सूर्य के प्रकाश में चमचमा रही थी, जब कि वह उन तोपों के उपर शीघ्रतापूर्वक झपटते हमारी ओर बढ़ते चले आ रहे थे, और अधिक विशाल प्रतीत होते थे, जैसे-जैसे वह हमारे समीप आ रहे थे। हमारी बायीं ओर वाले एवं हमसे दूरतम ने वायु में एक विशाल केस उछाला, और प्रेतवत् भयानक वह अग्नि-किरण, जिसका दर्शन मैं शुक्रवार की रात्रि को कर चुका था, चर्टसी की ओर झपटी, और उस नगर को ध्वस्त कर दिया।

इन विलक्षणतम, द्रुतगामी एवं भयानक जीवों के दर्शन पर, जल के तटवर्ती वह समूह मुझे एक क्षण के लिए भय से जड़-सा प्रतीत हुआ। वहाँ चीत्कार अथवा कोलाहल के स्थान पर शान्ति थी। तब एक अस्फुट भनभनाहट एवं पैरों की ध्वनियाँ—पानी से छपछपाहट की ध्वनि। एक मनुष्य, जो नितान्त भयभीत होने के कारण अपने कन्धे पर रखे बोझे को सम्हाल पाने में असमर्थ था, पीछे को लुढ़का, और अपने बोझे से धकेलकर मुझे अलग गिरा दिया। एक नारी ने मुझ पर अपने हाथों से प्रहार किया, और भागती हुई परे निकल गयी। लोगों के भागने के कारण, मैं भी पीछे मुड़ा, परन्तु मुझ पर किसी भी विचार-जन्य भय

का अधिकार न था। भयानक अग्नि-किरण मेरे मस्तिष्क में थी। पानी के नीचे छिपना ! यही उपाय था।

"पानी के नीचे," मैं बिना सुने जाने के विचार से चिल्ला उठा।

मैंने पुनः चारों ओर देखा, और निकट वाले मंगल-निवासियों की ओर दौड़ा—सीधे कंकड़ों वाले किनारे पर झपटता सर तक पानी में घुस गया। दूसरों ने भी ऐसा ही किया। मनुष्यों से भरी एक नौका पीछे लौटी, और जैसे मैं पीछे झपट रहा था, वह नीचे कूदने लगे। मेरे पैरों के नीचे के पत्थर कीचड़ से भरे और रपटनदार हो रहे थे, और नदी इतनी उथली थी कि लगभग बीस फीट तक मैं कमर तक ही जल पा सका। तब, जब कि मंगल-निवासी मेरे ऊपर कठिनाई से कुछ गज ही था, मैंने स्वयं को उछलकर नीचे गिरा दिया। नौका से जल में कूदते लोगों की ध्वनियाँ बादलों की गड़गड़ाहट के समान मेरे कानों में गूँज रही थीं। शीघ्रतापूर्वक लोग नदी के दोनों तटों पर उतर रहे थे।

परन्तु मंगल के उस यंत्र ने इस ओर भागते लोगों पर कोई ध्यान नहीं दिया, ठीक उसी प्रकार जैसे कि कोई मनुष्य चींटियों की अव्यवस्था पर देता है, जब कि उसका पैर उनके छत्ते से टकरा जाय। दम घुटने पर जब मैंने अपना सर पानी के ऊपर उठाया, मंगल के उन यंत्रों का लक्ष्य, उन बैटरियों की ओर था, जो नदी के पार इस समय तक गोलियाँ बरसा रही थीं, और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने उस वस्तु को ढीला कर दिया, जो अग्नि-किरण को जन्म देता था।

दूसरे ही क्षण वह नदी के तट पर था, और एक ही फलांग में उसने आधा मार्ग पूरा कर लिया। दूरतम तट पर उसके सामने के पैर मुड़े, और दूसरे ही क्षण उसने स्वयं को अपनी पूरी ऊँचाई पर उठा लिया, और वह शेपर्टन गाँव के समीप था। साथ ही वह छः तोपें, जो सभी के ज्ञान से परे सीधे हाथ वाले तट की ओर, गाँव की बाहरी सीमा के पीछे छिपी खड़ी थी, गरज उठीं। समीपवर्ती इस धक्के एवं दूसरे यंत्र के प्रथम के समीप आने से मेरा हृदय काँप गया। यह दैत्य इस

समय अग्नि-किरण को जन्म देने वाले उस केस को ऊपर उठा रहा था, जैसे ही प्रथम गोला हुड से छः गज पर फूटा।

आश्चर्य से मैं चीत्कार कर उठा। शेष चारों दैत्यों के संबंध में मैंने न कुछ देखा और न सोचा। मेरा ध्यान समीपतम घटना पर केन्द्रित था। फिर दो अन्य गोले उस यंत्र के समीप वायु में फटे, जैसे ही वह हुड उनका स्वागत करने एवं चौथे गोले के लक्ष्य को संभ्रमित करने को इधर-उधर घूमा।

यह गोला उस यंत्र के ठीक समीप फटा। वह हुड फैला, चमका और दर्जनों चमचमाती धातु एवं लाल मांस की धज्जियों में खंड-खंड हो गया।

"मारो," मैं चीत्कार एवं आह्लाद के मध्यवर्ती किसी स्वर में पुकार उठा।

अपने चारों ओर जल में घुसे व्यक्तियों से मैंने अपने समर्थन में आने वाली पुकारें सुनीं, उस सामयिक आह्लाद मे मै पानी से बाहर उछल आया होता।

एक मदमत्त दैत्य के समान शिरच्छेद किया हुआ वह दैत्य लड़खड़ाया, परन्तु गिरा नहीं। एक चमत्कारिक रूप से उसने अपना सतुन्लन ठीक कर लिया, और अपनी गति का ध्यान न करते हुए, और उस कैमरा-सी वस्तु को ऊपर उठाए हुए, जिससे अग्नि-किरण जन्म पाती थी, द्रुतगति से चक्कर काटता हुआ वह शेपर्टन की ओर बढ़ गया। उसमें जीवित बुद्धि वाला वह मंगल-निवासी नष्ट हो चुका था, और आकाश की चारों दिशाओं वाली वायु उसे डुला रही थी, तथा वह वस्तु अब केवल धातु का एक दुर्गम यंत्र के समान ही थी, जो विनाश के निमित्त कटिबद्ध इधर-उधर चक्कर काट रही थी। बिना किसी नियन्त्रण के वह एक सीधी रेखा में बढ़ा। वह शेपर्टन-चर्च की टावर से टकराया, और उसे ध्वस्त कर दिया, जैसा कि एक तोप के गोले ने किया होता, तब वह एक

ओर को मुड़ा, भटकता हुआ आगे बढ़ा, एक भयानक टक्कर के साथ मेरी दृष्टि से परे किसी स्थान पर नदी में गिर पड़ा।

एक भयानक विस्फोट ने वायु-मण्डल को कँपा दिया, और पानी का एक फुहारा, वाष्प, कीचड़ एवं नष्ट-भ्रष्ट धातु के खंड दूर तक आकाश में उड़ते दिखाई पड़े। जैसे ही कि अग्नि-किरण वाला यंत्र जल से टकराया, जल असंयत रूप से वाष्प का रूप धारण करने लगा। दूसरे ही क्षण, एक प्रचण्ड ज्वार-भाटे के समान विशाल लहर जो खौलती हुई-सी थी, ऊपरी धारा की ओर आयी। मैंने लोगों को तट की ओर संघर्ष करते पाया, और उनके चीत्कारों एवं कोलाहल को मंगल वाले उस यंत्र के गिरने के धमाके के मध्य सुना।

उस क्षण मैंने गर्मी एवं आत्मरक्षार्थ किये जाने वाले संघर्ष पर कोई ध्यान नहीं दिया। लगभग आधा दर्जन जन-हीन नौकाएँ लहरों की इन हलचलों के मध्य इधर-उधर आलोड़ित हो रही थीं। गिरा हुआ मंगल का वह अस्त्र नीचे वाली धारा में दृष्टिगोचर हुआ, जो धारा के आर-पार पड़ा हुआ था, और जिसका अधिकांश भाग जल-मग्न ही था।

ध्वस्त यन्त्र से वाष्प की धाराएँ उठ रही थीं, और बवंडर के रूप में उठते हुए पानी के ढ़ेरों के मध्य, मैंने कुछ समय पश्चात् तथा अस्पष्ट रूप में उस विशाल यंत्र के अंगों को पानी को मथते और जल एवं कीचड़ को उछाल कर फेंकते देखा। उनके स्पर्श-ज्ञान-संयुत पिण्ड किन्हीं जीवित भुजाओं की भाँति इधर-उधर हिल रहे थे, और केवल इन गतियों की असहाय उद्देश्यहीनता से ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे कोई घायल शरीर लहरों के मध्य, जीवन के निमित्त संघर्ष कर रहा हो। किसी गुलाबी भूरे वर्ण का तरल पदार्थ कोलाहल की ध्वनि के साथ फुहारों के रूप में ऊपर वायु में निकल रहा था।

इस दृश्य से मेरा ध्यान किसी चिल्लाहट से भंग हुआ, जो हमारे व्यावसायिक नगरों के साइरन की ध्वनि से मिलती-जुलती थी। नाव को खीचकर ले जाने वाले मार्ग में घुटनों पानी में खड़ा एक व्यक्ति मेरी ओर

को अस्पष्ट रूप में चिल्लाया और संकेत किया। पीछे देखने पर, मैंने अन्य यंत्रों को दैत्यों के समान फलांग लगाते चर्टसी की ओर नदी के ढाल की ओर आते देखा। इस बार शेपर्टन की तोपें व्यर्थ ही गोले बरसाती रहीं।

इस पर मैंने तुरन्त ही पानी में गोता लगाया, और जब तक मैं दम साध सका, कष्टपूर्वक पानी के भीतर ही आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहा। मेरे चारों ओर के पानी में हलचल थी, और वह शीघ्रतापूर्वक गर्म हो रहा था।

जब मैंने श्वास लेने और आँखों पर से बाल और पानी हटाने के लिये सर बाहर निकाला, वाष्प एक चक्राकार श्वेत कोहरे के रूप में ऊपर उठ रही थी, जिसने पहले ही मंगल के उन यंत्रों को दृष्टि से पूर्णतः छिपा लिया। कोलाहल कर्ण-बधिर था। तब धूमिल रूप में मैं उन्हें देख सका, भूरे वर्ण के विशाल आकार, जो कोहरे के कारण और अधिक गहरा हो गया था। वह मेरे ऊपर से निकल चुके थे, और उनमें से दो अपने साथी के झाग देते हुए, बवंडर-युक्त ध्वस्त के ऊपर रुके हुये थे।

तीसरा और चौथा उनके पीछे पानी में खड़ा था, एक जो मुझसे शायद दो सौ गज की दूरी पर था, और लालेहम की ओर। अग्नि को उत्पन्न करने वाले हुड पर्याप्त ऊँचे उठे हुए थे, और हिस्-हिस् की ध्वनि करती किरणें कभी इधर कभी उधर बरस उठतीं।

वायु ध्वनियों से परिपूर्ण थी, श्रवणेन्द्रिय को बधिर कर देने वाला कोलाहलों का संघर्षण, मंगल के यंत्रों की घड़घड़ाहट, गिरते हुए मकानों की चरचराहट, गिरते वृक्षों, बाड़ों, खपरैलों के धमाके, जो ज्वाल-पुंज में परिवर्तित हो रहे थे, और अग्नि की कड़कड़ाहट। नदी से उठने वाली वाष्प से मिलने के निमित्त गहन एवं काला धुँआ उठ रहा था, और वीब्रिज के ऊपर जैसे कि अग्नि-किरण इधर से उधर जाती थी, उसकी गति का पता उन श्वेत तीव्र प्रकाश-युक्त चमकों से चलता था, जो एक

साथ उग्र ज्वालाओं के धूम्रमय नृत्य में परिवर्तित हो जाती थी। समीपतम मकान इस समय सुरक्षित खड़े अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, छायावृत्त, अस्पष्ट एवं वाष्प से धूमिल, जिसके पीछे अग्नि-किरण इधर से उधर जा रही थी।

एक क्षण तक शायद मैं खड़ा रहा, लगभग खौलते हुए पानी में छाती तक डूबा, अपनी अवस्था पर जड़-मूर्तिवत्, बच निकलने की आशा से निराशित। वाष्प के मध्य मैंने उन लोगों को देखा जो मेरे साथ थे, और अब सरकंडों के बीच पानी से निकलने का यत्न कर रहे थे, उन मेढ़कों के समान, जो किसी मानव को आता देख घास पर रेंगते हैं, अथवा पूर्ण नैराश्य के साथ नाव को खेंचने वाले मार्ग में इधर-उधर दौड़ रहे थे।

तब सहसा अग्नि-किरण की यह श्वेत चमक मेरी ओर झपटी। उसके स्पर्श से चटखने वाले मकान पीले हो जाते थे, और अग्नि उगलने लगते, वृक्ष एक गर्जन के साथ लपटें छोड़ने लगते। नौका को खींचने वाले मार्ग पर ऊपर नीचे चमकती यह किरणें इधर-उधर भागने वाले लोगों को निगलती पानी के किनारे उस स्थान तक आ जातीं, जो उस स्थान से, जहाँ मैं खड़ा था, पचास गज दूर भी नहीं था। नदी को पार करती वह शेपर्टन की ओर गयीं, और उनके स्पर्श वाले मार्ग का जल खौलते हुए चक्राकार में ऊपर उठने लगा, जिसके ऊपर वाष्प का शिखर-सा था। मैं तट की ओर दौड़ा।

दूसरे ही क्षण वह विशाल लहर, खौलने वाले बिन्दु के समीप, मुझ पर झपट चुकी थी। मैं ऊँचे स्वर में चीत्कार कर उठा, और झुलस गया, आधा अन्धा एवं पीड़ा-युक्त, मैं उछलते और हिस्-हिस् करते जल से तट की ओर भागा। यदि मैं ठोकर खा गया होता तो मेरा अन्त हो जाता। उस चौड़े एवं कंकरीले मार्ग पर जो नीचे की ओर जाकर वी और टैम्स नदियों का कोण निर्धारित करता है, मंगल-निवासियों की

समग्र दृष्टि के समक्ष होने पर मैं असहायता की अनुभूति करने लगा। मृत्यु के अतिरिक्त मुझे कोई अन्य प्रतीक्षा न थी।

मंगल के एक यन्त्र के अपने सर के ऊपर लगभग बीस गज से भी अधिक आने की मुझे धुंधली-सी स्मृति है, जो उस कंकरीले मार्ग पर आगे बढ़ रहा था, इधर-उधर चक्कर काटता और पुनः ऊपर उठता; एक दीर्घ उत्तेजना, और तब उन चारों को अपने साथी का ध्वंसावशेष अपने मध्य ले जाते, कभी स्पष्ट और कभी धूम्र-आवरण से धूमिल, अनवरत रूप से पीछे हटते, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ, नदी एवं चरागाह के परे अनन्त शून्य में। और तब, बहुत धीरे-धीरे मैं समझ सका कि मैं किसी चमत्कार के द्वारा बच गया हूँ।

१३
पादरी का साथ कैसे हुआ

पारलौकिक अस्त्रों के विषय में इस आकस्मिक पाठ को पढ़ाकर मंगल-निवासी हारसेल कामन वाली अपनी पूर्व स्थिति पर लौट गये, और प्रत्यावर्तन की शीघ्रता एवं अपने ध्वस्त साथी के भार से बोझिल होने के कारण, निस्सन्दिग्ध रूप में वह मुझ जैसे एक-दो शिकारों को छोड़ते गये। यदि उन्होंने अपने साथी को छोड़ दिया होता, और अपने मार्ग पर आगे ही बढ़ गये होते, उस समय उनके, और लन्दन नगर के मध्य बैटरियों और 'टुएल्व-पाउंडर' तोपों के अतिरिक्त अन्य कुछ न था, निश्चित रूप में वह अपने आगमन की सूचना से पूर्व ही वहाँ पहुँच गये होते; उनका आगमन उतना ही आकस्मिक, भयानक एवं विनाश-

कारी होता जैसा कि वह भूकम्प, जिसने एक शताब्दि पूर्व लिस्बन नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था।

परन्तु उन्हें कोई शीघ्रता न थी। अपनी नक्षत्रों के मध्य की यात्रा में एक के पश्चात् दूसरा सिलण्डर आता रहा; प्रत्येक चौबीस घण्टे उनके निमित्त नयी कुमुक ले आते थे। और इसी बीच स्थल एवं जल-सेना के अधिकारी, जो अपने विरोधियों की अपरिमित शक्ति के प्रति पूर्णतः जागरूक थे, उग्रतम रूप में क्रियाशील थे। प्रत्येक मिनिट एक नयी तोप अपनी स्थिति सम्हाल लेती और सन्ध्या से पूर्व प्रत्येक झाड़ी एवं किंगस्टन और रिचमण्ड के पहाड़ी ढालों का मध्यवर्ती प्रत्येक मकान एक काली, प्रतीक्षारत तोप के मुँह से परिपूर्ण था। और उस भस्मीभूत एवं निर्जन क्षेत्र में शायद बीस मील के घेरे में, जो हारसेल कामन पर मंगल-निवासियों के घेरे में पड़ता था, हरे-भरे पेड़ों के मध्य, भस्मप्राय: एवं ध्वस्त ग्रामों, काले पड़े एवं धुआँ देते खम्भों जो एक ही दिन पूर्व हरी-भरी बेलों एवं वनस्पतियों से परिपूर्ण थे, कार्य-रत सैनिक मंगल-निवासियों की प्रगति पर गोलाबारी करने वाले तोपचियों को सावधान करने के निमित्त हेलियोग्राफ लिये रेंग रहे थे। परन्तु मंगल-निवासी अब हमारी थल-सेना के आदेशों एवं मानव-सामीप्य के संकट को पूर्णतः समझ चुके थे, और सभी सिलण्डरों के एक मील के घेरे में बिना अपने जीवन को असुरक्षा में डाले, एक भी मनुष्य निकलने का साहस नहीं कर रहा था।

ऐसा लगता है कि इन दैत्यों ने मध्याह्न का प्रारम्भिक भाग इधर-उधर जाने, और दूसरे और तीसरे सिलण्डर से—दूसरा जो एडल्स्टन-गोल्फ लिंक्स और तीसरा पायर्फोर्ड पर था—हारसेल कामन के प्रथम स्थान पर वस्तुओं के स्थानान्तरित करने में व्यतीत किया। काली झाड़ियों एव ध्वस्त मकानों के ऊपर, जो दूर तक फैले हुए थे, चौथा एक प्रहरी की भाँति खड़ा था, जब कि शेष दूसरों ने अपनी विशाल युद्ध की मशीनों को त्याग दिया और खड्ड में उतर गये। वहाँ वह रात गये तक कार्यशील रहे, और हरित वर्ण धूम्र के विशाल शिखर, जो उस स्थान से उठते रहे,

मैरो के समीपवर्ती पहाड़ियों, और यहाँ तक कहा जाता है, बेनस्टेड और एप्सभडाउन्स तक से दिखाई पड़ते रहे।

और जब कि मेरे पीछे के मंगल-निवासी इस प्रकार अपने आगामी आक्रमण के निमित्त सन्नद्ध हो रहे थे, और मेरे सामने का मानव-समाज युद्ध के निमित्त तत्पर, अथक कष्ट एवं परिश्रम से, जलते हुए वीब्रिज का शिखाओं एवं धुँए के मध्य, मैंने अपना मार्ग लन्दन की ओर निकाला।

बहुत छोटी और बहुत दूर, मैंने एक परित्यक्त नौका को धारा के बहाव की ओर लहरों में थपेड़े खाते देखा, और अपने भीगे वस्त्रों में से बहुत-से वस्त्रों को उतारकर, मैंने उसका पीछा किया, उस पर चढ़ने में सफल रहा, और इस प्रकार उस विनाश से बच सका। नौका में पतवार नहीं थे, परन्तु जहाँ तक मेरे अधजले हाथों ने मुझे ऐसा करने में सहायता दी, मैं धारा में नीचे हैलीफोर्ड और वाल्टन की ओर कठिनतापूर्वक, और जैसा कि आप समझ सकते हैं, पीछे की ओर देखता, जाने के निमित्त पैडिल मारने का प्रयत्न करता रहा। मैंने जल-मार्ग को इसी निमित्त चुना कि मैं समझता था कि यदि वह दैत्य लौट पड़े, जल मेरे निकट बच निकलने का सर्वोत्तम साधन सिद्ध होगा।

मंगल-निवासियों द्वारा आबाधित वह ऊष्ण जल मेरे ही साथ-साथ धारा में बहा जा रहा था, और इसी कारण लगभग एक मील तक की यात्रा में, मैं किनारों की किसी भी वस्तु को न देख सका। जैसे भी हो, एक बार मैं तट पर वीब्रिज की ओर से चरागाहों के मध्य भागती काली आकृतियों के एक समूह को देख पाया। हैलीफोर्ड ऐसा लगता था, पूर्णतः निर्जन हो चुका था, और नदी की ओर वाले अनेक मकान जल रहे थे। उस स्थान को पूर्णतः शान्त एवं जनहीन देखना, जिसमें से धुआँ और अग्नि की पतली शिखाएँ मध्याह्न के गर्म आकाश की ओर उठ रही थीं, एक विलक्षण दृश्य था। इससे पूर्व मैंने कभी भी मकानों को एक असुविधा-जनक भीड़-भाड़ से जलते नहीं देखा था। कुछ आगे तटवर्ती सरकंडों

के पेड़ सुलग रहे थे और धुआं दे रहे थे, और अग्नि की एक पंक्ति एक सूखे भूसे के खेत की ओर अग्रसर हो रही थी।

इस संघर्ष के पश्चात् मैं इतना पीड़ित एवं इतना थका-हारा था कि पर्याप्त समय तक मेरी नौका इधर-उधर तिराती रही। तब मेरे भय नष्ट हो गये, और मैंने अपना पैडिल मारना पुनः प्रारम्भ कर दिया। सूर्य मेरी नंगी पीठ को झुलसा रहा था। अन्त में, जब कि मोड़ से परे वाल्टन का पुल दिखाई पड़ने लगा, थकावट के ज्वर एवं बेसुधी ने मेरे भयों पर अधिकार पा लिया, और मिडिलसेक्स के तट पर मैंने नौका को किनारे लगाया, और उतरकर दीर्घ घास पर मृतकवत् पड़ा रहा। मेरा विचार है कि तब सन्ध्या के चार या पाँच के लगभग बजे होंगे। कुछ समय पश्चात् मैं उठा, शायद आधा मील के समीप बिना किसी जीवित व्यक्ति से भेंट किये चला, और तब एक झाड़ी की छाया में पुनः लेट गया। मुझे ऐसा स्मरण है कि अपने इस अन्तिम प्रयास में मैं चलते-चलते स्वयं से बातें करता रहा था। मैं बहुत प्यासा भी था, और मुझे गहन खेद भी था कि मैंने पानी नहीं पिया है। यह विलक्षण बात है कि मुझे अपनी पत्नी पर क्रोध आ रहा था; मैं इसका कोई कारण नहीं बता सकता, परन्तु लैदरहैड पहुँचने की मेरी पूरी न हो सकने वाली इच्छा अत्यधिक अशान्त कर रही थी।

पादरी के आगमन की मुझे सुधि नहीं है, और इसीलिये कि शायद मैं झपकी ले गया था। मुझे उसकी उपस्थिति का ज्ञान काली एवं धूल-धूसरित कमीज पहिने ऊपर की ओर मुँह किये एक क्षीण प्रकाश-रेखा को आकाश में नाचते हुए देखकर हुआ। आकाश ऐसा था जिसे किसी रंगीन मछली के वर्ण का कहा जाता है—नीचे की ओर उतराते बादलों का समूह, जो मध्य ग्रीष्म कालीन सूर्यास्त से रंजित थे।

मैं उठ बैठा, और मेरे वस्त्रों की सरसराहट को सुनकर उसने शीघ्रतापूर्वक मेरी ओर मुँह फेर लिया।

"क्या तुम्हारे पास कुछ जल है ?" मैं सहसा पूछ उठा।

"तुम पिछले घंटे भर से पानी माँग रहे हो", उसने कहा।

एक दूसरे का निरीक्षण करते हुए हम कुछ क्षण तक चुप रहे। मैं निश्चिततापूर्वक कह सकता हूँ कि उसने मुझे एक पर्याप्त विलक्षण पुरुष पाया, अपने भीगे पायजामे और मोजों के अतिरिक्त नंगा, झुलसा हुआ और धुएँ के कारण काले मुँह और कन्धों वाला। उसके मुख पर दुर्बलता अंकित थी, उसकी चिबुक मुड़ी हुई थी, उसके बाल घुँघराले हो रहे थे, लगभग सन के ही समान माथे से चिपटे हुए बाल; उसके नेत्र दीर्घ, पीले, नीले और खुले हुए थे। मुझसे परे देखता हुआ वह रह-रह-कर आकस्मिक् रूप में बोल उठता था :

"यह सब क्या है ?" उसने कहा। "इन सब वस्तुओं का क्या अर्थ है ?"

मैं उसकी ओर घूरता रहा, और कोई उत्तर नही दिया।

उसने एक पतला और श्वेत हाथ आगे बढ़ा दिया और उपालम्भ-भरे स्वर में बोला :

"यह सब क्यों होने दिया जा रहा है ? हमने क्या पाप किये हुए हैं ? प्रातःकाल की प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी, मध्याह्न के लिये अपने मन को स्वस्थ करने मे सड़क पर जा रहा था, और तब—अग्नि, भूकम्प एवं विनाश ! जैसे कि यह साडम और गोमेरा हों ! हमारा सब काम नष्ट हो गया, सभी काम......यह मंगल-निवासी क्या हैं ?"

"हम क्या हैं ?" मैंने गला साफ करते हुए कहा।

उसने अपने घुटनो को पकड़ लिया, और मुझे देखने के लिये पुनः मेरी ओर मुड़ा। शायद आधा मिनिट तक वह मौन भाव से मुझे घूरता रहा।

"अपने मन को हल्का करने मैं सड़क पर घूम रहा था," उसने कहा। "और सहसा अग्नि, भूकम्प एवं विनाश !"

वह शान्ति में खो गया, उसकी टोड़ी अब पूर्णतः उसके घुटनों में छिप चुकी थी।

अपने हाथों को हिलाते उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया :

"सभी काम—सभी रविवारीय स्कूल ! हमने क्या अपराध किया है वीब्रिज निवासियों ने क्या किया है ? सभी कुछ खो गया, सभी कुछ नष्ट हो गया। चर्च ! हमने उसे केवल तीन वर्ष पूर्व ही बनवाया था। समाप्त—स्थिति से विनष्ट ! क्यों ?"

पुनः एक चुप्पी, और पुनः एक पागल के समान वह बोल पड़ा।

"उसके जलने का धुआँ सदैव ही ऊपर उठता रहता है !" वह चिल्ला उठा।

उसके नेत्र जल रहे थे, और एक क्षीण उंगली से उसने वीब्रिज की ओर संकेत किया।

इस समय तक मैं उसका निरीक्षण करना प्रारम्भ कर चुका था। उस भयानक दुर्घटना ने, जिसमें वह लिप्त रहा था—स्पष्ट था कि वह कोई वीब्रिज का भगोड़ा ही था—उसकी बुद्धि को छिन्न-भिन्न कर दिया था।

"क्या हम सनबरी से अधिक दूर हैं ?" मैंने वास्तविकतापूर्ण स्वर में कहा।

"हमें क्या करना चाहिए ?" उसने पूछा। "क्या यह जीव सभी स्थानों पर हैं ? क्या समस्त पृथ्वी पर उनका अधिकार हो चुका है ?"

"क्या हम सनबरी से दूर हैं ?"

"इसी प्रातः मैंने उत्सव में स्थानापन्न अधिकारी के रूप में काम किया ......"

"संसार बदल चुका है," मैंने धीरे से कहा। "तुम्हें अपना मानसिक सन्तुलन ठीक रखना चाहिए। अभी आशा है।"

"आशा !"

"हाँ, पर्याप्त आशा—इस सब विनाश के होते हुए भी !"

अपनी स्थिति के सम्बन्ध में मैं उसे अपना दृष्टिकोण समझाने लगा। प्रथम तो वह सुनता रहा, परन्तु जब मैं सुनाने में तल्लीन हो गया, उसके

नेत्र पूर्ववत् टकटकी लगाने लगे, और मेरे प्रति उसका आदर टूटने लगा।

"यह प्रलय का प्रारम्भ होना चाहिए," उसने मुझे रोकते हुए कहा। "प्रलय—ईश्वर का महान एवं भीषण दिन! जब मनुष्य पर्वतों और चट्टानों से अपने ऊपर गिरकर उन्हें छिपा लेने के निमित्त प्रार्थना करेंगे—उसकी दृष्टि से छिपाने के निमित्त, जो सिंहासान पर आसीन हैं।"

मैंने स्थिति को समझाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने अपने भ्रमपूर्ण तर्क बन्द कर दिये, लड़खड़ा कर खड़े होने का प्रयत्न किया, और उसके ऊपर खड़े होकर उसके कन्धों पर हाथ रख लिया।

"मनुष्य बनो," मैंने कहा। "तुम्हारी बुद्धि विचलित हो गयी है। धर्म का क्या महत्व है, यदि वह संकट के समय लड़खड़ाने लगे? विचार करो कि इससे पूर्व के भूकम्पों, बाढ़ों, युद्धों और ज्वालामुखियों ने मानव-संसार को क्या-क्या किया है। क्या तुम्हारा विचार है कि ईश्वर ने वीब्रिज को इस सबसे मुक्त कर रखा है? ...... वह कोई इन्श्योरेन्स एजेन्ट नहीं है।"

कुछ समय तक वह जड़-सा हो गया।

"पर हम किस प्रकार बच सकते हैं?" उसने सहसा प्रश्न किया। "वह अभेद्य हैं वह दया—विहीन हैं,......"

"न पहिली ही बात, और न शायद दूसरी ही," मैंने उत्तर दिया। "और जितने अधिक वह शक्तिशाली हैं, हमें उतना ही विवेकपूर्ण एवं सावधान होना चाहिए। उन्हींमें से एक सामने तीन घण्टे पूर्व ही नष्ट कर डाला गया।"

"नष्ट!" उसने चारों ओर घूरते हुए कहा। "ईश्वर के दूत किस प्रकार नष्ट हो सकते हैं?"

"मैंने ऐसा होते देखा," मैं उसे बताने लगा। "पर संयोगवश हम उस संकट के समक्ष आ पहुँचे हैं, और यही सब कुछ है।"

"आकाश में वह चमक कैसी है?" वह सहसा पूछ बठा।

"मैंने उसे बताया कि वह है लियोग्राफ का सिगनलिंग है, और वह

आकाश में मानव-संसार की सहायता एवं प्रयत्न का द्योतक है।"

"हम उसके मध्य में हैं," मैंने कहा, "उसीकी भाँति शान्त। आकाश की वह चमक घिरते हुए तूफ़ान की सूचना दे रही है। आगे, मैं समझता हूँ मंगल-निवासी हैं, और लन्दन की ओर, जहाँ किंगस्टन और रिचमन्ड के समीप वृक्षों का झुण्ड है, तोपें लगी हैं। कुछ ही समय पश्चात् मंगल-निवासी पुनः इसी मार्ग से आयेंगे।"

और जैसे ही मैंने यह सब कहा, वह उछलकर खड़ा हो गया, और संकेत से मुझे चुप होने को कहा।

"सुनो!" उसने कहा।

नदी के पार वाली नीची पहाड़ियों से दूर पर गरजती तोपों की गूँज, और एक सुदूरवर्ती कोलाहल सुनायी पड़ा। तब सभी कुछ शान्त हो गया। एक काक् शेफ़र (Cock-Chafer) मन्द गति से झाड़ी पर जाता दीख पड़ा, और आगे बढ़ गया। पश्चिमी क्षितिज में धुन्धला एवं पीला अर्द्धचन्द्र वीब्रिज एवं शेपर्टन के उठते धुएँ और सूर्यास्त के शान्त एवं ऊष्ण वातावरण के ऊपर झाँक रहा था।

"हम इसी मार्ग का अनुसरण करें," मैंने कहा, "उत्तर की ओर।"

१४
लन्दन में

जब मंगल के वह अस्त्र वोकिंग पर गिरे, मेरा छोटा भाई लन्दन में था। वह मेडिकल कालिज का विद्यार्थी था, जो किसी निकटवर्ती परीक्षा के लिये अध्ययन कर रहा था, और उसने मंगल-निवासियों के आगमन के सम्बन्ध में शनिवार से पूर्व कुछ भी नहीं सुना। शनिवार के प्रातः-

कालीन पत्रों में, मंगल-लोक और अन्य लोकों में जीवन एवं इसी प्रकार अन्य विषयों के अतिरिक्त एक संक्षिप्त एवं अनिश्चित अर्थ वाला एक तार भी छपा था, जो अपनी संक्षिप्तता के कारण नितान्त दुर्बोध था।

मंगल-निवासियों ने, एक भीड़ के समीप आने से आशंकित होकर, पर्याप्त संख्या में लोगों को एक शीघ्रता से चलने वाली बन्दूक से मार डाला, और यही कहानी का रूप था। तार का उपसंहार इन शब्दों से होता था : "भयानक प्रतीत होने वाले मंगल-निवासी उस खड्ड से, जिसमें वह गिरे थे, बाहर नहीं निकले हैं, और वास्तव में वह ऐसा कर पाने में अशक्त प्रतीत होते हैं। सम्भवतः यह पृथ्वी की अतिरिक्त आकर्षण-शक्ति के कारण है।" इसी अन्तिम आधार पर अग्रगामी लेखकों ने अपने लेखों को सुविधापूर्वक विस्तृत किया था।

निस्सन्दिग्ध रूप में, बायलाजी कक्षा के सभी विद्यार्थी, जिसमें मेरा छोटा भाई उस दिन गया था, इस सब में अत्यधिक रुचिशील थे, परन्तु गलियों में इस विषय पर कोई असाधारण उत्तेजना नहीं पायी जाती थी। मध्याह्न के समाचार-पत्रों ने इस विपय पर बड़े अक्षरों में अनेक समाचार प्रस्तुत किये। कामन पर सेना के पहुँचने एवं वोकिंग और वीब्रिज के मध्यवर्ती देवदार के जंगलों के जलने के अतिरिक्त उनके पास देने को अन्य कोई समाचार न था। तब 'सेन्ट जेम्स गजट' ने, एक अतिरिक्त एवं विशेष अंक द्वारा, तार-सूचना के छिन्न-भिन्न हो जाने से कटु सत्य को प्रकाशित किया। परन्तु इसे केवल जले हुए देवदार वृक्षों के तार लाइन के समीप गिरने के कारण ही माना गया। उस रात्रि को युद्ध के सम्बन्ध में और कुछ भी नहीं जाना जा सका—मेरे लैदरहैड जाने और लौटने वाली रात्रि को।

मेरे भाई ने हमारे विषय में कोई चिन्ता नहीं की, कारण कि वह समाचार-पत्र के वर्णन से समझ चुका था कि सिलण्डर हमारे घर से दो मील से भी अधिक दूर था। उसने, जैसा कि वह कहता है, उसी रात्रि मेरे पास तक आने, और उनको नष्ट होने से पूर्व ही देखने का निश्चय

कर लिया। उसने लगभग चार बजे मुझे तार दिया, जो कभी भी नहीं प्राप्त हुआ, और वह सन्ध्या एक संगीत-शाला में व्यतीत की।

शनिवार की रात्रि को लन्दन में भी मेघों की गड़गड़ाहट का तूफान चलता रहा, और मेरा भाई एक कैब द्वारा वाटरलू पहुँचा। उस प्लेट-फार्म पर कुछ समय प्रतीक्षा कर चुकने के पश्चात्, जहाँ से मध्य रात्रि वाली गाड़ियाँ बहुधा प्रस्थान करती हैं, उसे मालूम हुआ कि किसी दुर्घटना के कारण गाड़ियाँ उस रात्रि वोकिंग नहीं पहुँच रही हैं। दुर्घटना किस प्रकार की है, वह निश्चित न कर सका; वास्तव में रेल के अधिकारी इस विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। स्टेशन पर कोई विशेष उत्तेजना न थी, कारण कि अधिकारी-गण इससे अधिक कुछ सोच भी पाने में असमर्थ थे कि बाइफ्लीट एवं वोकिंग जंकशन के मध्य लाइन छिन्न-भिन्न हो गयी है, थ्येटर-गाड़ियों को, जो सामान्यत: वोकिंग होकर जाती थीं, कुछ घुमाकर वर्जिनिया-वाटर अथवा गिल्फोर्ड होकर चला रहे थे। वह साउथम्पटन और पोर्टसमाउथ रविवारीय भ्रमणार्थी गाड़ियों के मार्गों में आवश्यक उलट-फेर करने में व्यस्त थे। किसी रात्रि के समाचार-पत्र के संवाददाता ने, मेरे भाई को ट्रैफिक-मैनेजर समझकर, जिसमे कि कुछ अंशों में वह मिलता-जुलता है, उससे मिलने की घात में रहा, और उससे भेंट करने का प्रयत्न किया। रेलवे अधिकारियों के अतिरिक्त थोड़े ही लोग रेल-मार्ग की इस दुर्घटना का संबंध मंगल-निवासियों से जोड़ पाते थे।

इन्हीं घटनाओं का एक भव्य रूप में वर्णन मैंने पढ़ा है कि रविवार के प्रात: समस्त लन्दन वोकिंग के समाचारों से उत्तेजित हो गया था। वास्तव में घटना के इस अतिरंजित रूप का निर्णय करने वाला कोई समुचित कारण नहीं था। लन्दन के अधिकांश मनुष्य मंगल-निवासियों के संबंध में सोमवार के प्रात: होने वाली दुर्घटना से पूर्व कुछ भी नहीं जानते थे। उनको भी, जो कुछ जानते भी थे, शीघ्रतापूर्वक लिखे गये इन तार-सम्वादों को समझ पाने में पर्याप्त समय लगा, जो रविवारीय

समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए थे। लन्दन के नागरिकों का बहुतांश रविवार के समाचार-पत्र नहीं पढ़ता है।

और व्यक्तिगत सुरक्षा का अभ्यास लन्दन निवासियों के मन में इतना गहन आरोपित होता है, और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने वाले आश्चर्य-जनक समाचार इतने सामान्य होते हैं कि बिना किसी कँपकँपी के वह पढ़ सके : "कल रात्रि सात बजे के लगभग मंगल-निवासी सिलण्डर से बाहर निकले, और धातुओं की ढाल की सुरक्षा में इधर-उधर फिर-कर उन्होंने वोकिंग स्टेशन को उसके समीपवर्ती मकानों के साथ पूर्णतः नष्ट-भ्रष्ट कर डाला तथा कार्डीजन रेजीमेन्ट की एक सम्पूर्ण बटेलियन को समाप्त कर दिया। समग्र विवरण अज्ञात है। उनके कवचों को भेद पाने में मेक्सिम पूर्णतः निष्फल सिद्ध हुई; मैदानी तोपों को उन्होंने व्यर्थ कर दिया! हवा में उड़ते हुसार चर्टसी में सरपट दौड़ते रहे। मंगल-निवासी मन्द गति से चर्टसी अथवा विण्डसर की ओर बढ़ रहे हैं। लन्दन की ओर उनकी प्रगति को रोकने के लिए अर्थ-वर्क्स ऊपर उठाये जा रहे हैं।" वर्णन, जसा कि 'सण्डेसन' ने दिया, इस प्रकार था, और एक बुद्धि-पूर्ण एवं विशेष रूप से तत्पर 'हैण्ड-बुक' लेख ने 'रेफरी' नामक पत्रिका में इस घटना की तुलना किसी भी गाँव की पशु-शाला को एक साथ खोल दिये जाने से की।

लन्दन का कोई भी व्यक्ति आरक्षित मंगल-निवासियों के वास्तविक रूप को नहीं जानता था, और इस समय भी लोगों के मस्तिष्क में एक विचार दृढ़ था कि यह मन्दगामी है: 'रेंगते हुए', 'कष्ट पूर्वक रेंगते हुए'—ऐसे ही वर्णन पूर्व की समस्त सूचनाओं में प्रयुक्त किये गये। उनमें से कोई भी तार उनके आगे बढ़ने के प्रत्यक्ष साथी द्वारा नहीं दिया गया था। जैसे-जैसे नूतन समाचार आते गये, रविवारीय पत्रों ने विशेषांक छापे, और कुछ ने बिना किसी समाचार को प्राप्त किये ही। परन्तु मध्याह्न से पूर्व लोगों को बताने योग्य वास्तव में कोई और बात नहीं थी, जब कि अधिकारियों ने अपनी प्राप्त सूचनाओं को प्रकाशनार्थ प्रस्तुत

नहीं किया। कहा गया कि वाल्टन एवं वीब्रिज के लोग और समस्त जिले भर के लोग लन्दन की ओर विशाल संख्या में बढ़े चले आ रहे हैं, और यही सब कुछ था।

इस समय तक भी, पूर्व की रात्रि क्या हो चुका है, इससे पूर्णतः अनभिज्ञ मेरा भाई फाउण्डलिंग हास्पिटल वाले गिर्जे में गया। वहाँ उसने आक्रमण के संबंध में दिये जाने वाले संकेतों को सुना, और शान्ति के निमित्त एक विशेष प्रार्थना हुई। बाहर निकलने पर उसने 'रेफरी' पत्रिका की एक प्रति खरीदी। उसके समाचारों को पढ़कर वह शंकित हो गया, और पुनः वाटरलू स्टेशन यह पता लगाने के निमित्त गया कि सूचना के साधन सम्बद्ध हो चुके हैं अथवा नहीं। बसें, गाड़ियाँ, साइकिल-सवार एवं असंख्य पैदल चलते लोग, जो अपने सुन्दरतम वस्त्रों में चल रहे थे, इस विलक्षण समाचार से कठिनता से प्रभावित होते प्रतीत हो रहे थे, जिसे समाचार-पत्र-वाहक चिल्ला-चिल्लाकर फैला रहे थे। लोग रुचि ले रहे थे, अथवा यदि वह शंकित थे, तो केवल उन स्थानों के निवासियों के संबंध में ही थे। स्टेशन पर उसने प्रथम बार सुना कि विण्डसर एवं चर्टसी की लाइनें अब रोक दी गयी थीं। पोर्टरों ने उसे बताया कि कई विशेष तार प्रातःकाल बाइफ्लीट एव चर्टसी स्टेशनों द्वारा प्राप्त किये गये थे, परन्तु सहसा वह बन्द हो गये। मेरा भाई उनसे बहुत ही कम विवरण निकाल पाया। 'वीब्रिज के समीप युद्ध हो रहा है', उनकी सूचना का सारांश था।

गाड़ियों का यातायात अब छिन्न-भिन्न हो चुका था। लोगों की एक विशाल संख्या, जो दक्षिण-पश्चिमी स्टेशनों से आने वाले मित्रों की प्रतीक्षा कर रही थी, स्टेशन के आस-पास खड़ी थी। एक भूरे बालों वाले वृद्ध महाशय मेरे भाई के समीप आये, और उन्होंने साउथ-वैस्टर्न कम्पनी की कड़े शब्दों में भर्त्सना की।

रिचमण्ड, पुटनी और किंगस्टन से दो-एक गाड़ियाँ उन लोगों को लेकर आयीं, जो एक-आध दिन के नौकारोहण के निमित्त गये थे, और उन्होंने तालों को बन्द एवं वातावरण में उत्तेजना पायी। नीला और

श्वेत ब्लेजर पहिने एक व्यक्ति मेरे भाई के पास विलक्षण समाचार लेकर आया।

"छिपे-छिपे किंगस्टन से आने वालों का एक विशाल समूह है, जिनके पास मूल्यवान वस्तुओं से भरी हुई गाड़ियाँ और बक्से हैं", उसने कहा। "वह मोलसी, वीब्रिज एवं वाल्टन से आ रहे हैं और वह कहते हैं कि चर्टसी के समीप तोपों की ध्वनियाँ सुनी गयी हैं; भारी गोलबारी, और यह कि अश्वारोही सैनिकों ने उन्हें एकदम हट जाने को कहा है, क्योंकि मंगल-निवासी आ रहे हैं। हमने हैम्पटन-कोर्ट स्टेशन पर तोपें चलती सुनीं, परन्तु हमने समझा कि वह मेघों की गर्जन-ध्वनि थी। इस सब गोरख धन्धे का क्या अर्थ है? मंगल-निवासी अपने खड्ड से बाहर नहीं निकल सकते हैं, क्या वह ऐसा कर सकते हैं?"

मेरा भाई उसे कुछ न बता सका।

बाद में उसे मालूम हुआ कि संकट की अनिश्चित भावना भूमि-गत रेलवे यात्रियों में भी फैल गयी है, और रविवारीय भ्रमणार्थी समस्त दक्षिण-पश्चिमी भागों—बार्न्स, विम्बिलडन, रिचमण्ड पार्क, क्यू आदि से अस्वाभाविक रूप में जल्दी लौट रहे हैं, परन्तु किसी भी मनुष्य के पास सुनी-सुनायी अनिश्चित बातों के कहने को अन्य कुछ न था। इस विषाक्त फोड़े से संबंधित सभी व्यक्ति विक्षोभित थे।

पाँच बजे के समीप स्टेशन की एकत्रित होती भीड़ दक्षिण-पूर्वी एवं दक्षिण-पश्चिमी स्टेशनों के मध्य सूचना-लाइन के खुल जाने, और विशाल तोपों तथा सैनिकों से लदे डिब्बों को देखकर अपरिमित रूप से उत्तेजित हो उठे। यह वह तोपें थीं जो वूलविच और चैथम से किंगस्टन क्षेत्र को भरने के निमित्त लायी जा रही थीं। इस समय परिहासों का आदान-प्रदान हुआ! "तुम खा लिये जाओगे!" "हम पालने वालों में सर्व श्रेष्ठ हैं!" आदि-आदि। उसके कुछ समय पश्चात् पुलिस वालों का एक दस्ता स्टेशन पर आया, और भीड़ को प्लेटफार्मों से हटाने लगा, और मेरा भाई पुनः सड़क पर चला आया।

गिर्जे के पवित्र घण्टे सान्ध्य प्रार्थना के निमित्त बज रहे थे, और मुक्ति-सेना की कुमारियों का एक समूह वाटरलू रोड से भजन गाता आ रहा था। पुल पर घुमक्कड़ों की एक बहुसंख्या किसी विलक्षण भूरे रंग के फेन को खंडाकार रूप में धारा में तिराते हुए देख रही थी। सूर्य अस्त हो रहा था, और क्लाक-टावर तथा पार्लियामेंट हाउसेज़ कल्पना किये जाने योग्य प्रशान्ततम आकाश के नीचे चमक रहे थे—सुनहला आकाश, जिस पर लाल बैंगनी वर्ण के मेघों की दीर्घ तिरछी धारियाँ अंकित थीं। वहाँ किसी तैरती वस्तु की चर्चा थी। वहाँ के मनुष्यों में से एक, जिसने बताया कि वह एक आत्मसंयमी था, कहा कि उसने पश्चिम की ओर हैलियोग्राफ़ की चमक देखी है।

वैलिंग्डन स्ट्रीट्र में मेरे भाई की भेंट कुछ हट्टे-कट्टे, असभ्य-से दीख पड़ने वाले व्यक्तियों से हुई, जो उसी समय फ्लीट स्ट्रीट से कुछ भीगे समाचार-पत्र एवं आंतकपूर्ण घोषणा-पत्रों को लिये चले आ रहे थे। "भयानक आपत्ति!" वह वैलिंग्डन स्ट्रीट में एक दूसरे के प्रति चिग्घाड़-सी मारते चिल्ला रहे थे। "वीब्रिज पर युद्ध! पूरे समाचार! मंगल-निवासियों का प्रत्यावर्तन! लन्दन संकट की सम्भावना में!" उसे उस समाचार-पत्र की एक प्रति के निमित्त तीन पैसे देने पड़े।

और केवल उसी समय वह मंगल-निवासियों की सम्पूर्ण शक्ति एवं भयावहता के संबंध में थोड़ा-बहुत समझ सका। उसे मालूम हुआ कि वह केवल मुट्ठी भर मन्दगामी जीव नहीं थे, अपितु वह विशाल यंत्रों का संचालन करने वाले मस्तिष्क थे, और वह शीघ्रगति से चल सकते तथा इतने प्रचण्ड वेग से प्रहार कर सकते थे कि शक्तिशाली तोपें भी उनका सामना कर पाने में निष्फल सिद्ध होती थीं।

उनके यन्त्रों का वर्णन 'विशाल मकड़ों के समान यन्त्रों से किया गया था, जो लगभग सौ फीट ऊँचे एवं एक एक्सप्रेस गाड़ी के समान गतिशील थे, और उग्र अग्नि-किरण बरसा सकने योग्य थे।' ढकनेदार बेटरियाँ, जिनमें मुख्यतः मैदानी तोपें थीं, हारसेल कामन के आस-पास

तथा विशेष रूप से वोकिंग जिले और लन्दन के मध्य के देहातों में लगा दी गयी थीं। उनमें से पाँच यन्त्र टेम्स की ओर गतिशील देखे गये थे, और केवल एक भाग्यवश नष्ट कर दिया गया था। और दूसरे स्थानों में गोले लक्ष्य-भ्रष्ट हो गये, और तोपें तुरन्त ही अग्नि-किरण द्वारा लुप्त कर दी गयीं। विशाल संख्या में सैनिकों के नष्ट होने का वर्णन था, परन्तु तो भी उनका दृष्टिकोण आशावादी था।

मंगल-निवासी पीछे हटा दिये गये थे, वह अभेद्य नहीं थे। वह वोकिंग के चारों ओर चक्राकार रूप में फैले अपने सिलण्डरों के त्रिकोण में लौट गये थे। हैलियोग्राफ़ लिये सिगनलर लोग चारों ओर से उनके समीप घिरते आ रहे थे। विण्डसर, पोर्टस्माउथ, एल्डरशाट, वूलविच यहाँ तक कि उत्तर के जिलों से भी तोपें शीघ्रता के साथ लायी जा रही थीं; दूसरी तोपों के साथ-साथ वूलविच से पिच्चानवे पाउण्ड वाली तोपें। सब मिलकर, एक सौ सोलह, अपनी स्थिति सम्हाल चुकीं अथवा स्थानों पर लगा दी गयी थीं, जो मुख्यतः लन्दन नगर को चारों ओर से घेरे थीं। इंगलैंड में इससे पूर्व कभी भी सैनिक सामग्रियों का ऐसा विशाल एकत्रीकरण नहीं हुआ था।

यदि और अधिक सिलण्डर पृथ्वी पर गिरे, तो आशा की जाती थी कि वह प्रचण्ड विस्फोटक पदार्थों द्वारा, जो शीघ्रतापूर्वक प्रस्तुत एवं वितरित किये जा रहे थे, नष्ट कर दिये जायेंगे। निस्संदेह समाचार यह था कि स्थिति विलक्षणतम एवं गम्भीर थी, परन्तु जनता को इस त्रास को भुलाने अथवा महत्व न देने को प्रोत्साहित किया जा रहा था। इसमें सन्देह नहीं कि मंगल-निवासी महानतम रूप में विलक्षण एवं भयावह थे, परन्तु बाह्य रूप में वह हमारी अपेक्षा लाखों में बीस से भी अधिक नहीं थे।

अधिकारियों के पास यह सोचने के निमित्त आधार था कि बाह्य रूप में प्रत्येक में पाँच से अधिक और इस प्रकार कुल मिलाकर पन्द्रह से अधिक मंगल-निवासी उन यन्त्रों में नहीं थे। और उनमें से एक नष्ट

हो चुका था—हो सकता है कि उससे भी अधिक । जनता को संकट के आगमन के सम्बन्ध में भली प्रकार सावधान कर दिया गया, और दक्षिण-पश्चिमी नगरवर्ती क्षेत्रों के भीत एवं त्रस्त व्यक्तियों की सुरक्षा के निमित्त विशाल पैमाने पर प्रयत्न किये जा रहे थे । और इसी प्रकार लन्दन की सुरक्षा से सम्बन्धित आश्वासनों को पुनः-पुनः दोहराकर एवं अधिकारियों के संकट का सामना कर सकने के आत्मविश्वास के साथ, यह घोषणा-रूप सूचना समाप्त हो गयी थी ।

यह विशाल अक्षरों में छपी थी, और उसकी स्याही अभी भी गीली थी, और आलोचना का एक भी शब्द कह सकने का कोई स्थान न था। यह देखना विलक्षण था, मेरे भाई ने कहा, कि पत्र के अन्य स्थानों को इस सूचना को स्थान देने के निमित्त निर्दयतापूर्वक फाड़ डाला गया था ।

समस्त वैलिण्डन स्ट्रीट में लोगों को इन गुलाबी पन्नों को फड़फड़ाता और इसे पढ़ता देखा जा सकता था, और समस्त स्ट्रेन्ड देखते ही देखते इन समाचार-पत्रों को बेचने वाले हाकरों की भीड़ से भर उठा । बसों पर चढ़ते लोग अपनी प्रतियाँ लेने के निमित्त भाग कर आ रहे थे। निस्संदेह इन समाचारों ने लोगों को अत्यधिक उत्तेजित कर दिया था, चाहे इससे पूर्व वह इस ओर कितने ही उदासीन क्यों न रहे हों । स्ट्रेण्ड की एक मान-चित्र की दूकान की खिड़कियों को खोल डाला गया, और मेरे भाई ने बताया कि अपने रविवारीय वस्त्रों में एक व्यक्ति, जो नीबू के रंग के दस्ताने भी पहिने था, खिड़की में दिखाई पड़ रहा था, और शीघ्रतापूर्वक सरे के मान-चित्रों को शीशे के पीछे लटका रहा था ।

हाथ में समाचार-पत्र लिये स्ट्रेण्ड से ट्रेफेलगर स्क्वायर जाते हुए, मेरे भाई ने पश्चिमी सरे से भागने वाले कुछ व्यक्तियों को देखा । एक मनुष्य था, जो एक ऐसी गाड़ी में, जिसे तरकारी बेचने वाले प्रयोग करते हैं, जा रहा था, और गाड़ी में उसकी पत्नी, दो बच्चे एवं कुछ फर्नीचर था । वह वेस्टमिन्स्टर ब्रिज की ओर से आ रहा था, और उसके पीछे

ही भूसा ढोने वाला एक वैगन था, जिसमें कुछ सम्भ्रान्त-से दीख पड़ने वाले व्यक्ति बैठे थे, और कुछ बक्स एवं बण्डल उसमें रखे थे। इन व्यक्तियों के चेहरे अस्त-व्यस्त हो रहे थे, और उनकी सम्पूर्ण बसों पर अपने सर्वश्रेष्ठ रविवारीय वस्त्रों में अलंकृत व्यक्तियों से पूर्ण वैषम्य प्रकट करती थी। घोड़ागाड़ियों में बैठे फैशनेबल वस्त्रों वाले लोग उन्हें घूर रहे थे। स्क्वायर पर वह इस प्रकार रुकते जैसे कि वह नहीं समझ पा रहे हों कि वह किधर मुड़ें और अन्त में वह पूर्व की ओर स्ट्रेण्ड वाली सड़क पर मुड़ जाते। इनसे कुछ दूरी पर काम-काजी वस्त्र पहिने एक व्यक्ति एक पुराने फैशन वाली तीन पहियों वाली गाड़ी पर आया, जिसका अगला पहिया छोटा था। उसका चेहरा गन्दा और सफेद हो रहा था।

मेरा भाई सड़क से नीचे विक्टोरिया नामक स्थान के लिये मुड़ा, और उसकी भेंट ऐसे अनेक व्यक्तियों से हुई। उसकी एक अनिश्चित-सी भावना थी कि वह मुझसे भी ऐसे ही रूप में भेंट कर सकता है। उसने यातायात का निर्देशन करती पुलिस को भी असाधारण संख्या में पाया। कुछ शरणार्थी बसों वाले व्यक्तियों से विचार-विमर्श कर रहे थे। एक कह रहा था कि उसने मंगल-निवासियों को देखा है। "पैदल चलने वाली टिकटियों पर लगे हुए वायलर्स, मैं तुम्हें बताता हूँ, मनुष्यों की भाँति लाँघ-लाँघ कर चलते हुए।" लोगों की बहुसंख्या उनके विलक्षण वर्णन से उत्तेजित एवं सजीव हो उठी थी।

विक्टोरिया के परे के दूकानदार इन आने वालों के साथ अच्छा व्यापार कर रहे थे। स्ट्रीट के सभी कोनों पर लोग समाचार-पत्र पढ़ रहे थे, उत्तेजित रूप में वार्तालाप कर रहे थे अथवा रविवार के इन विलक्षण आगन्तुकों को घूर रहे थे। जैसे-जैसे रात्रि बढ़ती गयी, उनकी संख्या भी बढ़ती गयी, और अन्त में, मेरे भाई ने मुझे बताया, सड़कें किसी डर्बी वाले दिन एप्सम-हाई-स्ट्रीट पर होने वाली भीड़-भाड़ के समान भर गयीं। मेरे भाई ने इन भगोड़ों में से अनेक से प्रश्न किये, परन्तु उनमें से अधिक से वह कोई सन्तोषजनक उत्तर न पा सका।

केवल एक मनुष्य के अतिरिक्त, जिसने उसे विश्वास दिलाया कि वोकिंग पूर्व की रात्रि को पूर्णतः नष्ट कर दिया जा चुका है, उसे वोकिंग का अन्य कोई समाचार नहीं मिला।

"मैं बाइफ्लीट से आया हूँ", उसने कहा, "प्रातः ही साइकिल पर सवार एक व्यक्ति वहाँ आया, और एक द्वार से दूसरे तक भाग-भागकर उसने सभी को चले जाने के निमित्त सावधान किया। तब सैनिक लोग आये। हम देखने के लिये बाहर आये, और पश्चिम की ओर धुएँ के बादल थे—धुआँ और केवल धुआँ, और एक भी जीवित व्यक्ति उस ओर से आता न दीख पड़ा। तब हमने चर्टसी की ओर तोपों की ध्वनि सुनी, वीब्रिज की ओर से आते समूहों को देखा। अतः मैंने घर को ताला लगा दिया और चला आया।"

उस समय गलियों में यह प्रबल भावना पायी जा रही थी कि अधिकारियों की आक्रमणकारियों को बिना इतनी असुविधा उत्पन्न किये ही नष्ट कर डालने की अक्षमता निन्दनीय है।

आठ बजे के लगभग लन्दन के समस्त दक्षिणी भाग में भारी गोला-बारी की ध्वनि सुनायी पड़ रही थी। मुख्य गलियों में भारी भीड़-भाड़ होने के कारण मेरा भाई उसे नहीं सुन सका, परन्तु नदी की ओर वाली पिछली गलियों में आने पर वह उसे स्पष्ट रूप में सुन सका।

वेस्ट मिन्स्टर से रीजेन्ट पार्क वाले अपने कमरे की ओर वह दो बजे लौटा। मेरे सम्बन्ध में वह अब अत्यधिक चिन्तित था, और संकट की अपरिमितता के कारण अशान्त। सैनिक-सूचना के आधार पर उसका मन दौड़ने को कर रहा था, जैसा कि शनिवार को मेरा कर रहा था। उसने उन समस्त शान्त एवं प्रतीक्षा-रत तोपों एवं आकस्मिक रूप में भ्रमण-शील हो उठने वाले गाँवों के सम्बन्ध में विचार किया; उसने टिकटियों पर सौ फीट ऊँचे बायलर्स की कल्पना करने का प्रयत्न किया।

दो-एक गाड़ियाँ भरे शरणार्थी आक्सफोर्ड स्ट्रीट की ओर और अन्य कुछ मेरीलेबान रोड की ओर जा रहे थे, परन्तु यह समाचार इतनी मन्द गति से प्रसारित हो रहा था कि रीजेन्ट स्ट्रीट पर इस समय भी सदैव की भाँति अनेक रविवारीय रात्रि के भ्रमणार्थी आ-जा रहे थे, यद्यपि समूहों में वार्तालाप कर रहे थे, और रीजेन्ट पार्क के समीप अनेक मौन दम्पति छिन्न-भिन्न गैस के लैम्पों के नीचे सदा की भाँति आ-जा रहे थे। रात्रि ऊष्ण एवं स्तब्ध थी, और उसे भंग करने वाली तोपों की ध्वनियाँ थोड़े-थोड़े काल के पश्चात् सुनायी पड़ रही थीं, और दक्षिण की ओर बिजली कौध उठती थी।

यह समझते हुए कि मैं भयानक विपत्ति में फँस चुका हूँ, उसने समाचार-पत्र को बार-बार पढ़ा। वह चिन्तित था, और रात्रि के भोजन के पश्चात् वह पुनः निरुद्देश्य भ्रमण के निमित्त बाहर निकल पड़ा। वह लौट आया और निष्फल रूप से उसने स्वयं को परीक्षा की पुस्तकों में लगाने का प्रयत्न किया। वह मध्य रात्रि के थोड़े समय पश्चात् सोने गया, और सोमवार के प्रारम्भिक घन्टों में उसकी नींद भयानक स्वप्नों, द्वार खटखटाने वालों, और भागते पैरों एवं दूरतम ढोलों की ध्वनियों और घन्टियों की घनघनाहट से भंग हो गयी। छत पर रक्त वर्ण पर-छाइयाँ नाच रही थीं। एक क्षण तक वह यह विचार करता पड़ा रहा कि क्या प्रातः हो चुका है अथवा संसार विक्षिप्त हो गया है। तब वह शय्या से कूद पड़ा और खिड़की की ओर भागा।

उसका कक्ष महराबदार था, और उसने अपना सर बाहर निकाला, और उसके खिड़की खोलने की ध्वनि ने दर्जनों प्रतिध्वनियों को जन्म दिया, और अनेक प्रकार के रात्रि के अधूरे वस्त्र पहिने लोग दिखाई पड़े। लोग प्रश्न कर रहे थे। "वह आ रहे हैं," द्वार को हथौड़े से पीटता एक पुलिस वाला चिंघाड़ उठा।

ढोल एवं तुरही की ध्वनि एलबनी स्ट्रीट वाली बैरक से आ रही थी, और सुनायी पड़ सकने की सीमा वाला प्रत्येक गिर्जा नींद को एक

प्रबल एवं अव्यवस्थित जगाने वाले घन्टे की ध्वनि से उड़ा रहा था। खुलते हुए द्वारों की ध्वनियों का कोलाहल सुनायी पड़ रहा था, और सामने वाली खिड़कियाँ एक के पश्चात् दूसरी, अन्धकार से पीले प्रकाश में परिर्वतित होने लगी।

सड़क के ऊपर की ओर एक बन्द घोड़ा-गाड़ी सरपट गति से दौड़ती आयी, जिसकी ध्वनि खिड़की के नीचे तीव्रतम हो उठी, और तब धीरे-धीरे मन्द पड़ती गयी। उसके पीछे ही दो गाड़ियाँ आईं, जो भागती हुई सवारियो के एक विशाल समूह की अग्रगामिनी थी, जो अधिकतर यूस्टन के चढ़ाव की ओर जाने की अपेक्षा चाक फार्म स्टेशन की ओर जा रही थी, जहाँ से नार्थ-वेस्टर्न स्पेशल गाड़ियाँ भर रही थीं।

पर्याप्त समय तक, आश्चर्य से जड़, मेरा भाई खिड़की से झाँकता पुलिस वालों को एक से दूसरे द्वार को खटखटाते, और अपने अविश्वसनीय समाचारों को सुनाते देखता रहा। तब उसके पीछे वाला द्वार खुला, और उस स्थान पर रहने वाला व्यक्ति केवल कमीज, पायजामा, और स्लिपर पहन आया, जिसकी पतलून की पट्टी कमर के समीप खुल रही थी, और उसके बाल तकिये के कारण अस्त-व्यस्त हो रहे थे।

"क्या मुसीबत है?" उसने प्रश्न किया। "अग्नि! कैसी भयानक पंक्तियाँ!"

उन दोनों ने अपने सर खिड़कियों से बाहर पुलिस वालों की बातों को सुनने का प्रयत्न करते हुए निकाले। बगल वाली गलियों से लोग बाहर निकल रहे थे, और बातचीत करते किनारों पर खड़े थे।

"यह सब क्या मुसीबत है?" मेरे भाई के सह-निवासी ने कहा।

मेरे भाई ने उसे वस्त्र पहिनते अस्पष्ट रूप में उत्तर दिया, और प्रत्येक बार वह खिड़की तक दौड़ता रहा, ताकि वह सड़क पर होने वाली उत्तेजना के किसी भी भाग से वंचित न रह जाय। और तुरन्त ही असामयिक रूप में प्रातःकालीन समाचार-पत्रों को बेचने वाले गलियों में चिंघाड़ उठे!

"लन्दन घुट मरने के संकट में !" किंगस्टन के दोनों ओर और पार वाले मकानों, और पीछे पार्क के चबूतरों एवं मेरीलेबोन, वेस्टबोर्न पार्क और सेन्ट पेनक्रास की सैंकड़ों गलियों, पश्चिम एवं उत्तर की ओर किल्बर्न और सेन्ट जान वुड और हैम्पस्टेड की ओर, पूर्व में शोरडिच, हाईबरी, हेगरस्टन और हाक्सटन की ओर, और वास्तव में समस्त लन्दन के एलिंग से ईस्ट हेम तक के विशाल क्षेत्र में लोग अपने नेत्र मलते, खिड़कियाँ खोलकर नाना प्रकार के उद्देश्य-हीन प्रश्न पूछ रहे थे, और शीघ्रतापूर्वक वस्त्र पहिन रहे थे, जब कि भय की सर्वप्रथम लहर गलियों में प्रवाहित हो रही थी। यह संकट का आगमन था, और लन्दन, जो रविवार की रात्रि को अचेतन एवं निष्क्रिय रूप में निद्रा-मग्न हुआ था, सोमवार के प्रारम्भिक घन्टों में संकट के स्पष्ट आभास के साथ जाग रहा था।

अपनी खिड़की से यह समझ पाने में असमर्थ कि नीचे क्या हो रहा है, मेरा भाई नीचे गली में उतर गया, ठीक उसी समय जब कि मकानों के बीच चमकता आकाश, आते हुए प्रभात के कारण गुलाबी हो रहा था। प्रत्येक क्षण पैदल अथवा सवारियों पर भागते हुए व्यक्तियों की संख्या बढ़ती ही गयी। "काला धुआँ," उसने लोगों को चिल्लाते सुना, और "काला धुआँ" पुन: वायु-मण्डल में गूँज उठा। ऐसे सार्वजनिक भय का स्पर्श-संचारी रूप स्पष्ट था। जब मेरा भाई द्वार पर हिचकिचाता खड़ा था, उसने एक और समाचार-पत्र-वाहक को अपनी ओर आते देखा, और तुरन्त ही उसने एक प्रति खरीदी। वह मनुष्य, शेष लोगों के साथ भाग रहा था, और भागते-भागते अपने समाचार-पत्र एक-एक शिलिंग को बेच रहा था—लाभ और भय का विलक्षण सम्मिश्रण !

और इस समाचार-पत्र में मेरे भाई ने सेनाध्यक्ष का मार्मिक सम्वाद पढ़ा।

'मंगल-निवासी राकेटों के द्वारा काले एवं विषाक्त धुएँ के विशाल पिंड

छोड़ते हैं। उन्होंने हमारी बैटरियों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला है, रिचमन्ड, किंगस्टन और विम्बिलडन को ध्वस्त कर दिया है, और मार्ग की समस्त वस्तुओं को विनष्ट करते, वह लन्दन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उनको रोक पाना असम्भव है। तुरन्त ही पलायन करने के अतिरिक्त उस काले धुएँ से कोई त्राण नहीं है।'

केवल इतना ही, परन्तु यही पर्याप्त था। उस विशाल छः मिलियन वाली जन-संख्या का नगर गतिशील था, सरक रहा था, भाग रहा था—तुरन्त ही विशाल संख्या में वह उत्तर की ओर जा रहा था।

"काला धुआँ !" अनेक कण्ठ पुकार उठते थे, "अग्नि !"

समीपवर्ती गिर्जों के घन्टों ने एक भीषण कोलाहल करना प्रारम्भ कर दिया, और असावधानी के साथ चलाई जाने वाली एक घोड़ा-गाड़ी चीत्कारों एवं गलियों के मध्य सड़क पर रखी एक पानी की टंकी से टकरा गयी। मद्धिम एवं पीला प्रकाश मकानों में इधर-उधर जाता दृष्टिगोचर होता था, और गुजरती हुई कोई-कोई घोड़ागाड़ी अपने अभी तक जलने वाले लैम्प को चमकाती चली जाती, और ऊपर आकाश में प्रभात निखरता जा रहा था—स्पष्ट, स्थिर एवं शान्त।

उसने अपने ऊपर वाले कमरों और सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाते लोगों के दौड़ने की ध्वनियाँ सुनीं। ड्रेसिंगगाउन और शाल पहिने उसकी मकान-मालकिन द्वार पर आई; और साथ उसका पति था, जो बातें करता जा रहा था।

जैसे ही मेरे भाई ने सभी लोगों के बाहर निकलने के अर्थ को समझा, वह अपने कमरे में गया, उसने वहाँ रखा सभी धन अपनी जेब में रखा—कुल मिलाकर दस पाउंड, और पुनः गलियों में निकल गया।

१५

सरे की घटना

जब कि हैलीफोर्ड के समतल चरागाहों की एक झाड़ी के नीचे बैठा पादरी मुझसे चीख-चीखकर बातें कर रहा था, और मेरा भाई भगोड़ों को वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज पर देख रहा था, मंगल-निवासियों ने अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाही पुनः प्रारम्भ कर दी। परस्पर-विरोधी दिये गये समस्त वर्णनों से जो कुछ भी कोई मनुष्य निश्चित कर सकता है, उनकी बहुसंख्या उस रात्रि को नौ बजे तक उस खड्ड में किसी ऐसे कार्य में क्रिया-शील रही, जो हरित वर्ण धूम्र के विशाल पिंडों को जन्म देता था।

परन्तु आठ बजे के लगभग उनमें से तीन निश्चित रूप से बाहर निकल आये थे, और मन्द गति एवं सावधानी के साथ बढ़ते हुए उन्होंने अपना मार्ग बाइफ्लीट और पायरफोर्ड होते हुए रिपले और वीब्रिज की ओर निकाला, और इस प्रकार वह अस्त होते सूर्य के प्रकाश में प्रतीक्षा-रत तोपों की दृष्टि में पड़ गये। यह मंगल-निवासी किसी समूह की अपेक्षा एक पंक्ति में आगे बढ़ रहे थे, प्रत्येक अपने साथी से सम्भवतः एक या डेढ़ मील की दूरी पर। उसी दूरी में एक से दूसरे की ओर गतिशील होते हुए वह साइरन के समान ध्वनि में परस्पर सम्वादों का आदान-प्रदान कर रहे थे।

रिपले और सेन्ट जार्ज हिल पर होने वाली यही ध्वनि एवं तोपों की गरज थी, जिसे हमने अपर हैलीफोर्ड पर सुना था। रिपले के तोप-चियों ने, जो पैदल सेना के नौसिखिये सैनिक थे, और जिन्हें इस स्थिति पर नहीं लगाया जाना था, एक भयानक, असामयिक एवं निष्फल बौछार

की, और तब पैदल और घोड़ों पर वह निर्जन गाँवों की ओर भाग निकले, और बिना अपनी अग्नि-किरण का प्रयोग किये, मंगल का वह यंत्र शान्तिपूर्वक उनकी तोपों के मध्य रुका, उनके सामने से निकला और इस प्रकार पेनशिल पार्क में लगी तोपों के समक्ष आ पहुँचा, जिन्हें उसने नष्ट कर डाला।

सेन्ट जार्ज हिल वाले तोपची या तो सुशिक्षित थे अथवा किसी भिन्न धातु से सजे हुए थे। एक देवदार के वन की ओट में छिपे, शायद वह समीपतम मंगल-निवासी की दृष्टि से ओझल थे। उन्होंने अपनी तोपों को इस प्रकार लगा रखा था जैसे कि वह परेड निरीक्षण की अवस्था में हों और उन्होंने लगभग एक सहस्र गज के घेरे से तोपें दाग दीं।

गोले मंगल के उस यन्त्र के चारों ओर चमके, और उन्होंने उसे कुछ पग बढ़ते, लड़खड़ाते, और तब नीचे गिरते देखा। प्रत्येक मनुष्य एक साथ कोलाहल कर उठा, और तब उन्मत्त। शीघ्रता के साथ तोपें पुनः भरी गयीं। उस यन्त्र ने एक दीर्घ भुकान प्रारम्भ कर दी, और तुरन्त ही चमचमाता एक दूसरा दैत्य, उसकी ध्वनि का उत्तर देता, दक्षिण वाले वृक्षों के ऊपर चमका। ऐसा लगता था कि जैसे उस तिपाई की एक टांग किसी गोले से टूट-सी गयी है। तोपों की दूसरी बौछार के समस्त गोले गिरे हुए मंगल-यन्त्र पर बरसने लगे, और साथ ही उसके दोनों साथी तोपों को नष्ट करने के निमित्त अपनी अग्नि-किरण लाये। बारूद और गोले विस्फोट कर उठे, तोपों के चारों ओर के देवदार वृक्ष अग्नि-शिखाएँ छोड़ने लगे, और केवल एक या दो मनुष्य, जो इस समय तक पहाड़ी की चोटी पर पहुँच चुके थे, बच सके।

इसके पश्चात् लगता है कि तीनों ने परस्पर विचार-विमर्श किया और वह रुक गये, और उन स्काउटों ने, जो उनका निरीक्षण कर रहे थे, सूचना दी कि वह अगले डेढ़ घन्टे तक निश्चेष्ट पड़े रहे। वह मंगल-निवासी, जो गिरा दिया गया था, एक छोटी भूरी आकृति, जो उस दूरी से नीले रंग की एक छोटी खूंटी दिखाई पड़ती थी, अपने हुड

से कठिनतापूर्वक रेंग कर बाहर निकला, और अपने यन्त्र की मरम्मत में लग गया। लगभग नौ बजे तक वह कार्य समाप्त कर चुका था, कारण कि उसकी ऊपरी टोपी वृक्षों के ऊपर चमकने लगी थी।

उस रात नौ बजकर लगभग कुछ मिनिट हुए थे, जब कि इन तीनों मंगल-यन्त्रों से, जो पहरा दे रहे थे, चार यन्त्र और जा मिले, जिनके पास एक पतला काला ट्यूब था। उन तीनों में से प्रत्येक को एक ऐसा ही ट्यूब दिया गया, और सातों समानान्तर दूरी पर एक वक्राकार गति में सेन्ट जार्ज हिल, वीब्रिज और रिपले के दक्षिण-पश्चिम वाले सैन्ड नामक गाँव की ओर चले। जैसे ही वह चलने लगे, एक दर्जन राकेट उनके सामने डिटन और ईशर वाली प्रतीक्षा-रत तोपों को सावधान करने के निमित्त उड़ने लगे। उसी समय उनके चार लड़ाकू यन्त्र, जो इसी प्रकार ट्यूबों से सुसज्जित थे, नदी को पार कर गये, और उनमें से दो, जो पश्चिमी आकाश में काली आकृतियों के समान दिखाई पड़ रहे थे, मेरे और पादरी के सामने दिखाई पड़े, जब कि हम थके-हारे एवं कष्ट-पूर्वक उस सड़क की ओर शीघ्रता से बढ़ रहे थे, जो हेलीफोर्ड के उत्तर की ओर जाती है। जैसा हमें प्रतीत होता था, वह किसी बादल पर तैरने-से लगे, कारण कि एक श्वेत धुंधलका खेतों पर छा गया और उनकी एक तिहाई ऊँचाई तक ऊपर उठने लगा।

इस दृश्य पर पादरी दबे गले से चिल्लाया और भागने लगा। परन्तु मैं जानता था कि एक मंगल-यन्त्र से भागने का प्रयत्न निष्फल है और एक ओर घूमकर मैं गीले बिच्छू के पेड़ों और गोखरु की झाड़ियों में रेंगता, सड़क के सहारे वाली एक चौड़ी खाई में बढ़ने लगा। वह घूमा, उसने देखा कि मैं क्या कर रहा हूँ, और मेरी ओर आने लगा।

वह दोनों मंगल-यन्त्र रुक गये, और हमारे समीप ही सनबरी की ओर मुँह किये खड़े रहे, और दूरतम तीसरा यन्त्र अब सन्ध्या के तारे की ओर गतिशील एक धूमिल विन्दु-सा लगने लगा—दूर स्टेन्स की ओर।

कालान्तर पर होने वाली मंगल-यन्त्रों की भुकान अब बन्द हो गयी; उन्होंने सिलन्डर के चारों ओर अर्ध चन्द्राकार रूप में अपनी स्थिति पूर्ण स्तब्धता के साथ सम्भाल ली। यह घेरा लगभग बीस मील का था। बारूद के आविष्कार से अब तक किसी भी युद्ध का प्रारम्भ इतना शान्त नहीं रहा था। हमारे एवं रिपले के समीपवर्ती किसी भी अन्य अन्वीक्षक पर इसका संक्षिप्त रूप में एक-सा ही प्रभाव पड़ा होता—मंगल-निवासी अन्धकार से भरे आकाश के एक छत्र अधिकारी-से प्रतीत होते थे, जो केवल क्षीण चन्द्र, नक्षत्रों, सांध्य गगन के धूमिल प्रकाश एवं सेन्ट जार्ज हिल और पेनशिल के गुलाबी प्रकाश से भंग हो रहा था।

परन्तु स्टेन्स, हाउन्सलो, डिटन, ईशर, अकिहम पहाड़ियों के पीछे और नदी के दक्षिण की ओर, और उससे परे उत्तर दिशा वाले चरागाहों में जहाँ कहीं भी वृक्षों का समूह अथवा गाँवों के मकानों की छतें छिपने का पर्याप्त स्थान प्रदान कर रही थीं, तोपें प्रतीक्षा-रत थीं। संकेत देने वाले राकेट फटे और रात्रि में अपनी चिन्गारियाँ छोड़कर विलीन हो गये, तथा प्रतीक्षा करने वाली तोपों की उत्कंठा तीव्रतर हो गयी। मंगल-निवासियों को गोलों की पंक्ति के बीच ही आगे बढ़ना था, और तुरन्त ही चित्रवत् खड़ी मनुष्यों की उन आकृतियों की प्रारम्भिक रात्रि में गहन काली दीख पड़ने वाली वह तोपें भयानक गर्जना के साथ युद्ध-आक्रोश में फूट पड़ीं।

निस्सन्देह निरीक्षण-शील उन सहस्रों मस्तिष्कों में प्रमुख विचार, जैसे कि वह मेरे अन्दर प्रमुख था, यह तथ्य था कि वह हमें कितना समझते थे। क्या वह समझ चुके थे कि लाखों की संख्या में रहने वाले हम लोग संगठित, संयमित थे, और साथ-साथ काम कर रहे थे? अथवा उन्होंने हमारे राकेटों से निकलने वाली अग्नि-शिखाओं और हमारे गोलों के आकस्मिक प्रहारों एवं हमारे उनके स्थानों को तत्परता से घेर लेने की क्रिया को उसी प्रकार समझा जिस प्रकार कि हम किसी छेड़े हुए छत्ते वाली मुहारों के प्रचण्ड एवं सम्मिलित आक्रमण को समझते

हैं ? (उस समय कोई नहीं जानता था कि उन्हें किस प्रकार के भोजन की आवश्यकता थी।) इसी प्रकार के सैकड़ों प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उठ रहे थे जिस समय कि मैं विशाल प्रहरी के समान खड़ी आकृति को देख रहा था। और मेरे मस्तिष्क में लन्दन की ओर वाली गुप्त एवं अज्ञात शक्तियों की बात भी उपस्थित थी। क्या उन्होंने खन्दक तैयार कर ली है ? क्या हाउन्स्लो वाले बारूद के कारखाने जाल के समान तैयार थे ? क्या लन्दन-निवासियों के हृदय में अपने विशाल प्रासादों की रक्षा के निमित्त प्रबलतम संघर्ष करने का साहस था ?

तब कुछ समय पश्चात्, जैसा कि हमें प्रतीत हुआ, झाड़ी को बेधती दूर चलने वाली तोप के धमाके के समान कोई ध्वनि आई। तब दूसरी उससे और अधिक समीप, और तब फिर तीसरी। तब हमारे समीप वाले मंगल-यन्त्र ने अपने ट्यूब को ऊंचा उठाया और उसे तोप के समान छोड़ा, एक धमाके के साथ जिसने पृथ्वी को कंपा दिया। स्टेन्स के समीपवर्ती मंगल-यन्त्र ने उसका उत्तर दिया। उसमें केवल उस धमाके की ध्वनि के अतिरिक्त कोई चमक नहीं थी, कोई धुआँ नहीं था।

एक के पश्चात् दूसरी छूटती इन सूक्ष्म-बन्दूकों ने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया कि मैं कुछ समय के लिये अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा एवं अपने जले हुए हाथों को भूल गया, और झाड़ी पर चढ़कर सनबरी की ओर झाँकने लगा। जब मैं ऐसा कर रहा था, एक दूसरी ध्वनि हुई, और एक बड़ा प्रोजेक्टर वायु में हाउन्स्लो की ओर मुंह किये चमकने लगा। मैं उसमें से धूम्र अथवा अग्नि या इसी प्रकार की किसी अन्य वस्तु के निकलने की प्रतीक्षा करता रहा। परन्तु मैं केवल गहन नीलाकाश देख सका, जिसमें एक एकाकी तारा चमक रहा था, और ऊपर और नीचे की ओर केवल श्वेत कुहासा-सा फैला था। और न किसी वस्तु के चटखने की ही ध्वनि हुई और न विस्फोट की ही। स्तब्धता पुनः छा गयी ; और तीन मिनट तक रही।

"क्या हुआ ?" मेरे पीछे खड़े पादरी ने प्रश्न किया।

"ईश्वर जाने !" मैंने उत्तर दिया।

समीप ही एक उल्लू फड़फड़ाया और उड़ गया। दूर पर चिल्लाने की ध्वनि हुई और बन्द हो गयी। मैंने पुनः मंगल-यन्त्र की ओर देखा और पाया कि वह नदी के सहारे पूर्व की ओर तीव्र लुढ़कती गति से जा रहा है।

प्रत्येक क्षण में किसी प्रच्छन्न तोप के गोले की अग्नि को उस पर झपटते देखने की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। परन्तु सन्ध्या की स्तब्धता पूर्ववत् रही। जैसे-जैसे कि वह आगे बढ़ता गया, मंगल-यन्त्र की आकृति छोटी पड़ती गयी, और शीघ्र ही कोहरे एवं रात्रि के घिरते अन्धकार ने उसे निगल लिया। एक समान प्रेरणा से हम ऊपर चढ़ आये। सनबरी की ओर एक काली आकृति थी, जैसे कि एक गावदुम पहाड़ी सहसा वहाँ फूट आई हो, जिसने आगे के स्थान को हमारी दृष्टि से छिपा लिया, और तब दूर वाल्टन के ऊपर भी हमने एक ऐसी ही दूसरी चोटी देखी। पहाड़ी के समान दीख पड़ने वाली यह आकृतियाँ उस समय भी घटती-बढ़ती दिखाई पड़ीं जब हम उन्हें घूर रहे थे।

एक आकस्मिक विचार से प्रेरित होकर मैंने उत्तर की ओर देखा, और वहाँ मैंने इस प्रकार के बादलों के आकार की वस्तु को पाया।

सभी कुछ सहसा शान्त हो गया। दूर दक्षिण-पूर्व की ओर स्तब्धता के कारण, हमने मंगल-निवासियों को एक दूसरे को पुकारते सुना, और तब वायु पुनः उनकी बन्दूकों के दूरतम धमाकों से कँपकँपा उठी। परन्तु पृथ्वी की तोपों ने कोई उत्तर न दिया।

यद्यपि हम उस समय इन वस्तुओं का वास्तविक अर्थ न समझ सके, परन्तु बाद में मुझे इन विशाल स्तूपाकारों का अर्थ समझाया गया, जो सान्ध्याकाश में एकत्र हो रहे थे। उस अर्ध चन्द्राकार में खड़े, जिसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ, प्रत्येक मंगल-यन्त्र ने, किसी अज्ञात संकेत पर, बन्दूक के समान प्रतीत होने वाले उस ट्यूब से किसी भी

पहाड़ी, जंगल अथवा झाड़ी, मकानों के झुरमुट अथवा तोपों को छिपा सकने वाले किसी भी स्थान पर, जो उनके समक्ष था, एक विशाल कनस्तर गोले की तरह फेंका; किसीने केवल एक, किसीने दो, जैसे कि उसने जिसे हम देख चुके थे, और रिपले वाले यन्त्र ने, कहा जाता है, पाँच से अधिक ही। पृथ्वी से टकराकर यह कनस्तर फट गये— विस्फोट नहीं—और असंयत रूप से भारी एवं स्याही के समान भाप के विशाल समूह छोड़ने लगे, जो चक्कर काटते, आबनूस के समान काले बादल के ढेर में ऊपर उठते रहे, वाष्प की एक पहाड़ी-सी समीप-वर्ती भूमि पर स्वयं ही ऊपर-नीचे उठ-गिर रही थी। और उस वाष्प का स्पर्श एवं श्वास द्वारा उसका भीतर जाना प्रत्येक श्वासधारी के लिये मृत्युकर था।

यह वाष्प भारी थी, घने से घने धुएँ से भारी, जिसके कारण उसके प्रथम भयानक विस्फोट एवं संप्रवाह के पश्चात् वह वायु में नीचे की ओर बैठ गया और पृथ्वी पर किसी गैस-पदार्थ की अपेक्षा तरल पदार्थ के समान बहने लगा, और पहाड़ियों को छोड़ते हुए वह घाटियों, खाइयों एवं जल-मार्गों में उसी प्रकार तैरने लगा, जैसे कि ज्वालामुखी पर्वत-शिखरों से झड़ी हुई कार्बोनिक गैस करेगी। और जहाँ-जहाँ वह जल से छूता, वहाँ किसी प्रकार की रासायनिक क्रिया होती, और जल का ऊपरी तल किसी श्वेत झाग से ढक जाता, जो धीरे-धीरे नीचे जाकर अधिक के लिये मार्ग बनाता। यह फेन अघुलनशील था, और गैस के तुरन्त ही किये गये प्रभाव को देखते हुए यह आश्चर्य की बात थी कि कोई भी मनुष्य बिना हानि पाये उस जल को पी सकता था, जिसमे से होकर वह फेन नीचे उतर गया था। यह वाष्प किसी भी अन्य गैस के समान घुली नहीं। वह दोनों ओर के किनारों पर घुमड़ती रही, और ढाल पर मन्द गति से बहती और वायु में अनिच्छापूर्वक इधर-उधर उड़ती रही, और शीघ्र ही वातावरण के कोहरे एवं नमी में सम्मिलित हो गयी और धूल के रूप में पृथ्वी पर गिर पड़ी। जहाँ तक नील वर्ण

की दृष्टि में चमकती चार रेखाओं का सम्बन्ध है, हम इस समय तक उस पदार्थ की वास्तविकता के सम्बन्ध में नितान्त अनभिज्ञ हैं।

उसके प्रचण्ड विस्फोट के समाप्त हो जाने के पश्चात् अपने धूल रूप में पतन से पूर्व ही वह काला धुआँ पृथ्वी पर ऐसा चिपक-सा गया कि वायु में ऊपर पचास फीट से अधिक ऊँचे स्थानों पर, छतों, ऊँचे मकानों के ऊपरी भागों, बड़े वृक्षों की चोटियों आदि पर उसके विष के प्रभाव से पूर्णत: बच पाने की सम्भावना थी, जैसा कि उसी रात्रि स्ट्रीट कोबहम एवं डिटन आदि स्थानों पर सिद्ध भी हुई।

ऊपर वर्णित स्थानों में से बच निकलने वाला एक व्यक्ति उस गैस के सर्पाकार गति में बहने की विलक्षणता की एक आश्चर्यजनक कहानी सुनाता है कि किस प्रकार उसने गिर्जे के शिखर, मकानों एवं गाँवों को उसकी शून्यता से प्रेतों के समान निकलते देखा। डेढ़ दिन तक थका-हारा, भूखा-प्यासा और धूप से झुलसता वह वहाँ रहा और नीलाकाश एवं दूरतम पहाड़ियों की छाया में पृथ्वी मखमल के समान प्रतीत होती थी, जिस पर लाल छतें, हरे वृक्ष और बाद में काले आवरण वाली झाड़ियाँ, प्रवेश-द्वार, खलिहान, झोंपड़ियाँ, दीवारें, स्थान-स्थान पर सूर्य के प्रकाश में चमकती देखीं।

परन्तु यह केवल स्ट्रीट कोबहम पर ही हुआ कि उस वाष्प को स्वयं ही गिर जाने तक घुमड़ते रहने दिया गया। नियम के रूप में, जब वाष्प अपना काम कर चुकती थी, मंगल-निवासी उसमें चलकर और किसी विशेष प्रकार की स्टीम की धारा छोड़कर वायु को उससे मुक्त कर देते थे।

हमारे समीप वाले वाष्प के किनारे को उन्होंने ऐसा ही करके भंग किया, जैसा कि हमने अपर हैलीफोर्ड वाले एक निर्जन मकान की खिड़की से झाँककर देखा, जिसमें कि हम लौट आये थे। वहाँ से हम रिचमन्ड हिल एवं किंगस्टन हिल पर इधर-उधर होती सर्च लाइट को देख सकते थे; और ग्यारह बजे के समीप खिड़की खड़खड़ाहट की ध्वनि

झरने लगी, और विशाल तोपों के गरजने की ध्वनि सुनी, जो वहाँ लगायी गयी थीं। यह लगभग पन्द्रह मिनट तक निरन्तर रुक-रुककर चलती रहीं, और हैम्पटन और डिटन स्थित अदृश्य मंगल-यन्त्रों पर गोले फेंकती रहीं, और तब बिजली की वह पीत किरणें अदृश्य हो गयीं, और उनके स्थान पर एक तीव्र रक्त वर्ण प्रकाश छा गया।

तब चौथा सिलन्डर—हरे रंग का चमकता उल्कापात-सा—जैसा कि मुझे बाद में पता चला, बुशी पार्क में गिरा। इससे पूर्व कि रिचमन्ड और किंगस्टन की तोपें चलीं, दूर दक्षिण-पश्चिम में तोप चलाने के धमाके सुनायी पड़ते रहे, और जहाँ तक मैं समझता हूँ जो उन तोपचियों द्वारा चलायी गयी थीं, इससे पूर्व कि वह काली वाष्प उन पर अधिकार कर सकी।

इस प्रकार इसे उसी प्रकार नियमित रूप में पूरा करके, जैसा कि मनुष्य बर्रों को धुएँ से छिन्न-भिन्न कर देते हैं, मंगल-निवासियों ने दम घोटने वाली इस वाष्प को लन्दन की ओर प्रवाहित कर दिया। इस अर्द्ध चन्द्राकार घेरे के दोनों सिरे धीरे-धीरे उस समय तक फैलते गये, जिस समय तक कि उन्होंने हैनवेल से कूम्ब और मेल्डन तक एक रेखा न बना ली। रात्रि भर उनके विनाशकारी ट्यूब आगे ही बढ़ते गये। उस समय के पश्चात्, जब कि सेन्ट जार्ज हिल वाला मंगल-यंत्र नीचे गिरा लिया गया था, मंगल-निवासियों ने सेना को अपने गोले चलाने का अवसर एक बार भी प्रदान नहीं किया। जहाँ कहीं भी उन्हें अपने विरुद्ध लगायी गयी तोपों की सम्भावना प्रकट होती थी, काली वाष्प का नया कनस्तर फेंका जाता, और जहाँ तोपें प्रकट रूप में थीं, वहाँ वह अपनी अग्नि-किरण का प्रयोग करते थे।

मध्य रात्रि तक रिचमन्ड पार्क के ढाल वाले चमचमाते वृक्षों, और किंगस्टन हिल की चमक काले धुएँ के एक जाल पर पड़ती थी, जो समस्त टेम्स वेली को ढके हुए था, और जहाँ तक दृष्टि का पसार था, वहाँ तक फैला हुआ था। और इसके मध्य दो मंगल-यन्त्र मन्द गति से चल रहे थे,

श्रौर अपने हिस्-हिस् ध्वनि करने वाले स्टीम फेंकने वाले भोपों को इधर-उधर घुमा रहे थे।

मंगल-निवासी उस रात्रि अग्नि-किरण का प्रयोग नहीं कर रहे थे, या तो इसलिये कि उनके पास उसके उत्पादन के साधन केवल सीमित ही थे अथवा वह देश का विनाश करने की इच्छा नहीं रखते थे, और केवल उस प्रतिरोध को ही नष्ट करना चाहते थे, जिसे उन्होंने जन्म दिया था। अपने दूसरे लक्ष्य में वह निश्चित रूप में सफल रहे। रविवार की रात्रि उनकी गति-विधियों के विरुद्ध किये गये संगठित प्रतिरोध की अन्तिम रात्रि थी। उसके पश्चात्, मनुष्यों का कोई भी समूह उनके विरुद्ध खड़ा न हो सका, और यह काम इतना नैराश्यपूर्ण था; यहाँ तक कि तारपीडो-विध्वंसकों के नाविकों ने भी, जो अपने शीघ्रता से आग लगाने वाले यन्त्रों को लेकर टेम्स तक आये थे, रुकना अस्वीकार कर दिया, और विद्रोह करके वह पुन: लौट गये। उस रात्रि के पश्चात जो कुछ भी आक्रमणात्मक कार्य मनुष्य कर सके, वह खाइयों एवं गड्ढों का निर्माण था, और ऐसा करने में भी उनकी शक्तियाँ उच्छृंखल एवं संकुचित रूप में कार्यशील हुई थीं।

कोई भी मनुष्य उन तोपों के भाग्य की कल्पना, जो ईशर की ओर गोधूलि की बेला में गहन प्रतीक्षा में रत थीं, किसी भी रूप में कर सकता है। वहाँ जीवित रहने वाला कोई भी नहीं था। कोई भी उस व्यवस्थापूर्ण प्रतीक्षा की कल्पना कर सकता है, सावधान एवं जागरूक सैनिक अधिकारी, तत्पर तोपची, समीप ही लगा गोलों का ढेर, घोड़ों और वैगनों के साथ तोप के अगले भाग वाले तोपची, खड़े हुए नागरिकों के समूह, जो इतने समीप खड़े थे जितने कि उन्हें खड़ा होने दिया गया था, संध्या की स्तब्धता, एम्बुलेन्स गाड़ियाँ और हस्पताल के तम्बू, जिसमें वीब्रिज के जले एवं घायल लोग थे, तब मंगल-निवासियों द्वारा चलाये गये अस्त्रों की मन्द गूंज, और मकानों एवं वृक्षों के ऊपर चमकने वाले वह भद्दे प्रोजेक्टाइल्स एवं समीपवर्ती खेतों में वह भीषण विनाश।

कोई भी सहसा टूट जाने वाले ध्यान की भी कल्पना कर सकता है; द्रुत गति से फैलता एवं घुमड़ता ऊपर तक दैत्याकार रूप में आगे बढ़ता कृष्णता का वह स्तूप, सन्ध्या को एक स्पर्श-गोचर प्रकाश में बदलता एक विलक्षण एवं विनाशकारी वाष्प-समूह, जो अपने विनाश-मार्ग पर बढता चला आ रहा था, उसके समीपवर्ती धुंधले दिखाई पड़ने वाले मनुष्य एव घोड़े, जो दौड़ रहे थे, नैराश्य की ध्वनियाँ, आकस्मिक रूप में परित्यक्त तोपे, मनुष्य, जिनके दम घुट रहे थे, और जो पृथ्वी पर पड़े हाथ-पैर ऐंठ रहे थे, और अपार-दर्शक धूएँ का वह शंकु। और तब रात्रि और अन्धकार—केवल अपार-दर्शक धुएँ का वह विशाल पिंड, जो अपने विनाश पर यवनिका डाल रहा था।

प्रभात से कुछ पूर्व यह काली वाष्प रिचमन्ड की ओर बढ़ रही थी, और शासन की भग्न होती अन्तिम व्यवस्था, एक अन्तिम प्रयास के रूप में, लन्दन की जन-संख्या को पलायन की आवश्यकता समझाने का प्रयत्न कर रही थी।

१६

लन्दन से निष्कासन

इस प्रकार आप भय की उस प्रचण्ड लहर की कल्पना कर सकते हैं जो संसार के विशालतम नगर में फैल रही थी, ठीक उस समय जब सोमवार का सूर्य उदित होने को था—पलायन करने वालों की मन्द-धारा, जो शीघ्र ही एक द्रुत गामिनी धारा में परिवर्तित होने लगी, जो रेलवे स्टेशन के चारों ओर टक्कर मारती और झाग-सी दे रही थी, और टेम्स नदी में समीप जहाजों में स्थान पाने के लिये संघर्ष-शील व्यक्तियों

के रूप में मार्ग रुद्ध-सी प्रतीत होती थी, तथा प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा उत्तर-पूर्व की ओर निकल जाने के निमित्त प्रयत्न-शील। दस बजते-बजते पुलिस-विभाग और मध्याह्न तक रेलवे-विभाग के संगठन की सम्बद्धता नष्ट हो चुकी थी—प्रथम तीव्र प्रवाह, फिर कोमल कर देने वाला प्रभाव और अन्त में सामाजिक व्यवस्था के उस अन्तिम गलकर बह जाने के रूप में।

टेम्स नदी की उत्तरवर्ती सभी रेलवे लाइनों और केनन स्ट्रीट के दक्षिण-पूर्वी निवासियों को रविवार की मध्य रात्रि को सावधान किया जा चुका था, गाड़ियाँ ठसाठस भर रही थीं, और लोग गाड़ियों में खड़े होने वाले स्थानों के लिये दो बजे तक परस्पर झगड़ रहे थे। तीन बजते-बजते भीड़ इतनी बढ़ गयी कि बिशप्स गेट स्ट्रीट पर भी लोग कुचले जाने लगे, लिवरपूल स्ट्रीट स्टेशन से सौ अथवा कुछ अधिक गज दूर रिवाल्वर चलने लगे तथा छुरे घोंपने की घटनाएँ होने लगीं, और थके-हारे एवं क्रोधित पुलिस वाले, जो यातायात का प्रबन्ध करने भेजे गये थे, उन्हीं लोगों के सर फोड़ने लगे जिनकी रक्षा के निमित्त वह भेजे गये थे।

और जैसे-जैसे दिन बीतता गया, और जब एंजिन-चालक और स्टोकर्स ने लन्दन लौटना अस्वीकार कर दिया, पलायन-शील जन-समूह की विशाल संख्या स्टेशनों को छोड़कर उत्तर की ओर जाने वाली सड़कों की ओर प्रगतिशील हो उठी। मध्याह्न के समीप एक मंगल-यन्त्र बार्न्स के समीप देखा गया, और धीरे-धीरे पृथ्वी की ओर आती काली वाष्प का एक बादल टेम्स नदी और लैमबेन्थ के मैदानों की ओर गतिशील हो उठा, और उसने अपने मन्द अभियान में पुलों से जाने वाले मार्गों को पूर्णतः काट डाला। दूसरा वाष्प-पिंड एलिंग के समीप उठा, और उसने कासिल हिल पर एकत्र जीवित, परन्तु पलायन न कर पाने योग्य व्यक्तियों के समूह को चारों ओर से घेर लिया। चाक फार्म स्टेशन पर एक उत्तर-पश्चिमी गाड़ी पर चढ़ पाने के निष्फल प्रयत्न के पश्चात

जिसके मालगोदाम में भरे एंजिन चीत्कार करते मनुष्यों के मध्य चल रहे थे, और एक दर्जन के लगभग साहसी पुरुष भीड़ को ड्राइवर को एंजिन की भट्टी में झोंक देने से रोकने के निमित्त संघर्ष कर रहे थे—मेरा भाई चाक फार्म रोड से निकलकर, द्रुतगति से जाती सवारियों को पार करता निकल गया, और भाग्यवश एक साइकिल दूकान की लूट में पहुँचने वाला वह अग्रिम व्यक्ति था। उस मशीन के अगले टायर में, उसे खिड़की से बाहर निकालने में पंक्चर हो गया, परन्तु वह केवल हथेली पर चोट खाकर ही बच गया। हैवरस्टाक हिल का ढाल कई उलटे हुए घोड़ों से रुका पड़ा था, और अतः मेरा भाई बेलसाइज़ रोड़ की ओर मुड़ गया।

और इस प्रकार वह उस भगदड़ की उत्तेजना से बच निकला, और एजवेयर रोड के सहारे चलता, थका-हारा, परन्तु भीड़ में सबसे अग्रिम, लगभग सात बजे एजवेयर पहुँचा। स्थान-स्थान पर लोग बीचोबीच सड़क पर आश्चर्य करते खड़े थे। मार्ग में उसे कुछ साइकिल-सवार, कुछ घुड़सवार एवं दो कारें मिलीं। एजवेयर से एक मील आगे पहिये का रिम टूट गया, और साइकिल सवारी करने योग्य नहीं रह गयी। उसने उसे सड़क के सहारे पटक दिया, और पैदल गाँव की ओर चल दिया। गाँव की प्रमुख गलियों की दूकानें आधी खुली थीं, और सड़कों के सहारे, द्वारों और खिड़कियों में खड़े लोग, प्रारम्भ होने वाले इस असाधारण निष्कासन को आश्चर्य के भाव से देख रहे थे। यहाँ एक सराय में वह कुछ भोजन प्राप्त करने में सफल हो गया।

कुछ समय, यह न जानते कि क्या किया जाना चाहिए, वह एजवेयर ही रहा। भागने वाले लोगों की संख्या बढ़ती ही गयी। मेरे भाई की ही भाँति उनमें से कुछ लोग उस स्थान पर रुकने की इच्छा रखते थे। मंगल के आक्रमणकारियों का कोई नूतन समाचार नहीं था।

उस समय सड़क पर भीड़ थी, परन्तु मार्ग रुद्ध होने में अभी पर्याप्त समय था। उस समय तक भगोड़ों की बहुसंख्या साइकिल-सवारों की

थी, परन्तु शीघ्र ही कारों, घोड़ा-गाड़ियों की संख्या, बढ़ने लगी, जो द्रुत गति से उड़ी चली जा रही थीं, और सेन्ट एलबन्स वाली सड़क पर धूल के घने बादल छाये हुए थे।

चेम्सफोर्ड की ओर मार्ग बनाते, जहाँ उसके कुछ मित्र रहते थे, शायद उसके मन में यह अस्थिर-सा विचार ही था, और जिसने अन्त में मेरे भाई को पूर्व की ओर वाली एक शान्त गली में दौड़ने को प्रेरित किया। कुछ समय पश्चात् वह सीढ़ियों वाले एक मार्ग पर आया, और उसे पारकर उत्तर-पूर्व की ओर वाली एक पगडण्डी की ओर बढ़ा। वह अनेक फार्म-घरों एवं छोटे-मोटे स्थानों से होकर निकला, जिनके नाम उसने मालूम नहीं किये। उसने कुछ भगोड़ों को देखा, जब तक वह हाई बैरेट के समीप हरी-भरी घास वाली एक गली तक न जा पहुँचा, और यहाँ उसकी भेंट दो महिलाओं से हुई, जो उसकी सह-यात्रिणी बन गयीं। वह उन्हें बचा पाने के लिये ठीक समय उन तक पहुँच गया।

उसने उनका चीत्कार सुना, और मोड़ पर शीघ्रता से भागने पर, उसने दो मनुष्यों को उन्हें उस टट्टू-गाड़ी से निकाल पाने का संघर्ष करते पाया, जिसमें वह यात्रा कर रही थीं, और तीसरा बड़ी कठिनाई के साथ डरे हुए टट्टू के सर को सम्भाले था। उनमें से एक महिला, जो नाटे कद की और श्वेत वस्त्र धारण किये हुए थी, केवल चीत्कार कर रही थी, और दूसरी जो कुछ श्याम वर्ण वाली और लम्बी थी, अपने खाली हाथ से उस व्यक्ति के मुँह पर कोड़े से प्रहार कर रही थी, जिसने उसका दूसरा हाथ पकड़ रखा था।

मेरे भाई ने परिस्थिति को तुरन्त समझ लिया, और चिल्लाता हुआ वह शीघ्रतापूर्वक इस संघर्ष की ओर झपटा। उनमें से एक व्यक्ति उधर से छोड़कर उसकी ओर मुड़ा, अपने विरोधी के मुख से यह समझकर कि युद्ध अनिवार्य है, और साथ ही एक कुशल निशानेबाज होने के कारण, उससे भिड़ पड़ा, और उसने उसे गाड़ी के पहिए पर गिरा दिया।

मुक्केबाजी के द्वन्द्व-युद्ध की वीरता प्रदर्शित करने का यह कोई

समय नहीं था, और अंत में मेरे भाई ने लात के एक प्रहार से उसे शान्त कर दिया, और उस व्यक्ति का कालर पकड़ लिया, जो लम्बी महिला की भुजा पकड़े था। उसने घोड़े की टापें सुनीं, कोड़ा उसके मुँह पर लगा, तीसरे विरोधी ने उसके नेत्रों के मध्य प्रहार किया, और उस मनुष्य ने, जिसे उसने पकड़ रखा था, स्वयं को उसकी पकड़ से मुक्त कर लिया, और गली में ढाल की ओर उसी दिशा में भाग छूटा, जिधर से वह आया था।

अर्द्ध जड़ अवस्था में, उसने स्वयं को उस व्यक्ति के समक्ष खड़ा पाया, जो घोड़े का सर पकड़े खड़ा था, और साथ ही उसे पीछे खिसकती गाड़ी का ध्यान आया, जो इधर-उधर हो रही थी, और जिसमें से वह महिलाएँ पीछे झाँक रही थीं। उसके सामने वाले व्यक्ति ने, जो एक हृष्ट-पुष्ट-सा बदमाश प्रतीत होता था, गाड़ी का पीछा करने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने उसके मुँह पर एक घूँसा मारकर उसे रोक दिया। तब यह देखकर कि वह एकाकी रह गया है, वह गाड़ी के पीछे ढाल पर भागा, और वह हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति उसके पीछे भाग रहा था, और पहिले भाग जाने वाला वह व्यक्ति, जो अब मुड़ चुका था, पीछे आ रहा था।

सहसा उसने ठोकर खाई और वह गिर पड़ा। उसके पीछे वाला व्यक्ति लड़खड़ाकर गिरा, और उठने पर उसने स्वयं को उन दोनों विरोधियों से घिरा पाया। वह उनसे कठिनाई से छूट पाता, यदि वह पतली महिला साहसपूर्वक उसकी सहायतार्थ न लौट आई होती। प्रतीत होता था कि उसके पास रिवाल्वर था, परन्तु जिस समय उन पर आक्रमण हुआ, वह गाड़ी में सीट के नीचे दबा पड़ा था। उसने छः गज की दूरी से गोली चलायी, और मेरा भाई भाग्यवश ही बच सका। उन दोनों में से अधिक डरपोक डाकू भाग छूटा, और दूसरा भी गालियाँ देता उसके पीछे चल पड़ा। दृष्टि के समक्ष, वह दोनों गली के ढाल पर पहुंचकर रुक गये, जहाँ तीसरा बेसुध पड़ा था।

"यह लो," दुबली-पतली महिला ने कहा, और उसने अपना रिवाल्वर मेरे भाई को दे दिया।

"गाड़ी पर लौट जाओ," मेरे भाई ने अपने फटे हुए ओष्ठ का रक्त पोंछते हुए कहा।

बिना एक भी शब्द कहे वह लौट पड़ी—वह दोनों हाँफ रहे थे—और वहाँ लौटकर गये, जहाँ श्वेतपरिधान वाली महिला घबड़ाये हुए टट्टू को कठिनतापूर्वक रोक रखने का संघर्ष कर रही थी। स्पष्ट था कि दस्यु पर्याप्त भाग चुके थे। जब मेरे भाई ने पुनः देखा, वह लौट रहे थे।

"मैं यहाँ बैठूँगा," मेरे भाई ने कहा, "यदि मैं ऐसा कर सकता हूँ," और वह आगे वाली रिक्त सीट पर जा बैठा। महिला इधर-उधर झाँकने लगी।

"लगाम मुझे दो," महिला ने कहा, और टट्टू को कोड़ा मारा। दूसरे ही क्षण सड़क के मोड़ ने उन तीनों दस्युओं को मेरे भाई की दृष्टि से ओझल कर दिया।

इस प्रकार सहसा एवं आकस्मिक रूप में मेरे भाई ने स्वयं को हाँफते हुए पाया, उसका मुँह कट गया था, जबड़े पर चोट लगी हुई थी, उंगलियों के पोर रक्त में सने थे, और एक अनजान सड़क पर वह इन महिलाओं के साथ गाड़ी हांकता जा रहा था।

उसे पता चला कि वह स्टेन्मोर स्थित किसी सर्जन की पत्नी एवं छोटी बहिन थीं, जो प्रातःकाल ही पायनर नामक स्थान से किसी गम्भीर केस के पश्चात् लौटा था, और जिसने मार्ग के किसी स्टेशन पर मंगल-निवासियों के सम्बन्ध में सुना था। शीघ्रतापूर्वक वह घर लौटा, उसने महिलाओं को जगाया—उनका नौकर उन्हें दो दिन पूर्व छोड़कर चला गया था—आवश्यक वस्तुओं को बांधा, रिवाल्वर को सीट के नीचे रखा—जो भाग्यवश मेरे भाई के काम आया—और किसी गाड़ी के मिलने की आशा में, उन्हें एजवेयर की ओर चलने की

आज्ञा दी। पड़ोसियों को सचेत करने वह पीछे रह गया। उसने कहा कि वह उन्हें प्रातः साढ़े चार बजे के लगभग पकड़ लेगा, और अब समय नौ के समीप था, और उन्हें उसका कोई पता नहीं चला था। बढ़ती हुई भीड़भाड़ के कारण वह एजवेयर नहीं रुक सकती थीं, और इस कारण वह इस पार्श्व वाली सड़क पर आ निकलीं।

यह वह कथा थी जो उन्होंने मेरे भाई को अनेक खंडों में सुनायी, जब कि वह न्यू बारनेट पर कुछ समय के लिये रुके। उसने उनके साथ उस समय तक रुकने का विश्वास दिलाया, जब तक कि वह यह निश्चय न कर लें कि उन्हें क्या करना है, अथवा जब तक वह व्यक्ति लौट न आये, और उसने उन्हें एक अच्छे निशानेबाज़ होने का विश्वास दिलाया, यद्यपि वह अस्त्र उसके निकट पूर्णतः अपरिचित-सा ही था।

उन्होंने सड़क के सहारे एक प्रकार का डेरा-सा डाल दिया, और टट्टू समीपवर्ती झाड़ी में जाकर प्रसन्न हो गया। उसने उन्हें अपने लन्दन में से बच निकलने की कथा सुनायी और मंगल-निवासियों के सम्बन्ध में भी। सूर्य आकाश में ऊँचा उठ चुका था, और कुछ समय पश्चात् उनका वार्तालाप समाप्त हो गया, और उसका स्थान एक व्यग्रतापूर्ण प्रतीक्षा की भावना ने ले लिया। अनेक गुजरने वाले यात्री उस सड़क पर आये, और जहाँ तक सम्भव हो सका, मेरे भाई ने उनसे समाचार एकत्र किये। प्रत्येक टूटे-फूटे उत्तर ने, जो उसने पाया, मानवता को घेर लेने वाले उस दुर्भाग्यपूर्ण संकट एवं तुरन्त ही पलायन कर जाने वाली उसकी भावना को अधिक प्रबल किया।

"हमारे पास धन है," दुबली-पतली महिला ने कहा और वह हिचकिचायी।

उसके नेत्र मेरे भाई से मिले और उसकी हिचकिचाहट समाप्त हो गयी।

"मेरे पास भी है", मेरे भाई ने कहा।

महिला ने बताया कि उसके पास तीस पाउण्ड से अधिक सोना है,

और एक पांच पाउण्ड का नोट, और सुझाव रखा कि उसकी सहायता से वह सेन्ट एलबेन्स अथवा न्यू बेरेट से किसी गाड़ी पर सवार हो सकते हैं। मेरे भाई ने लन्दन वालों की गाड़ियों पर सवार होने की उत्तेजना को देखकर सोचा कि ऐसा होना सम्भावना से परे था, और उसने एसेक्स होकर हारविच की ओर निकल जाने, और इस प्रकार देश ही छोड़ देने वाले अपने विचार को ही प्रश्रय दिया।

मिसेज़ एलफ़िन्स्टन—यही श्वेत परिधान वाली महिला का नाम था—किसी भी तर्क को सुनने को तत्पर नहीं थी, और वह निरन्तर 'जार्ज' का नाम दोहराती रही ; परन्तु उसकी ननद, जो असाधारण रूप से शाँत एवं संकल्पशील थी, अन्त में मेरे भाई के प्रस्ताव से सहमत हो गयी , अत: ग्रेट नार्थ रोड को पार करने की आशा से, वह बारनेट की ओर चल दिये, और मेरा भाई टट्टू को पकड़े चल रहा था, ताकि उसकी शक्तियों को सजीव रखा जा सके।

जैसे-जैसे सूर्य आकाश पर ऊँचा उठता गया, दिन अत्यधिक गर्म होने लगा, और पैरों के नीचे की भूरी रेत तपने और आँखों को अन्धा करने लगी, और इस कारण उनकी यात्रा अत्यन्त मन्द रही। झाड़ियाँ धूल के कारण भूरी हो रही थीं। और जैसे जैसे वह बारनेट की ओर प्रगति करते गये, कोलाहलपूर्ण वायु प्रचण्ड होती गयी।

मार्ग में उनको अधिक संख्या में लोग मिलने लगे। उनमें से अधिकांश उन्हें घूर रहे थे, अस्पष्ट प्रश्न कर रहे थे, थके-हारे, अस्त-व्यस्त एवं मलिन। सन्ध्या के वस्त्र पहिने एक व्यक्ति पैदल उनके समीप से निकला, जिसके नेत्र पृथ्वी पर टिके थे। उन्होंने उसकी वाणी सुनी, और पीछे घूमने पर देखा कि एक हाथ से उसने अपने बालों को जकड़ रखा था, और दूसरे से किन्हीं अदृश्य वस्तुओं पर प्रहार कर रहा था। क्रोध का आवेश समाप्त होने पर, बिना एक बार भी पीछे देखे वह आगे बढ़ गया।

जब मेरे भाई की पार्टी बारनेट के दक्षिण वाले चौराहे की ओर जा

रही थी, उन्होंने अपने बायीं ओर वाले खेतों से एक नारी को आते देखा, जिसकी गोद में एक बालक था, और दो उसके साथ चल रहे थे। और तब गन्दे काले वस्त्र पहिने एक व्यक्ति, जिसके एक हाथ में एक मोटी छड़ी, और दूसरे में एक कपड़े रखने का चमड़े का बैग था। तब उस गली के उन मकानों की ओर से जो इसे सड़क से मिलाते थे, एक गाड़ी दीख पड़ी, जिसे बाउलर हैट पहिने एक भूरा-सा नवयुवक हाँक रहा था, और जिसका टट्टू पसीने से लथपथ और धूल से भूरा हो रहा था। ईस्ट एण्ड फैक्टरी की लड़कियों के समान तीन लड़कियाँ एवं कुछ बच्चे गाड़ी में भरे हुए थे।

"क्या यह मार्ग हमें एजवेयर ले जायगा ?" उन्मत्त नेत्रों एवं भयानक-से मुख वाले ड्राइवर ने प्रश्न किया; और जब मेरे भाई ने हाँ में उत्तर दिया, उसने बिना धन्यवाद दिये ही टट्टू को कोड़ा मार दिया।

मेरे भाई ने अपने समक्ष वाले मकानों से एक भूरे वर्ण का धूम्र अथवा धुन्धलका-सा उठते देखा, जो दिखाई पड़ने वाले मकानों के सामने वाले चबूतरे को ढक रहा था। श्रीमती एलफिन्स्टन अकस्मात् ही नीले एवं गर्म आकाश के नीचे धूम्रमय रक्त वर्ण की अनेक शिखाओं को सामने वाले मकानों से उठते देख चीत्कार कर उठीं। वह कोलाहल अब अनेक कंठों के कोलाहल, पहियों की गड़गड़ाहट और घोड़ों की टापों के मिश्रित कोलाहल में परिवर्तित हो रहा था। यह गली चौराहे से पचास गज की परिधि पर घूमती थी।

"हे ईश्वर !" श्रीमती एलफिन्स्टन चिल्ला उठीं, "तुम हमें कहाँ लिये चल रहे हो ?"

मेरे भाई ने गाड़ी रोक दी।

कारण कि सड़क खौलते हुए पानी से उठने वाली वाष्प के समान मनुष्यों से खचाखच भरी थी। एक दूसरे को कुचलते एवं उत्तर की ओर प्रगतिशील मानवों की एक धारा के समान बालू के एक विशाल ढेर ने, जो सूर्य के प्रखर ताप में श्वेत एवं चमकीला प्रतीत हो रहा था,

चारों ओर की वस्तुओं को भूरा एवं अस्पष्ट कर रखा था, और जो निरन्तर शीघ्रगामी घोड़ों, पैदल मनुष्यों, नारियों एवं प्रत्येक प्रकार की सवारियों के पहियों से बारम्बार प्रत्यावर्तित हो रही थी।

"मार्ग !" मेरे भाई ने अनेक कण्ठों को चिल्लाते हुए सुना, "मार्ग दो !"

सड़क एवं गली के संगम-स्थान तक पहुँच पाना धुआँ देती किसी अग्नि के समीप पहुँच पाने के समान था; वह भीड़ रह-रहकर अग्नि के समान गर्जन कर उठती, और धूल, ऊष्ण एवं दुर्गन्ध पूर्ण थीं और वास्तव में सड़क पर थोड़े ऊपर की ओर एक मकान जल रहा था, जो घुमड़ते हुए धुएँ के बादलों को सड़क की ओर वहाँ की उत्तेजना एवं व्यग्रता को बढ़ाने के निमित्त भेज रहा था।

दो मनुष्य उन्हें पार करते निकल गये। तब एक भारी बन्डल सर पर उठाये रोती एक मलिन वस्त्र नारी। शिकार पकड़ कर लाने वाला एक खोया कुत्ता, जो सन्दिग्ध रूप से उनके चारों ओर चक्कर काट रहा था—भयभीत एवं त्रस्त, और मेरे भाई के डाँटने पर भाग गया।

सीधे हाथ वाले मकानों के मध्य से लन्दन की ओर जाने वाली सड़क पर जितना वह देख सके, दोनों ओर वाले मकानों के मध्य घिरा हुआ, शीघ्रगामी एवं मलिन वस्त्र मानवों का एक समूह था; काले सर, एक दूसरे से सटी हुई आकृतियाँ स्पष्ट हो जातीं, जब कि वह कोने की ओर भागते, शीघ्रता से निकल जाते, और तब पुनः पीछे की ओर जाने वाली एक विशाल भीड़ में अपनी व्यक्तिगत सत्ता को विलीन कर देते, जो अन्त में धूल के एक बादल में आत्मसात होती प्रतीत होती थी।

"आगे बढ़ो, बढ़े चलो !" लोग चिल्लाते, "मार्ग, मार्ग दो !"

एक मनुष्य के हाथ दूसरे के शरीर से सटे हुए थे। मेरा भाई टट्टू के सर के सहारे से सटा खड़ा था, प्रबल रूप से आकर्षित वह एक-एक पग ढाल की ओर बढ़ रहा था।

एजवेयर अव्यवस्था का दृश्य-सा था, चाक फार्म उत्तेजित भीड़ के

कोलाहल से पूर्ण था, परन्तु यह विशाल जन-संख्या थी जो यात्रा पर प्रगतिशील थी। उस अपार जन-समूह की कल्पना कर पाना कठिन कार्य है। उसकी अपनी कोई विशेषता न थी। कोने से परे आकृतियाँ गुजरती-सी दीखतीं, और उनकी पीठ गली की भीड़ में मिलती प्रतीत होती। शेष बचे भाग में वह पैदल यात्री थे, जो पहियों की गड़गड़ाहट से भीत, गड्ढों में गिरते, एक दूसरे से धक्का खा रहे थे।

"बढ़े चलो।" पुकार सुनायी पड़ रही थी, "वह आ रहे हैं!"

गाड़ियाँ एवं सवारियाँ एक दूसरे से सटी थीं, और वह द्रुतगामी उन मशीनों को स्थान नहीं दे रही थीं, जो किसी भी अवसर के प्राप्त होते ही मनुष्यों को बाड़ों और मकानों के द्वारों से टकराने को छोड़ती हुई सर्र से निकल जातीं।

"बढ़े चलो।" पुकार सुनायी पड़ रही थी, "वह आ रहे हैं।"

एक गाड़ी में एक अन्धा मनुष्य मुक्ति-सेना का परिधान पहिने खड़ा था, और अपनी गठीली उँगलियों से कुछ दुर्बोध-सा संकेत कर "प्रलय! प्रलय!" चिल्ला रहा था। उसका स्वर भारी एवं घरघराहट से भरा हुआ था, और इसी कारण मेरा भाई उसके स्वर को दूर दक्षिण की ओर तक सुनता रहा, जब कि वह दृष्टि से ओझल हो चुका था। गाड़ियों में ठसाठस भरे लोग कभी तो मूर्खतावश घोड़ों को चाबुक मारते, और कभी चालकों से लड़ पड़ते थे, कुछ सन्तप्त नेत्रों से शून्य को ताक रहे थे। कुछ प्यास से अपने हाथों को मल रहे थे, अथवा अपनी गाड़ियों में लम्बे लेटे थे। घोड़ों की लगामें झागों से भरी थीं, और उनके नेत्र आरक्त थे।

उनमें घोड़ा-गाड़ियाँ थीं, गाड़ियाँ, बाजारू गाड़ियाँ, ठेले, जिनकी संख्या गिनती से परे थी, एक सड़क साफ करने वाली गाड़ी, जिस पर 'वेस्ट्री आफ सेन्ट पेनक्रास' अंकित था, एक विशाल लकड़ी ढोने वाली गाड़ी, जिसमें लक्कड़ भरे थे। शराब खींचने वालों की एक नीचे पहिये

वाली गाड़ी, जिसके अगले पहियों से गड़गड़ाहट की ध्वनि निकल रही थी, और जो रक्त से सने थे।

"मार्ग साफ करो," अनेक कंठ चिल्ला रहे थे, "मार्ग साफ करो।"

भीड़ में कुचलती सुन्दर परिधान वाली उदास चित्त वाली नारियाँ थीं, जिनके साथ बच्चे थे, जो चिल्ला रहे थे, उनके चिन्तित मुख अश्रुपूर्ण थे। उनमें से अनेक के साथ पुरुष थे, जो कभी सहायता करते थे, और कभी दुष्टतापूर्ण एवं बर्बरतापूर्ण आचरण। उन्हींके साथ धक्का-मुक्की करते गलियों के कुछ आवारा व्यक्ति थे, जो काले चिथड़े पहिने थे, जिनके नेत्र बड़े-बड़े, वाणी तीव्र एवं मुख मलिनतापूर्ण थे। इन्हींके साथ पुष्ट शरीर वाले कुछ श्रमिक भी थे, जो भीड़ में अपना मार्ग निकाल रहे थे, व्यथित से दीख पड़ने वाले व्यक्ति, जो वस्त्रों से दूकानदार-से अथवा क्लर्क-से प्रतीत हो रहे थे, और संकोच के साथ भीड़ में अपना मार्ग निकाल रहे थे, जिनमें मेरे भाई ने एक क्षत सैनिक को भी देखा, रेलवे कर्मचारियों के वस्त्र पहिने व्यक्ति, एक सन्तप्त-सा दीख पड़ने वाला व्यक्ति भी, जो केवल एक नाइट-शर्ट ही पहिने था, जिस पर एक कोट पड़ा हुआ था।

विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से बनी उस भीड़ में कुछ समानता भी थी। उनके मुखों पर भय एवं पीड़ा अंकित थी, और उनके पीछे भी भय था। सड़क पर का कोई भी कोलाहल, किसी वैगन में कोई झगड़ा, उनके पगों को तीव्रतर कर देता, यहाँ तक कि एक व्यक्ति, जो इतना अपंग-सा प्रतीत होता था कि उसके घुटने उसके भार को सम्हाल पाने में अशक्त थे, क्षणमात्र के लिए विद्युत-संचार के समान नूतन क्रियाशीलता से सजीव-सा हो उठता। इस जन-समूह पर धूल और गर्मी का पर्याप्त प्रभाव था। उनकी त्वचा शुष्क-सी हो रही थी, और उनके होंठ काले पड़ रहे थ एवं चटके हुए थे। वह सभी प्यासे थे, थके-हारे थे, और उनके पैर शिथिलप्राय थे। और अनेक प्रकार के कोलाहल में कोई भी झगड़ों, गालियों एवं थकावट के कारण निकलने वाली गहन उसासों को

सुन सकता था, उनमें से सभी कोलाहलों में सावधान करने वाली एक वाणी सुनायी पड़ती थी—

"मार्ग ! मार्ग ! मंगल-निवासी आ रहे हैं।"

उनमें से कुछ रुक गये और प्रवाह से बाहर निकल आये। यह सड़क मुख्य सड़क से तिरछी-सी होकर मिलती थी, और वह लन्दन की ओर से आने का भ्रम उत्पन्न करती थी। तो भी भंवर के समान प्रतीत होने वाला एक समूह उसके उद्गम स्थान की ओर प्रवाहित होता-सा प्रतीत होता था, अशक्त लोग भीड़ द्वारा बाहर फेंक दिये जाते थे, जो पुनः उसी प्रवाह में जाने के निमित्त संघर्ष करने के लिये क्षणमात्र विश्राम करते थे। गली में थोड़े नीचे की ओर खुली टाँग वाला एक व्यक्ति पड़ा था, जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे एवं रक्तपूर्ण थे, और जिसके ऊपर उसके दो मित्र झुके हुए थे। वह सौभाग्यशाली था, जिसके ऐसे समय में भी मित्र थे।

एक छोटा-सा वृद्ध पुरुष, जिसकी मूँछें सैनिकों के समान थीं और जिसके शरीर पर एक गन्दा काला कोट था, भीड़ में से बाहर को निकला और मार्ग पर बैठ गया था। उसने अपना बूट खोला—उसके मोजे रक्त से सने थे—उनमें से एक कंकड़ी निकालकर बाहर फेंकी, और पुनः लड़खड़ाता हुआ चल पड़ा, और तब आठ या नौ वर्ष की एक बालिका जो एकाकी थी, मेरे भाई की निकटवर्ती झाड़ी पर रोती हुई गिर पड़ी।

"मैं आगे नहीं जा सकती, मैं नहीं चल सकती।"

मेरा भाई अपनी आश्चर्य-जड़ता से जाग उठा, और उसने दुलार-पूर्वक उसे गोदी में उठा लिया, और उसे कुमारी एल्फिन्स्टन के पास लाया। जैसे ही मेरे भाई ने उसका स्पर्श किया, वह निचेष्ट-सी हो गयी, जैसे कि वह भयभीत-सी हो गयी हो।

"एलेन !" रुद्ध कंठ से एक नारी भीड़ में से पुकार उठी। "एलेन !"

ग्रौर बालिका सहसा मेरे भाई से उसकी ग्रोर "माँ, माँ !" पुकारती भाग छूटी।

"वह आ रहे हैं," गली में द्रुतगति से भागते एक घुड़सवार ने कहा।

"मार्ग से बाहर, उधर," एक कोचवान चिल्ला उठा, और मेरे भाई ने एक बन्द घोड़ागाड़ी को गली की ग्रोर मुड़ते देखा।

घोड़े से बचने के निमित्त जन-समूह एक दूसरे को धकेलकर कुचलने लगा। मेरे भाई ने अपने टट्टू और गाड़ी को पीछे झाड़ी की ग्रोर खींच लिया, और घुड़सवार सामने से निकलता हुग्रा सड़क के मोड़ पर जा रुका। वह एक घोड़ागाड़ी थी, जिसमें दो घोड़ों का स्थान था, परन्तु इस समय जोत में केवल एक ही घोड़ा था। मेरे भाई ने छाई हुई धूल के पार देखा कि दो मनुष्यों ने गाड़ी से किसी वस्तु को एक श्वेत स्ट्रेचर पर डालकर टट्टी बनाने वाली घास पर रख दिया।

उनमें से एक व्यक्ति मेरे भाई की ग्रोर दौड़ कर ग्राया।

"क्या यहाँ कुछ जल है ?" उसने कहा, "वह प्यास से मरे जा रहे हैं। वह लार्ड गैरिक हैं।"

"लार्ड गैरिक !" मेरे भाई ने कहा, "चीफ़ जस्टिस ?"

"पानी," उसने कहा।

"इनमें से किसी घर में नल होना चाहिये। हमारे पास पानी नहीं है। मैं ग्रपने साथियों को नहीं छोड़ सकता।"

वह मनुष्य भीड़ में होकर कोने वाले मकान की ओर बढ़ा।

"बढ़े चलो !" लोग उसकी ग्रोर चिल्लाये, "वह ग्रा रहे हैं। बढ़े चलो !"

तब मेरे भाई का ध्यान एक दाढ़ीदार एवं वृद्ध के समान मुखाकृति वाले एक व्यक्ति ने ग्राकर्षित किया, जो बलपूर्वक एक छोटे हैण्डबेग को उठाये ले जा रहा था, जो मेरे भाई के देखते-देखते फट गया, ग्रौर उसमें से गिन्नियों का एक ढेर-सा निकल पड़ा, ग्रौर उनमें से प्रत्येक गिन्नी

सड़क से टकराकर पृथक्-पृथक् दिखाई पड़ने लगी। वह व्यक्ति रुक गया, और मूर्खवत् उस ढेर को घूरने लगा, और इसी बीच कन्धों से टकराने वाली एक केब से धक्का खाकर चक्कर खाता भूमि पर गिर पड़ा। चीत्कार करता वह पीछे घूमा, और एक दूसरी गाड़ी ने उसे कुछ थोड़ा-सा आहत कर दिया।

"मार्ग" उसके चारों ओर वाले लोग पुकार उठे, "मार्ग निकालो।'

जैसे ही केब निकल गयी, वह झपटा, और उसने दोनों हाथ फैलाये, गिन्नियों के उस ढेर पर फैल गया, और मुट्ठियाँ भर-भरकर जेबें भरने लगा। एक घोड़ा उसके पीछे से उठा, और दूसरे ही क्षण, जब वह आधा ही उठ पाया था, वह घोड़ों की टापों के नीचे था।

"रुको," मेरा भाई चीत्कार कर उठा, और एक नारी को अपने सामने से धकेलते हुए, उसने घोड़े की लगाम को पकड़ने का प्रयत्न किया।

इससे पूर्व कि वह उसके समीप तक आ पाये, उसने पहियों के नीचे से एक आर्तनाद सुना, और धूल के आवर्त में उसने गाड़ी की रिम को उस बेचारे की पीठ पर से निकलते देखा। गाड़ी के कोचवान ने पीछे की ओर मेरे भाई पर, जो गाड़ी का पीछा कर रहा था, कोड़ा चलाया। सहस्रों कंठों से निकलते विभिन्न चीत्कारों ने उसकी श्रवण-शक्ति को शून्यप्राय: कर दिया था। खड़े हो पाने में अशक्त वह व्यक्ति धूल में बिखरी हुई अपनी धन-राशि पर किसी आहत एवं मरणासन्न सर्प की भाँति एंगड़ी भर रहा था, कारण कि पहिये ने उसकी कमर को तोड़ दिया था, और उसके निचले अंग जड़ एवं पूर्णत: शक्तिहीन थे। मेरा भाई उठ खड़ा हुआ, और वह दूसरे कोचवान पर चिल्लाया, और काले घोड़े पर सवार एक व्यक्ति उसकी सहायता के निमित्त आ पहुँचा।

"उसे सड़क से परे ले चलो," उसने कहा, और अपने हाथों से उस व्यक्ति का कालर पकड़कर मेरे भाई ने उसे किनारे की ओर खींचा। परन्तु वह इस समय भी अपनी धन-राशि में ही अटका हुआ था, और

वह मेरे भाई को प्रतिरोधात्मक रूप से उसके हाथ पर मुट्ठी में भरे सोने का प्रहार करके रोक रहा था। "आगे बढ़ो ! आगे बढ़ो !" उसके पीछे से सक्रोध स्वर पुकार उठे। "मार्ग ! मार्ग !"

वहाँ एक धड़ाका हुआ, क्योंकि उस घुड़सवार द्वारा रोकी गयी एक गाड़ी दूसरी गाड़ी से टकरा गयी। मेरे भाई के नेत्र ऊपर उस दिशा में उठे, और सोने वाले व्यक्ति ने अपना सर घुमाया और अपने सर को पकड़े रहने वाली कलाई में काट लिया। एक धक्का लगा, और काला घोड़ा लड़खड़ाता हुआ एक ओर को गिरा, और घोड़ा-गाड़ी का घोड़ा उसके पीछे धक्का मारने लगा। एक टाप मेरे भाई के पैर से केवल आधा इंच दूर पर पड़ी। उसने गिरे हुए व्यक्ति की पकड़ को ढीला कर दिया और पीछे की ओर कूद गया। उसने उस हत्भाग्य व्यक्ति की मुखाकृति पर भय को क्रोध का स्थान ग्रहण करते देखा, और दूसरे ही क्षण वह दृष्टि से ओझल हो गया, और मेरा भाई भीड़ में धक्के खाता गली के छोर तक जा पहुँचा, जहाँ से उसे पुनः अपने पूर्व स्थान तक आने के निमित्त प्रबल संघर्ष करना पड़ा।

उसने कुमारी एल्फिन्स्टन को अपने नेत्र ढके देखा, और एक छोटे बच्चे को, जिसमें एक छोटे बच्चे के मानस एवं कल्पना से सम्बन्धित सभी भाव विद्यमान थे, विस्फारित नेत्रों से पृथ्वी पर निश्चेष्ट पड़ी हुई किसी काली वस्तु को देखते पाया, जो पहियों के नीचे चकनाचूर हो गई थी। "हमें पीछे जाने दो," वह चीत्कार कर उठा, और टट्टू को चारों ओर घुमाने लगा। "हम इस नरक को पार नहीं कर सकते," उसने कहा, और वह उसी मार्ग पर पुनः सौ गज पीछे की ओर लौटे जिस पर वह आये थे। जैसे कि वह सड़क के उस मोड़ पर पहुँचे, मेरे भाई ने टट्टी बनाने वाली घास की झाड़ी के नीचे मरणासन्न उस व्यक्ति का मुख देखा, जो मृत्यु के समान श्वेत, हत्तेज एवं पसीने से चमचमा रहा था। वह दोनों नारियाँ अपनी सीटों पर झुकी बैठी थीं और भय से कंपकंपा रही थीं।

तब मोड़ को पारकर मेरा भाई पुनः एक बार पीछे मुड़ा। कुमारी एल्फिन्स्टन श्वेत एवं पीली पड़ी हुई थी, और उसकी भाभी रो रही थी, और इतनी अधिक चेतना-शून्य थी कि उसके मुख से रह-रह कर निकलने वाली 'जार्ज, जार्ज' की पुकार भी अब पूर्णतः बन्द हो चुकी थी। मेरा भाई भयभीत एवं विभ्रमित हो गया। जिस समय से वह पीछे लौटे थे, मेरा भाई निरन्तर इस मोड़ को शीघ्रता से पार कर जाने की आवश्यकता एवं शीघ्रपरता के सम्बन्ध में विचार कर रहा था। सहसा दृढ़ संकल्प के साथ वह कुमारी एल्फिन्सटन की ओर मुड़ा।

"हमें उस ओर जाना ही चाहिए," उसने कहा, और अपने टट्टू को पुनः पीछे की ओर घुमा दिया।

उस दिन दूसरी बार इस कुमारी ने अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया। उस अपार जन-समूह में अपना मार्ग बनाने के निमित्त, मेरा भाई सवारियों से जुट गया, और जब वह एक की गाड़ी के घोड़े को रोके हुए था, उसने टट्टू को उसके सिर के बीच से एक टक्कर दी, और उनकी घोड़ागाड़ी से फटकर एक लम्बी-सी पच्चट छिटक कर जा पड़ी। दूसरे ही क्षण वह पकड़ लिये गये, और भीड़ के रेले में आगे की ओर धकेल दिये गये। केबमैन के कोड़े से आरक्त-मुख मेरा भाई चेज़ में गिर पड़ा और टट्टू की लगामें उसने उससे अपने हाथों में ले लीं।

"पीछे आने वाले व्यक्ति की ओर रिवाल्वर तानो," उसने रिवाल्वर उसे देते हुए कहा, "यदि वह हमें धकेलकर आगे बढ़ जाना चाहता है। नहीं, उसके घोड़े को निशाना बनाओ।"

तब वह सड़क के सीधे हाथ की ओर आ पाने का उपयुक्त अवसर खोजने लगा। परन्तु उस जन-प्रवाह में पुनः एक बार पड़ने पर प्रतीत होता था कि जैसे धूल से भरे उस वातावरण में संघर्ष करने का उसका संकल्प स्वयं हिल रहा है। उस धारा के साथ चिपिंग-बारनेट को पार करते, वह उस समय शहर से लगभग एक मील दूर थे, जब कि उन्हें

सड़क के उस पार निकल जाने के निमित्त संघर्ष करना पड़ा था। वह कोलाहलमय था, और वहां की अव्यवस्था का वर्णन सम्भव नहीं है, परन्तु नगर के भीतर और बाहर सभी स्थानों पर सड़क बार-बार मोड़ खाती है और इस बात ने उनकी घबराहट को पर्याप्त अंशों में दूर किया।

हैडले नामक स्थान से वह पूर्व की ओर बढ़े, और वहाँ सड़क के दोनों ओर और आगे बढ़कर एक और स्थान पर, उन्होंने अनेक जन-समूहों को जल-धारा पर पानी पीते देखा, जिनमें से अनेक पानी तक आ पाने के निमित्त झगड़ा कर रहे थे। और आगे, ईस्ट बारनेट के समीप-वर्ती एक पहाड़ी से उन्होंने एक दूसरे के पीछे मन्द गति से चलती दो रेल गाड़ियों को देखा, जो बिना किसी सिगनल अथवा किसी भी व्यवस्था के चल रही थीं—गाड़ियाँ, जो लोगों से खचाखच भरी थीं—जिनमें लोग इंजिन के कोयले के भण्डार पर भी बैठे थे, और यह गाडियाँ ग्रेट-नार्थन रेलवे की लाइन पर जा रही थीं। मेरा भाई विश्वास करता है कि यह गाडियाँ लन्दन के बाहर ही कहीं भरी गयी थीं, कारण कि लन्दन के उन्मत्त जन-प्रवाह में स्टेशनों तक पहुँचना असम्भव-सी बात थी।

इसी स्थान के समीप वह तीसरे पहर के विश्राम के निमित्त रुके, कारण कि उस दिन के संघर्ष ने उन तीनों के शक्ति-भंडार को पूर्णतः रिक्त कर दिया था। क्षुधा की लपटें उन्हें पीड़ित करने लगीं; रात्रि ठंडी थी, और उनमें से कोई भी सोने का साहस नहीं कर सकता था। और सन्ध्या में अनेक लोग शीघ्रतापूर्वक चलते उनके विश्राम-स्थल वाली सड़क पर, उनके सामने वाले मार्ग के अज्ञात भयों से उद्वेलित आये, और उस ओर चले गये जिधर से मेरा भाई आया था।

१७

थन्डर-चाइल्ड

यदि मंगल-निवासियों का अभीष्ट केवल विनाश ही होता, तो उन्होंने सोमवार को ही लन्दन की समस्त जन-संख्या को नष्ट कर डाला होता, जैसे कि वह आस-पास के नगरों एवं ग्रामों से धीरे-धीरे आकर एकत्रित होती रही थी। केवल बारनेट वाली सड़क पर ही नहीं, पर एजवेयर एवं वाल्थम एवे वाली सड़कों और टेम्स के दक्षिण से डेल और बोड-स्टेअर्स तक उसी प्रकार की उत्तेजित भीड़ जा रही थी। यदि किसी ने भी लन्दन के ऊपर चमचमाते उस नीलाकाश में उस जून के प्रातःकालीन दृश्य को एक फुंकने के समान ऊपर लटका दिया होता, तो छोटी-छोटी गलियों के सूक्ष्म जाल से आने वाली प्रत्येक दक्षिणी एवं पूर्वी सड़क भगोड़ों से काली पड़ी-सी प्रतीत होती, जिसका प्रत्येक बिन्दु किसी मानव की भयजनित पीड़ा एवं शारीरिक वेदना का उद्योतक था। अपने पिछले अध्याय में मैंने अपने भाई द्वारा दिये गये चिपिंग-बारनेट वाली सड़क का विशद वर्णन केवल इसी निमित्त किया है कि पाठकगण समझ सकें कि काले विन्दुओं का उमड़ता-सा वह सिन्धु किसी भी दर्शक के निकट कैसा प्रतीत होता होगा। विश्व-इतिहास में इससे पूर्व कभी भी इतनी विशाल जन-संख्या ने सम्मिलित रूप में न कभी यात्रा की होगी और न इस प्रकार की पीड़ा का ही अनुभव किया होगा। ऐतिहासिक गाथ एवं हूण, वह विशालतम सेनाएँ, जो एशिया के पुरातन लोगों ने कभी देखी होंगी, इस विशाल सिन्धु में बूँद के समान ही होगी और यह

कोई संयोजित मार्च नहीं था—दानवी एवं पाशविक भगदड़—जिसमें न कोई व्यवस्था थी, और न जिसका कोई लक्ष्य ही निश्चित था, साठ लाख व्यक्ति, शस्त्र-हीन एवं सम्बल-हीन, अन्धा-धुन्ध आगे टक्कर मारते हुए। यह सभ्यता का विप्लव एवं मानव-जाति के भीषण संहार का श्रीगणेश था।

ठीक अपने नीचे, उस फुंकने वाले व्यक्ति ने दूर दूर तक विस्तृत मकानों, गिर्जाघरों, मुहल्लों, विशाल अट्टालिकाओं के कंगूरों, उद्यानों—जो परित्यक्त अवस्था में पड़े थे—जो किसी विशाल मानचित्र के समान फैला हुआ पाया होगा, और दक्षिण वाले भाग को काले-काले बिन्दुओं से खचाखच भरा हुआ। एलिंग, रिचमंड विम्बिल्डन आदि स्थान उसे इस प्रकार प्रतीत हुए होंगे जैसे किसी विशाल लेखनी ने उस स्थान पर स्याही का एक विस्तृत धब्बा डाल दिया हो। तत्परता से एवं अबाध गति के साथ इस लेखनी का पड़ा प्रत्येक छींटा बढ़ता और विस्तृत होता प्रतीत होता होगा, और प्रत्येक छींटे की इधर-उधर फूटती शाखाएँ, कभी किसी तल पर आधारित होतीं, और कभी द्रुत-गति से अज्ञात घाटी पर फैलती प्रतीत होती होंगी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि स्याही का कोई छींटा किसी शोषक पत्र पर गिरकर फैलेगा।

और उससे परे, नदी के बायीं ओर वाली नीली पहाड़ियों के ऊपर चमचमाते मंगल के अस्त्र इधर-उधर आते-जाते दीख पड़ते थे, जो शांति-पूर्वक इस ओर के प्रदेश में अपने विषैले बादलों को फैला रहे थे, और अपना कार्य समाप्त कर लेने के पश्चात्, उन्हें अपने उन्हीं गैस पिंडों में पुनः भरकर विजित प्रदेश पर अधिकार कर लेते थे। प्रतीत होता है कि उनका उद्देश्य मानव-जगत् का समूल विनाश नहीं था जितना कि नैतिक विनाश एवं किसी भी प्रकार विद्रोह की सम्भावना को आमूल नष्ट कर देना। उन्होंने मार्ग में पड़ने वाले समस्त बारूद भंडारों में आग लगा दी, प्रत्येक तार की लाइन को काट डाला, और स्थान-स्थान पर रेलों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। प्रतीत होता था कि वह अपने कार्य क्षेत्र

का विस्तार करने के निमित्त किसी शीघ्रता में नहीं थे, उस दिन के अन्त तक वह लन्दन के मध्य भाग से आगे नहीं बढ़े। हो सकता है कि लन्दन के कुछ लोग सोमवार के प्रात: तक अपने निवास-स्थानों में ही छिपे रहे हों। और यह भी निश्चित है कि वह उन्हीं स्थानों में उस भीषण काले धुएँ से घुट करमर गये।

दोपहर तक 'लन्दन पूल' आश्चर्यजनक दृश्यों का स्थान रहा। स्टीम-बोटें तथा प्रत्येक प्रकार के जलयान, भगोड़ों द्वारा दिये जाने वाली विशाल राशियों से प्रलोभित भरे हुए थे और कहा जाता है कि उन तक तैर कर पहुंच जाने वाले अनेक व्यक्ति नावों के कुंडों से धकेल कर जल में फेंक दिये गये, और जल में डूब मरे। एक बजे के लगभग उस काले धुएँ का एक क्षीण अवशेष 'ब्लेक फ्रायर्स' के पुल के खम्भों के नीचे चमका और तब वह पुल उन्माद-ग्रस्त अव्यवस्था के रूप में परिवर्तित हो गया, युद्ध एवं एक दूसरे से टक्कर, और कुछ काल के लिए 'टावर ब्रिज' के खम्भों के नीचे नावें एक दूसरे से टकराने लगीं एवं नाविकों को नदी-तट पर खड़े मानव-समूहों से पाशविक युद्ध करना पड़ा। लोग वास्तव में पुल के ऊपरी भाग में लड़खड़ा कर गिरने लगे थे।

एक घन्टा बाद जब एक मंगल-यन्त्र घंटाघर से परे दृष्टि पड़ा एवं नीचे जल में उतर गया, लाइम-हाउस के ऊपर भीषण विनाश के अति-रिक्त अन्य कोई दृश्य न था।

पंचम सिलण्डर के पृथ्वी पर गिरने की कथा कहनी अभी शेष है। छठा विम्बिलडन में गिरा। एक चरागाह में खड़ी गाड़ी में सुप्त उन नारियों की रक्षा के हेतु जागने वाले मेरे भाई ने उसके हरितवर्ण प्रकाश को पहाड़ियों से परे देखा। मंगल को, इस संक्षिप्त मण्डली ने, जो इस समय समुद्र पार जाने का संकल्प धारण किये हुए थी, जन-समूह-पूर्ण उस प्रदेश से अपना मार्ग कालचेस्टर की ओर निकाला। यह समाचार कि सम्पूर्ण लन्दन मंगल-निवासियों के अधिकार में आ चुका है विश्वस्त रूप से स्वीकार कर लिया गया। वह हाइगेट पर, और यहाँ

तक कहा जाता है कि नीसडेन पर भी देखे गये थे। परन्तु मेरे भाई की दृष्टि के समक्ष वह अगले दिन से पूर्व नहीं पड़े थे।

उस दिन छिन्न-भिन्न वह जन-समूह जीवन-सामग्रियों की अविलम्ब आवश्यकता की अनुभूति करने लगा जैसे-जैसे क्षुधा की प्रचण्डता व्याप्त होती गयी, सम्पत्ति-अधिकारों की अवहेलना की जाने लगी। कृषक अपने पशुओं, बाड़ों, अन्न-भण्डारों एवं अपनी पल्लवित होती फसलों की रक्षा शस्त्रों से करने में सन्नद्ध थे। मेरे भाई के ही समान अनेक व्यक्तियों का मुँह पूर्व दिशा की ओर था, और ऐसे भी अनेक हताश व्यक्ति थे जो पुनः लन्दन की ओर अन्न की खोज में लौट रहे थे! मुख्यतः इनमें ऐसे ही व्यक्ति थे, जिन्हें उस काले धुएँ का ज्ञान केवल दूसरों से सुन-सुनकर ही हुआ था। उसने सुना कि अधिकतम सरकारी लोग बरमिंघम पर एकत्रित हो गए हैं एवं तीव्र विस्फोटक पदार्थों की प्रचुर मात्रा मिडलेंड प्रदेशों के आर-पार स्वयं फूट पड़ने वाली माइनों में प्रयुक्त होने के निमित्त तैयार की जा रही है।

उसे यह भी सूचित किया गया कि मिडलेंड-रेलवे कम्पनी ने पूर्व वाली अव्यवस्था को दूर कर दिया है, और उसने पुनः गाड़ियाँ चलानी प्रारम्भ कर दी हैं, और वह समीपवर्ती प्रदेशों के गतिरोध को दूर करने के निमित्त सेन्ट-एलबन्स से गाड़ियां छोड़ रहे हैं। चिपिंग-ओन्गार नामक स्थान पर चिपका हुआ एक घोषणा-पत्र भी था जिसमें घोषित किया गया था कि उत्तर की ओर वाले नगरों में आटा प्रचुर मात्रा में उपस्थित है, और साथ ही यह भी कि आगत चौबीस घन्टों में ही समीपवर्ती भागों में क्षुधित व्यक्तियों को भोजन भी बाँटा जायगा। परन्तु यह समाचार भी उसकी योजना को विचलित न कर सका और तीनों दिन भर पूर्व की ओर बढ़ते ही रहे और उन्होंने इस घोषणा-पत्र के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर भोजन बँटते नहीं देखा। और सत्य तो यह है कि उनके अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने भी अन्न-वितरण किसी विशाल पैमाने पर कहीं भी नहीं पाया। उसी रात्रि प्रिमरोज़हिल के

समीप सातवाँ सिलण्डर गिरा। यह उस समय गिरा जब कि कुमारी एलिफन्स्टन जाग कर पहरा दे रही थी, कारण कि उसने मेरे भाई के साथ जागने की पारी बाँध ली थी। उसने उसे गिरते देखा।

बुधवार को तीनों भगोड़े एक अधपके गेहूँ के खेत में रात्रि व्यतीत करके चेम्सफोर्ड पहुँचे, और वहाँ उनको उस स्थान के निवासियों द्वारा रोका, और स्वयं को 'कमेटी आफ पब्लिक सप्लाई' कहते हुए, उन्होंने टट्टू को भोजन-सुरक्षा के निमित्त पकड़ लिया और उसका कोई मूल्य न चुकाकर, उसमें से उनको केवल उनके भाग को देने का ही आश्वासन दिया। यहाँ मङ्गल-निवासियों के एपिंग पर पाये जाने का समाचार प्राप्त हुआ एवं वाल्थम एबे पाउडर मिल्स के एक मङ्गल-अस्त्र को उड़ा डालने के असफल प्रयत्न में नष्ट-भ्रष्ट हो जाने का समाचार भी प्राप्त हुआ।

यहाँ लोग गिर्जों की मीनारों से मङ्गल-निवासियों को देख रहे थे। सौभाग्य से अवसर पाकर मेरे भाई ने तुरन्त भोजन की प्रतीक्षा बिना किये ही समुद्र-तट तक पहुँच पाने का प्रयत्न किया, यद्यपि वह तीनों ही अत्यधिक भूखे थे। दोपहर के समीप वह टिलिंघम से होकर निकले, जो भोजन के निमित्त लूट-मार करने वाले एक-दो भगोड़ों के अतिरिक्त विलक्षण रूप से शान्त एवं परित्यक्त पड़ा था। टिलिंघम के समीप उनको समुद्र का दर्शन होने लगा जो सभी प्रकार के जलयानों की भीड़-भाड़ से परिपूर्ण था जिनकी कल्पना सम्भव है। कारण कि उस समय के पश्चात् जब कि नाविकों की गति टेम्स तक आ पाने में असमर्थ हो गयी, वह एपेक्स तट, हारविच, वाल्टन और क्लेक्टन और बाद में फाइनेस एवं शूबरी तक यात्रियों को छोड़ने के लिये आने लगे। यह बेड़े एक हँसिये के आकार में प्रतीत होते थे, जो धीरे-धीरे कुहरे से ढँक कर नेज़ नामक स्थान तक आते-आते दृष्टि से ओझल हो जाते थे। तट पर आंग्ल, स्काच, फ्रेंच, डच और स्वीडिश मछली मारने वाली लाउन्चेज़, याटच् और विद्युत-चालित नौकाओं की भीड़-भाड़ थी, और उनसे परे

विशाल यान, गंदे कैलियर्स, यात्रियों को ढोनेवाली नौकाएँ, पैट्रोल-टैंकों को ढोने वाले यान एवं साउथेम्पटन तथा हैमबर्ग से आने वाले श्वेत लाइनर्स और ब्लेक वाटर से परे के नील-तट परे मेरा भाई किनारे पर खड़ा यात्रियों से खचाखच भरी हुई नौकाओं को धूमिल रूप में देख सका, काले-काले धब्बों का विस्तार जो ब्लेक वाटर से मैल्डन तक प्रतीत होता था।

यहाँ से कई मील दूर लौह-आवरण से ढँकी पानी में पर्याप्त डूबी हुई कोई वस्तु, मेरे भाई के दृष्टि प्रसार की सीमा में किसी डूबे जहाज की भाँति पड़ी थी। यह खम्भा गाड़ने वाले यंत्र वाला 'थण्डर चाइल्ड' नामक यान था। दिखाई पड़ने वाला केवल एक युद्ध पोत था, परन्तु सीधे हाथ की ओर पानी के चमचमाते तल पर—कारण कि वह दिन आश्चर्यजनक रूप से प्रशान्त था—धूम्र का एक विशाल नाग-सा दृष्टि-गोचर होता था, जो दूरी पर पड़े अन्य ऐसे ही पोतों की सूचना देता था, जो एक दूरी तक फैली हुई पंक्ति में वाष्प-पूर्ण एवं क्रिया-शील होने के निमित्त पूर्णतः सन्नद्ध टेम्स के नदी-मुख पर मंगल-निवासियों की उस विजय के समय सतर्क रूप से फैले हुए थे, यद्यपि वह उनकी गति को किसी भी प्रकार से रोक पाने में असमर्थ थे।

समुद्र का दर्शन करते ही अपनी ननद के आश्वासनों के होते हुए भी, श्रीमती एल्फिन्स्टन त्रस्त हो उठीं। इससे पूर्व वह कभी भी इंगलैंड से बाहर नहीं गयी थीं, और वह बांधव-हीन पराये देश में जाने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेयस्कर समझती थीं एवं इसी प्रकार अन्य बातें। बेचारी नारी! वह समझती थी कि फ्राँसीसी एवं मंगल-निवासी व्यवहार में समान ही होंगे। इन दो दिनों की अनवरत यात्रा से वह उन्माद-ग्रस्त, भय-ग्रस्त एवं शोक-ग्रस्त हो उठी थी। उसकी प्रबलतम भावना स्टेन्मूर लौट जाने की थी। स्टेन्मूर में सभी कुछ सदा ही ठीक एवं सुरक्षित रहता था। स्टेन्मूर में उनकी भेंट जार्ज से······

पर्याप्त कठिनाई के पश्चात् ही वह उसे समुद्र-तट तक ला पाये,

जहाँ सौभाग्य से मेरा भाई पैंडलर स्टीमर पर सवार कुछ व्यक्तियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो सका, जो टेम्स के नदी-मुख से समुद्र की ओर आ रहे थे। उन्होंने एक नौका उन्हें ले आने के निमित्त भेजी, और उन तीनों के परिवाहन का सौदा छत्तीस पाउंड में किया। यह स्टीमर, उन लोगों ने बताया आसटेन्ड जा रहा था।

उस समय लगभग दो बजा होगा जब मेरा भाई अपना किराया देकर उन लोगों के साथ स्टीमर पर चढ़ पाया एवं स्वयं को सुरक्षित समझ सका। स्टीमर में भोजन का प्रबन्ध था, यद्यपि उसका मूल्य अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा था, और उन तीनों ने एक अगली सीट पर कुछ खा पाने का प्रयत्न किया।

उस समय तक यद्यपि स्टीमर पर चालीस से अधिक यात्री थे, जिनमें से अधिकाश किराये के रूप में अपनी अन्तिम धन-राशि भी समाप्त कर चुके थे. परन्तु तो भी कप्तान ब्लेक वाटर पर ही सन्ध्या के पाँच बजे तक पड़ा रहा, जिस समय तक कि सभी बाहरी डेक तक संकट-जनक रूप से खचाखच न भर गये। सम्भव है कि वह और अधिक समय तक वहीं रुका रहता, यदि उसने उसी समय दक्षिण में तोपों के चलने की ध्वनियाँ न सुनी होतीं। और जैसे कि उनके ही प्रत्युत्तर में समुद्र में पड़े हुए उन लौह-परिधान वाले पोतों ने एक छोटी चलायी एवं झन्डों की वन्दनवार-सी ऊपर की ओर लहरा दी। उनके फनेलों से धुएँ की विशाल राशियाँ ऊपर की ओर उठने लगीं।

कुछ यात्रियों का उस समय तक यह विचार था कि यह ध्वनियाँ शूबरी की ओर से आ रही हैं, जब तक कि वह अधिक तीव्र रूप में सुनायी न पड़ने लगीं। और उसी समय समुद्र-तल से उन लौह-आवरणों वाले पोतों के मस्तूल एवं अन्य ऊपरी भाग काले बादलों के नीचे उठते प्रतीत हुए। परन्तु मेरे भाई का ध्यान पुनः दक्षिण वाली उन्हीं तोपों की ध्वनियों की ओर आकर्षित हो गया। उसका विचार था कि उसने उस दूरतम भूरे कुहरे से काले धुएँ का एक विशाल पिंड देखा।

वह छोटा स्टीमर नावों एवं जलयानों के उस अर्ध चन्द्राकार-से अपना मार्ग पूर्व की ओर निकालता बढ़ रहा था, और एसेक्स का वह नीचा तट धुँधला एवं नीला पड़ता-सा प्रतीत हो रहा था, जब कि दूरी के कारण छोटा एवं धूमिल-सा दीख पड़ने वाला एक मंगल-अस्त्र फाउनेस की दिशा से उस कीचड़ वाले तट पर आता प्रतीत हुआ। उसे देखते ही ऊपर पुल पर खड़ा कप्तान उच्चतम स्वर में अपने ही विलम्ब पर कसमें खाता रहा, और ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे स्टीमर के निर्जीव पैडिलों में भी भय का संचार हो उठा। स्टीमर पर सवार प्रत्येक व्यक्ति बाहरी भागों पर खड़ा अथवा भीतरी सीटों पर बैठा उस दूरतम आकृति को घूर रहा था, जो भूमि पर के प्रत्येक वृक्ष अथवा गिर्जे की चोटियों से ऊँचा था, और सुविधापूर्वक मनुष्यों के सदृश्य छलाँगें लगाता चल रहा था।

यह प्रथम मंगल-अस्त्र था जो मेरे भाई ने देखा, और भयभीत होने की अपेक्षा वह आश्चर्य-जड़-सा खड़ा इस दैत्य को तत्परतापूर्वक जलयानों के उस बेड़े की ओर बढ़ता देख रहा था, जो तट को पार कर जल में अत्यधिक धँसता-सा प्रतीत होता था। तब इस दैत्य से परे एक दूसरा वृक्षों के झुरमुट को लाँघता, और फिर उससे भी परे एक अन्य, जो समुद्र एवं आकाश के बीच बढ़ा आ रहा था। वह सभी समुद्र की ओर बढ़े आ रहे थे, जैसे कि उनका लक्ष्य बच निकलने वाली इस विशाल राशि को रोकना था, जो फाउनेस से हेज़ तक फैली हुई थी। यद्यपि इस छोटी पैडिल बोट के एंजिन धड़धड़ा रहे थे और उसके छोटे-छोटे पहिये अपने पीछे झागों की धारियाँ छोड़ते जा रहे थे, परन्तु तो भी वह उस विशाल एवं अशुभ प्रस्थान से पीछे छूटती जा रही थीं। उत्तर-पश्चिम की ओर देखने पर मेरे भाई ने जलयानों के उस विशाल समूह को प्रति-पल समीप आते उस भय से लहराता-सा पाया, कोई यान किसी दूसरे के पीछे से निकल रहा था, दूसरा चारों ओर से चक्कर काटता आ रहा था, स्टीम वाले जलयान सीटियाँ देते हुए धुएँ के पिंड छोड़

रहे थे, मस्तूल इधर-उधर उड़ रहे थे एवं छोटी नौकाएँ चारों ओर चक्कर काट रही थीं। इस सब एवं मन्द गति से अपनी बायीं ओर बढ़ने वाले उस संकट की ओर वह इतना अधिक आकर्षित हो चुका था कि उसका ध्यान समुद्र की किसी भी अन्य वस्तु की ओर नहीं था। तब स्टीम-बोट के एक आकस्मिक झटके ने (कारण कि कुचले जाने से बचने के निमित्त उसने सहसा एक चक्कर काटा था) उसे उस सीट से फेंक दिया जिस पर वह खड़ा था। उसके चारों ओर चीत्कार हो रहा था, कुछ लोगों के पाँव कुचल गये थे, एवं उल्लास की कुछ मन्द ध्वनियाँ, जिनके प्रत्युत्तर में केवल कुछ मन्द कंठ ही सुने जा सके। स्टीम-बोट न पुनः झटका खाया, और वह हाथों के बल गिर पड़ा।

वह उछल कर खड़ा हो गया और उसने स्टीमर के पार्श्व-भाग की ओर देखा, और उनसे सौ गज से कम एक छोटी नौका, हल के समान जल को चीरने वाला लौह एक-एक दीर्घ ब्लेड, जो स्टीमर से आगे की ओर प्रवाहित होने वाली झाग की प्रचण्ड लहरों के मध्य इधर-उधर झकोले खा रहा था, और असहाय रूप से वह नौका वायु में अपने पैडिलों को चला रही थी, और तब उसने उसके डेक को जल-मग्न होते देखा।

पानी की एक बौछार ने मेरे भाई को एक क्षण के लिये अन्धा कर डाला। जब उसके नेत्र पुनः खुले, उसने देखा कि वह दैत्य जा चुका है, और भूमि की ओर बढ़ रहा है। उसमें से विशाल लौह के ऊपरी भाग फूट पड़े, और उनमें से जुड़ी हुई फनेलों से अग्नि के साथ-साथ धूम्र का एक विशाल पिंड वायु में फूट पड़ा। यह तारपीडो वाला पोत था, जो धुआँ देता, भय-त्रस्त जलयानों की रक्षा के निमित्त आ रहा था।

स्टीमर की ऊपरी रस्सियों को पकड़े और कँपकँपाते उस डेक पर पाँव जमाये मेरे भाई ने मंगल-अस्त्रों पर आक्रमणशील इस विशाल दैत्य को पुनः देखा, एवं इस बार उसने उन तीनों को पास-पास देखा, और वह समुद्र की ओर इतने समीप थे कि उसने उनकी टिकटियों को पूर्णतः जल-मग्न पाया। जल-मग्न एवं इस प्रकार दूर से देखे जाने पर वह उस

विशाल लोह-आवरण से कहीं कम भयानक प्रतीत हो रहे थे, जिसके संरक्षण में वह स्टीमर ऐसी असहायता से निकल भागने का प्रयत्न कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह इस नूतन विरोधी को कौतूहल के साथ देख रहा हो। हो सकता है कि उनके निकट यह दैत्य उन्हीके समान प्रतीत हो रहा हो। 'थन्डर चाइल्ड' ने कोई तोप नही चलायी, और इसी कारण वह समग्र गति से उनकी ओर चलता रहा। शायद यह उसके तोप न चलाने का ही फल था कि वह शत्रु के इतने समीप पहुँच पाने में सफल हो सका। मंगल-अस्त्र वाले लोग नहीं जानते थे कि वह क्या करें। केवल एक गोला, और अपनी अग्नि-किरण के द्वारा वह उसे रसातल पहुँचा देते।

'थन्डर चाइल्ड' ऐसी गति से चल रहा था कि क्षण मात्र में ही वह स्टीम-बोट और एसेक्स-तट की ओर क्षितिज के विस्तार में धुँधले पड़ते-से उन भीमकाय मंगल-अस्त्रों के मध्य पहुँचता-सा दिखाई पड़ा।

सहसा अग्रिम मंगल-यंत्र ने अपने ट्यूब को नीचा किया, और उस लोह-आवरण पर काली गैस का एक कनस्तर फेंका। वह उसके बायें ओर वाले भाग से टकराया, और एक काले धुएँ के पिंड के रूप में उड़ता प्रतीत हुआ, जो समुद्र की ओर गति-शील हुआ, सीधा ऊपर उठने वाला धूम्र, जिसमें से वह लौह-आवरण साफ निकलता दिखाई पड़ा। स्टीमर से देखने वाले दर्शकों को, जो पानी में पर्याप्त धँसे थे एवं जिनके नेत्रों पर सूर्य का प्रकाश पड़ रहा था ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वह मंगल-अस्त्रों के मध्य पहुँच चुका है।

उन्होंने उन धुंधली आकृतियों को एक दूसरे से पृथक होते और तट की ओर लौटने के निमित्त पानी से निकलते देखा, और उनमें से एक ने अपने कैमरे के समान अपने अग्नि-किरण वाले यंत्र को ऊपर उठाया। नीचे की ओर तिरछा किये हुए वह उसे थामे रहा, और उसके स्पर्श मात्र से ही जल खौलने-सा लगा। स्टीमर अपनी तीव्रतम गति से चलता रहा।

१८

पद-तले

अब तक अपने भाई के अनुभवों का वर्णन करने में मैं अपने संबंध से इतना दूर जा पहुँचा कि पिछले सभी परिच्छेदों भर, मैं और वह पादरी हैलीफोर्ड स्थित उस मकान में पड़े रहे, जिसमें हम काली-वाष्प से बच पाने के निमित्त छिप रहे थे। मैं वहीं से प्रारम्भ करता हूँ। हम वहाँ रविवार की रात्रि भर, और फिर दिन भर—उस दिन जो अव्यवस्था का दिन था—सूर्य-प्रकाश के एक छोटे-से द्वीप में, जिसे उस काली वाष्प ने शेष संसार से पूर्णतः काट रखा था, उद्वेगमय अकर्मण्यता के भाव से पड़े, उन थका डालने वाले दिनों में हम केवल प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त और कुछ न कर सके।

मेरा मन अपनी पत्नी की चिन्ता से पूर्ण था। भयभीत, संकट-ग्रस्त और मुझे मृत समझ कर मेरी मृत्यु के शोक में लीन, मैंने उसकी कल्पना लेंदरहैड में की। मैं कमरों में इधर-उधर चक्कर काटता, जोर से बोल उठता जब कि मैं विचार करता कि मैं किस प्रकार उससे बिछुड़ गया, और मेरी अनुपस्थिति में वह किन-किन संकटों में पड़ सकती है। मेरा चचेरा भाई, मैं मानता था, किसी भी संकट-पूर्ण स्थिति का सामना करने का साहस रखता है, परन्तु वह संकट को शीघ्र ही समझ लेने और तुरन्त ही उठ खड़ा हो जाने वाले व्यक्तियों में नहीं था। इस समय जिस वस्तु

की आवश्यकता थी वह साहसपरता न थी वरन् सावधानी थी। मेरे पास एक ही सान्त्वना थी, और वह यह विश्वास था कि मंगल-निवासी लन्दन की ओर बढ़ रहे हैं और उससे दूर जा रहे हैं। ऐसी अनिश्चित चिन्ताएँ मन को संवेदनशील एवं मर्माहत बनाये रखती हैं। पादरी के मुख से निरन्तर निकलने वाले स्त्रोतों को सुनते-सुनते मैं थक चुका था और चिड़चिड़ा उठा था, विशेषतः उसकी स्वार्थ-पूर्ण दुखानुभूति पर। कुछ निष्फल प्रतिवादन के पश्चात् मैं उस एक ही कमरे, जिसमें ग्लोब लगे थे, नमूने और कापियाँ, और जो स्पष्टतः छोटे बालकों की कक्षा का कमरा था, रहते हुए भी उससे दूर रहने लगा। अन्त में जब वह मेरे पीछे उस कमरे में भी आ पहुँचा, मैं मकान के ऊपरी भाग में स्थित एक बाक्स-रूम में चला गया, और अपनी पीड़ित भावनाओं के साथ एकान्त में रह पाने के निमित्त, मैंने स्वयं को भीतर से बन्द कर लिया।

उस समस्त दिन एवं आगामी प्रातः हम उस काली वाष्प द्वारा बुरी तरह से घेर लिये गये। रविवार की सन्ध्या को पास वाले मकान में मनुष्यों के होने का आभास मिला—एक खिड़की पर एक गतिशील चेहरा एवं गतिशील प्रकाश और बाद में किसी द्वार के बन्द किये जाने की ध्वनि। परन्तु मुझे नहीं मालूम कि यह कौन लोग थे अथवा उनका क्या अन्त हुआ। आगामी दिन हमने उनको नहीं देखा। सोमवार को प्रातः वह काली वाष्प मन्दगति से नदी की ओर खिसकने लगी, और अन्त में उस सड़क के सहारे चलने लगी जिसके सहारे वह मकान था जिसमें हम छिपे पड़े थे।

मध्याह्न के समीप एक मंगल-यंत्र उस मैदान में आया, जिसने अत्यधिक ऊष्ण वाष्प का एक फुहारा-सा छोड़ा और उन समस्त खिड़कियों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, जिनका उसने स्पर्श किया, और पादरी के हाथों को झुलसा दिया जब कि वह सामने वाले कमरे से बाहर की ओर भागा। अन्त में जब हम उन झुलसे हुए कमरों से रेंग कर पुनः बाहर की ओर झाँकने आये, उत्तर की ओर वाला प्रदेश ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि

कोई काला बर्फीला तूफान वहाँ से होकर निकला हो। नदी की ओर देखने पर हम झुलसे हुए चरागाहों की श्यामता में मिली हुई एक अवर्णनीय लालिमा को देखकर आश्चर्य में पड़ गये।

कुछ समय के लिए हम नहीं समझ सके कि इस परिवर्तन ने हमारी स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है, केवल इस तथ्य के कि हम काली बाष्प के भय से मुक्त हो गये हैं। परन्तु बाद में मैं समझ सका कि हम अब किसी घेरे में नहीं थे, और अब हम बाहर निकल सकते थे। जैसे ही मैं जान सका कि हमारा निकल भागने का मार्ग खुल चुका है, कार्यशीलता का मेरा स्वप्न सचेत हो उठा। परन्तु वह पादरी जड़ एवं विवेकहीन हो चुका था।

"हम यहाँ सुरक्षित हैं," उसने दोहराया, "पूर्णतः सुरक्षित।"

मैंने उसे छोड़ देने का निश्चय कर लिया—काश मैं ऐसा कर सका होता! उस सैनिक से प्राप्त शिक्षा से अधिक बुद्धि-युक्त, मैंने खाने-पीने की वस्तुओं की खोज की। अपने झुलसे हाथों के लिये मुझे तेल और पट्टियाँ प्राप्त हो गईं और मैंने एक हैट तथा फलालेन की एक कमीज भी ले ली, जो मुझे उनमें से एक शयनागार में मिल गई। जब उसके निकट यह स्पष्ट हो गया कि मैं अकेला जाने को तत्पर हूँ, मैंने अकेले जाने का निर्णय कर लिया है, वह सहसा चलने को उठ खड़ा हुआ। और उस तृतीय प्रहर सभी कुछ शान्त रहने के कारण, हम, जैसा कि मैं अनुमान करता हूँ, पाँच बजे के लगभग सनबरी की ओर वाली काली पड़ी सड़क पर चल दिये।

सनबरी में एवं सड़क पर थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् हमें मृत शरीर मिले जो ऐंठे हुए पड़े थे—घोड़े एवं मनुष्य—उल्टी हुई गाड़ियाँ एवं सामान, जिन पर काली धूल की परतें जमी थीं। इन भस्ममय कफनों ने मुझे पाम्पेआई के विनाश की बात सोचने पर विवश कर दिया, जो मैंने पढ़ी थी। बिना किसी दुर्घटना के हम हैम्पटन कोर्ट जा पहुँचे, हमारे मस्तिष्क विलक्षण एवं अपरिचित आकृतियों से भरे थे, और हैम्पटन-

कोर्ट पहुँच कर हमारे नेत्र एक छोटे-से हरे-भरे भूमि-भाग को देखकर त्रासमुक्त हो सके, जो उस घुटनशील वाष्प के यात्रा-पथ से भाग्यवश बच सका था। हम बुशी पार्क गये, जिसमें पालित हरिण अखरोट के वृक्षों तले इधर से उधर चक्कर काट रहे थे, और इस प्रकार हम ट्वीकेनहैम आ पहुँचे। यह प्रथम मनुष्य थे जिन्हें हम देख सके।

सड़क से दूर हैम एवं पीटरशेम से परे के जंगल इस समय भी जल रहे थे। ट्वीकेनहैम अग्नि-किरण अथवा काली वाष्प दोनों प्रकार की क्षतियों से सुरक्षित था, और यहाँ मनुष्य पर्याप्त संख्या में थे, यद्यपि कोई भी हमें किसी प्रकार का समाचार न दे सका। उनमें से अधिकतम हमारे ही समान थे, जो इस आंशिक शान्ति का लाभ अपने स्थानों को बदलने के निमित्त कर रहे थे। मुझे स्मरण है कि यहाँ के अधिकतर मकान भय-ग्रस्त निवासियों द्वारा भरे हुए थे, इतने भय-त्रस्त कि उनमें पलायन कर पाने की शक्ति का भी सर्वथा अभाव था। यहाँ भी सड़क के सहारे शीघ्रता के साथ भगदड़ के चिन्ह विद्यमान थे। चकनाचूर ढेर के रूप में पड़ी तीन साइकिलों के देखने की मुझे स्पष्ट स्मृति है, जो पीछे आने वाली गाड़ियों के पहियों से बुरी तरह से कुचल दी गयी थीं। हमने लगभग साढ़े आठ बजे रिचमण्डब्रिज को पार किया। हम उस खुले हुए पुल से शीघ्रतापूर्वक गुजरे, परन्तु मैंने नीचे नदी में तैरते हुए लाल-लाल ढेरों को देखा, जिनमें कुछ कई-कई फीट चौड़े थे। मैं नहीं जानता कि यह क्या थे—उनका अन्वेषण कर पाने के लिये समय नहीं था—और मैंने उनका अर्थ उनकी वास्तविकता से अधिक भयावह रूप में कर डाला। यहाँ भी सरे की ओर वाली दिशा में वह काली भस्म थी, जो कभी धूम्र एवं जीवित शरीरों का रूप रखती थी—स्टेशन के समीप का एक ढेर—परन्तु जिस समय तक हम बार्न्स के समीप न आ पहुँचे, हमने मंगल-निवासियों को एक बार भी नहीं देखा।

उस काले पड़े विस्तार में हमने तीन मनुष्यों को नदी की ओर जाने वाली किसी पार्श्व वाली गली में नीचे की ओर भागते देखा, और इसके

अतिरिक्त यहाँ सभी कुछ निर्जन था। पहाड़ी के ऊपर रिचमण्ड नगर तीव्र गति से जल रहा था, और रिचमण्ड नगर से बाहर उस काले धुएँ का कहीं कोई अस्तित्व नहीं था।

तब सहसा, जैसे कि हम क्यू (Kew) पहुंचे, कुछ लोग भागते आते दीख पड़े, और सौ गज के लगभग दूरी पर मकानों की चोटियों के ऊपर हमें एक मंगल-अस्त्र के दर्शन हुए। संकट को निकट पाकर हम भौंचक्के-से खड़े रहे, और वह अस्त्र यदि अपने नीचे की ओर झाँक लिया होता, हम तुरन्त ही नष्ट हो गये होते। हम इतने अधिक भय-ग्रस्त थे कि हमें आगे बढ़ने का साहस न हुआ, अपितु हम पीछे मुड़े और एक उद्यान के शेड में छिप रहे। वह पादरी चुपचाप रोता और आगे बढ़ना अस्वीकार करता मेरी अनुनय-विनय करता रहा।

परन्तु लैदरहैड पहुँचने का मेरा स्थिर विचार मुझे विश्राम नहीं करने दे रहा था, और गोधूलि के धुँधलके में मैं पुनः बाहर निकल पड़ा। मैं एक झाड़ीदार जंगल से होकर निकला, और एक बड़े मकान के पार्श्व वाले मार्ग से निकलकर क्यू वाली सड़क पर आ पहुँचा। पादरी को मैंने शेड में छोड़ दिया था, परन्तु वह शीघ्रतापूर्वक भागता मेरे पीछे आ पहुँचा।

दूसरी बार की यह यात्रा मेरे जीवन की एक बड़ी मूढ़ता थी। कारण कि यह स्पष्ट था कि मंगल-निवासी हमारे आस-पास ही हैं। वह मेरे समीप आ ही पाया होगा जब कि हमने या तो उसी अस्त्र को जिसे हम पहिले देख चुके थे अथवा किसी अन्य को अपने से पर्याप्त दूर क्यू-लाज की ओर वाले चरागाहों के ऊपर देखा। चार-पाँच छोटी-छोटी आकृतियाँ उसके आगे मैदान की हरियाली में शीघ्रतापूर्वक भाग रही थीं, और एक क्षण में ही यह स्पष्ट हो गया कि यह मंगल-अस्त्र उनका पीछा कर रहा था। तीन छलांग में वह उन तक आ पहुँचा, और उसके पैरों के नीचे फैले वह चारों ओर भाग रहे थे। उसने उन्हें नष्ट करने के लिये अग्नि-किरण का प्रयोग नहीं किया, अपितु एक-एक करके उन्हें

ऊपर उठा लिया। उसने उन्हें विशाल धातु के उस पार्श्व-भाग में डाल दिया जो ठीक उस प्रकार का प्रतीत होता था जैसे कि मजदूरों के कन्धों पर उनकी टोकरियाँ लटकी होती हैं।

यह प्रथम अवसर था जब कि मैं जान सका कि पराजित मानव-समाज को नष्ट कर डालने के अतिरिक्त मंगल-निवासियों का अन्य कुछ अभीष्ट भी हो सकता है। भय से जड़ हम एक क्षण तक खड़े रहे, तब पीछे मुड़े और अपने पीछे एक द्वार से भागकर चारों ओर से दीवालों से घिरे एक उद्यान में जा पहुँचे, और सौभाग्य से एक खाई को सामने पाकर उसमें उतरने की अपेक्षा गिर पड़े और एक दूसरे से फुसफुसाने का भी साहस न करते हुए उस समय तक पड़े रहे जब तक कि आकाश से तारे न झाँकने लगे।

मैं समझता हूँ कि समय लगभग ग्यारह के समीप होगा जब कि हमने पुनः चलने का साहस एकत्रित किया, सड़क के सहारे नहीं वरन् झाड़ियों एवं वृक्षों के मध्य छिपते हुए, और उस अन्धकार में वह सीधे और मैं बायें हाथ वाली ओर उन मंगल-अस्त्रों को देखते आगे बढ़े, जो हमारे चारों ओर घिरे प्रतीत होते थे। भटकते हुए हम झुलसे एवं काले पड़े एक स्थान पर आ पहुँचे, जो अब ठण्डा पड़ चुका और भस्म में परिवर्तित हो चुका था, छितरे पड़े अनेक मानव-शव, जिनके सिर एवं धड़ बुरी तरह से झुलस गये थे, परन्तु जिनके पैर एवं बूट पूर्णतः सुरक्षित थे; और मृत घोड़ों का ढेर, जो चार पूरी हुई तोपों एवं नष्ट-भ्रष्ट तोप-गाड़ियों से शायद पचास गज की दूरी पर था।

लगता था कि जैसे शीन नष्ट होने से बच गया है, पर वह स्थान निस्तब्ध एवं निर्जन था। यहाँ हम किसी मृत शरीर से नहीं टकराये, यद्यपि हमारे निकट उस स्थान के पार्श्व-वर्ती मार्गों को देख पाने के लिये रात्रि पर्याप्त अंधेरी थी। शीन में मेरा साथी सहसा थके एवं प्यासे होने की शिकायत करने लगा, और हमने उनमें से किसी मकान में जाने का निश्चय किया।

पहिला मकान, जिसमें हम कठिनाई के साथ एक खिड़की के द्वारा घुसे, एक छोटा एवं शेष से पर्याप्त दूर बना मकान था, और उस स्थान में मैंने केवल कुछ गन्दे पनीर के अतिरिक्त अन्य कुछ भी न पाया। परन्तु जो कुछ भी हो, वहाँ पीने के लिये पानी था, और मैंने एक बसूला उठा लिया, जो हमारे निकट अगले मकान के द्वार को तोड़ पाने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध प्रतीत हो रहा था।

हमने सड़क को एक ऐसे स्थान पर पार किया जहाँ से वह मार्ट-लेक की ओर घूमती है। यहाँ प्राचीरों से घिरे एक उद्यान में एक श्वेत मकान खड़ा था, और इसके भंडार-गृह में हमें खाद्य-पदार्थों का एक भंडार प्राप्त हुआ—एक कढ़ाई में रखे रोटी के दो गस्से, बिना भुनी मांस की एक बोटी और रान का आधा टुकड़ा। इस सूची का वर्णन मैंने इतनी सूक्ष्मता से इस निमित्त किया है कि शायद, जैसा कि आगे घटित हुआ, हमें इसी भोजन पर आगामी पन्द्रह दिन जीवित रहना पड़ा। एक आलमारी के नीचे बीयर की बोतल रखी थी, और दो बोरी हैरीकोट बीन्स और थोड़े-से लचीले चोकन्दर थे। यह भंडार-गृह एक प्रकार के रसोई-घर में खुलता था, और यहाँ रखी जलाने की इन लकड़ियों और एक कप-बोर्ड में हमने लगभग एक दर्जन बर्गन्डी, टीनों से भरा शोरबा और साल्मन मछली, और दो टीन बिस्कुट प्राप्त किये।

बराबर वाले रसोईघर में हम अंधेरे में बैठे रहे—कारण कि हमें प्रकाश करने का साहस नहीं था—और हम रोटी और उस रान को खाने लगे और एक बोतल से हमने कुछ बीयर भी पी। पादरी, जो इस समय भी भीरु एवं अशान्त था, अब आगे जाने योग्य हो गया था, और मैं उससे कुछ खाकर अपनी शक्ति बनाये रखने का अनुरोध कर रहा था, जिस समय कि वह घटना घटी, जिसे हमें इसी स्थान मे बन्दी बना देना था।

"अभी मध्य रात्रि नहीं हो सकती", मैंने कहा, और तभी नेत्रों को

अन्धा कर डालने वाली स्पष्ट हरित प्रकाश की चमक हुई। उस हरित् एव काले प्रकाश में, रसोई-घर की प्रत्येक वस्तु सहसा चमक उठी, और पुनः विलीन हो गयी। और इसके पश्चात् वस्तुओं के कम्पन का एक ऐसा कोलाहल हुआ जैसा कि मैंने उसके पूर्व अथवा उसके पश्चात् कभी भी नहीं सुना है। इसके बाद ही इतनी शीघ्रता से होने वाला कि वह तात्कालिक प्रतीत हो, मेरे पीछे धमाके का शब्द हुआ, काँच झन्ना कर टूटे, हमारे चारों ओर टूट-टूट कर गिरने वाला मलवा, और तब धड़ाधड़ छत का प्लास्टर हमारे ऊपर गिरने लगा, जो हमारे सरों से टकरा कर असंख्य खडों में बिखर जाता। अपनी रक्षा करता एवं संज्ञा-हीन-सा में चूल्हे के समीप वाले फर्श पर सर के बल गिर पड़ा। पर्याप्त समय तक, पादरी ने मुझे बताया मे चेतना-हीन रहा, और जब में सचेत हुआ, हम लोग पुनः अन्धकार में थे, और वह, जिसका मुँह जैसा कि मैंने बाद को पाया माथे की एक चोट के कारण रक्त से भीगा था, मेरे ऊपर पानी डाल रहा था।

कुछ समय तक मैं स्मरण न कर सका कि क्या हो चुका है। तब धीरे-धीरे मुझे सब बाते याद आ गयीं। कनपटी की एक चोट पीड़ा करने लगी।

"क्या तुम ठीक हो ?" पादरी ने फुसफुसा कर प्रश्न किया।

अन्त में मैंने उसे उत्तर दिया। मैं उठ बैठा।

"चलो मत," उसने कहा। "फर्श काँच और चीनी के टूटे टुकड़ों से भरा है। और मैं समझता हूँ कि तुम बिना शब्द किये नहीं चल सकते, और मेरा विचार है वह बाहर ही हैं।"

हम दोनो पूर्णतः स्तब्ध बैठे रहे, इतने कि हम एक दूसरे की श्वास-ध्वनि भी कभी-कभी ही सुन पाते थे। सभी कुछ मृत्यु के समान स्तब्ध था, यद्यपि एक बार हमारे अत्यन्त समीप प्लास्टर या कोई टूटी हुई ईंट गड़गड़ाहट की ध्वनि करती हुई नीचे आ गिरी। बाहर और हमारे

पर्याप्त समीप किसी धातु की वस्तु की रह-रह कर होने वाली गड़गड़ाहट सुनायी पड़ी ।

"वह !" पादरी ने कहा जब कि दोबारा हुई ।

"हाँ", मैंने कहा, "परन्तु वह क्या है ?"

"एक मंगल-निवासी," पादरी ने उत्तर दिया ।

मैंने पुन: सुनने का प्रयत्न किया ।

"वह अग्नि-किरण की ध्वनि के समान नही थी", मैंने कहा, और कुछ काल के लिये मैं यह सोचने लगा कि उन विशाल युद्ध-अस्त्रों में से कोई मकान से टकरा गया है, जैसे कि मैंने एक को शेपर्टन चर्च से टकराते देखा था ।

हमारी स्थिति इतनी विलक्षण एवं अकल्पनीय थी कि उन तीन-चार घन्टों में, जब तक कि पौ न फटी, हम शायद ही अपने स्थानों से हिले हों । और तब प्रकाश भीतर की ओर झाँका, उस खिड़की से नहीं, जो काली पड़ चुकी थी, वरन् सोट और हमारे पीछे टूटी हुई दीवाल के एक झरोखे से । रसोई-घर के भीतरी भाग को हमने प्रथम बार इस समय धुँधले रूप में देखा ।

बाहरी उद्यान से कीचड़ की एक विशाल राशि खिड़की द्वारा भीतर आ गयी थी, जो उस मेज पर वह रही थी जिस पर हम बैठे रहे थे, और हमारे पैरों के चारों ओर बिखरी पड़ी थी । बाहर मकान के सहारे मिट्टी का एक बड़ा ढेर लगा था । खिड़की के ढाँचे से ऊपर से हम एक उखड़े हुए गन्दे पानी के पाइप को देख सके । फर्श पर ध्वस्त हुए धातु के बर्तनों का एक ढेर था, मकान की ओर वाला रसोई-घर का सिरा टूट चुका था, और क्योंकि वहाँ प्रातः कालीन प्रकाश फैल चुका था, यह स्पष्ट था कि मकान का एक बड़ा भाग खण्डहर हो चुका है । इस विध्वंस से पूर्णतः विभिन्न वह भोजन की चौकी थी, जो फैशन के अनुसार हल्के हरे रंग की थी, और जिसके नीचे ताँबे और टीन के अनेक बर्तन थे, दीवाल पर लगा कागज जो नीले और श्वेत

टाइल्स के अनुकरण के समान लगता था तथा रसोई पर की ऊँचाई से ऊपर लगे फड़फड़ाते हुए कुछ रंगीन कागज।

जैसे-जैसे दिन का प्रकाश फैलता गया, हमने दीवाल के छिद्र द्वारा, मैं समझता हूँ, इस समय चमचमाते सिलण्डर के ऊपर प्रहरीवत् खड़े किसी मंगल-निवासी के शरीर को देखा। उसे देखते ही, जितना भी सम्भव हो सका, सावधानीपूर्वक हम रसोई-घर के प्रकाश से बर्तन माँजने वाली कोठरी के अन्धकार में रेंग गये।

सहसा वस्तुओं का वास्तविक अर्थ स्वयं ही मेरी समझ में आ गया।

"पाँचवाँ सिलण्डर", मैं फुसफुसा उठा, "मंगल से फेंका गया पाँचवाँ अस्त्र इस मकान से टकराया है, और उसने हमें इन खण्डहरों के नीचे दबा दिया है।"

कुछ काल तक पादरी मौन रहा, और तब वह अस्फुट स्वर में बोला : "ईश्वर हम पर दया कर।"

मैंने उसे रिरियाते सुना।

केवल इस ध्वनि के हम उस कोठरी में निःशब्द पड़े रहे। जहाँ तक मेरा संबंध है, मेरे पास साँस लेने तक का साहस नहीं था, और रसोई-घर के द्वार पर होने वाले उस धुँधले प्रकाश पर दृष्टि जमाये मैं बैठा रहा। मैं अब पादरी का मुँह देख सकता था, धुँधली अण्डाकार आकृति, और उसका कालर तथा उसके कफ। बाहर धातु पर हथौड़ा पड़ने की ध्वनि होने लगी और तब तीव्र चिल्ल-पों, और तब कुछ समय पश्चात् किसी इंजिन के समान हिस्-हिस् की ध्वनि। पर ध्वनियाँ, जो अधिकांश रूप में समस्यात्मक रूप धारण कर रही थीं, रह-रहकर होती रहीं, और कुछ भी पता लग सका तो इतना कि समय के साथ-साथ वह भी बढ़ती जाती थीं। तुरन्त ही परिमित धमाकों की ध्वनियाँ एवं एक कंपन जिसने हमारे समीपवर्त्ती प्रत्येक वस्तु को कंपा दिया, और जिससे भंडार-गृह में रखे बर्तन बजने और इधर-उधर गिरने लगे, प्रारम्भ हुआ और चलता रहा। एक बार प्रकाश को जैसे ग्रहण लग गया, और प्रेतवत्

प्रतीत होने वाला रसोई-घर का वह द्वार पूर्ण अन्धकार में डूब गया। कई घन्टों तक हम वहाँ स्तब्ध एवं कँपकँपाते पड़े रहे होंगे, जब तक कि हमारी थकी हुई चेतना.........।

अन्त में मैंने स्वयं को जगा हुआ और भूखा पाया। मेरा मन ऐसा मानना चाहता है, हम उस जागरण से पूर्व दिन के अधिकांश भाग तक पड़े सोते रहे होंगे। क्षुधा एक ही छलाँग में इतनी तीव्र हो उठी कि उसने मुझे कार्य-शील बना डाला। मैंने उसे बताया कि मैं भोजन की खोज में जा रहा हूँ, और टटोलता हुआ मैं भण्डार-गृह की ओर बढ़ा। उसने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु शीघ्र जैसे ही कि मैंने खाना प्रारम्भ किया, उस अस्पष्ट ध्वनि ने, जो मैं कर रहा था, उसे गति-शील कर दिया, और अपने पीछे मैंने उसके रेंगकर आने की ध्वनि सुनी।

१९
खण्डहर से क्या देखा

खाना समाप्त करने के पश्चात् हम पुनः रेंगकर उस कोठरी में वापिस आ गये और वहाँ आकर मैं पुनः सो गया होऊँगा, कारण कि जिस समय मैं उठा मैं एकाकी था। धमाकों का वह कम्पन खेदजनक रूप में चलता रहा। मैंने पादरी को अनेक बार पुकारा, और अन्त में मैंने अपना मार्ग रसोई-घर के द्वार की ओर टटोला। इस समय भी दिन का प्रकाश था, और मैंने उसे कमरे के उस पार उस त्रिकोणात्मक छिद्र से, जो बाहर के मंगल-यंत्र की ओर खुलता था, सटे पाया। उसके कन्धे

उठे हुए थे, जिससे उसका सिर मेरी दृष्टि से छुपा हुआ था।

किसी भी एंजिन-शेड में होने वाले कोलाहलों के समान मैं अनेक ध्वनियाँ सुन सका, और वह स्थान उन ध्वनियों से कम्पायमान हो रहा था। दीवाल के उस छिद्र से मैं सूर्यास्त के स्वर्णमय प्रकाश में पीली दीख पड़ने वाली एक पेड़ की चोटी एवं उस शान्त सन्ध्या के ऊष्ण-नील वातावरण को देख सका। एक मिनिट या उससे कुछ अधिक मैं पादरी को देखता रहा, और तब रेंगते एवं सावधानी से फर्श पर बिखरे उन टुकड़ों पर पाँव रखता हुआ आगे बढ़ा।

मैंने पादरी के पैर का स्पर्श किया, और वह इतनी प्रचण्डता के साथ पीछे मुड़ा कि प्लास्टर का एक बहुत बड़ा खण्ड बाहर की ओर खरका और तीव्र ध्वनि करता हुआ गिर पड़ा। इस भय से कि कहीं वह चीख न पड़े, मैंने उसकी भुजा को कसकर पकड़ लिया, और एक दीर्घ काल तक हम गति-हीन पड़े रहे। तब यह देखने के लिये कि हमें सुरक्षित रखने वाली उस प्राचीर का कितना भाग अभी शेष है, मैंने अपना सिर पीछे घुमाया। इस उखड़े हुए प्लास्टर ने अपने पीछे लम्ब-रूप वाला एक छिद्र छोड़ दिया था, और एक सोट के बीच से सावधानी-पूर्वक अपना सिर उठाकर मैं उसके द्वारा उस सड़क को देख सका जो इस रात्रि से पूर्व एक शान्त सड़क थी। वह परिवर्तन, जो हमने वहाँ पाया, पूर्व से सर्वथा भिन्न था।

पाचवाँ सिलण्डर उस मकान के मध्य भाग में गिरा होगा, जिसमें हम पहिले गये थे। वह इमारत अपने स्थान पर नहीं थी, इस आघात से वह पूर्णतः ध्वस्त एवं चूर-चूर हो गई थी। वह सिलण्डर इस समय मकान की नींव से भी कहीं नीचे एक खड्ड में पड़ा था, जो उससे कहीं बड़ा था जिसे मैंने वोकिंग में देखा था। उस प्रचण्ड आघात से उसके आस-पास की पृथ्वी की धज्जियाँ उड़ गई थीं—'धज्जियाँ' ही केवल एक शब्द है—और वह कीचड़ विशाल ढेरों में यहाँ-वहाँ पड़ी थी जिसने कि समीपवर्ती मकानों को छिपा रखा था। वह ठीक उसी प्रकार

छितराई पड़ी थी जैसे कि हथौड़े के प्रचण्ड आघात से कीचड़। हमारा वाला मकान पीछे की ओर गिरा था, सामने वाला भाग, यहाँ तक कि उसका फर्श भी; पूर्णतः ध्वस्त हो चुका था; और सौभाग्य से रसोई-घर और बर्तन माँजने वाली वह कोठरी ही बच गई थी, और केवल सिलण्डर की ओर वाले भाग को छोड़कर अन्य तीनों ओर से टनों मिट्टी एवं मलवे के ढेरों के नीचे दबी पड़ी थी। इस स्थिति के साथ-साथ हम इस समय उस गोल खड्ड के ऊपर लटक रहे थे जिसे बनाने में मंगल-निवासी तत्पर थे। वह प्रचण्ड ध्वनि निश्चित रूप में हमारे पीछे से आ रही थी, और थोड़े-थोड़े समय पर एक चमकीला हरित वर्ण धूम्र हमारे उस झाँकने वाले छिद्र के सामने किसी पर्दे के समान ऊपर उठता दीख पड़ता था।

खड्ड के मध्य सिलण्डर खुल चुका था, और नष्ट-भ्रष्ट एवं मलवे के ढेरों मे दबी झाड़ियों के बीच खड्ड के उस सिरे पर, उन विशाल युद्ध-अस्त्रों में से एक अपने निवासियों से परित्यक्त, सान्ध्य आकाश के नीचे सीधा और ऊँचा खड़ा था। प्रथम तो उस असाधारण एवं चमचमाते यांत्रिक आकार के कारण मैं न तो उस खड्ड को ही देख सका और न उस सिलण्डर को ही, यद्यपि उनका वर्णन पूर्व ही कर देना सुविधाजनक रहा, जो भूमि खोदने में संलग्न था, और साथ ही उन विलक्षण जीवों के कारण जो मन्द गति से एक पीड़ा के साथ समीपवर्ती मलवे के उस ढेर पर रेंग रहे थे।

निश्चित रूप में वह यांत्रिक आकार ही था जिसने सर्व प्रथम मेरे ध्यान को आकर्षित किया। वह उन जटिल रचनाओं में से एक था जिन्हें हैन्डलिंग मशीन कहा जाता है, और जिनका अध्ययन आज तक इस लोक के अन्वेषणों को इतनी अधिक प्रेरणा देता रहा है। जैसे ही वह मुझे दिखाई पड़ा, वह पाँच जुड़े हुए एवं चंचल पैरों वाले एक धातु-निर्मित मकड़े के समान दीख पड़ा, जिसमें विशाल संख्या में लीवर और छड़ियाँ जुड़ी हुई थीं, और जिसके चारों ओर उस तक पहुँचने एवं उसे

जकड़ लेने वाले स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग थे। उसकी अधिकतम भुजाएँ मुड़ी हुई थीं, परन्तु तीन और स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंगों द्वारा वह अनेक डब्बों, प्लेटों और छड़ियों को निकाल रहा था जो सिलण्डर के आवरण में लगी थीं, और प्रकट रूप में उसकी दीवालों को सुदृढ़ करती थीं। यह सब, जब वह उन्हें निकाल चुका, बाहर उठा लिये गये और पीछे की ओर समान तल वाली पृथ्वी पर रख दिये गये।

उसकी गति इतनी तीव्र, जटिल एवं निर्दोष थी कि प्रथम बार उसकी धातु की चमक देखते हुए भी मैं उसे यंत्र की भाँति न देख सका। युद्ध-यंत्रों को असाधारण रूप में नियमित एवं क्रिया-शील बनाया गया था, परन्तु इस यन्त्र से तुलना किये जाने योग्य कुछ भी नहीं था। वह लोग जिन्होंने इस यन्त्र को नहीं देखा है, और जिनके निकट इसे समझ पाने का साधन या तो किसी कलाकार के कल्पित प्रयास है अथवा मेरे समान किसी साक्षी के अपूर्ण वर्णन, उनके लिये इनकी सजीवता की कल्पना कर पाना कठिन है।

युद्ध के घटना-क्रमानुसार वर्णन के हेतु सर्व प्रथम दिये गये सूचना-पत्रों में से एक पत्र मे दिये गये दृष्टान्त-चित्र का मैं विशेष रूप से स्मरण करता हूँ। स्पष्ट है कि कलाकार ने इन युद्ध-यन्त्रों में से किसी एक का शीघ्रतापूर्वक अध्ययन किया है, और वहीं उसके ज्ञान की परिसमाप्ति हो गयी। उसने उन्हें तिरछा और सीधी तिपाई के रूप में चित्रित किया जिसमें न तो लचकीलापन था और न कोई सूक्ष्मता और जो दर्शक के निकट उनके कठिनता से चलित हो पाने के भाव को भी चित्रित करता है। ऐसे मत वाले उस सूचना-पत्र का पर्याप्त प्रचार हुआ था, और यहाँ मैं उनका वर्णन केवल पाठक को उनके छोड़े गये प्रभाव के प्रति सावधान करने के निमित्त ही कर रहा हूँ। वह उन सजीव मंगल-निवासियों के समान, जिन्हें मैंने काम करते देखा था, ठीक उसी प्रकार नहीं थे जैसे कि कोई डच खिलौना किसी मानव के समान नहीं हो सकता है। मेरे विचार में इन दृष्टान्त-चित्रों के बिना वह

सूचना-पत्र अधिक उपयोगी सिद्ध होता।

सर्व प्रथम, मैं पुनः कहता हूँ, वह हैण्डलिंग मशीन मुझे किसी मशीन के समान नहीं लगी, वरन् चमकीली खाल वाले कर्कट के समान कोई जीव। उस यन्त्र को संचालित करने वाला वह मंगल-निवासी, जिसके कोमल स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग उसकी गति को क्रियाशील करते थे, किसी कर्कट के मस्तिष्क वाले भाग के समान दृष्टि पड़ता था। परन्तु तब मैंने इस भूरे, चमकदार और चमड़े के समान दीख पड़ने वाले आवरण की समानता टेड़े-मेड़े शरीर वाले उन जीवों से की और इन निपुण कार्य-कर्ताओं की वास्तविक स्थिति मेरी समझ में आयी। यह समझ में आने के साथ ही मेरा कौतूहल उन अन्य जीवों के प्रति आकृष्ट हो उठा, जो सजीव मंगल-निवासी थे। इनकी एक क्षणिक झलक मै पहिले ही देख चुका था, और पूर्व की वह वमन की अनुभूति अब मेरे अन्वीक्षण को आबाधित नहीं कर रही थी।

अब मैंने देखा, वह इस लोक के प्राणियों से इतने विभिन्न थे जितना कि सोचा जाना सम्भव है। वह विशाल और गोल शरीर वाले थे—अथवा सिरों वाले, जिनके सिरों का व्यास लगभग चार फीट था, प्रत्येक शरीर के सामने एक सिर। इस चेहरे पर नथने नहीं थे—वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि मंगल-निवासी गन्ध-ज्ञान से वंचित थे परन्तु उस पर गहरे काले रंग वाले विशाल नेत्रों का जोड़ा था और उसके ठीक नीचे एक प्रकार की मांसमय चोंच। इस शरीर अथवा सिर के पीछे—मैं नहीं जानता कि मैं इसे किस नाम से पुकारूँ—एक कड़ा और नगाड़े के समान भाग था, जिसे शरीर-रचना-विज्ञान में कान की संज्ञा दी जानी चाहिए, यद्यपि वह हमारे इस लोक की भारी वायु में निष्क्रिय ही सिद्ध हुआ होगा। उसके मुख के समीप सोलह पतले एवं कोड़े के समान प्रतीत होने वाले स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग थे, जो आठ-आठ के दो गुच्छों में विभक्त थे। उसी समय से इन गुच्छों का प्रसिद्ध शरीर-रचना शास्त्र-वेत्ता प्रोफेसर हाउज़ द्वारा दिया गया 'हाथ' नाम उपयुक्त ही सिद्ध हुआ।

और मैंने भी जब इन मंगल-निवासियों को प्रथम बार देखा, वह इन हाथों के बल स्वयं को ऊपर उठाने का प्रयन्न कर रहे थे, परन्तु निर्विवाद रूप में इस लोक की भौतिक स्थिति से बढ़े हुए बोझ के कारण ऐसा कर पाना असम्भव था। ऐसी कल्पना करने के लिये पर्याप्त कारण है कि मंगल-लोक में वह ऐसी सुविधा के साथ कर सकते होंगे।

उनकी आन्तरिक शरीर-रचना में यहाँ बता दूँ, जैसा कि सूक्ष्म-परीक्षा से सिद्ध हुआ, उतनी ही सरल थी। उनके शारीरिक ढाँचे में अधिकतम भाग मस्तिष्क का था, जिसमें से बहुसंख्या में नाड़ियाँ, आँखों, कानों और उन स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंगों तक जाती थीं। इससे परे जटिल रचना वाले उनके फेफड़े थे, जिसमें उनका मुख, हृदय एवं उनकी नाड़ियाँ खुलती थीं। इस लोक के भारी वातावरण एवं भूमि की अतिरिक्त आकर्षण-शक्ति के कारण उत्पन्न उनके फेफड़ों की पीड़ाजनक क्रियाशीलता उनकी त्वचा की सिकुड़न से पूर्णत: व्यक्त होती थी।

और मंगल-निवासियों के शारीरिक अंगों का यह योग था। विलक्षण, जैसा कि यह किसी भी मानव के निकट प्रतीत हो सकता है, पाचन के वह समस्त जटिल अंग, जो हमारे शरीर के ढाँचे का प्रमुख भाग बनाते हैं, मंगल-निवासियों में विद्यमान नहीं थे। उनमें सिर ही थे, केवल सिर। उनमें अंतड़ियाँ नाम को भी नहीं थीं। वह भोजन नहीं करते थे, और पाचन उससे भी कम। भोजन के स्थान पर वह अन्य जीवों का रक्त पीते थे, और इस प्रकार उसे अपनी नाड़ियों में प्रविष्ट कर लेते थे। मैंने स्वयं ऐसा होते देखा है, जैसे कि मैं उसके स्थान पर उसका वर्णन करूँगा। परन्तु, हो सकता है कि मैं नकचिड़ा-सा प्रतीत होऊँ, मैं उसका वर्णन कर पाने में असमर्थ हूँ जिसे मैं देख भी न सका। इतना ही पर्याप्त है कि किसी भी जीवित जीव के शरीर से लिया गया रक्त, अधिकतर मनुष्यों के शरीर से, एक छोटी नलिका द्वारा रक्त-ग्राहक शिरा में प्रविष्ट हो जाता था......।

निस्सन्देह उसकी कल्पनामात्र भी हमारे निकट भयावह रूप में अप्रिय है, परन्तु इसके साथ ही हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमारी सामिष प्रकृति किसी बुद्धिमान खरगोश के निकट कैसी प्रतीत होगी।

शरीर-शास्त्र में इंजेक्शन के लाभ को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, यदि कोई भी मनुष्य खाना खाने और उसकी पाचन-क्रिया में होने वाले मनुष्य के अपरिमाण समय एवं शक्ति की हानि की कल्पना करे। हमारे शरीर में का आधा भाग ग्रन्थियों और नलियों और अंगों से बना हुआ है, जो विभिन्न प्रकार के भोजनों को रक्त में परिवर्तित करते हैं। पाचन-क्रिया और स्नायु-मंडल पर उसकी प्रतिक्रिया हमारी शक्ति, वर्ण एवं मस्तिष्क को रस प्रदान करती है। मनुष्य सुखी अथवा दुखी अपने यकृत अथवा जठर-संबंधी ग्रन्थियों के स्वस्थ अथवा अस्वस्थ होने के कारण होते हैं। परन्तु मंगल-निवासी चित्त-वृत्ति एव भावनाओं-सम्बन्धी चेतना की समस्त अस्थिरताओं से परे थे।

अपने भोजन के निमित्त मनुष्यों से उनका कभी न विचलित होने वाला अनुराग कुछ तो उन जीवों के अस्थि-पजरों को देखकर होता है, जिन्हें वह मंगल-लोक से भोजन-सामग्री के रूप में अपने साथ लाये थे। उन सिकुड़े हुए शवों को देखने पर, जो मनुष्यों के हाथों में पड़े हैं, प्रकट होता है कि यह जीव दो पैरों वाले थे, जिनके कंकाल दुर्बल तथा एक प्रकार के श्वेत सिल्का पत्थर के बने-से प्रतीत होते थे (ठीक उसी प्रकार जैसे कि सिल्का स्पंज होते हैं) तथा दुर्बल मांसल-रचना वाले, छः फीट ऊँचे, जिनके ऊपर गोल सिर और चकमक पत्थर के समान गोलकों में बड़ी-बड़ी आँखें। ऐसे ही दो-दो तीन-तीन जीव प्रत्येक सिलण्डर में लाये गये थे, और पृथ्वी पर पहुँचने से पूर्व ही वह सभी मार डाले गये थे। उनके लिये यह भी ठीक ही हुआ, कारण कि हमारे लोक में उनका सीधा खड़ा हो पाने का प्रयत्न मात्र ही उनके शरीर की प्रत्येक हड्डी को तोड़ डालता।

और जब कि मैं इस वर्णन में लगा हूँ, मैं इसी स्थान में कुछ अन्य

बातें भी बता दूँ, जो, यद्यपि वह सभी उस समय हमारे निकट प्रत्यक्ष न थीं, उस पाठक को जो उनसे अपरिचित है, इन जीवों की अधिक स्पष्ट कल्पना कर सकने में सहायक होगा।

तीन अन्य विषयों में उनकी शरीर-रचना हमसे विलक्षण रूप में विभिन्न थी। उनकी रचना निद्रा-मय नहीं थी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य का हृदय कभी प्रसुप्त नहीं होता है। क्योंकि पुनः शक्ति प्राप्त करने के योग्य मांस-पेशियों की सरचना उनमें नहीं थी, वह सामयिक चेतना उनके निकट अपरिचित-सी ही थी। थकावट, ऐसा प्रतीत होता है, या तो उनको होती ही नहीं थी अथवा न्यून अंशों में होती थी। पृथ्वी पर वह बिना प्रयत्न-विशेष किये नहीं चल पाये होंगे, यद्यपि वह अन्त तक क्रिया-शील रहे। चौबीस घण्टों में वह चौबीस घंटा काम करते थे जैसा कि इसी पृथ्वी पर चीटियाँ करती हैं।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि इस लिंगमय संसार में विलक्षण प्रतीत होता है, मंगल-निवासी लिंग-हीन थे, और अतः उन समस्त भावों से शून्य जो मानव-समाज में इन भेदों से जन्म पाते हैं। एक नवजात मंगल-निवासी, इस विषय में कोई विवाद नहीं हो सकता है, वास्तव में युद्ध के समय इसी पृथ्वी पर विद्यमान था, और वह अपने जन्म-दायक के शरीर से जुड़ा हुआ था, जिसका कुछ अंश अलग हो चुका था जैसे कि छोटे लिली पुष्प की कलिका हो जाती है।

इस पृथ्वी के उच्चतर जीवों में गुणित होने की यह प्रणाली लुप्त हो चुकी है; परन्तु पृथ्वी पर भी यह पुरातन प्रणाली थी। निम्न प्राणियों में ट्यूनीकेट नामक जीवों तक में, जो रीढ़वाले प्राणियो के निकटतम वंशज थे, दोनों प्रणालियाँ साथ-साथ चलती रहीं; परन्तु अन्ततः मैथुन-प्रणाली ने अपनी प्रतिस्पर्धिनी प्रणाली पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर ली। मंगल-लोक में प्रत्यक्ष है कि यह क्रिया विपरीत रूप में घटित हुई।

यह एक उल्लेखनीय बात है कि मंगल-निवासियों के आक्रमण से

पर्याप्त पूर्व वैज्ञानिक ख्याति वाले एक चिन्तन-शील लेखक ने मनुष्य के एक अन्तिम आकार की भविष्य-वाणी की थी जो मंगल-लोक में विद्यमान वास्तविकता से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं थी। उसकी भविष्य-वाणी, मुझे स्मरण है, नवम्बर अथवा दिसम्बर १८९३ में पर्याप्त काल से अप्रचलित 'पैल मैल बजट' नामक किसी प्रकाशन में निकली थी, और उस पर आधारित व्यंग के होने का स्मरण में मंगल-निवासियों के आगम के पूर्व चलने वाली 'पंच' नामक पत्रिका में करता हूँ। एक मूर्खतापूर्ण एवं विनोदपूर्ण भाव में लिखते हुए उसने संकेत किया कि यांत्रिक-साधनों की पूर्णता अन्ततः अंगों की क्रियाशीलता पर विजय प्राप्त कर लेगी, रासायनिक उपायों की पाचन-क्रिया पर—और बाल, नासिका का ऊपरी भाग, दाँत, कान और चिबुक अब मानव के लिये आवश्यक अंग नहीं हैं, और नैसर्गिक भावों में अभिरुचि की उनकी वृत्ति आगामी युगों में उनके निरन्तर क्षय का कारण बनेगी। केवल एक मस्तिष्क ही प्रमुख-प्रमुख आवश्यकता के रूप में रह जाता है। इसके अतिरिक्त शरीर का केवल एक अन्य अंग ही स्थिति में रहने योग्य रह जाता है, और वह हाथ है, मस्तिष्क का शिक्षक एवं कार्य-वाहक। जब कि शरीर के अन्य अंग क्षीण होंगे, हाथ पहिले से लम्बे होते जायेंगे।

विनोद में लिखे गये शब्दों में भी अनेक सत्य ही सिद्ध होते हैं, और मंगल-निवासियों में निर्विवाद रूप में हमें शरीर-रचना के पशुवत् आधार पर बुद्धि की विजय की वास्तविक सिद्धि प्राप्त होती है। मेरे निकट यह पूर्णतः विश्वसनीय है कि मंगल-निवासी शरीर के शेष अंगों के स्थान पर मस्तिष्क एवं हाथों द्वारा क्रमिक विकास पाकर (जिसमें दूसरे अंगों ने अन्त में उन दो कोमल-स्पर्श-ज्ञान-संयुत गुच्छों को जन्म दे डाला) हमारे ही समान किसी प्राणी के वंशज हैं। मानव में विद्यमान किसी भी प्रकार के भाव-धरातल से शून्य, शरीर के बिना मस्तिष्क ज्ञान-प्राप्ति का स्वार्थमय साधन मात्र रह जायगा।

अन्तिम प्रमुख बात जिसमें इन प्राणियों की प्रणालियाँ हमसे भिन्न था, एक ऐसी बात थी जिसे कि कोई भी साधारण-सी बात ही समझता। सूक्ष्म अंग-रचनाएँ, जो पृथ्वी पर इतने रोगों एवं पीड़ाओं का कारण होती हैं, या तो मंगल-लोक के निवासियों में कभी घटित ही नहीं हुई थीं, अथवा मंगल-निवासियों के आरोग्य-शास्त्र ने उन्हें वर्षों पूर्व नष्ट कर डाला था। सैकड़ों प्रकार के रोग, मानव-जीवन के समस्त ज्वर एवं स्पर्श जन्य रोग, यक्ष्मा, नासूर, गिल्टी तथा इसी प्रकार की अन्य व्याधियाँ उनकी जीवन-व्यवस्था में व्यक्त ही नहीं होती थीं। और मंगल एवं इस लोक के जीवन में रहे असाम्य की चर्चा करते हुए, मैं यहाँ लाल बेल के सम्बन्ध में कुछ विलक्षण सूचनाएँ दे सकता हूँ।

प्रत्यक्ष है कि मंगल-लोक का वनस्पति प्रदेश हरित् होने के स्थान पर तीव्र रक्त वर्ण का है। जैसा भी हुआ हो, उन बीजों ने, जो मंगल-निवासी इच्छा अथवा भूल से अपने साथ लाये थे, रक्त वर्ण वनस्पतियों को जन्म दिया। केवल वही जिसे सामान्यतः 'रेड वीड' के नाम से पुकारा जाता है, लौकिक वनस्पतियों के साथ चल पाने में सफल हो सका। यह लाल बेल अल्पकाल ही में बढ़ गयी थी, और कुछ लोगों ने उसे बढ़ते देखा है। जो कुछ भी हो, कुछ समय तक तो यह लाल बेल विलक्षण शक्ति एवं समृद्धि के साथ पल्लवित हुई। हमारे बन्दी होने के तीसरे या चौथे दिन वह उस खड्ड के चारों ओर फैल गयी, और सेंहुड़ के समान पल्लव-हीन उसकी शाखाओं ने हमारी तिकोनी खिड़की के चारों ओर लाल रंग की झालर-सी बना दी। और बाद में मैंने उसे उस समस्त प्रदेश में फैलते पाया, और विशेषकर उन स्थानों में जहाँ कहीं भी पानी की धाराएँ थीं।

मंगल निवासियों के मुख वाले शरीर में पीछे की ओर एक गोल कान का पर्दा था, जो प्रतीत होता है कि कभी उनके निकट श्रवणेन्द्रिय के रूप में रहा होगा, और केवल इस बात के, जैसा कि फिलप्स कहता है कि नीला तथा बैंगनी रंग उनको काला दीख पड़ता था, उनकी आँखों

की दृष्टि-शक्ति हमसे अधिक भिन्न नहीं थी। सामान्यतः ऐसा विचार किया जाता है कि वह ध्वनियों तथा अपने स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंगों को हिलाकर आपस में भाव व्यक्त करते थे, और उदाहरण के लिये इस तथ्य का अनुमोदन वह योग्यतापूर्ण परन्तु शीघ्रता के साथ लिखा हुआ सूचना-पत्र (जो निश्चित रूप में किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया है जो घटना का साक्षी नहीं था), जिसका वर्णन मैं ऊपर कर चुका हूँ, करता है और जो इस समय तक उनके सम्बन्ध में सूचना देने का मुख्य साधन रहा है। और अब मेरे अतिरिक्त किसी भी अन्य जीवित मनुष्य ने क्रिया-शील मंगल-निवासियों को इतने समीप से नहीं देखा है। एक संयोग को मैं कोई प्रसंशनीय स्थान नहीं दे सकता, परन्तु सत्य यह ही है। और मैं बलपूर्वक कहता हूँ कि मैं समय-समय पर उनकी गति-विधियों को निकट से देखता रहा हूँ, और मैंने तीन, चार, पाँच और एक बार छः मंगल-निवासियों को बिना किसी ध्वनि अथवा संकेत किये गूढ़तम कार्यों को एक साथ करते देखा है। उनके मुख से निकलने वाली विलक्षण कर्कश ध्वनि केवल भोजन से पूर्व निकलती थी, उसमें कोई उतार-चढ़ाव नहीं होता था, और मैं विश्वास करता हूँ कि वह किसी प्रकार का संकेत नहीं था वरन् पाचन-क्रिया के प्रारम्भ होने से पूर्व वायु के बाहर निकलने की ध्वनि। मैं मनोविज्ञान के प्राथमिक ज्ञान में कुछ अधिकार रखता हूँ, और इस बारे में मैं पूर्णतः सन्तुष्ट हूँ—इतना सन्तुष्ट जितना कि मैं अन्य किसी भी बात से हो सकता हूँ – कि मंगल-निवासी किसी भी प्रकार की शारीरिक मध्यस्थता के भावों का आदान-प्रदान करते थे। और प्रबलतम पूर्व बोध रखते हुए भी मुझे इस विषय में सन्तुष्ट होना ही पड़ा। मंगल-निवासियों के आक्रमण से पूर्व जैसा कि कोई भी पाठक प्रासंगिक रूप में स्मरण कर सकता है, साधारण रूप में दूर रहते हुए मैं एक दूसरे के मन पर प्रभाव डालने वाले सिद्धान्त का वर्णन कर चुका हूँ।

मंगल-निवासी किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण नहीं करते

थे। आभूषण एवं प्रसाधन-सम्बन्धी उनकी धारणाएँ हमसे भिन्न थीं, और प्रत्यक्ष रूप में वह तापमान के परिर्वतनों से कठिनतापूर्वक प्रभावित होने वाले ही नहीं थे, अपितु लगता है कि तापमान के दबाव का भी उन पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा था। परन्तु यदि वह कपड़े नहीं पहिनते थे, तो भी उनके शरीरों में प्रयुक्त किये जाने वाले अन्य कृत्रिम प्रसाधनों के कारण निश्चित रूप में वह मनुष्यों से श्रेष्ठ ही थे। अपनी बाइसिकिलों, सड़क पर सरपट भागने वाले यंत्रों, अपनी ऊपर उड़ सकने योग्य मशीनों, अपनी तोपों और घड़ियों एवं इसी प्रकार अन्य साधनों वाले हम मानव उस विकास-क्रम के प्रारम्भ काल में ही हैं जिसे मंगल-निवासी समाप्त कर चुके हैं। वह व्यावहारिक रूप में केवल मस्तिष्क ही रह गये थे जो अपनी आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर धारण कर लेते थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य भाँति-भाँति के वस्त्रों के सूट पहिनता है, अथवा किसी शीघ्रता के कारण बाइसिकिल पर चला जाता है अथवा वर्षा के दिन छतरी हाथ में लेकर। और उनके यंत्रों के सम्बन्ध में, शायद इस लोक के मनुष्य के निकट इस विलक्षण तथ्य से अधिक आश्चर्यकारक कोई बात नहीं हो सकती कि मानव-रचित सभी यंत्रों का जो मुख्य साधन है, उनमें नहीं है—उनमें पहिया नहीं है; उन समस्त वस्तुओं में, जो वह हमारे इस लोक में लाये, कहीं भी पहियों के प्रयोग किये जाने का चिह्न अथवा सम्भावना नहीं मिलती। किसीने भी एक लोक से दूसरे लोक मे आने के इस कार्य में तो उनकी स्थिति निश्चित मानी होगी। और इसी प्रसंग में यह बताना भी एक आश्चर्यजनक बात है कि इस पृथ्वी पर भी प्रकृति ने पहिये का कहीं भी प्रयोग नहीं किया है, और न उसके विकास के अन्य साधन ही बनाये हैं। और केवल यह ही नहीं कि मंगल-निवासी या तो उनके सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं रखते थे (जो अविश्वसनीय बात है) अथवा उन्होंने जान-बूझकर पहियों का प्रयोग नही किया, परन्तु उनके यंत्र में स्थिर चूल अथवा चूल से ही सम्बन्धित किसी क्रिया का थोड़ा-सा प्रयोग

एक विशेष प्रकार से किया गया था जिसकी आस-पास होने वाली गोलाकार गतियाँ यान से संबंधित रहती थीं। उस यंत्र के सभी जोड़ उस छोटे परन्तु सुन्दरतापूर्वक मुड़े हुए एवं संघर्षणशील केन्द्रों पर सरकने वाले भागों का एक जटिल रूप प्रस्तुत करते हैं। और इस विशद वर्णन में यह उल्लेखनीय बात है कि उनके यंत्र के दीर्घ लीवर और उनकी क्रियाएँ अधिकांश रूप में नमनशील खोल में बनी तश्तरियों की कृत्रिम मांस-पेशियों के समान किसी रचना में जन्म पाती थीं; और जब इनमें विद्युत-धारा गति-शील होती थी, यह तश्तरियाँ आकषर्ण-शक्ति-युक्त होकर प्रचण्ड गति के साथ एक दूसरे के समीप खिंचने लगती थीं। इस प्रकार पशुओं की गतियों की यह विलक्षण समानता, जो मनुष्य के निकट इतनी आश्चर्यजनक एवं अप्रिय रही थी, प्राप्त की गई थी। मांस-पेशियों के समान प्रतीत होने वाली यह अंग-रचना कर्कट के आकार वाली उस 'हैन्डलिंग मशीन' में प्रचुर मात्रा में विद्यमान थी, जिसे मैंने उस सिलण्डर के खुलते समय छिद्र से प्रथम बार झाँक कर देखा था। देखने पर वह उन मंगल-निवासियों से कहीं अधिक सजीव दीख पड़ती थी, जो उस दीर्घ यात्रा के पश्चात्, उससे परे हाँफते, अपने शक्ति-हीन पिंडों को हिलाते एवं कठिनाई के साथ रेंगते धूप में पड़े थे।

जब कि मैं धूप में होती उनकी शक्ति-हीन गतियों को देख रहा था, और उनके शरीर की प्रत्येक विलक्षण क्रिया को समझ पाने का यत्न कर रहा था, पादरी ने मेरी भुजा को झकझोर कर अपनी उपस्थिति का ज्ञान करवाया। घूमने पर मैंने अपने समक्ष चढ़ी हुई भवें, और मूक परन्तु कुछ बोलने को तत्पर होठों को पाया। वह छिद्र पर आना चाहता था, जिसमें से हम दोनों में से कोई एक एक समय झाँक सकता था, और इस प्रकार मुझे कुछ समय के लिये उनको देखना बन्द करना पड़ा जब कि वह इस विशेष अधिकार का उपयोग कर रहा था।

जब मैंने पुनः देखा, कार्य-व्यस्त वह 'हैन्डलिंग मशीन' उस सिलण्डर से अनेक यंत्र-भागों को निकाल-निकाल कर एक ऐसे आकार में रख

चुकी थी जो ठीक उसीके समान था; और बाय हाथ को नीचे की ओर एक छोटी एवं कार्य-शील खुदाई की मशीन स्थिति में आ चुकी थी, जो हरित् वर्ण धूम्र के पिंड़ों को ऊपर उड़ाती उस छिद्र के चारों ओर अपना काम कर रही थी, जो विधिपूर्वक और विवेकपूर्ण रूप में भूमि को खोद रही और मिट्टी का ढेर लगा रही थी। यही वह वस्तु थी जो उस निरन्तर आने वाली कोलाहलमय ध्वनि को जन्म देती थी और यह उसके ही व्यवस्थित रूप में लगने वाले धक्के थे जो हमारे उस भग्न शरण-स्थान को कम्पायमान कर रहे थे। जहाँ तक मैं देख पाया, यंत्र को संचालित करने वाला कोई मंगल-निवासी उसमें विद्यमान नहीं था।

२०

बंदी-जीवन के दिन

एक दूसरे युद्ध-यंत्र के आगमन ने हमें हमारे झाँकने वाले उस छिद्र से हटाकर पुनः उस कोठरी में पहुँचा दिया, कारण कि हमें भय था कि उस ऊँचाई से झाँककर कोई भी मंगल-निवासी इस ढेर के पीछे हमें देख सकता है। बाद के दिनों में उनके द्वारा देखे जाने का भय हमारे मन में कम हो गया, कारण कि हमसे बाहर धूप की चकाचौंध से देखे जाने पर वह स्थान अन्धकारमय प्रतीत होता होगा, परन्तु प्रारम्भ के दिनों में देखे जाने की किंचित् सम्भावना धड़कते हृदय के साथ हमें कोठरी में लौटा देती थी। परन्तु तो भी, ऐसा करने में चाहे कितनी ही बड़ी जोखम थी, पर बाहर झाँकने का प्रलोभन हम दोनों के निकट संवरण सीमा से परे था। और इस समय में एक प्रकार के आश्चर्य

के साथ स्मरण कर रहा हूँ कि उस असीम आपत्ति के होते हुए भी जिसमें हम भुखमरी और उससे भी कहीं भयानक मृत्यु के बीच फँसे थे, हम छिद्र से उन्हें झांक पाने के भयावह अधिकार को प्राप्त करने के निमित्त उस समय भी प्रयत्नशील थे। उत्सुकता एवं किसी प्रकार का शब्द करने से भयान्वित हम उस रसोई-घर में इधर से उधर दौड़ते और एक दूसरे से टकरा जाते तथा खुले हुए उस भाग के कुछ इंचों के घेरे में एक दूसरे को धक्का देते और लातें मारते थे।

इसका कारण यह है कि हम दोनों एक दूसरे से पूर्णतः असंगत स्वभाव एवं विचार तथा कर्म करने का अभ्यास रखते थे, और हमारा यह संकट एवं एकाकी स्थिति हमारी इस असंगतता को केवल प्रबल ही करती थी। हैलीफोर्ड में ही मुझे उसके असहाय स्थिति सूचित करने वाले उद्गारों तथा उसके मन की मूर्खतापूर्ण हठवादिता से घृणा हो चुकी थी। बड़बड़ाहट के साथ निकलते हुए उसके समाप्त न होने वाले स्वगत्-भाषण मेरे कार्य-दिशा स्थिर करने वाले प्रत्येक प्रयत्न को नष्ट कर डालते थे, और इस प्रकार त्रस्त एवं उत्तेजित मेरे मन को कभी-कभी पागलपन की सीमा तक खींच ले जाते थे। संयम का उसमें उतना ही अभाव था जितना कि किसी भी निर्बुद्धि नारी में हो सकता है। वह घण्टों रोता रहता, और वास्तव में मैं यह विश्वास करता हूँ कि जीवन-क्रम में शिशुवत् बिगड़ा हुआ यह विवेक-हीन मानव अपने दुर्बल अश्रुओं को किसी भी रूप में शक्तिशाली मानता था। और उसके दृढ़ाग्रहों के कारण अपने मन को उससे अलग रख पाने में असमर्थ मैं अन्धकार में बैठा रहता। वह मुझसे अधिक भोजन करता, और उसके निकट मेरा यह बताना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ कि हम उस मकान में उस समय तक पड़े रहें जब तक कि मंगल-निवासी अपने खड्ड के कार्य को समाप्त न कर लें, और प्रतीक्षा के इस दीर्घ काल में एक समय आ सकता है जब हमें भोजन की आवश्यकता हो। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार वह पर्याप्त समय के अन्तर से डटकर भोजन करता। साथ ही वह सोता कम था।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये, उसकी किसी भी प्रकार के सोच-विचार में रही उदासीनता ने हमारी विपत्ति एवं संकट को इतना अधिक बढ़ा दिया कि, यद्यपि मुझे ऐसा करते खेद होता था, मुझे धमकियों और अन्त में मुक्कों का आश्रय लेना पड़ा। ऐसा करने ने कुछ काल के लिये उसे विवेकपूर्ण बना दिया। परन्तु वह कपटी एवं छलपूर्ण उन दुर्बल प्राणियों नें से एक था, जो न ईश्वर का ही सामना करते हैं और न मनुष्य का ही, जो स्वयं अपनी अन्तरात्मा से भी मुँह छिपाते हैं, गौरव-शून्य, भीरु, वीर्य-हीन एवं घृणा फैलाने वाली आत्माएँ।

इन बातों को स्मरण करना एवं अंकित करना मुझे अप्रिय लगता है, परन्तु मैं उनका वर्णन इस निमित्त कर रहा हूँ कि मेरी कहानी में कोई कमी न रह जाय। वह, जो जीवन के अन्धकारमय एवं भयानक रूपों में से दूर ही रहे हैं, मेरी इस पाशविकता, इस अन्तिम दुर्घटना में मेरे मन में रही क्रोध की प्रचण्डता को सरलता के साथ निन्दनीय ठहरा सकते हैं ; कारण कि जैसे वह अन्य बातों को जानते हैं, वह जानते हैं कि अनुचित क्या है, परन्तु यह नहीं कि पीड़ा-ग्रस्त मनुष्य के निकट क्या सम्भव होता है। परन्तु जो कठिनाई में पड़ चुके हैं, जो तत्व-संबंधी बातों की गहराई तक उतर चुके हैं उदार दृष्टिकोण से काम लेंगे।

और जिस समय हम भीतर के उस धुँधलके एवं अन्धकार में अस्फुट स्वरों में परस्पर कलह करने, एक दूसरे से भोजन एवं पानी छीनने, हाथ पकड़ने और मुक्केबाजी करने में संलग्न थे, बाहर उस भयानक जून के निर्मम प्रकाश में वह विलक्षण आश्चर्य हो रहा था, खड्ड में मंगल-निवासियों का अपरिचित-सा व्यवहार। मुझे अपने उन नूतन अनुभवों का वर्णन करना चाहिये। एक दीर्घकाल पश्चात् साहस करके मैं अपने उस छिद्र पर लौट आया और मैंने पाया कि इन नवागन्तुकों पर कम से कम तीन अन्य युद्ध-यंत्रों के निवासी स्थान ग्रहण कर चुके हैं। यह अन्तिम अपने साथ कुछ नये प्रकार के यंत्र लाये थे जो सिलण्डर के आस-पास व्यवस्थित रूप में खड़े हुए थे। वह दूसरी

'हैन्डलिंग मशीन' अब तैयार हो चुकी थी, और उन नये आविष्कारों में से एक की सहायता में लगा दी गयी थी जो यह बड़ी मशीन अपने साथ लायी थी। दूर से देखने पर यह किसी दूध की बाल्टी से मिलती-जुलती दीख पड़ती थी जिसके ऊपर लगा हुआ नाशपाती के आकार का कोई गैस एकत्रित करने का यंत्र इधर-उधर घूम रहा था, जिसमें से गिरता हुआ सफेद चूर्ण के समान कोई पदार्थ नीचे रखे गोल बर्तन में गिर रहा था।

इधर-उधर घूमने की यह गति इसे 'हैन्डलिंग मशीन' के एक स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग से प्राप्त होती थी। चम्मच के आकार के दो हाथों द्वारा यह हैन्डलिंग मशीन भूमि को खोद रही थी और ढेरों मिट्टी इस नाशपाती के आकार वाले यंत्र में फेंक रही थी, और एक दूसरे हाथ द्वारा थोड़े-थोड़े समय के अन्तर से एक द्वार को खोलती और मशीन के मध्य भाग में एकत्रित हुए पिघली हुई धातु के जंग लगे एवं काले पड़े मैल को बाहर फेंक रही थी। एक अन्य फौलाद के समान शक्तिशाली अंग नीचे के बर्तन में एकत्रित होते उस चूर्ण को तीलियों वाले मार्ग द्वारा किसी अन्य संग्राहक यंत्र की ओर गति-शील करता था, जो उस नीली धूल के ढेर के कारण मेरी दृष्टि से छिपा हुआ था। इस अदृश्य संग्राहक यंत्र से हरित् वर्ण धूम्र की एक क्षीण धारा उस प्रशान्त वायु में सीधी ऊपर की ओर उठ रही थी। जब कि मैं देखने में तल्लीन था, मन्द एवं संगीत-पूर्ण झनझनाहट की ध्वनि के साथ उस 'हैन्डलिंग मशीन' ने दूरबीन के समान एक अन्य अंग को आगे बढ़ाना प्रारम्भ किया, जो एक क्षण पूर्व बेढंगे रूप में फैला हुआ-सा प्रतीत होता था, और उस समय तक बढ़ाती रही जब तक कि वह मिट्टी के उस ढेर के पीछे अदृश्य न हो गया। दूसरे ही क्षण वह सफेद अल्मूनियम की एक सलाई को, जो इस समय तक मैली नहीं हुई थी और चमचमा रही थी, ऊपर उठा चुकी थी और खड्ड के सहारे लगी हुई सलाखों की टाल में उसे रख चुकी थी। सूर्यास्त और तारों का प्रकाश होने के मध्य काल में

इस कार्य-कुशल मशीन ने उस कच्ची मिट्टी से कम से कम सौ ऐसी सलाखें बना ली होंगी, और नीली रेत का वह ढेर उस समय तक ऊपर बढ़ता ही रहा जिस समय तक कि वह खड्ड के ऊपरी किनारे तक न आ पहुँचा ।

इन यंत्रों की शीघ्रगामी एवं जटिल गतियों तथा उनके स्वामियों की जड़ता एवं कम्प-पूर्ण मन्दता का वैषम्य स्पष्टग्राही था, और पर्याप्त समय तक मुझे स्वयं को यह आश्वासन देना पड़ा कि यह अन्तिम इन दोनों यंत्रों का जीवित रूप मात्र थे।

जिस समय कि मनुष्यों का पहिला दल उस खड्ड में लाया गया, पादरी उस छिद्र पर अधिकार किये हुए था। अपनी समस्त श्रवण-शक्ति से सुनता, झुका हुआ मैं बैठा रहा। सहसा वह पीछे की ओर घूमा, और इस भय से कि हम देख लिये गये हैं, भय के प्रबल संवेग से मैं गठरी बन गया। वह कूड़े-कर्कट पर रपकता नीचे आ गिरा, और उस अन्धकार में मेरे पीछे ही रूद्धकंठ, संकेतों से कुछ सूचित करता हुआ रेंग आया, और क्षणमात्र मैं भी उसके भय से प्रभावित रहा। उसके संकेत छिद्र की ओर न जाने का आभास दे रहे थे, और कुछ ही समय बाद मेरी उत्सुकता ने मेरे मन में साहस का संचार किया, और मैं उठ खड़ा हुआ और उसे पीछे छोड़ता हुआ ऊपर चढ़ गया। प्रथम तो मैं उसके भय का कोई कारण न देख सका। गोधूलि का समय हो चुका था, तारे छोटे एवं धूमिल दीख पड़ रहे थे, परन्तु अल्मूनियम की उस रचना से उठती झिलमिलाती हरित् वर्ण अग्नि के प्रकाश से वह खड्ड प्रकाशित था। यह सम्पूर्ण दृश्य हरित् वर्ण किरणों और इधर से उधर जाती धूमिल काली परछाइयों से परिपूर्ण था और नेत्रों के निकट पीड़ाकारक था। उसके ऊपर और मध्य में होकर और उसकी कोई चिन्ता न करते हुए चमगादड़ इधर-उधर उड़ रहे थे। टेढ़े-मेढ़े आकार वाले मंगल-निवासी अब दिखाई नहीं पड़ रहे थे, नील हरित् वर्ण वाले उस चूर्ण का ढ़ेर उन्हें दृष्टि से छिपा सकने योग्य ऊँचाई तक उठ चुका था, और अपने

पैरों को सिकोड़े, मुड़ा हुआ एवं संक्षिप्त आकार धारण किये हुए एक युद्ध-यंत्र खड्ड के आर-पार खड़ा था। और तब यंत्रों की उस झनझनाहट के मध्य तैरता मुझे मानव कंठ-स्वरों के सुनाई पड़ने का सन्देह-सा हुआ, जिसे प्रथम बार तो मैंने केवल त्याज्य ही समझा।

इस युद्ध-यंत्र को समीप से देखता मैं सिकुड़ा हुआ और प्रथम स्वयं को यह आश्वासन देता हुआ पड़ा रहा कि यंत्र के हुड में किसी मंगल-निवासी की स्थिति निर्विवाद है। जैसे ही वह हरित् प्रकाश-किरणें ऊपर को उठीं, मैं उसकी तैलमय त्वचा एवं उसके नेत्रों की चमक को देख सका। और सहसा मैंने एक चीत्कार सुना, और एक दीर्घ स्पर्श-ज्ञान-संयुक्त अंग को ऊपर मशीन के कन्धों तक पहुँचते देखा, जहाँ उसकी पीठ पर एक पिंजरा-सा लटक रहा था। अब तब कोई वस्तु जो प्राण-पण से संघर्ष कर रही थी—ऊपर आकाश में उठायी गयी, और जैसे ही यह काली आकृति पुनः नीचे आयी, उस हरित् वर्ण प्रकाश में मैंने देखा कि वह एक मानव था। एक क्षण को वह स्पष्ट दिखाई पड़ा। सुन्दर कपड़े पहिने वह एक हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ एवं मध्य आयु का मनुष्य था; तीन दिन पूर्व वह इस पृथ्वी पर टहल रहा होगा, एक पर्याप्त प्रभुत्व-शील व्यक्ति के समान। मैं उसके स्थिर दृष्टि वाले नेत्रों एवं उसके दोहरे सिरे वाले बटनों तथा घड़ी की चेन पर पड़ने वाली किरणों को देख सका। वह ढ़ेर के पीछे अदृश्य हो गया, और एक क्षण के लिये वहाँ शान्ति रही। और तब मंगल-निवासियों की चिल्लाहट तथा रुक-रुक कर आने वाली आह्लाद की ध्वनियाँ सुनायी पड़ने लगीं······।

मैं कूड़े के उस ढेर से नीचे ररक पड़ा, और कानों को हाथ से दबाये, अपने पैरों को बलपूर्वक आगे बढ़ाता कोठरी में घुस गया और उसे भीतर से बन्द कर लिया। पादरी ने, जो सिर पर हाथ रखे चुपचाप झुका हुआ पड़ा था, मुझे जाते हुए देखा और अपने अकेले छोड़ दिये जाने पर तीव्र स्वर से चीत्कार कर उठा, और मेरे पीछे भागता······

उस रात्रि हम अपने इस भय एवं झाँक पाने के उस भयावह

आकर्षण के मध्य झूलते-से पड़े रहे, यद्यपि मैं ऐसा करने की प्राथमिक आवश्यकता का अनुभव करता रहा, असफल रूप में निकल पाने के किसी उपाय को सोचता रहा; परन्तु बाद में दूसरे दिन में अपनी स्थिति पर सरलता से विचार कर सका। पादरी, मैंने पाया, किसी भी प्रकार तर्क में सम्मिलित किये जाने योग्य स्थिति में नहीं था; विलक्षण भयों ने उसकी प्रवृत्तियों को उत्तेजित कर दिया था, उसे विवेक अथवा पूर्व-चिन्तन कर सकने से पूर्णतः वंचित कर दिया था। व्यावहारिक रूप में वह पाशविक धरातल पर पहुँच चुका था। परन्तु जैसी कि कहावत है, मैंने साहस एकत्र किया। मुझे ऐसा लगा कि यदि में स्थिति का सामना करने के लिये कटिबद्ध हो खड़ा हो जाऊँ. तो चाहे कितनी ही भयानक हमारी स्थिति है, इस समय तक पूर्ण नैराश्य की भावना को मन में स्थान देने का कोई तर्क-संगत कारण नहीं है। हमारे बच निकलने का मुख्य अवसर इस सम्भावना में निहित था कि मंगल-निवासी उस खड्ड को केवल सामयिक पड़ाव के रूप में ही प्रयोग कर रहे हैं। और यदि वह इसे स्थायी रूप में भी प्रयोग करें, तो वह सावधानी के साथ उसकी देख-रेख रखना आवश्यक नहीं समझ सकते हैं, और इस प्रकार हमें निकल भागने का अवसर मिल सकता है। मैंने खड्ड से दूर किसी ओर एक मार्ग खोदने की सम्भावना पर भी अत्यन्त सावधानीपूर्वक विचार किया, परन्तु प्रहरीवत् खड़े किसी भी युद्ध-यंत्र की दृष्टि में पड़ जाने की बात प्रथम अत्यन्त भयावह प्रतीत हुई। और यह सब खुदाई मुझे स्वयं ही करनी पड़ती। पादरी निश्चित रूप में मेरी कोई सहायता नहीं कर सकता था।

यदि मेरी स्मृति ठीक काम कर रही है तो वह तीसरा दिन था जब मैंने एक लड़के को मारा जाते देखा। केवल एक यही अवसर था जब कि मैंने मंगल-निवासियों को प्रत्यक्ष रूप में भोजन करते देखा। उस अनुभव के बाद मैं दिन के अधिक भाग तक उस छिद्र से दूर रहा। मैं कोठरी में गया, उस द्वार को खोला, और जितना कि मैं कर सका, मैंने कुछ घंटे बिना कोई शब्द किये भूमि खोदने में व्यय किये; परन्तु जब मैं कई फीट

नीचा गड्ढा खोद चुका था, वह पोली भूमि तीव्र धमाके के साथ ररक पड़ी, और मुझे आगे काम करने का साहस नहीं हुआ। मेरा साहस टूट चुका था, और किंचित् सरकने की इच्छा भी न रखते हुए मैं पर्याप्त समय तक कोठरी के फर्श पर पड़ा रहा। और इसके पश्चात् खुदाई के द्वारा निकल भागने का विचार मैंने सदा के लिये त्याग दिया।

यह मंगल-निवासियों द्वारा मुझ पर डाले गये प्रभाव को अंकित करता है कि प्रथम तो मुझे किसी भी प्रकार के मानव प्रयत्नों द्वारा उनके विनाश के कारण बच निकलने की या तो कोई आशा थी ही नहीं, अथवा थी भी तो बहुत थोड़ी। परन्तु चौथी अथवा पाँचवीं रात्रि को मैंने भारी तोपों के समान कोई ध्वनि सुनी।

रात्रि अधिक बीत चुकी थी और चन्द्र आकाश में चमचमा रहा था। मंगल-निवासी उस खुदाई की मशीन को अपने साथ ले गये थे, और केवल एक युद्ध-यंत्र के, जो खड्ड के उस ओर खड़ा था, तथा एक 'हैन्डलिंग मशीन' के जो मेरी दृष्टि से ओझल उस छिद्र के ठीक नीचे पड़ने वाले खड्ड के कोने पर खड़ी थी, वह स्थान उनकी उपस्थिति से सर्वथा शून्य था, 'हैन्डलिंग मशीन' से निकलने वाले उस प्रकाश एवं चाँदनी की क्षीण धारियों और कहीं-कहीं पड़ने वाले धब्बों के अतिरिक्त वह खड्ड अन्धकारपूर्ण और 'हैन्डलिंग मशीन' से होने वाली झनझनाहट के अतिरिक्त पूर्णतः स्तब्ध था।

वह रात्रि सुन्दर एवं निमर्लतापूर्ण था, और केवल एक अन्य चमचमाते नक्षत्र के अतिरिक्त आकाश में चन्द्रमा का पूर्णाधिकार।

मैंने एक कुत्ते को भोंकते सुना, और वही परिचित ध्वनि थी जिस पर मेरा ध्यान गया। तब मैंने स्पष्ट रूप से बड़ी तोपों के समान गड़गड़ाहट की कोई ध्वनि सुनी। छः स्पष्ट ध्वनियाँ मैंने गिनीं, और तब एक दीर्घ मध्यान्तर के पश्चात् पुनः छः। और फिर सब कुछ शान्त हो गया।

*

२१

पादरी की मृत्यु

वह हमारे बन्दी होने का छठा दिन था जब मैंने अन्तिम बार बाहर झाँका और स्वयं को अकेला पाया। मेरे समीप रहने तथा मुझे उस छिद्र से हटाने का प्रयत्न करने के स्थान पर पादरी कोठरी में जा चुका था। सहसा मेरे मन में एक विचार उठा। शीघ्रता एवं स्तब्धतापूर्वक मैं पुनः कोठरी में गया। अन्धकार में मैंने पादरी को कुछ पीते सुना। अंधेरे में मैंने उसे छीन लिया और मेरी उँगलियों में बर्गन्डी की एक बोतल आ गई।

कुछ क्षरण हम दोनों में छीना-झपटी होती रही। बोतल पृथ्वी से टकराकर टूट गयी, और मैं उसे छोड़कर उठ खड़ा हुआ। हँफहँफाते हम एक दूसरे को धमकियाँ देते खड़े रहे। अन्त में मैं भोजन और उसके मध्य बैठ गया और उससे एक व्यवस्था प्रारम्भ करने के अपने संकल्प का वर्णन किया। मैंने भंडार-गृह की भोजन-सामग्री को दस दिन तक चलने वाले भागों में विभाजित कर दिया। उस दिन मैंने उसे और अधिक नहीं दिया। तीसरे पहर इसने भोजन तक पहुँचने का एक क्षीरण प्रयास किया। मैं ऊँघ रहा था, परन्तु एक क्षरण में ही मैं जाग गया। उस पूरे दिन और पूरी रात मैं और वह एक दूसरे के सामने बैठे रहे, मैं चिन्तित परन्तु दृढ़ चित्त, और वह रुदन-शील तथा भूख की रट लगाये हुए। मैं जानता हूँ कि वह एक दिन और एक रात का ही समय था—परन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वह एक सुदीर्घ काल रहा हो।

और इस प्रकार हमारी उस गहन असंगतता का अन्त एक खुले संघर्ष

में हुआ। दो लम्बे दिनों तक हम धीमे स्वरों में झगड़ते एवं एक दूसरे से कुश्तियाँ लड़ते रहे। कभी उसे फुसलाता और मनाता, और एक बार तो मैंने बर्गन्डी की अन्तिम बोतल घूँस में देकर उसे प्रसन्न किया, क्योंकि वहाँ वर्षा का जल एकत्रित करने वाला एक पम्प था, जिससे मैं पानी प्राप्त कर सकता था। परन्तु उस पर न शक्ति का ही कोई प्रभाव पड़ता था और न दयालुता का ही; निश्चित रूप में वह विवेक-शून्य हो चुका था। वह न भोजन पर आक्रमण करना ही त्यागता था और न अपने प्रलाप को ही। हमारे बन्दी-जीवन को सहन कर सकने योग्य बनाने के निमित्त आवश्यक सावधानी का वह पालन नहीं करता था। धीरे-धीरे मैं समझने लगा कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, और मुझे विश्वास होने लगा कि उस बन्द एवं घिनौने अन्धकार में रहा मेरा वह एकमात्र साथी पागल है।

कुछ अस्पष्ट स्मृतियों द्वारा मुझे यह सोचने की प्रवृत्ति होती है कि मेरा अपना मस्तिष्क भी समय-समय पर भटकने लगता था। जब कभी मुझे निद्रा आ जाती मैं विलक्षण एवं भयानक स्वप्न देखता। यद्यपि यह विलक्षण-सी बात प्रतीत होती है, परन्तु मुझे लगता है कि पादरी की दुर्बलता एवं पागलपन ने मुझे सजीव, शक्तिपूर्ण एवं स्वस्थ मन रखा।

आठवें दिन वह अस्फुट स्वर के स्थान पर जोर-जोर से बोलने लगा, और उसके उस स्वर को कम करने का मैं कोई उपाय नहीं कर सका।

"यह न्यायोचित है, हे ईश्वर!" वह बार-बार दोहराता। "यह न्यायोचित है। मुझपर और मेरे जीवन पर तेरा वज्र गिरे। हमने पाप किये हैं। धर्माचरण में हम अपूर्ण सिद्ध हुए हैं। इस संसार में निर्धनता थी, पीड़ा थी और धन हीन धूल में कुचले जा रहे थे और मैं अपनी शान्ति में ही तल्लीन रहा। और मैं उस सन्तोष-दायक मूर्खता का ही उपदेश करता रहा—हे ईश्वर, कैसी महान् मूर्खता!—जब कि मुझे उसके विरुद्ध उठ खड़ा होना चाहिये था, चाहे ऐसा करने में मेरा नाश ही क्यों

न हो जाता, और मुझे उन्हें प्रायश्चित्त करने के लिये प्रेरित करना था—प्रायश्चित्त !······निर्धन एवं दरिद्रों पर अत्याचार करने वाले···"

तब सहसा वह उस भोजन की चर्चा पर आ जाता जो मैंने उससे बचा रखा था, प्रार्थना करता, अनुनय करता और अन्त में धमकियों पर उतर आता। उसने अपने स्वर को ऊँचा करना प्रारम्भ कर दिया—मैं उससे ऐसा न करने की प्रार्थना करता, उसने मुझ पर अधिकार जमाने का एक उपाय खोज निकाला—उसने धमकी दी कि वह शोर मचाकर मंगल-निवासियों को भीतर बुला लेगा। कुछ समय तक वह मुझे डरा सका; परन्तु उसके प्रति की गयी कोई भी दयालुता हमारे बच निकलने की सम्भावना को कल्पनातीत रूप में नष्ट कर देती। मैं उसकी धमकियों का उल्लंघन करता रहा, यद्यपि मुझे ऐसी कोई आशा नहीं थी कि वह ऐसा नहीं करेगा। परन्तु जैसे भी हो उस दिन उसने ऐसा नहीं किया। धीरे-धीरे ऊँचे होते स्वरों में वह आठवें और नवें दिन के अधिकांश भाग तक बातचीत करता रहा—धमकियाँ और प्रार्थनाएँ, अर्ध विवेकपूर्ण बातें जिनमें सदा ही वह ईश्वर की सेवा-संबंधी अपने मूर्खता एवं बकवादपूर्ण पाखण्डमय प्रायश्चित्तों को इस भाँति जोड़ देता कि मुझे उस पर दया आ जाती थी। तब वह कुछ समय को सो गया, और उठकर नूतन शक्ति के साथ उसने पुनः ऐसा प्रारम्भ कर दिया, इतने ऊँचे स्वर में कि मुझे उसे तुरंत ही रोकने की आवश्यकता आ पड़ी।

"शान्त रहो।' मैंने प्रार्थना की।

वह उठ खड़ा हुआ, कारण कि वह अंधकार में ताँबे के डेग के पास बैठा हुआ था।

"मैं बहुत समय तक शान्त रहा हूँ", उसने ऐसे स्वर में कहा जो खड्ड तक अवश्य पहुँचा होगा, "और अब मुझे प्रत्यक्ष होना ही चाहिये। इस कृतघ्न नगर का नाश हो! नाश हो! नाश हो! नाश हो! इस पृथ्वी के निवासियों ·····।"

"चुप रहो", पैरों के बल उठते और इस भय से आतंकित कि कहीं

मंगल-निवासी इसे सुन न लें, मैंने कहा। "ईश्वर के लिये......।"

"नहीं", पादरी अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया, और इसी प्रकार अपनी दोनों भुजाएँ फैलाकर खड़ा हो गया। "ईश्वर का शब्द मेरी जिह्वा पर है, बोलो।"

और तीन ही छलांगों में वह रसोई-घर के द्वार पर था। "मुझे स्वयं को प्रत्यक्ष करना चाहिये। मैं जाता हूँ। पर्याप्त विलम्ब हो चुका है।"

मैंने अपना हाथ फैलाया और दीवाल पर टँगे मांस काटने के एक छोटे गड़ाँसे को पकड़ लिया। भय ने मुझे क्रूर बना डाला था। और वह रसोई-घर का आधा भाग भी पूरा न कर पाया था कि मैंने उसे पकड़ लिया। मानव-संस्कारों के अन्तिम संचार के रूप मैंने धार वाले भाग को पलट मूठ से उस पर प्रहार किया। वह धड़ाम से नीचे जा गिरा और हाथ-पैर फैलाये पड़ गया। मैं उससे ठोकर खा गया और हाँफता खड़ा रहा। वह निश्चेष्ट पड़ा था।

सहसा मैंने बाहर एक कोलाहल सुना, गिरते हुए प्लास्टर के गिरनें और खंड-खंड होने की ध्वनि, और दीवाल का वह त्रिकोणात्मक छिद्र अँधेरा हो गया। मैंने नेत्र ऊपर उठाये और एक 'हैन्डलिंग मशीन' के निचले-ऊपरी भाग को धीरे-धीरे भीतर आते देखा। जकड़ लेने वाले उसके अंगों में से एक तो मलवे के उस ढेर पर इमठता हुआ आ रहा था; और दूसरा अंग दिखाई पड़ा, जो गिरी हुई सोटों में होकर नीचे आ रहा था। सर्वथा जड़, दृष्टि उस पर टिकाये में खड़ा रहा। और तब मैंने उस मशीन के सिरे पर लगे एक शीशे द्वारा एक चेहरे—जैसा कि हम उसे पुकार सकते हैं, और एक मंगल-निवासी के विशाल नेत्रों को भीतर झाँकते देखा. और तब धातु का एक दीर्घ सर्पाकार स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग छिद्र के द्वारा मार्ग टटोलता आगे बढ़ा।

अपनी सारी शक्ति लगाकर मैं पीछे घूमा, पादरी से टकराया, और उस कोठरी के द्वार पर पहुँचकर रुक गया। वह सर्पाकार पिंड इस समय दो गज अथवा इससे कुछ अधिक कमरे में आ चुका था, और विल-

क्षण एवं आकस्मिक गतियों से इधर-उधर मुड़ता और मरोड़ खाता था। कुछ समय तक उस मन्द एवं चंचल प्रगति को देखता मैं मंत्रमुग्ध-सा खड़ा रहा। तब क्षीण एवं घरघरा चीत्कार करते मैंने स्वयं को कोठरी में पीछे की ओर धकेला। मुझे प्रचण्ड कम्पन ने जकड़ लिया था। मैं कठिनाई से खड़ा रह पा रहा था। मैंने कोयले रखने वाले तहखाने का द्वार खोला, और वहाँ से धुँधले रूप में चमकते रसोई-घर वाले द्वार को घूरता और सुनने का प्रयत्न करता खड़ा रहा। क्या उस मंगल-निवासी ने मुझे देख लिया है? वह अब क्या कर रहा है?

वहाँ कोई वस्तु धीरे-धीरे इधर से उधर चल रही थी; कभी-कभी वह दीवाल से टकरा जाती, अथवा धातु की झनझनाहट ध्वनि के साथ पुनः अपनी गति प्रारम्भ करती। तब एक भारी शरीर—मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि वह क्या था—रसोई-घर के फर्श पर होकर उस छिद्र की ओर खींचा गया। दुर्निवार रूप से आकर्षित मैं द्वार तक रेंगा और रसोई-घर में झाँकने लगा। बाहर चमकते धूम के त्रिकोण में मैंने उस मंगल-निवासी को शतभुज दैत्य के समान उस विशाल 'हैन्डलिंग मशीन' में पादरी के सिर का सूक्ष्म निरीक्षण करते पाया। स्वयं ही यह विचार मेरे मन में उत्पन्न हुआ कि वह चोट के उस निशान से मेरी उपस्थिति जान जायगा।

मैं पुनः कोयले के उस तहखाने तक रेंग आया, उस द्वार को भीतर से बन्द कर लिया, और जितना भी हो सका, और जितना निःशब्द रूप में सम्भव हो सका, मैं उस अंधेरे में वहाँ पड़े कोयले और लकड़ियों में स्वयं को ढाँपने का प्रयत्न करने लगा। बीच-बीच में मैं यह जानने के लिये हाथ रोक लेता कि कहीं उस मंगल-निवासी ने पुनः उस छिद्र से उस सर्पाकार पिंड को भीतर तो नहीं डाल दिया है।

तब क्षीण धातु की झनझनाहट के समान वह ध्वनि पुनः लौट आयी। मैंने उसे सीधे रसोई-घर के ऊपर टटोलते सुना। और उसके बाद ही जहाँ तक मैं निश्चय कर सका मैंने उसे कोठरी में सुना। मैंने विचार

किया कि सम्भव है मुझे पकड़ सकने की लम्बाई उसमें न हो। मैं तन्मय प्रार्थना में डूब गया। तहखाने के द्वार को खरोंचती वह निकल गयी। असहनीय संशय का जैसे एक युग-सा बीत गया; और तब मैंने उसे सिट-कनी को टटोलते सुना। मंगल-निवासियों को द्वारों का ज्ञान था।

इस पकड़ पर शायद वह एक क्षण अनिश्चय में रहा, और तब द्वार खुल गया।

अन्धकार में मैं उस वस्तु को अच्छी तरह से देख सका—किसी भी अन्य वस्तु के स्थान पर यह हाथी की सूँड के समान थी—जो मेरी ओर लहरा रही थी; दीवालों, कोयलों, लकड़ियों और छत को टटोलती और उनकी परीक्षा करती। वह एक काले कीड़े के समान थी—जो अपने नेत्र हीन सिर को इधर-उधर घुमाता है।

एक बार तो उसने मेरे जूते की एडी का स्पर्श कर लिया। मैं चीत्कार करने ही वाला था, पर मैंने अपने हाथ को काट लिया। कुछ समय के लिये वह शान्त हो गयी। मैं समझ रहा होता कि वह वापिस लौट चुकी है। तब एक आकस्मिक खटके की ध्वनि के साथ उसने किसी वस्तु को जकड़ लिया—और मैं समझा कि उसने मुझे पा लिया है — और वह तहखाने से पुनः बाहर जाती लगी। एक क्षण तक मैं निश्चय न कर सका। प्रत्यक्ष रूप में परीक्षण के लिये उसने कोयले का एक पिंड उठा लिया था।

मैंने इस अवसर का लाभ अपनी स्थिति को किंचित बदल देने में उठाया, जो संकुचित हो चुकी थी। सुरक्षा के हेतु मैं सच्चे मन से प्रार्थ-नाएँ कर रहा था।

तब मैंने उस मन्द एवं सावधान ध्वनि को पुनः अपनी ओर रेंगते सुना। धीरे-धीरे दीवाल को खरोंचती और फर्नीचर से टकराती वह समीप आ पहुँची।

और जब मैं द्विविधा में ही फँसा खड़ा था, वह पिंड एक भारी झटके के साथ तहखाने के द्वार से टकराया और उसे बन्द कर दिया।

मैंने उसे भंडार-गृह में जाते सुना, और बिस्कुटों के टिन खड़खड़ा उठे, एक बोतल फूट गयी, और तब तहखाने के द्वार पर एक जोर का धक्का लगा। और तब शान्ति, जो अनिश्चिततामय अनन्तता में परिवर्तित हो गयी।

क्या वह जा चुका है ?

अन्त में मैंने निश्चय किया कि वह जा चुका है।

उसके बाद वह उस कोठरी में नहीं आया, परन्तु दसवें दिन भर, उस घने अन्धकार में, कोयलों और लकड़ियों के उस ढेर में मैं पानी पीने के लिये भी, जिसकी मुझे प्रबल इच्छा थी, रेंगने का साहस न करते हुए दबा पड़ा रहा। और वह ग्यारहवाँ दिन था जब मैं अपने उस सुरक्षित स्थान से इतनी दूर भी सरक पाने का साहस कर सका।

२२

निस्तब्धता

भंडार-गृह में आने से पूर्व मेरा पहिला काम रसोई-घर और बर्तन माँजने की कोठरी के द्वार को बन्द करना था। परन्तु भंडार खाली पड़ा था, भोजन का प्रत्येक कण समाप्त हो चुका था। स्पष्ट था कि मंगल-निवासी ने उसे उस दिन उठा लिया था। यह देखकर प्रथम बार मेरे मन मे निराशा का संचार हुआ। ग्यारहवें और बारहवें दिन मैंने न कुछ खाया और न ही कुछ पिया।

पहिले तो मेरा मुँह और गला सूख गया और मेरी इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो गयी। उस कोठरी के अन्धकार में मैं नैराश्यपूर्ण दीनता

के साथ बैठा रहा। मेरा मन भोजन की कल्पना में लीन था। मैंने समझा कि मेरी श्रवण-शक्ति पूर्णतः नष्ट हो चुकी है, कारण कि खड्ड से आने वाली चलने-फिरने की वह ध्वनियाँ, जिन्हें सुनने का मैं अभ्यस्त हो चुका था, अब पूरी तरह बन्द हो चुकी थीं। मेरे शरीर में इतनी शक्ति भी नहीं प्रतीत हो रही थी कि मैं छिद्र तक चुपचाप रेंग जाता अथवा वहाँ पहुँच गया होता।

बारहवें दिन मेरा कंठ इतना सूख गया कि मंगल-निवासियों को सावधान करने का पूरा अवसर देते हुए मैंने परनाले के समीप लगे वर्षा के पानी को एकत्रित करने वाले नल पर आक्रमण कर डाला, और काले पड़े एवं विषैले पानी के कई गिलास प्राप्त कर लिये। इसे पीकर मैंने पर्याप्त स्फूर्ति की अनुभूति की और यह देखकर कि मेरे नल चलाने की ध्वनि पर खोज करने वाला कोई स्पर्श-ज्ञान-संयुत पिंड भीतर नहीं आया है, मेरे मन में दृढ़ता आ गयी।

इन दिनों में मैं बार-बार पादरी और उसकी मृत्यु के ढंग के संबंध में असम्बद्ध एवं अनिर्णायक रूप से विचार करता रहा।

तेरहवें दिन मैंने कुछ और पानी पिया और ऊँघता हुआ मैं निकल पाने की ऐसी योजनाओं पर विचार करता रहा जो सर्वथा असम्भव थीं। जब कभी मुझे निद्रा आ जाती, मैं भयानक प्रेत-छायाओं, पादरी की मृत्यु अथवा बहुमूल्य भोजनों का स्वप्न देखता, परन्तु सोते अथवा जागते मैं एक ऐसी पीड़ा की अनुभूति करता जो मुझे बार-बार पानी पीने की प्रेरणा देती थी। कोठरी में आने वाला प्रकाश अब भूरे के स्थान पर लाल रंग ले चुका था। मेरी विच्छिन्न कल्पना के निकट वह रक्तमय वर्ण-सा प्रतीत होता था।

चौदहवें दिन मैं रसोई-घर में गया, और मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस लाल बेल की पत्तियों की आकार वाली घुण्डियाँ दीवाल के उस छिद्र को पार कर भीतर आ पहुँची थीं, जिसके कारण उस स्थान का आधा प्रकाश गुलाबी रंग के धुँधलके से प्रच्छन्न हो उठा था।

वह पन्द्रहवें दिन का प्रारम्भिक भाग था जब कि मैंने रसोई-घर में परिचित ध्वनियों के एक विलक्षण क्रम का आभास पाया, और उसे सुनकर पहिचाना कि वह एक कुत्ते की सूँघने और कुरेदने की आवाज थी। रसोई-घर में जाकर मैंने एक कुत्ते की नाक को उन लाल-लाल घुण्डियों के मध्य भीतर झाँकते पाया। इस बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। मेरी गंध पाकर वह थोड़ा सा भूँस दिया।

मैंने सोचा कि यदि मैं चुपचाप किसी प्रकार उसे भीतर आने को प्रलोभित कर सकूँ, तो शायद मैं उसे मार कर खा जाने में सफल हो जाऊँ और प्रत्येक अवस्था मे यह वांछनीय था कि मैं उसका अन्त कर डालूँ ताकि उसकी चेष्टाएँ कही मंगल-निवासियो का ध्यान आकर्षित न कर ले।

"अच्छे कुत्ते!" कहता हुआ मैं आगे रेंगा, परन्तु सहसा उसने अपना सिर पीछे हटाया और अन्तर्धान हो गया।

मैंने पूरी शक्ति लगाकर सुनने का प्रयत्न किया—मैं बहिरा नहीं हुआ था—निश्चित था कि खड्ड में ही पूर्ण शान्ति है। मैंने किसी पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट और टरटर की एक कर्कश ध्वनि सुनी। फिर सब कुछ शांत हो गया।

पर्याप्त समय तक मैं उस छिद्र से सटा पड़ा रहा, परन्तु मुझे उसे घेरे रखने वाली बेल के सहारे चलने का साहस न हुआ। एकाध बार मैंने अपने बहुत नीचे रेत में इधर-उधर आते उस कुत्ते के पैरों से होने वाली अस्पष्ट ध्वनि और पक्षियों के समान ध्वनियाँ सुनीं, परन्तु यही सब कुछ था। अन्त में इस निस्तब्धता से उत्साहित होकर मैंने बाहर की ओर झाँका।

और उस एक कोने के अतिरिक्त, जहाँ कि कौओं की एक भीड़ मंगल-निवासियों द्वारा खाये गये जीवों के अवशेषों के लिये उछल-कूद मचाती परस्पर छीना-झपटी कर रही थी, खड्ड में कोई भी जीवित वस्तु विद्यमान नहीं थी।

अपनी आँखों पर विश्वास न करते हुए मैंने अपने चारों ओर घूरा। वह सब यंत्र जा चुके थे, एक कोने में उस नील चूर्ण के ढेर, दूसरे में अल्मूनियम की उन सलाखों और कंकालों के ढेर पर लड़ते उन काले पक्षियों के अतिरिक्त वह स्थान बालू में बने एक शून्य गोल खड्ड के समान था।

धीरे-धीरे उस लाल बेल से होकर मैंने अपने शरीर को बाहर की ओर धकेला, और कंकड़ों के ढेर पर खड़ा हो गया। केवल अपने पीछे वाली उत्तर दिशा को छोड़कर मैं चारों ओर देख सकता था, और कहीं भी न तो मंगल-निवासी दीख पड़ते थे और न उनका कोई चिह्न ही। खड्ड मेरे पैरों के नीचे सीधी गहराई तक चला गया था, परन्तु कुछ दूर तक पड़ा हुआ मलवे का वह ढेर उन खण्डहरों की चोटी तक चढ़ जाने के लिये प्रयोग किये जा सकने योग्य एक ढाल प्रस्तुत करता था। मेरे बच निकलने का अवसर आ पहुँचा था। हर्ष से मैं काँपने लगा।

कुछ समय तक मैं सोच-विचार करता रहा, और तब एक प्रचण्ड निश्चयात्मकता और तीव्र गति से आन्दोलित हृदय के साथ मैं उस ढेर की चोटी पर चढ़ गया, जिसके नीचे मैं इतने काल से दबा पड़ा था।

मैंने पुनः चारों ओर देखा। उत्तर की ओर भी किसी मंगल-निवासी का कहीं पता नहीं था। शीन के इस भाग को जब पहिली बार मैंने दिन के प्रकाश में देखा था, यह आते-जाते यात्रियों और सुखदायक श्वेत और लाल मकानों से परिपूर्ण था जिसमें चारों ओर विशाल छायादार वृक्ष फैले हुए थे। अब मैं कुचली हुई ईंटों, मिट्टी और कंकड़ों के ढेर पर खड़ा था, जिसके ऊपर से हुंड के समान आकार वाले लाल पौदे फैले हुए थे, घुटनों के बराबर ऊँचे, जिनके समीप कहीं भी उनकी सत्ता की प्रतिस्पर्धा करने वाली इस पृथ्वी की कोई भी अन्य वनस्पति नहीं थी। मेरे समीप के पेड़ निर्जीव और भूरे पड़ चुके थे, परन्तु कुछ और आगे अभी भी सजीव तनों से लाल डोरों की परतों का एक जाल-सा दीख पड़ता था।

समीप के सभी मकान ध्वस्त कर दिये गये थे, परन्तु उनमें से किसी-को भी भस्म नहीं किया गया था, और कहीं-कहीं उनकी ऊपरी मंजिलों की दीवालें टूटी हुई खिड़कियों और द्वारों को लिये अभी भी खड़ी थीं। उनके बिना छत वाले कमरों में वह लाल बेल अव्यवस्थित रूप में उगी हुई थी। मेरे नीचे था वह विशाल खड्ड जिसमें कौए परस्पर उन कंकालों के लिये झगड़ रहे थे। खण्डहरों में अन्य प्रकार की अनेक चिड़ियाँ फुदकती फिरती थीं। दूर पर मैंने एक कृश शरीर वाली बिल्ली को एक दीवाल पर दुम दबाये पड़े पाया, परन्तु वहाँ किसी मानव का कोई चिह्न नहीं था।

मेरे बन्दी-जीवन से रहे विरोधाभास के कारण दिन चकाचौंध उत्पन्न कर देने वाले प्रकाश, और आकाश नीली चमक से परिपूर्ण था। मृदुल वायु का एक झोंका उस लाल बेल को, जिसने खाली भूमि के चप्पे-चप्पे को ढँक लिया था, कोमलता के साथ हिला रहा था, और आह! वायु की वह मधुरता!

२३

पन्द्रह दिन का काम

अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता न करते हुए, मैं कुछ समय तक लड़खड़ाता उस ढेर पर खड़ा रहा। उस कोलाहलपूर्ण खोह में जिससे कि मैं निकलकर आया था, मैं संकुचित व्यग्रता के साथ अपनी तात्कालिक सुरक्षा के सम्बन्ध में ही सोचता रहा था। मैंने कभी भी यह सोचने की इच्छा नहीं की थी कि शेष संसार पर क्या बीत रही है, और

न अपरिचित वस्तुओं के इस चौंका डालने वाले दर्शन की ही आशा की थी। मैं शीन को ध्वस्त रूप में देखने की आशा करता रहा था—पर मैंने अपने चारों ओर, विलक्षण एवं भयंकर, किसी अन्य लोक का विस्तृत प्रदेश पाया।

उसी क्षण मेरे मन में एक भाव का संचार हुआ, जो सामान्य व्यक्ति की अनुभूति के परे था, पर साथ ही जिसका ज्ञान उन असहाय पशुओं को भली प्रकार अवश्य है जिन पर हमारा प्रभुत्व रहता है। मैंने अनुभव किया, जैसा कि बिल की ओर लौटते और सहसा दर्जनों श्रमिकों को किसी मकान की नीव खोदते देखकर कोई खरगोश कर सकता है। मैंने एक भाव का प्रथम आभास पाया जो शीघ्र ही मेरे सामने स्पष्ट होकर फैल गया, जिसने मुझे अनेक दिनों पीड़ित किया, सत्ता-च्युत हो जाने की अनुभूति, एक विश्वास कि मैं अब प्रभुत्वशाली स्वामी नहीं था, वरन् मंगल-निवासियों के पैरों तले उन अन्य पशुओं के मध्य में एक पशु ही था। हमें अब वैसा ही करना होगा जैसा कि वह करते हैं—छिपे रहना और देखते भागना और छिप जाना, मानव का आतंक और उसका साम्राज्य जा चुका था।

परन्तु यह विलक्षण बात जैसे ही समझ में आयी, वह बीत गयी और मेरा प्रमुख उद्देश्य अपने दीर्घ एवं शोक-युक्त अनशन का उपाय करना हो गया। खड्ड से दूसरी ओर वाली दिशा में मैंने लाल बेल से ढँकी दीवाल से परे उद्यान की भूमि का एक भाग देखा जो मलवे से बच रहा था। इसने मुझे एक संकेत दिया और मैं कभी घुटनों और कभी गर्दन तक उस लाल बेल में चलने लगा। बेल की सघनता ने मेरे मन को छिपने का सुरक्षित स्थान होने का आश्वासन-सा दिया। दीवाल लगभग छः फीट ऊँची थी और जब मैंने चढ़ने का प्रयत्न किया, तो मुझे पता चला कि मैं उसके सिरे तक अपने पैर नहीं उठा सकता हूँ। अतः मैं उसके सहारे-सहारे चला और एक ऐसे कोने में आ पहुँचा, जहाँ पत्थर की रचना थी जिसने मुझे ऊपर पहुँचकर उस उद्यान मे कूद पड़ने

में सहायता दी जिसमें पहुँचने को मैं उत्सुक था। यहाँ मैंने कुछ छोटे प्याज, कुछ कोई की गाँठें और थोड़ी-सी अधपकी गाजर देखीं जिन्हें मैंने प्राप्त कर लिया और एक दीवाल पर चढ़कर उन रक्त वर्ण तथा गुलाबी वृक्षों के मध्य रक्त के विशाल धब्बों से घिरे किसी मार्ग से निकलने के समान चलता हुआ मैं अधिक से अधिक भोजन प्राप्त करने और लँगड़ाते हुए जहाँ तक और जितना शीघ्र सम्भव हो सके, अभिशप्त एवं अभौमिक इस खड्ड प्रदेश से निकल भागने का प्रयत्न करने लगा।

कुछ आगे एक घास से भरे हुए स्थान पर मुझे कुछ कुकुरमुत्ते दिखाई पड़े, जिन्हें मैं निगल गया, और तब मैं भूरी एवं उथली एक जल-धारा पर आ पहुँचा, जहाँ कभी चरागाह थे। प्रथम तो मैं शुष्क और ऊष्ण गर्मी में बहती हुई इस धारा को देखकर आश्चर्य में पड़ गया, परन्तु बाद को मैं जान सका कि यह 'अयन वृत्त' में रही उस लाल बेल के कारण ही था। असाधारण रूप में बढ़ने वाली यह बेल शीघ्र ही पानी तक जा पहुँची, तुरन्त ही यह प्रचुर रूप में फैल गयी और अपूर्व उर्वरता-पूर्ण हो उठी। इसके बीज वी और टेम्स नदियों के जल में गिरे और उसकी शीघ्र ही उपजने एवं दैत्याकार रूप में फैल जाने वाली पत्तियों के आकार वाली गाँठों ने इन दोनों नदियों को सुखा डाला।

पटनी में, जैसा कि मैंने बाद को देखा, पुल इस बेल के गुल्म में पूरी तरह से प्रच्छन्न हो गया था, और रिचमन्ड में भी टेम्स का पानी हैम्पटन और ट्रीकेनहैम के चरागाहों के पार एक चौड़ी एवं उथली धारा में बह रहा था। जैसे-जैसे पानी फैलता जाता, वह बेल भी उसके साथ-साथ फैलती जाती और अन्त में टेम्स घाटी के अधिकतम गाँव के मकान जिनके विस्तार का मैंने पता लगाया, इस लाल दलदल के पीछे छिप गये और इस प्रकार मंगल-निवासियों द्वारा किये गये विनाश का पर्याप्त भाग छिपा पड़ा रहा।

अन्त में इस लाल बेल का विनाश भी उतनी ही शीघ्रता से हुआ जितनी शीघ्रता से उसका विस्तार हुआ था। जल-वायु में रहे कुछ जीवा-

णुओं के कारण, ऐसा विश्वास किया जाता है, वनस्पति को नष्ट कर डालने वाले एक रोग ने उसका नाश कर डाला। और प्रकृति में रही संकलन-क्रिया के कारण इस पृथ्वी की समस्त वनस्पतियों ने जीवाणुओं से संबंधित रोगों का प्रतिकार करने की शक्ति प्राप्त कर ली है— बिना एक प्रचण्ड संघर्ष किये वह इन रोगों के समक्ष समर्पण नहीं करती हैं; परन्तु वह लाल बेल किसी मृत वस्तु के समान तुरन्त ही सड़ गयी। उसकी गाँठें सफेद पड़ गयीं और तब सिकुड़कर कुरकुरी हो गयीं। वह स्पर्श मात्र से चूर-चूर हो जातीं और जल की वह धाराएँ, जिन्होंने उनके विकास को प्रोत्साहित किया था, अब उनके अवशेषों को समुद्र की ओर बहा……।

इस जल के समीप आकर मेरा पहिला काम अपनी प्यास को मिटाना था। मैंने पेट भरकर पानी पिया और प्रेरणावश मैंने इस बेल की कुछ गाँठों को काटकर देखा; परन्तु वह जलपूर्ण थीं और उनमें कसैला एवं धातु का-सा स्वाद था। मैंने देखा कि जल इतना उथला है कि मैं उसमें सुरक्षित रूप से चलकर निकल सकता हूँ, यद्यपि वह लाल बेल मेरे पैरों की गति को थोड़ा-बहुत रुद्ध कर रही थी, परन्तु यह प्रवाह प्रत्यक्ष रूप में नदी की ओर बढ़ने पर गहरा होता गया और मैं मार्टलेक की ओर घूम पड़ा। सड़क का पता उसके स्थान-स्थान पर पड़ने वाले गाँव के मकानों, तार के बाड़ों और सड़क के सहारे लगे लैम्पों को देख रोहैम्पटन की ओर पहाड़ी पर जाने वाली सड़क पर चलता हुआ मैं पटनी कामन पर आ पहुँचा।

यहाँ अपरिचित एवं विलक्षण दृश्यों के स्थान पर परिचित वस्तुओं के ध्वंसावशेष दीख पड़े; भूमि के टुकड़े स्थान-स्थान पर किसी प्रबल बवंडर से हुई क्षति को प्रदर्शित कर रहे थे और कुछ ही गज के अन्तर पर मैं पूर्णतः अप्रभावित स्थानों पर आ पहुँचता, मकान और पर्दे सुन्दरता के साथ खिंचे हुए और उनके द्वार बन्द जैसे कि उनके स्वामी उन्हें एकाध दिन के लिये छोड़ गये थे, अथवा जैसे वह भीतर निद्रा-मग्न थे। यहाँ

लाल बेल कम फैल पायी थी; और गली के सहारे वाले ऊँचे वृक्ष उस लाल लता से पूर्णतः मुक्त थे। मैंने वृक्षों पर भोज्य सामग्री की खोज की और कुछ भी न प्राप्त कर सका, मैंने कई निस्तब्धतापूर्ण मकानों पर भी आक्रमण किया, परन्तु वह मुझसे पूर्व ही तोड़ और लूटे जा चुके थे। अपनी दुर्बल शारीरिक अवस्था के कारण आगे बढ़ने में अशक्त मैंने दिन का शेष भाग एक झरबेरी की झाड़ी के नीचे विश्राम करने में काटा।

इस समूचे काल में मैंने न किसी मानव का ही दर्शन किया और न किसी मंगल-निवासी का ही। मैंने क्षुधा-पीड़ित-से दीख पड़ने वाले कुत्तों के एक जोड़े को देखा, परन्तु दोनों ही मुझे अपनी ओर बढ़ता पाकर चक्राकार रूप में मुझसे दूर भाग गये। रोहेम्पटन के समीप मैंने दो नर-कंकालों को देखा—शव नहीं, वरन् कंकाल, अच्छी तरह से नोंचे हुए—और समीप के जंगल में मैंने कुछ बिल्लियों और खरगोशों एवं बिखरी हुई और एक भेड़ की खोपड़ी पायी और यद्यपि मैंने हड्डियों के इन टुकड़ों को दाँत से काटा, उनमें प्राप्त कर सकने योग्य कुछ भी नहीं था।

सूर्यास्त के पश्चात् मैंने सड़क पर पटनी की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया, जहाँ मेरा विचार था कि किसी न किसी कारण अग्नि-किरण का प्रयोग अवश्य हुआ होगा और रोहैम्पटन से परे एक उद्यान में मैंने कुछ कच्चे आलू प्राप्त किये जो कुछ समय के लिये मेरी क्षुधा को शांत करने को पर्याप्त थे। इस उद्यान से कोई भी मनुष्य नीचे बसे पटनी और बहती उस नदी को देख सकता था। गोधूलि के उस क्षीण प्रकाश में उस स्थान का दृश्य पूर्णतः निर्जन-सा प्रतीत होता था: काले पड़े वृक्ष, सूने पड़े खण्डहर और पहाड़ी के नीचे की ओर स्थान-स्थान पर लाल बेल के सघन कुंजों वाले नदी की बाढ़ से घिरे भूमि-खण्ड। और इस सबके ऊपर वह निस्तब्धता। इस विचार ने मेरे हृदय को एक अवर्णनीय भय से प्लावित कर दिया कि विनाशकारी यह परिवर्तन कितनी शीघ्रता

से घटित हो गया।

कुछ समय के लिये मुझे ऐसा विश्वास हो गया कि मानव-जाति पृथ्वी-तल से समाप्त हो चुकी है और मैं वहाँ एकाकी ही था, अन्तिम मानव, जो जीवित रह सका है। पटनी पहाड़ी की चोटी के अति निकट में एक अन्य कंकाल के समीप आ पहुँचा, जिसकी भुजाएँ अपने स्थान से उखड़ी और शेष भाग से कई गज की दूरी पर पड़ी थीं। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, मुझे अधिकाधिक विश्वास होता गया कि मेरे जैसे एकाध घुमक्कड़ को छोड़कर पृथ्वी के इस भाग पर शेष सम्पूर्ण मानव-जाति का विनाश किया जा चुका है। मंगल-निवासी, मैंने कल्पना की, इस देश को उजाड़ कर, भोजन की खोज में आगे बढ़ गये हैं। हो सकता है कि वह इस समय बर्लिन अथवा पेरिस को नष्ट कर रहे हों, अथवा हो सकता है कि वह उत्तर की ओर बढ़ गये हों............।

२४

पटनी पहाड़ी वाला आदमी

वह रात्रि मैंने उस सराय में व्यतीत की जो पटनी की चोटी पर स्थित है, और लैदरहैड से पलायन के पश्चात् यह प्रथम अवसर था जब कि मैं तैयार किये हुए बिस्तर पर सोया। मैं उस अनर्थक परिश्रम का वर्णन नहीं करूँगा, जो मुझे इस मकान में प्रवेश पाने के निमित्त करना पड़ा—बाद में मुझे पता लगा कि अगला द्वार केवल एक सिटकनी के आधार पर ही बन्द था—और न यह विस्तार ही कि किस प्रकार मैंने भोजन के निमित्त प्रत्येक कमरे की छान-बीन की, जब कि नैराश्य

की चरम सीमा पर पहुँचते, एक कमरे में जो सम्भवतः किसी नौकर के सोने का कमरा प्रतीत होता था, मैं चूहों के कुतरे कुछ छिलके और डिब्बे में बन्द दो अन्नानास प्राप्त कर सका। यह स्थान मुझसे पूर्व ही खोजा और खाली किया जा चुका था। शराब बिक्री वाले स्थान पर बाद में मैं कुछ बिस्कुट और कुछ सैन्डविचेज़ पा सका जिन पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ पायी थी। बाद वाली वस्तु को तो मैं खा न सका परन्तु पहिली ने न केवल मेरी क्षुधा ही निवृत्त की वरन् मेरी जेबों को भी भर दिया। मैंने लैम्प का प्रकाश इस भय से नहीं किया कि कहीं कोई मंगल-निवासी लन्दन के समीपवर्ती इस स्थान पर रात में भोजन की खोज में न आ जाय। शय्या पर जाने से पूर्व मैंने व्याकुलता का समय एक खिड़की से दूसरी पर इन दैत्यों का कोई चिह्न खोज पाने के निमित्त झाँकने में व्यतीत किया। मैं थोड़ा सो पाया। जब मैं शय्या पर लेटा, मैंने स्वयं को क्रमागत रूप में चिन्तन करते पाया—एक ऐसी बात जिसकी पादरी के साथ हुए अपने तर्क के पश्चात् किये जाने की मुझे कोई स्मृति नहीं है। मध्य के इस समस्त काल में मेरी मानसिक स्थिति शीघ्रता के साथ परिवर्तित होते अस्थिर मनोभावों के क्रम अथवा मूर्खतापूर्ण भावोत्पत्ति के रूप में रही थी। परन्तु रात्रि में, मैं विश्वास करता हूँ, खाये हुए भोजन से नूतन शक्ति प्राप्त करके, मेरा मस्तिष्क, पुनः स्पष्ट हो उठा, और मैं चिन्तन में डूब गया।

मेरे मस्तिष्क पर अधिकार प्राप्त करने के निमित्त तीन बातें संघर्ष कर रही थीं: पादरी की हत्या, मंगल-निवासियों की स्थिति से संबंधित चिन्ता, और अपनी पत्नी का सम्भावित भाग्य। प्रथम बात तो मेरे मन में स्मरण किये जाने योग्य किसी प्रकार की भय अथवा पश्चात्ताप की प्रवृत्ति नहीं जगाती थी; मैंने उसे केवल एक घटना के रूप में देखा था, एक स्मृति जो नितान्त अप्रिय थी, परन्तु जिसमें पश्चात्ताप जैसी कोई बात नहीं थी। मैंने उस समय स्वयं को उसी प्रकार देखा था जैसा कि मैं इस समय देख रहा हूँ, एक-एक पग करके शीघ्रता से घिरने वाली

उस आपत्ति की ओर खिचता हुआ, एक जीव जिसे घटनाओं के एक क्रम ने अन्ततः उस तक पहुँचा दिया। मुझे किसी प्रकार की निन्दा करने की कोई प्रवृत्ति नहीं हुई, परन्तु तो भी स्थिर एवं प्रगति-हीन वह स्मृति मेरे मन को व्यथित करती रही। रात्रि की निस्तब्धता, ईश्वर से सामीप्य की भावना से अनुप्राणित होकर, जो कभी-कभी रात्रि की शान्ति एवं अन्धकार के कारण मानव-मन में उदित होती है, मैं क्रोध एवं भय की उस क्षण रही अपनी केवल परीक्षा में सफल हो सका। उससे हुए वार्तालाप का प्रत्येक चरण मैंने उसे अपनी स्मृति में सजीव किया, उस समय से जब कि मैंने उसे अपने पीछे पड़े, मेरे प्यासा होने की कोई चिंता न करते हुए, और वीब्रिज के विनाश के ऊपर उठते धूम्र और शिखाओं की ओर संकेत करते पाया था। हम परस्पर सहयोग कर पाने में अयोग्य सिद्ध हुए—और क्रूर भाग्य ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यदि मैं पहिले ही इसे जान सका होता, मैंने उसका साथ हैलीफोर्ड पर ही छोड़ दिया होता। परन्तु मैं इसे पहिले से नहीं जानता था, और अपराध वह होता है जिसे पहिले से जान लिया जाय और फिर भी किया जाय। और मैं इसका वर्णन ठीक उसी प्रकार कर रहा हूँ जैसे कि मैंने इस समस्त कहानी का वर्णन किया है, ठीक उसी रूप में जैसे कि यह घटित हुई। इसमें कोई प्रत्यक्ष साक्षी नहीं था—इन समस्त तथ्यों को मैं छिपा सकता था। परन्तु मैं सम्पूर्ण वर्णन कर रहा हूँ, और पाठक को उसी प्रकार निर्णय करना चाहिए जैसी कि प्रवृत्ति उसे होती है।

और जब एक प्रयत्न के द्वारा मैं लम्बाकार लेटे उस कल्पना-चित्र को मन से निकाल सका मेरे सामने मंगल-निवासियों की चिन्ता और अपनी पत्नी के भाग्य की बात प्रबल हो उठी। प्रथम के संबंध में तो मेरे पास कोई निर्दिष्ट तथ्य नहीं थे, और मैं सैकड़ों प्रकार की बातों की कल्पना कर सका, और इस प्रकार दुर्भाग्यवश मैं दूसरी के ही विषय में ऐसा कर सका। और सहसा वह रात्रि भयानक हो उठी। मैंने स्वयं को बिस्तर पर बैठे और अन्धकार को घूरते पाया। मैंने स्वयं को यह

ध्यान करते पाया कि कहीं अग्नि-किरण ने उसे आकस्मिक एवं शोक-जनक रूप में स्थिति से विलीन न कर दिया हो। लैदरहैड से लौटने के पश्चात् से इस समय तक मैंने प्रार्थना नहीं की थी। मैंने प्रार्थनाएँ उच्चारित की थीं; बर्बरों के समान प्रार्थनाएँ, उत्तेजनाओं की चरमानुभूतियों में, मूर्ति-पूजकों के मुँह से निकलने वाले मंत्रों के समान प्रार्थनाएँ। परन्तु जब मैंने वास्तविक रूप में प्रार्थना की, ईश्वर के उस अन्धकार के समक्ष बैठकर दृढ़ता एवं बुद्धिमत्तापूर्वक। विलक्षण रात्रि, विलक्षणतम, इस बात में कि जैसे ही पौ फटी, मैं, जो ईश्वर से बात करता रहा था, उस मकान से अपने छिपने के स्थान को छोड़कर आने वाले चूहे के समान बाहर निकल आया—एक जीव जो कठिनता से विशाल आकार वाला था, निम्न श्रेणी का एक पशु, अपने स्वामियों की किसी भी आकस्मिक सनक को आहुति, ईश्वर से विश्वास के साथ प्रार्थना करता रहा। निश्चित रूप में यदि हम इस युद्ध से अन्य कोई भी बात नहीं सीख सके हैं, इस युद्ध ने हमें सदय होना सिखाया है—उन बुद्धि-हीन पशुओं के प्रति दया जो हमारे प्रभुत्व में कष्ट सहते हैं।

प्रातः चमकीला एवं सुन्दर था, और पूर्व की ओर वाला आकाश गुलाबी हो रहा था जिसमें छोटे-छोटे स्वर्णिम बादलों की छज्जियाँ थीं। पटनी पहाड़ी की चोटी से विम्बिलडन जाने वाली सड़क पर शनिवार की रात्रि को, जब युद्ध प्रारम्भ हो चुका था, लन्दन की ओर जाने वाली संकट-पूर्ण उस भगदड़ के अनेक चिह्न विद्यमान थे। वहाँ एक छोटी दो पहियों वाली गाड़ी थी जिस पर थामस लाब, ग्रीन ग्रोसर, न्यू मेल्ड़न अंकित था और एक लूटा हुआ टीन का सन्दूक, पतेल का बना एक हैट जो अब सूखी हुई कीचड़ में कुचला पड़ा था; और वैस्ट हिल की चोटी पर पानी की नाँद के समीप पड़ा हुआ रक्त के छींटों वाला काँच। मेरी गतियाँ शिथिल थीं और मेरी योजनाएँ अस्थिर। मेरे मन में लैदरहैड जाने का भी एक विचार था यद्यपि मैं जानता था कि वहाँ अपनी पत्नी को पा सकने की सम्भावना नाम मात्र को ही थी। केवल इसके कि

मृत्यु ने उन्हें अपने अंक में ले लिया हो, मेरे भाई और मेरी पत्नी वहाँ से कहीं भाग गये होंगे; परन्तु मुझे ऐसा लगा कि वहाँ पहुँचकर शायद मैं यह पता लगा लूँ या जान जाऊँ कि मरे वाले लोग भागकर किस ओर गये हैं। मैं जानता था कि मैं अपनी पत्नी को पाना चाहता हूँ, और मेरा मन उसको तथा संसार के अन्य लोगों को पाने के लिये पीड़ित है, परन्तु मेरे मस्तिष्क में ऐसी कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी कि यह खोज किस प्रकार पूरी हो सकती है। और अब मैं अपने पूर्ण एकाकी-पन के विषय में भी जागरूक हो चुका था। वृक्षों और झाड़ियों की ढाल के नीचे चलता मैं विम्बिलडन कामन के उस कोने की ओर गया जो चारों ओर दूर-दूर तक फैला हुआ था।

वह अंधेरा प्रदेश स्थान-स्थान पर उगी भटकैया और झाड़ू की झाड़ियों से प्रकाशित दीख पड़ता था, वहाँ लाल बेल का कोई चिन्ह विद्यमान नहीं था, और हिचकिचाता हुआ जब मैं एक स्थान से दूसरे स्थान अपनी खोज में भटक रहा था, खुले हुए स्थान के किनारे से उस समस्त प्रदेश को प्रकाश एव सजीवता से भरता हुआ सूर्य उदित हो उठा। वृक्षों के नीचे एक कीचड़ वाले स्थान पर मैंने कुछ मेंढकों को कार्य-व्यस्त पाया। मैं उन्हें देखने एवं जीवित रहने के लिये उनके दृढ़ संकल्प को देखने के निमित्त रुका। और तुरन्त ही सहसा पीछे मुड़ने पर, देखे जाने की असंगत भावना से प्रभावित, मैंने झाड़ियों के मध्य सरकती किसी वस्तु को देखा। इसे देखता मैं खड़ा रहा। मैं उसकी ओर एक कदम बढ़ा, और ऊपर उठकर वह मुड़ी एवं चौड़ी तलवार से सुसज्जित एक मानव निकला। धीरे-धीरे मैं उसकी ओर बढ़ा। मेरी ओर देखता वह शान्त एवं गति-हीन खड़ा रहा।

जैसे मैं समीप आया, मैंने पाया कि वह मेरे ही समान धूल-धूसरित एवं मलिन वस्त्र धारण किये हुए था; और वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह सड़क की नाली से होकर घसीटा गया हो। समीप आने पर मैंने उसके वस्त्रों पर लगी खाइयों की लिसलिसी मिट्टी देखी, जिस पर

सूखी मिट्टी की पीली भूरी परत और कोयलों के चमकीले धब्बे पड़े थे। उसके काले बाल उसके नेत्रों पर पड़े थे, और उसका चेहरा काला, मलिन एवं शुष्क था, जिसके कारण प्रथम मैं उसे न पहिचान सका। उसके चेहरे के निम्न भाग में एक लाल घाव का निशान था।

"रुक जाओ!" वह चिल्लाया, जब मैं उससे दस गज की दूरी पर था, और मैं रुक गया। "तुम कहाँ से आ रहे हो!"

उसका निरीक्षण करता मैं विचार करने लगा।

"मैं मार्टलेक से आ रहा हूँ," मैंने कहा, "मैं उस खड्ड के निकट दबा पड़ा था जिसे मंगल-निवासियों ने अपने सिलण्डर के निमित्त बनाया था। मैंने बाहर किलने का प्रयत्न किया और मैं बच निकला।"

"यहाँ आस-पास भोजन का कोई प्रबन्ध नहीं है," उसने कहा। "यह मेरा प्रदेश है। इस पहाड़ी से नीचे नदी तक का समस्त प्रदेश और पीछे क्लैपहैम और ऊपर कामन के छोर तक। यहाँ केवल एक व्यक्ति ही के लिये भोजन है। तुम किस ओर जा रहे हो?"

मन्द स्वर में मैंने उत्तर दिया।

"मैं नहीं जानता," मैंने कहा। "मैं एक मकान के खण्डहर में तेरह चौदह दिन दबा पड़ा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि बाहर क्या-क्या हो चुका है।"

सन्देह के साथ उसने मेरी ओर देखा, और तब आगे की ओर बढ़ चला और परिवर्तित मुद्रा में मेरी ओर देखता रहा।

"यहाँ कहीं रुकने की मुझे कोई इच्छा नहीं है," मैंने कहा। "यहाँ मेरा विचार है कि मैं लैदरहैड जाऊँगा, कारण कि मेरी पत्नी वहीं थी।"

"अरे तुम हो?" उसने कहा। "वोंकिंग वाले आदमी। और वीब्रिज में तुम्हारा अन्त नहीं हुआ था?"

मैं उसी क्षण उसे पहिचान गया।

"तुम वही सिपाही हो जो मेरे उद्यान में आये थे।"

"हे परत्मामा !" उसने कहा। "हम लोग भाग्यशाली हैं।" उसने एक हाथ आगे बढ़ाया और मैंने उसे पकड़ लिया। "मैं एक नाले में रेंग गया था," उसने कहा। "परन्तु उन्होंने प्रत्येक को नष्ट नहीं किया। और उनके चले जाने के पश्चात् खेतों के बीच चलता मैं वाल्टन की ओर बढ़ गया। परन्तु-कुल मिलाकर चौदह दिन भी नहीं हुए—और तुम्हारे बाल श्वेत हो चुके हैं।" सहसा उसने अपने कन्धे के ऊपर देखा। "केवल एक कौआ है," उसने कहा। "कोई भी समझ सकता है कि इन दिनों पक्षी भी साये में रहते हैं। यह स्थान कुछ खुला हुआ है। हम उन झाड़ियों के नीचे रेंग चले और बातचीत करें।"

"क्या तुमने किसी मंगल-निवासी को देखा है ?" मैंने कहा। "जब से कि मैं बाहर रेंग आया...."

"वह लन्दन की ओर होते हुए चले गये" उसने कहा। "मेरा अनुमान है कि वहाँ उनका एक बड़ा पड़ाव है। हैम्पस्टेड की ओर वाले उस समस्त प्रदेश का आकाश रात्रि में उनके प्रकाशों से परिपूर्ण रहता है। वह एक नगर के समान है, और उस प्रदेश में तुम उन्हें चलते-फिरते देख सकते हो। दिन के प्रकाश में तुम ऐसा नहीं कर सकते। परन्तु इधर के दिनों में—मैंने उन्हें नहीं देखा है"—उसने उंगलियों पर कुछ गिना। "पाँच दिन हुए। तब हैमरस्मिथ के ऊपर किसी भारी वस्तु को उठाये ले जाते मैंने एक जोड़ा देखा था। और परसों रात—" वह और प्रभावपूर्ण स्वर में बोला—"वह अनेक प्रकाशों से पूर्ण थी, परन्तु निश्चित रूप में वह ऊपर आकाश में उड़ती कोई वस्तु थी। मेरा विचार है कि उन्होंने किसी प्रकार की कोई उड़न-शील मशीन बना ली है, और उड़ना सीख रहे हैं।"

मैं हाथों और घुटनों के बल रुक गया, कारण कि हम झाड़ियों तक आ पहुँचे थे।

"उड़ना !"

"हाँ," उसने कहा, "उड़ना !"

सरककर मैं एक कुंज में घुसा और नीचे बैठ गया।

"मानवता समाप्त हो चुकी है," मैंने कहा। "यदि वह ऐसा करने में सफल हो सके, वह पृथ्वी पर चारों ओर........."

उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया।

"वह ऐसा ही करेंगे। परन्तु—इससे यहाँ की स्थिति में किंचित सुधार होगा। और इसके अतिरिक्त—" उसने मेरी ओर देखा। "क्या तुम्हें विश्वास नहीं है कि मानवता का अन्त हो चुका है? मुझे विश्वास है। हम हार चुके हैं, हम पराजित हो चुके हैं।"

मैं उसे घूरता रहा। चाहे कितनी ही विलक्षण यह बात प्रतीत हो, मैं इस तथ्य तक नहीं पहुँच पाया था—एक तथ्य जो उसके मुँह से निकलते ही प्रत्यक्ष-सा जान पड़ा। मैं इस समय तक एक अनिश्चित-सी आशा रखे था; अथवा यह मेरे जीवन भर के अभ्यास का फल था। उसने अपने शब्द पुनः दोहराये, "हम पराजित हो चुके हैं।" उसके शब्दों में दृढ़ विश्वास था।

"सब कुछ समाप्त हो चुका है," उसने कहा। "उनमें से केवल एक ही नष्ट हुआ है—केवल एक और उन्होंने अपने पैर दृढ़ता से जमा लिये हैं, और संसार की महानतम शक्ति को कुचल डाला है। उन्होंने हमें अपने पैरों के नीचे रौंदा है। वीब्रिज में उस एक का विनाश केवल आकस्मिक घटना ही थी। यह हरित वर्ण तारे—मैंने इन पाँच-छः दिनों में कोई नहीं देखा है—तथापि मुझे विश्वास है कि प्रत्येक रात्रि वह कहीं न कहीं अवश्य गिर रहे हैं। कुछ नहीं किया जा सकता। हम अधिकृत हो चुके हैं, हम पराजित हो चुके हैं।"

मैंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। अपने सामने घूरता मैं इस सम्भावना का प्रतिकार करने वाले किसी विचार को खोज पाने का विफल प्रयत्न करता बैठा रहा।

"यह कोई युद्ध नहीं है," सिपाही ने कहा। मैंने उसे समझाया। वह विचार-मग्न हो गया। "तोप में कोई गड़बड़ी हो गयी," उसने कहा,

"परन्तु क्या होता है यदि ऐसा ही हुआ हो ? वह उसे फिर ठीक कर लेंगे। और यदि इसमें किंचित विलम्ब भी हो, तो वह युद्ध के अन्त को किस प्रकार बदल सकता है ? यह ठीक मनुष्य और चीटियों के युद्ध के समान है। चींटियां अपने नगर बनाती हैं, अपना जीवन व्यतीत करती हैं, युद्ध करती हैं, क्रांतियाँ करती हैं, उस समय तक जब तक कि मनुष्य उन्हें अपने मार्ग से हटाना नहीं चाहता, और तब वह मार्ग से हटा दी जाती हैं। ठीक यही स्थिति है जिसमें हम इस क्षण हैं—केवल चीटियाँ। केवल—"

"हाँ", मैंने कहा।

एक दूसरे को घूरते हम बैठे रहे।

"और वह हमारा क्या करेंगे ?" मैंने कहा।

"यही बात मैं सोच रहा हूँ।" उसने कहा—"यही बात मैं भी सोच रहा हूँ। वीब्रिज की घटना के पश्चात् मैं दक्षिण की ओर गया—यही विचार करके। मैंने देखा कि सिर पर क्या घिरा है। अधिकतम लोग इससे क्षुब्ध थे और किकिया रहे थे। परन्तु मुझे किकियाना पसन्द नहीं है। एक-दो बार तो मैं मृत्यु के सामने ही रहा हूँ; मैं कोई दिखावटी सिपाही नहीं हूँ, और अच्छी या बुरी, मृत्यु मृत्यु ही है और केवल चिन्तनशील मनुष्य ही उससे बचकर सुरक्षित निकल आता है। मैंने प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण की ओर जाते देखा। मैं कहता हूँ, इस ओर भोजन अधिक समय तक नहीं मिल सकेगा और मैं ठीक पीछे की ओर मुड़ पड़ा। मंगल-निवासियों पर आक्रमण करने की इच्छा से मैं उसी प्रकार भटकता रहा जैसे कि मनुष्य पर आक्रमण करने की इच्छा से गोरैया। चारों ओर—" उसने क्षितिज की ओर एक हाथ हिलाते कहा, "वह बड़ी संख्याओं में भूखे मर रहे हैं, एकाएक चल पड़ते और एक दूसरे को रौंदते—"

उसने मेरा चेहरा देखा और अप्रिय रूप में सहसा बोलते-बोलते रुक गया!

"इसमें सन्देह नहीं कि अनेक, जिनके पास धन-राशि थी, फाँस चले गये हैं" उसने कहा। हिचकिचाता-सा वह ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वह क्षमा-याचना कर रहा हो। उसकी दृष्टि मेरी दृष्टि से मिली, और वह बोलता ही गया, "यहाँ चारों ओर भोजन ही भोजन है। दूकानों में टोकरियों भरी वस्तुएँ, मदिरा, सोतों का पानी; और पानी के नल एवं नाले सूखे पड़े हैं। परन्तु मैं तुम्हें बता रहा था कि मैं क्या सोचता रहा।"

"यहाँ सुबुद्ध प्राणी हैं", मैंने कहा, "और वह हमें भोजन के रूप में चाहते हैं। पहिले तो वह हमें नष्ट कर डालेंगे—हमारे जहाजों, मशीनों, तोपों, नगरों, हमारे सभी संगठन एवं व्यवस्था को; यह सब नष्ट हो जायगा। यदि हम चींटियों के आकार वाले होते तो हम आपत्ति से सुरक्षित निकल आते। परन्तु हम ऐसे नहीं हैं। यह प्रथम सम्भावना है। एँ ?"

मैंने स्वीकार किया।

"ठीक ऐसा ही ही है, मैंने विचार कर लिया है, तब आगे : इस समय तो हमें आवश्यकतानुसार ही पकड़ा जा रहा है। एक मंगल-निवासी को किसी भी प्रयत्नशील भीड़ की खोज में केवल कुछ मील ही जाना पड़ता है और वान्डसवर्थ के बाहर मैंने एक को मकानों को तोड़ते और खण्डहरों को नष्ट-भ्रष्ट करते देखा है। परन्तु वह ऐसा ही नहीं करते रहेंगे। जैसे ही वह हमारे जहाजों एवं तोपों को गति-हीन एवं हमारे रेल-मार्गों को नष्ट कर चुकेंगे और वह सब काम पूरा कर चुकेंगे जो वह वहाँ कर रहे हैं। वह हमें व्यवस्थित रूप में पकड़ना और छाँट-छाँट कर हमें पिंजड़ों एवं अन्य वस्तुओं में बन्द करके भंडार में रखना प्रारम्भ कर देंगे। यही है जो वह कुछ ही काल में करना प्रारम्भ कर देंगे। हे ईश्वर! उन्होंने अभी तक ऐसा करना प्रारम्भ नहीं किया है। क्या तुम यह नहीं देखते ?"

"अभी प्रारम्भ नहीं किया है !" मैंने कहा।

"नहीं किया है। अब तक जो कुछ भी हुआ है वह हमारे शान्त न रहने के कारण हुआ है—उन्हें तोपों से डराने एवं ऐसी ही अन्य मूर्खताओं

के कारण। और विवेक खोकर, प्रचुर संख्या में उस स्थान की ओर भागने के कारण जहाँ उस स्थान से कोई अधिक सुरक्षा नहीं है जहाँ हम पहिले थे। इस समय तक वह हमें चिन्तित करना नहीं चाहते हैं। वह अपनी वस्तुएँ बना रहे हैं—वह सभी वस्तुएँ जो वह अपने साथ नहीं ला सके, अपने शेष लोगों के लिये वस्तुएँ तैयार कर रहे हैं। हो सकता है कि इसी कारण सिलण्डरों का आना कुछ कम हो गया हो, इस भय के कारण कि वह कहीं उनसे न टकरा जायँ जो यहाँ पहिले से ही विद्यमान हैं। और हमारे कोलाहल करते अन्धा होकर इधर-उधर भागने अथवा उन्हें उड़ा डालने की खोज में विस्फोट की योजना बनाने की अपेक्षा हमें स्वयं को नूतन परिस्थितियों के अनुसार काम में लगाना है। मैं इस तथ्य को भली प्रकार समझता हूँ। निश्चित रूप में यह वह बात नहीं है जो कोई मनुष्य अपनी समस्त जाति के संबंध में चाहेगा, अपितु यह केवल वही है जिसकी ओर सभी तथ्य संकेत करते है और यही वह सिद्धांत था जिसके अनुसार मैंने काम किया। नगर, राष्ट्र, सभ्यता, प्रगति सभी बातें समाप्त हो चुकी हैं। वह खेल खत्म हो चुका है। हम पराजित हो चुके हैं!"

"परन्तु यदि सत्य ऐसा ही है, तो जीवित रहने का क्या प्रयोजन है?"

सैनिक एक क्षण मेरी ओर देखता रह गया।

"आगामी लाखों वर्षों तक अब पवित्र आनन्दोत्सव नहीं होंगे, अब रायल अकादमी आव आर्ट्स जैसी कोई संस्था नही रहेगी, और न रेस्त-राओं के आनन्ददायक अल्पाहार। यदि तुम मनोविनोद को पाना चाहते हो, मैं समझता हूँ कि वह खेल समाप्त हो चुका है। यदि तुम अतिथि-शाला की शिष्टताओं में पारंगत हो अथवा यदि तुम चाकू से मटर के दाने खाना पसन्द नहीं करते, अथवा यदि तुम्हें चूतड़ हिलाकर चलने का अभ्यास है, अच्छा होगा यदि तुम इन सबका ध्यान छोड़ दो। इनसे अब कोई लाभ नहीं है।"

"तुम्हारा मतलब है—"

"मेरा मतलब है कि मेरे समान व्यक्ति जीवित रह रहे हैं—केवल जाति को जीवित रखने के लिये। जीवित रहने की धुन में लगा हुआ मैं क्रूर हो उठा हूँ और यदि मैं गलती नहीं कर रहा हूँ, तो तुम भी अपनी अन्तः प्रवृत्तियों का प्रदर्शन शीघ्र ही करोगे। तुम नष्ट होने नहीं जा रहे हो और मैं चाहता हूँ कि मैं पकड़ा जाऊँ और खिला-पिलाकर मोटा किया जाऊँ। छिः! भूरे उन रेंगने वाले जीवों की कल्पना तो करो!"

"तुम्हारा यह मतलब नहीं है—"

"यही है। मैं जीवित रह रहा हूँ। उनके पैरों के नीचे। मैंने योजना बना ली है, मैंने निश्चय कर लिया है। हम मानव पराजित हो चुके हैं। हम अधिक नहीं जानते। हमें सीख लेना है इससे पूर्व कि हमें कोई अवसर मिले और सीख पाने के लिये हमें जीवित रहना है और स्वाधीन रहना है। समझे? यह है जो किया जाना है।"

इस मनुष्य के संकल्प से पर्याप्त रूप से प्रभावित आश्चर्य-चकित मैं उसे घूरता रहा।

"महान ईश्वर!" मैं पुकार उठा। "परन्तु निस्सन्देह तुम पुरुष हो!" सहसा मैंने उसका हाथ पकड़ लिया।

"हूँ?" उसने प्रकाशपूर्ण नेत्रों से कहा, "मैं विचार कर चुका हूँ।"

"बढ़े चलो", मैंने कहा।

"ठीक है, उन्हें जो पकड़े जाने से बचना चाहते हैं, तैयार हो जाना चाहिये। मैं तैयार हो रहा हूँ। विचार करो, क्या सभी बर्बर पशु नहीं हुए जा रहे हैं; और यही है वह जो किया जाना है। यही कारण था कि मैं छिपकर तुम्हें देखता रहा। मेरे मन में सन्देह था। तुम पतले-दुबले हो। मैं नहीं जानता था कि यह तुम हो, समझे, और न यही कि तुम दबे पड़े रहे हो। यह सभी मनुष्य——उस प्रकार के व्यक्ति जो इन मकानों में रहा करते थे और वह समस्त बेचारे क्लर्क जो इन नीचे की ओर वहाँ रहा करते थे—वह कुछ भी नहीं कर सकते। उनमें कोई शक्ति नहीं है—न उनके समक्ष गौरवपूर्ण स्वप्न ही

थे और न श्रेष्ठतम भोग; और वह मनुष्य जो इन दोनों वस्तुओं में से एक भी नहीं रखता—ईश्वर ही जाने कि वह भीरु होने अथवा सचेत रहने से अधिक क्या कर सकता है ? वह केवल काम करने से भागना जानते थे—मैंने वैसे सैकड़ों को देखा है, हाथ में थोड़ा-सा नाश्ता लिये, पशुओं की भाँति भागते और प्रसन्नतापूर्वक अपनी छोटी सीजन-टिकट वाली गाड़ी पकड़ने के हेतु प्रयत्नशील, इस भय से आतंकित कि ऐसा न करने से वह पदच्युत न कर दिये जायें; उस कार्य में रत जिसे समझ पाना भी वह कठिन समझते थे, पुनः शीघ्रतापूर्वक घर की ओर इस भय से भागते कि वह भोजन के समय पर उपस्थित न हो सकेंगे, और तब पिछली गलियों में असुरक्षित रहने के कारण वह घर से बाहर नहीं निकलते, और उन पत्नियों के साथ सो जाते हैं जिनसे उन्होंने विवाह किया है, इस कारण नहीं कि वह उन्हें चाहते थे, अपितु इस कारण कि उनके पास थोड़ा साधन था जिससे वह इस संसार में त्रस्त भाव से कुछ काल जीवित रह सकने योग्य सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं। जीवन जो दुर्घटनाओं से सुरक्षा एवं पूँजी के रूप में बीमा किये जा चुके हैं; और रविवारों को परलोक के भय से त्रस्त। जैसे कि नरक केवल चूहों के लिये ही निर्मित हुआ हो और मंगल-निवासी उन्हें उनके कल्याण के हेतु भेजे गये सौभाग्य-प्रदायक-से ही प्रतीत होंगे। अच्छे और लम्बे-चौड़े पिंजड़े, पौष्टिक भोजन, सावधानीपूर्ण पालन और किसी भी प्रकार की चिन्ता का अभाव। एक-आध सप्ताह में क्षुधा से पीड़ित खेतों और मैदानों में भोजन की खोज करते, वह स्वयं आ जायेंगे और प्रसन्नतापूर्वक बन्दी बन जायेंगे। कुछ ही समय पश्चात् वह परम आनन्द अनुभव करेंगे। वह आश्चर्य करेंगे कि उनकी देख-रेख करने वाले मंगल-निवासियों के आगमन से पूर्व लोग उनसे कैसा व्यवहार करते थे। और मदिरालयों के आवारा, छैला एवं गवैये—मैं उनकी कल्पना कर सकता हूँ।" उसने मलिनतापूर्ण सन्तोष के भाव से कहा। "उनमें किसी भी अंश तक भावना एवं धर्म अव्यवस्थित रूप में जागृत हो सकता है। मैंने सैकड़ों बातें इन

आँखों से देखी हैं, जिन्हें स्पष्ट रूप में देखना मैंने पिछले कुछ दिनों से ही प्रारम्भ किया है । उनमें से अनेक इन बातों को उसी प्रकार समझ सकेंगे जैसे कि वह स्वयं स्थूल एवं मूर्खतापूर्ण हैं; और अनेक एक ऐसी प्रकार की भावना से चिन्तित रहेंगे कि यह सभी बातें असत्य हैं और उन्हें कुछ न कुछ करते रहना चाहिये और जब कभी भी वस्तु-स्थिति ऐसी होती है कि जन-संख्या का बहुतांश ऐसी अनुभूति करता रहता है कि उन्हें कुछ न कुछ करते ही रहना चाहिये, तो दुर्बल एवं वह जो जटिलतापूर्ण विचार-धारा के कारण दुर्बलता को प्राप्त हो जाते हैं, सदैव एक प्रकार के अकर्मण्यतापूर्ण धर्म का प्रतिपादन करते हैं। जो प्रत्यक्ष रूप में नितान्त पवित्र एवं गौरवपूर्ण प्रतीत होता है और व्यथा एवं ईश्वरेच्छा के समक्ष समर्पण कर देते हैं। ठीक इसी प्रकार की स्थिति तुम स्वयं देख चुके हो। यह भीरुता के आवरण में बन्द शक्ति के एक झोंके के समान होती है और भीतर तथा बाहर दोनों ही ओर खोखली होती है। यह पिंजड़े भजनों, स्तोत्रों एवं दयानुभूति के होंगे और अन्य दूसरे जो अपेक्षाकृत कुछ कम सरल प्रकृति के होंगे, आंशिक—उसे क्या कहते हैं ? प्रेमपूर्ण रूप में काम करते रहेंगे।"

वह थोड़ा रुका।

"बहुत सम्भव है कि यह मंगल-निवासी उनमें से कुछ को पालतू बना लेंगे, उन्हें तमाशा करना सिखायेंगे—कौन कह सकता है ?—और उस पालतू लड़के के प्रति कुछ दया की अनुभूति करेंगे जो बड़ा हो जायगा और वध किये जाने योग्य होगा और उनमें से कुछ को हो सकता है कि वह हमारा शिकार करना सिखा दें।"

"नहीं," मैं चिल्ला उठा, "यह असम्भव है ! कोई भी मानव !"

"इस प्रकार की भ्रान्तियों से मन को छलते रहने से क्या लाभ ?" सैनिक ने कहा। "ऐसे भी मनुष्य हैं जो प्रसन्नतापूर्वक ऐसा करेंगे। क्या मूर्खता है कि कहा जाय कि ऐसे लोग नहीं हैं।"

और उसके दृढ़ विश्वास के समक्ष मैंने समर्पण कर दिया।

"और यदि वह मेरा पीछा करें," उसने कहा—"हे ईश्वर यदि वे मेरा पीछा करें !" और वह एक उदासीनतापूर्ण ध्यानावस्था में डूब गया।

इन्हीं बातों पर चिंतन करता मैं बैठा रहा। इस मनुष्य के तर्कों का खण्डन करने योग्य मैं कुछ भी न पा सका। इस आक्रमण से पूर्व किसी भी मनुष्य ने इस सैनिक की अपेक्षा मेरे बौद्धिक स्तर की श्रेष्ठता पर शंका नहीं की होती—मैं दार्शनिक समस्याओं पर लिखने वाला एक प्रतिष्ठित एवं स्वीकृत लेखक और वह एक सामान्य सैनिक—और तो भी वह उस स्थिति का सूत्रबद्ध वर्णन कर सका जिसे मैं कठिनता से ही समझ पाया था।

"तुम क्या करने वाले हो ?" मैंने तुरन्त ही प्रश्न किया। "तुम क्या योजनाएँ बना चुके हो ?"

वह हिचकिचाया।

"तो सुनो, वह इस प्रकार है,' उसने कहा। "हमें क्या करना है ? हमें एक-से जीवन की व्यवस्था प्रारम्भ करनी है, जहाँ मनुष्य जीवित रह सकें और सन्तान उत्पन्न कर सकें, और शिशुओं के पालन-पोषण के निमित्त वह पर्याप्त रूप में सुरक्षित रह सकें। समझे ! थोड़ा ठहरो और मैं स्पष्ट रूप में समझा दूँगा कि मेरे विचार से क्या किया जाना चाहिये। पालतू मनुष्य सभी पालतू पशुओं के समान आचरण करेंगे, कुछ ही पीढ़ियों के बाद वह दीर्घकाय, सुन्दर, रक्तपूर्ण, मूर्ख हो जायेंगे—पूर्णतः विवेक शून्य। संकट की बात तो यह है कि जंगलों में निवास करने वाले हम लोग जंगली हो जायेंगे—एक दीर्घकाय जंगली चूहे के समान हमारा भी पतन हो जायगा.........तुम समझ गये कि मेरा अभिप्राय भूमि-तल से नीचे रहने का है। मैं नालों के सम्बन्ध में सोचता रहा हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह, जो, नालों के सम्बन्ध में जानकारी नहीं रखते हैं उन्हें भयानक स्थान समझते हैं, परन्तु इसी लन्दन के नीचे मीलों—सैकड़ों मील के क्षेत्र में—नाले ही नाले हैं और कुछ दिनों

की वर्षा एवं जन-संख्या-शून्य लन्दन उन्हें सुविधापूर्ण एवं स्वच्छ रूप में छोड़ देगा। प्रमुख नाले प्रत्येक के निवास के लिये पर्याप्त रूप में लम्बे-चौड़े एवं वायुपूर्ण हैं और तब तहखाने हैं, गुफाएँ हैं, गोदाम हैं, जहाँ से नालों तक बन्द किये जाने वाले मार्ग बनाये जा सकते हैं। और रेलों की सुरंगें और भूमि के नीचे वाले मार्ग ! आह ! तुम देखने लगे ? और हम समूह का रूप धारण करें—शरीर और उद्वेग-रहित शरीर वाले मनुष्य। हम किसी भी दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति को नहीं अपनायेंगे जो बहकर भीतर आ पहुँचता है। और दुर्बल पुनः बहकर बाहर निकल जायेंगे।"

"जैसा कि तुम मुझे चले जाना देना चाहते थे ?"

"नहीं—मैंने संधि की बातचीत की थी—क्या मैंने नहीं की ?"

"हम उसके लिये झगड़ा नहीं करेंगे। बढ़े चलो।"

"वह जो भीतर रुकेंगे, उन्हें आज्ञा माननी होगी। सशक्त शरीर एवं उद्वेग-रहित मस्तिष्क वाली नारियों की भी हमें आवश्यकता पड़ेगी—माताएँ एवं शिक्षिकाएँ। सन्तप्त नारियाँ नहीं—भड़कते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रों वाली नहीं। साथ ही हम दुर्बल एवं मूर्खतापूर्ण स्वभाव वाली नारियों को भी स्वीकार नहीं कर सकते। जीवन एक बार फिर वास्तविक हो उठेगा, और क्रिया-हीन, स्थूलकाय एवं उपद्रवियों को मरना होगा। उन्हें मरना ही चाहिये। वह मरण की कामना भी कर रहे होंगे। आखिर इस प्रकार जीवित रहकर जाति को कलंकित करना भी एक प्रकार का जाति-द्रोह है। और वह सुखी हो भी नहीं सकते। इसके अतिरिक्त मृत्यु इतनी भयावह नहीं है—यह भीरुता की भावना है जो उसे इतना अप्रिय रूप दे देती है। और ऐसे समस्त स्थानों में हम एकत्रित होकर रहेंगे। हमारा प्रदेश लन्दन ही रहेगा। और हम बाहर निकलकर शत्रु पर आँख भी रख सकेंगे, जिस समय मंगल-निवासी उस स्थान से दूर होंगे। शायद हम क्रिकेट खेलेंगे। और यह आशा है जिसके द्वारा हम जाति की रक्षा कर सकेंगे। आह क्या यह सम्भव है ?

परन्तु जाति की रक्षा स्वयं में कुछ महत्व नहीं रखती है। जैसा मैंने कहा, यह केवल चूहों के रूप में ढल जाने का ही उपाय है। आवश्यकता अपने ज्ञान की रक्षा करने और उसकी वृद्धि करने की है। और तब तुम जैसे लोग आते हैं। पुस्तकें हैं—प्रतिरूप हैं। हमें भू-गर्भ में सुरक्षित स्थान बनाने चाहियें, और जितनी भी मिल सकें पुस्तकें प्राप्त करनी चाहियें; उपन्यास एवं मार्मिक कविताओं की पुस्तके नहीं, वरन् विज्ञान की पुस्तकें। और यहा स्थान है, जहाँ तुम जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है। तुम्हें ब्रिटिश संग्रहालय जाना चाहिये और ऐसी समस्त पुस्तकों को उठा लाना चाहिये। विशेष रूप से हमें अपने विज्ञान को जीवित रखना चाहिये—और अधिक जानना चाहिये। हमें इन मंगल-निवासियों पर आँख रखनी चाहिये। हममें से कुछ को गुप्तचरों के रूप में जाना चाहिये। जब व्यवस्था प्रारम्भ हो जायगी, सम्भव है मैं ऐसा करूँ। मेरा अभिप्राय है पकड़े जाना। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें मंगल-निवासियों को एकाकी छोड़ देना चाहिये। हमें उन्हें दिखाना चाहिये कि हम उन्हें कोई भी हानि पहुँचाना नहीं चाहते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ। परन्तु वह बुद्धियुक्त प्राणी हैं, और वह हमें खोज-खोज कर नष्ट नहीं करेंगे यदि उन्हें वह सब प्राप्त हो जाय, जो वह चाहते हैं, और वह समझेंगे कि हम किसी प्रकार की भी हानि न पहुँचा सकने योग्य क्षुद्र कीटाणु हैं।"

सैनिक रुका और एक भूरा-सा हाथ उसने मेरी भुजा पर रख दिया।

"हो सकता है कि हमें इतना सीखने की आवश्यकता ही न पड़े—कल्पना करो : उनके युद्ध-यंत्रों में से चार या पाँच सहसा उड़ चलें—दायें और बायें अग्नि-किरण बरसाते—और उनमें एक भी मंगल-निवासी न हो। एक भी मंगल-निवासी नहीं, वरन् मानव—मानव जो सीख चुके हों कि उन्हें किस प्रकार चलाना चाहिये। हो सकता है कि यह मेरे जीवन-काल में ही हों—वह मानव। उन सुन्दर वस्तुओं में से किसी

एक को पाने की कल्पना करो जिसमें स्वतन्त्रतापूर्वक चारों ओर का गति वाली अग्नि-किरण हो ! कल्पना करो कि तुम उसे अपने अधिकार में रख सकते हो। क्या अन्तर पड़ेगा यदि तुम दौड के अंत में उसे खण्ड-खण्ड कर डालो, उसी प्रकार के एक विस्फोट के साथ ? मैं समझता हूँ कि मंगल-निवासी अपने सुन्दर नेत्रों को खोलेंगे ! क्या तुम उन्हें नहीं देख सकते—मानव ? क्या तुम उन्हें शीघ्रतापूर्वक जाते—धूम्र-पिंड छोड़ते आग लगाते और अपने अन्य यांत्रिक उपायों के सम्बंध में पुकारते नहीं सुन सकते हो ? प्रत्येक अवस्था में कुछ न कुछ अव्यवस्थित ही रहता है। और सरसराहट, धड़ाके, खड़खड़ाहट, सरसराहट ! जब कि वह फूहरपन के साथ उन्हें चला रहे हों, सरसराती हुई अग्नि-किरण चमक उठती है, और, देखो ! मनुष्य अपनी प्रकृति पर लौट आया है।"

कुछ काल के लिये सैनिक की कल्पनात्मक साहसपरता, आश्वासन एवं आत्मविश्वास के स्वर ने, जिसमें उसने यह सब कहा, मेरे मस्तिष्क पर पूरा अधिकार कर लिया। बिना किसी द्विविधा के मैं मानव-जाति से सम्बन्धित उसकी भविष्य-वाणी एवं आश्चर्य में डाल देने वाली योजना में विश्वास करता हूँ, और वह पाठक जो सोचता है कि मैं दूसरे के विचारों को ग्रहण करने वाला एवं विवेक-हीन हूँ अपनी स्थिति मेरी स्थिति से बदल ले, अपनी समस्त चेतना अपने विषय में रखे और पढ़ते हुए, और मेरे भय के कारण झाड़ियों में रेंगते हुए और आशंकाओं से परिपूर्ण ! इस प्रकार हम प्रातःकाल के प्रारम्भिक भाग में वार्तालाप करते रहे, और फिर बाद में झाड़ियों से बाहर रेंग आये, और मंगल-निवासियों के कारण आकाश का निरीक्षण करके प्रबलता-पूर्वक पटनी पहाड़ी पर स्थित उस मकान की ओर दौड़े जहाँ उसने अपने छिपने का स्थान बना रखा था। यह उस स्थान का कोयले रखने का तहखाना था, और जब मैंने उस कार्य का निरीक्षण किया जिसे पूरा करने में उसने एक सप्ताह लगाया था—वह कठिनता से दस गज लम्बा एक बिल था, जिसे उसने पटनी पहाड़ी पर स्थित उस बड़े नाले तक

पहुँचाने का प्रबन्ध किया था—मेरे मन में प्रथम बार उसके स्वप्नों एवं शक्तियों के बीच रहे अन्तर का आभास प्राप्त हुआ। ऐसा गड्ढा मैं दिन भर में खोद सकता था। परन्तु मैं उसमें इतना विश्वास अवश्य करता था कि मैं उसके साथ उस खुदाई के काम में उस समस्त प्रातःकाल और मध्याह्न तक लगा रहा। हमने उद्यान तक पहुँचने के लिये एक बिल बना लिया, और खोदी हुई मिट्टी को रसोई-घर की दीवाल के सहारे लगा दिया। हमने बनाये हुए कछुए के एक टिन शोरवे तथा समीपवर्ती भण्डार-गृह से कुछ मदिरा प्राप्त करके स्वयं को श्रम-मुक्त किया। इस स्थिर परिश्रम के द्वारा मैंने मन को उद्वेलित करने वाली संसार की विलक्षणता के कारण उत्पन्न पीड़ा से मुक्ति-सी प्राप्ति की। जब हम काम कर रहे थे, मैंने उसकी योजना को अपने मस्तिष्क के समक्ष फैलाया और तुरन्त ही वितर्क एवं सन्देह जन्म पाने लगे; परन्तु मैं समस्त प्रातः वहाँ कार्य-रत रहा, कारण कि स्वयं को किसी भी लक्ष्य-सिद्धि में संलग्न देखकर मैं इतना प्रसन्न था। एक घण्टा काम करने के पश्चात्, मैं उस दूरी के सम्बन्ध में अनुमान लगाने लगा जिसे किसीको भी उस नाले तक पहुँचने में तय करनी पड़ती—एवं उन सम्भावनाओं पर जिनके द्वारा हम उसे पूर्णतः खो भी सकते थे। मेरी तात्कालिक कठिनाई यह थी कि हम इतनी लम्बी सुरंग क्यों खोदें, जब कि यह सम्भव था कि हम किसी भी नीचे उतरने वाले मार्ग के द्वारा सीधे नाले में ही उतर सकते थे, और वहाँ से मकान की ओर खुदाई प्रारम्भ कर सकते थे। मुझे यह भी प्रतीत हुआ कि यह मकान गलत चुना गया था, और उस तक आने के लिये व्यर्थ सुरंग की लम्बाई को बढ़ाना पड़ेगा। और जैसे ही मैं इन बातों का सामना करने के लिये तत्पर होना चाहता था, सैनिक ने खोदना बन्द कर दिया, और मेरी ओर देखने लगा।

"हम ठीक काम कर रहे हैं", उसने कहा। उसने अपना फावड़ा रख दिया। "हम थोड़ी देर को काम बन्द कर दें", उसने कहा। "मैं समझता

हूँ कि पर्याप्त समय हो चुका है, जब हमने छत पर से आकाश का निरीक्षण किया था।"

मेरा मत काम किये जाना ही था, और किंचित् हिचकिचाहट के पश्चात् उसने फावड़ा पुनः उठा लिया; और तब सहमा मेरे मन में एक विचार उठ खड़ा हुआ। मैंने काम करना रोक दिया, और उसने भी ऐसा ही किया।

"यहाँ रहने की अपेक्षा", मैंने कहा, "तुम कामन पर क्यों घूम रहे थे?"

"हवा खाकर", उसने कहा, "मैं लौट रहा था। रात्रि के समय ऐसा करना सुरक्षित होता है।"

"परन्तु काम?"

"आह! कोई भी हर समय काम में नहीं लगा रह सकता", उसने कहा, और बिजली की एक चमक में मैंने उस व्यक्ति को स्पष्टतः देख सका। हिचकिचाता हुआ वह फावड़ा पकड़े खड़ा रहा। "हमें अब निरीक्षण करना चाहिए", उसने कहा, "कारण कि यदि उनमें से कोई भी समीप आ पहुँचा तो फावड़े की ध्वनि सुनकर वह हम पर अप्रत्याशित रूप में आक्रमण कर सकता है।"

मुझे अब तर्क-वितर्क करने की कोई इच्छा नहीं थी। हम साथ-साथ छत पर गये और छत के दरवाजे से बाहर की ओर निकली हुई एक नसैनी पर खड़े हो गये। मंगल-निवासियों का कहीं पता नहीं था, और साहस करके हम खपरैल तक जा पहुँचे, और मिट्टी के उस ढेर के पीछे सुरक्षित नीचे ररक पड़े।

इस स्थिति में झाड़ियों का जंगल पटनी पहाड़ी के अधिकतर भाग को ढके हुआ था, परन्तु हम नीचे बहती नदी को देख सके, लाल बेल से उठे हुए बुलबुलों से भरी हुई कीचड़, एवं लैम्बैथ के लाल तथा बाढ़-ग्रस्त निचले भाग को। पुराने महल के समीप लाल बेल पेड़ों पर छाई हुई थी, और कृश एवं निर्जीव उसकी शाखाएँ फैली हुई थीं, और उसके

कुंजों के मध्य सिकुड़ी हुई पत्तियाँ दीख पड़ रही थीं। यह तथ्य विलक्षण प्रतीत होता था कि यह सभी बातें उनका विस्तार करने वाले पानी के प्रवाह पर कितनी आधारित थीं। हमारे समीपवर्ती स्थान में उनमें से एक ने भी जड़ नहीं पकड़ी थी; हरे और चमकदार लैबर्मनस, पिंक मेज, स्नोबाल्स आदि पेड़ ल्यारेल्स समूहों के बीच से सूर्य के प्रकाश में चमचमा रहे थे। केन्सिग्टन से परे गहन धुआँ उठ रहा था, और उस धुएं एवं एक अन्य नीले-से धुंधलके ने उत्तरवर्ती पहाड़ियों को छिपा दिया था।

सैनिक मुझे उस प्रकार के व्यक्तियों के सम्बन्ध में बताने लगा जो अभी तक लन्दन ही में रुके थे।

"पिछले सप्ताह एक रात्रि", उसने कहा, "कुछ मूर्खों ने बिजली की लाइनों को व्यवस्थित कर लिया, और समस्त रीजेन्ट स्ट्रीट और सरकस वाला प्रदेश चमचमा उठा, जो रंगे हुए एवं फटेहाल शराबियों से भरा हुआ था; नर और नारी, जो सूर्योदय तक नाचते और कोलाहल करते रहे। एक मनुष्य ने जो वहीं था मुझे बताया। और जैसे ही दिन निकला, उन्होंने लैन्गहम के समीप एक युद्ध-यन्त्र को खड़े और उनकी ओर झाँकते पाया। ईश्वर ही जाने वह कितने काल से वहाँ खड़ा रहा होगा। सड़क की ओर उतरता वह उनकी ओर आया, और उसने उनमें से लगभग सौ को ऊपर उठा लिया जो नशे अथवा भय के कारण भाग पाने में असमर्थ थे।"

एक ऐसे काल का विलक्षण दृश्य जिसे सम्भवतः कोई भी इतिहास पूर्णतः अंकित नहीं करेगा।

इस विवरण के पश्चात्, मेरे प्रश्नों का उत्तर देते-देते वह अपनी श्रेष्ठता-सूचक योजनाओं पर उतर आया। वह उत्साहित हो उठा। उन युद्ध-यंत्रों में से एक को पकड़ने की सम्भावना के सम्बन्ध में उसने ऐसी वाक्-पटुता से वर्णन दिया कि मेरा विश्वास उस पर फिर आधा रह गया। परन्तु अब जैसे मैं उसके स्वभाव को समझता जा रहा था, और

प्रबलतापूर्वक कुछ भी न करने पर उसके आग्रह को मैं अच्छी तरह पहिचान गया। और अब मैं समझ गया कि युद्ध-यंत्र से लड़ने और उसे पकड़ने का उसका कोई निश्चय नहीं था।

कुछ समय बाद हम नीचे तहखाने में उतर गये। हममें से कोई भी खुदाई पुनः करने की प्रवृत्ति में नही था, और जब उसने भोजन कर लेने का प्रस्ताव किया, मैंने कोई आपत्ति नही की। सहसा वह अत्यन्त उदार हो उठा, और जब हम भोजन समाप्त कर चुके, वह चला गया और कुछ श्रेष्ठ सिगार लिये वापिस लौटा। हमने सिगार सुलगाये, और उसकी आशावादिता प्रकाशित हो उठी। वह मेरे आगमन को महत्वपूर्ण मानने का इच्छुक था।

"तहखाने में कुछ शेम्पेन है", उसने कहा।

"हम टेम्स की ओर वाले भाग में खुदाई करें", मैंने कहा।

"नहीं", उसने कहा, "मैं आज आतिथ्य करने वाला गृह-स्वामी हूँ। शेम्पेन ! हे महान ईश्वर ! हमारे समक्ष अभी नितान्त दुस्तर कार्य है ! हमें थोड़ा विश्राम करना चाहिये, और जब तक सम्भव हो सके हमें शक्ति एकत्रित करनी चाहिये। फफोले पड़े इन हाथों को देखो !"

और विश्राम-दिवस मनाने पर आरूढ़, उसने भोजन के पश्चात् मुझे ताश खेलने पर विवश किया। उसने मुझे यूकर सिखाया, और हमारे बीच लन्दन को दो भागों में बाँट लेने के बाद, जिसमे मैंने उत्तरी एवं उसने दक्षिणी भाग लिया, और गाँवों के पाइन्ट हारने जीतने लगे। विलक्षण एवं मूर्खवत् जैसा कि वह किसी भी गम्भीर पाठक के निकट प्रतीत होगा, यह पूरी तरह पर सत्य है; और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे यह एवं अन्य कई खेल जो मैने खेले रुचिकर ही लगे।

मनुष्य का विलक्षण मन ! अपनी गति को विनाश अथवा भयोत्पादक पतन की सीमा पर छोड़कर, और अपने समक्ष केवल एक भयावह मृत्यु की सम्भावना के अतिरिक्त अन्य कोई सम्भावना न रखने

वाले हम इस पैरिटल बोर्ड के दाँवों को देखते एवं सजीव उल्लास के साथ जोकर खेलते बैठे रहे। बाद में उसने मुझे पोकर का खेल सिखाया, और मैंने उसे शतरंज की गम्भीर मातें भी दीं। जब अंधेरा हो गया तो हम इतने अधिक रुचिशील थे कि हमने लैम्प को प्रकाशित करने का संकट मोल लेने का भी निश्चय कर लिया।

एक के बाद दूसरी खेलों की अनेक बाजियाँ खेलने के पश्चात्, हमने भोजन किया और सैनिक ने समस्त शेम्पेन उड़ेल ली। सिगार पीते हम बैठे रहे। वह अब किंचित् मात्र भी अपनी जाति को पुनः जीवित करने वाला साहसी उद्धार-कर्त्ता नहीं था जैसा मैंने प्रातःकाल पाया था। इस समय भी वह आशावादी अवश्य था, परन्तु वह अपेक्षाकृत कम 'गतिशील थी, एक विचारपूर्ण आशावादिता'। मैंने एक सिगार लिया, और उन प्रकाशों को, जिनकी चर्चा उसने की थी, देखने ऊपर चला गया जो हाईगेट पहाड़ियों की ओर चमचमाते रहते थे।

मूर्खतापूर्ण रूप में प्रथम तो मैंने लन्दन वैली की ओर झाँका। उत्तरी पहाड़ियाँ अन्धकार में डूबी पड़ी थीं; केन्सिग्टन के समीप के प्रकाश लाल-लाल चमक रहे थे, और रह-रहकर अग्नि की नारंगी लाल रंग वाली एक लपट उस गहन नील रात्रि में प्रकाशित होती और लुप्त हो जाती थी। लन्दन का शेष भाग अन्धकार में डूबा हुआ था। तब, समीप ही, मैंने एक विलक्षण प्रकाश देखा, एक पीत एवं हल्की गुलाबी धाराशील-सी प्रतीत होने वाली चमक, जो रात्रि की हवा के नीचे कँपकँपाती-सी लगती थी। कुछ समय तक तो मैं उसे समझ न सका, और तब मैं जान गया कि यह वही लाल बेल होगी जिससे यह चमक निकलती थी। यह समझते ही, मेरी प्रसुप्त आश्चर्य की भावना, वस्तुओं के अनुपात की मेरी अनुभूति पुनः जाग पड़ी। उस स्थान से मैंने मंगल-ग्रह की ओर देखा, लाल एवं स्वच्छ निर्मल, पश्चिम की ओर ऊँचे आकाश पर चमचमाता, और तब उत्सुकतापूर्वक बड़ी देर तक मैं हैम्पस्टेड और हाईगेट को घूरता खड़ा रहा।

पर्याप्त काल तक दिन भर के विलक्षण परिवर्तनों पर आश्चर्य करता मैं ऊपर ही रहा। मैंने मध्य रात्रि की प्रार्थना से मूर्खों के समान ताश खेलने के समय तक की अपनी सभी मानसिक स्थितियों का स्मरण किया। मैंने प्रबल विराग की अनुभूति की। मुझे याद है कि एक प्रकार की व्यर्थता-द्योतक भावना से मैंने सिगार फेंक दिया। मेरी मूर्खता स्पष्ट दीख पड़ने वाले अनेक विराट रूप धारण करने लगी। मैं अपनी पत्नी एवं अपनी जाति के निकट विश्वासघाती-सा प्रतीत हुआ; मेरा मन पश्चात्ताप से भर उठा। मैंने इस विलक्षण तथा मदिरापान एवं भरपेट भोजन में पूर्णत: संयम-हीन महान सपने देखने वाले व्यक्ति को छोड़ने और लन्दन में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया। वहाँ मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मेरे लिये मंगल-निवासी एवं मेरे अन्य सजातीय क्या कर रहे हैं यह जानने का सर्वोत्तम अवसर प्राप्त हो सकेगा। मैं उस समय भी छत पर ही था जब कि पर्याप्त रात ढले उदित होने वाला चन्द्रमा आकाश में ऊपर की ओर उठा।

२५

जीवन-शून्य लन्दन

सैनिकों से विदा होने के पश्चात्, पहाड़ी के नीचे होता और हाई स्ट्रीट के सहारे पुल पार करता मैं फुलहम पहुँचा। लाल बेल उस समय सघनता से छाई हुई थी, और उसने पुल के सड़क मार्ग को पूर्णत: सोख रखा था, परन्तु उसकी गाँठों पर स्थान-स्थान पर उस रोग के फैलने के कारण श्वेत धब्बे पड़ चुके थे जिसने अन्ततः उसे समूल नष्ट

कर डाला। उस गली के छोर पर जो पटनी ब्रिज स्टेशन की ओर जाती है, मैंने एक व्यक्ति को लेटे पाया। वह ऐसा काला पड़ा हुआ था जैसी कि काली धूल से भरी कोई झाड़ू होती है, जो जीवित था, परन्तु इतने अधिक नशे में कि वह चलने-फिरने एवं बोल पाने में अशक्त था। केवल गालियों तथा अपने माथे पर लातों के अतिरिक्त मैं उससे कुछ और न पा सका। मेरा विचार है कि सम्भवतः मैं उसके साथ रुक गया होता, परन्तु उसकी पाशविक मुखाकृति ने मुझे ऐसा नहीं करने दिया।

पुल और उससे आगे की सड़क के सहारे काली धूल थी, और फुलहम में वह और अधिक मात्रा मे थी। गलियाँ भयावह रूप में शान्त थीं। मैं भोजन पा सका—खट्टा, कड़ा और धूल से भरा हुआ, परन्तु पूर्णतः भोजनीय—यहीं की एक नानबाई की दूकान पर। वॅल्हम ग्रीन की ओर कुछ दूर वाली गलियाँ इस चूर्ण से मुक्त हो चुकी थीं; और मैं जलते हुए अनेक मकानों के चबूतरों के सामने होकर गुज़रा; प्रज्वलित अग्नि का कोलाहल पूर्ण शान्ति के समान लग रहा था। ब्राम्पटन की ओर जाने पर गलियाँ पुनः स्तब्धतापूर्ण थीं।

यहाँ पहुँचकर मैंने पुनः एक बार गलियाँ तथा मृत शरीरों पर जमी काली धूल को पाया। फुलहम रोड पर मैंने लगभग एक दर्जन शव पाये। उन्हें मरे कई दिन हो चुके थे, और इस कारण मैं शीघ्रता-पूर्वक उनको पार करता निकल गया। काले चूर्ण ने उन्हें ऊपर से ढँक लिया था, और उनके शरीर के ऊपरी भागों का मुलायम बना रखा था। उनमें से एक या दो कुत्तों द्वारा नष्ट किये जा चुके थे।

जहाँ वह काला चूर्ण नहीं था, वह स्थान विलक्षण रूप में रविवारीय नगर के समान प्रतीत होता था। जिसमे दूकानें बन्द थीं, मकानों में बाहर से ताले पड़े थे, झिलमिलें खिची हुई थी, निर्जनता एव निस्तब्धता। कही चोर अपना काम कर चुके थे, परन्तु भंडार-गृहों अथवा मदिरा की दूकानों के अतिरिक्त शायद ही अन्य किसी स्थान पर। एक जौहरी की दूकान एक स्थान पर फोड़ी गई थी, और लगता था कि जैसे

चोर को कोई बाधा पहुँची थी, और अनेक सोने की जंजीरें तथा एक घड़ी पटरी पर पड़ी थी। मैंने उन्हें उठाने का कष्ट नहीं किया। आगे बढ़ने पर एक द्वार के समक्ष ढेर में दबी पड़ी एक नारी थी जिसका शरीर चिथड़े हो रहा था, वह हाथ जो उसके घुटनों के ऊपर लटक रहा था कुचला हुआ था, और उससे रक्त उसके धूल-धूसरित भूरे वस्त्रों पर बह रहा था, और शेम्पेन के एक फूटे हुए पीपे ने सड़क के फर्श पर एक कुण्ड-सा बना रखा था। लगता था जैसे वह निद्रामग्न हो, परन्तु वस्तुतः वह निष्प्राण हो चुकी थी।

जितना अधिक मैं लन्दन में आगे की ओर बढ़ा, निस्तब्धता उतनी ही गहनतर होती गयी। परन्तु वह इतनी अधिक मृत्यु की स्तब्धता नहीं थी—वह अनिश्चितता की निस्तब्धता थी, प्रतीक्षा की। किसी भी समय वह विनाश जो नगर के उत्तर-पश्चिमी भागों को झुलसा चुका है, और जो एलिंग तथा किलबर्न का विनाश कर चुका है, इन मकानों पर प्रहार कर सकता है और उन्हें धुँआ देते खण्डहरों के रूप में बदल सकता है। वह एक नगर था अभिशप्त एवं परित्यक्त ··।

दक्षिणी केन्सिग्टन में गलियाँ शवों एवं उस काले चूर्ण से मुक्त थीं। यह दक्षिणी केन्सिग्टन के समीप ही था जहाँ मैंने सर्व प्रथम चिल्लाहट की ध्वनि सुनी। अनजाने रूप में वह मेरी चेतना में समा गयी। वह दो प्रकार की ध्वनियों का मन्द स्वर में पारी-पारी से बोलना था, 'उला, उला, उला, उला' जो निरन्तर जारी रहा। जब मैं उन गलियों को पार कर चुका, जो उत्तर की ओर जाती हैं, यह ध्वनियाँ प्रचण्ड हो उठीं, और मकान एवं इमारतें मृत्यु के समान स्तब्ध उसे खण्ड-खण्ड करने लगी। एक्जीबिशन रोड के समीप वह सम्पूर्ण प्रचण्डता के साथ आती सुन पड़ीं। केन्सिंग्टन गार्डन्स् के समीप पहुँचकर, दूरतम प्रदेश से आने वाली उस शोक-ध्वनि को सुनता मैं खड़ा रहा। लगता था कि जैसे उस विशाल मरुखण्ड ने अपने भय एवं अपनी निर्जनता को व्यक्त करने के हेतु स्वर प्राप्त कर लिये हों।

'उला, उला, उला, उला' वह पर-मानवीय स्वर विलाप करता-सा प्रतीत होता था—ध्वनि की प्रचण्ड लहरें जो दोनों ओर से ऊँची-ऊंची इमारतों से घिरी उस चौड़ी एवं सूर्य में चमचमाती सड़क पर टकरा रही थी। आश्चर्य करता मैं उत्तर की ओर हाइड पार्क के लोहे वाले फाटक की ओर मुड़ा। मेरे मन में कुछ ऐसा विचार भी था कि मैं नेच्यूरल हिस्ट्री म्यूजियम में घुस पड़ूँ, और मीनार की ऊपरी चोटी तक चढ़ने का प्रयत्न करूँ, जिससे कि मैं पार्क के उस पार का दृश्य देख सकूँ। परन्तु मैंने भूमि पर ही रहने का निश्चय किया, जहाँ तुरन्त ही छिप सकना सम्भव था, और इस कारण मैं एक्ज़ीबिशन रोड पर ही आगे बढ़ता गया। सड़क के दोनों ओर वाली ऊँची इमारतें त्यक्त एवं निस्तब्ध थीं, और मेरे पद-चाप की ध्वनि दोनों ओर के मकानों से टकरा कर प्रतिध्वनित होती रही। ऊपर चोटी पर, फाटक के समीप मैंने एक विलक्षण दृश्य देखा—एक उल्टी हुई बस एवं एक घोड़े का अस्थि-पंजर जिस पर से सारा मांस नोंच डाला गया था। इस पर मैं कुछ समय के लिये किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सा रहा, और तब सरपेन्टाइन के ऊपर वाले पुल पर चढ़ गया। ध्वनि प्रबलतर होती गयी, यद्यपि मैं उत्तर-पश्चिम की ओर एक धुँधलके के अतिरिक्त पार्क के उत्तरी ओर वाले मकानों के ऊपर अन्य कुछ भी न देख सका।

'उला, उला, उला, उला' ध्वनि पुकारती रही, जैसा कि प्रतीत होता था, रीजेन्ट पार्क वाले प्रदेश से मेरी ओर आती थी। उजाड़ने वाली यह ध्वनि मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव डालती प्रतीत हुई। वह मन:स्थिति जो मुझे अधिकार मे किये हुए थी, समाप्त हो गयी। उस विलाप ने मेरे मन को जकड़ लिया। मैंने अनुभव किया कि मैं बुरी तरह से थका-हारा, क्लान्त एवं फिर से भूखा और प्यासा था।

दोपहर समाप्त हो चुका था। मृतकों के इस नगर में मैं क्यों एकाकी घूम रहा हूँ ? मैं क्यों एकाकी हूँ जब कि समस्त लन्दन जीवन-हीन, और काले कफन में लिपटा पड़ा है ? मैं असह्य रूप में एकाकी

अनुभव करने लगा। मेरा मन पुराने मित्रों की ओर दौड़ने लगा, जिन्हें मैं अनेक वर्षों से भूल चुका था। मैंने दवा वालों की दुकानों में रखे विषों की बात सोची, उन मदिराओं की जिन्हें दूकानदारों ने एकत्रित कर रखा था, मैंने उन दो सन्तप्त व्यक्तियों की स्मृति की, जो, जहाँ तक मैं जानता हूँ, इस नगर में मेरे समान ही......।

मार्बिल आर्क होता हुआ मैं आक्सफोर्ड स्ट्रीट जा पहुँचा, और यहाँ फिर वही काला चूर्ण और मृत शरीर, तथा कुछ मकानों के तहखानों की जालियों से एक दुर्गन्धपूर्ण तथा अपशकुनशील गन्ध। अपने लम्बे पर्यटन की गर्मी के कारण मुझे जोर की प्यास लगी थी। असीम कठिनाई के पश्चात् मैं एक सार्वजनिक गृह में प्रवेश तथा खाने-पीने की कुछ सामग्री पा सका। खाने के पश्चात् मुझे थकान लगने लगी, और मैं मदिरा बिकने वाले स्थान से रसोई-घर की ओर चला गया—और एक काले घोड़े के बालों से बने सोफे पर सो गया जो मुझे वहाँ रखा मिला।

जागने पर मैंने उस विषादपूर्ण ध्वनि को इस समय भी अपने कानों से टकराते सुना, 'उला, उला, उला, उला।' अंधेरा हो चुका था, और जब मैं मदिरा वाले स्थान में कुछ बिस्कुट तथा थोड़ा पनीर टटोल सका—मैंने वहाँ मांस रखने का एक सेफ देखा, परन्तु उसमें केवल कुछ कीड़ों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था—शान्त पड़े निवास-स्थान वाले मुहल्लों से होता हुआ मैं बेकर स्ट्रीट की ओर चलता रहा—पोर्टलैन्ड स्क्वायर ही एकमात्र नाम है जो मैं ले सकता हूँ—और अन्त में रीजेन्ट्स पार्क आ पहुँचा। और जैसे ही मै बेकर स्ट्रीट की चोटी से बाहर निकला, सूर्यास्त के स्पष्ट प्रकाश में मैंने वृक्षों की चोटियों के ऊपर मंगल के एक युद्ध-यन्त्र का हुड देखा जिससे चिल्लाहट की यह ध्वनि निकल रही थी। मैं किंचित भी भयभीत न हुआ। मैं उस तक इस प्रकार पहुँचा जैसे कि ऐसा होना स्वाभाविक स्थिति ही हो। कुछ काल तक मैं उसका निरीक्षण करता रहा, परन्तु वह अपने स्थान से नहीं हिला। प्रतीत होता

था कि जैसे वह खड़ा है और चिल्ला रहा है, परन्तु क्यों, में कोई कारण न ढूँढ़ सका।

मैंने काम करने की एक योजना स्थिर की। 'उला, उला, उला, उला' की निरन्तर आने वाली वह ध्वनि मेरे मस्तिष्क को अव्यवस्थित कर रही थी। सम्भवतः मै भय-ग्रस्त हो सकने के लिये अत्यधिक थका-हारा था। निश्चित है कि भयभीत होने के स्थान पर में थका डालने वाले इस चीत्कार का कारण जानने के निमित्त उत्सुक था। में पार्क से पीछे की ओर लौटा और पार्क रोड में घुस पड़ा, और पार्क का चक्कर काटने के निमित्त चबूतरों के नीचे छिपता चलता गया, और सेन्ट जान वुड की ओर से चीत्कार करते इस स्थिर मंगल-मंत्र को देख पाने में सफल हुआ। बेकर स्ट्रीट से कुछ सौ गज दूर मैंने कुत्तों के भूँसने के समान सामूहिक ध्वनि सुनी, और प्रथम मैंने एक कुत्ते को सड़े हुए लाल मांस के टुकड़े को जबड़ों में दाबे सीधा अपनी ओर आते देखा, और तब क्षुधित दोगले कुत्तों के एक समूह को उसका पीछा करते। मुझसे बचने के लिये उसने एक बड़ा चक्कर काटा, जैसे कि सम्भवतः उसने मुझे भी एक नूतन प्रतिस्पर्धी समझा हो। जब कि उस शान्त सड़क के नीचे की ओर कुत्तों की वह चिल्ल-पों बन्द हो गयी, 'उला, उला, उला, उला' की वह ध्वनि पुनः पूर्ववत् आने लगी।

सेन्ट जान वुड स्टेशन की आधी दूरी आने पर में उस ध्वस्त हैन्डलिंग मशीन तक आ पहुँचा। प्रथम तो मैंने विचार किया कि सड़क पर कोई मकान गिर पड़ा है। केवल उन ध्वंसावशेषों पर चढ़ने पर ही मैंने साश्चर्य यांत्रिक आकार के इस विशाल सैमसन को पड़े देखा, जिसके स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग झुके हुए, ध्वस्त एवं मुड़े हुए, उन खण्डहरों में पड़े थे जिन्हें उन्होंने गिरा लिया था। सामने वाला भाग नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। प्रतीत होता था कि जैसे वह आँख मींचे सीधा मकान से टकराया हो और पीछे गिरने पर खंड-खंड हो गया हो। मुझे ऐसा लगा कि शायद ऐसा हैन्डलिंग मशीन के उस मंगल-निवासी के नियंत्रण

से बाहर निकल जाने के कारण हुआ हो। उसे देख पाने के लिये मैं उस ढेर पर न चढ़ सका, और अंधकार अब इतना बढ़ चुका था कि वह रक्त जिससे कि वह सीट सनी हुई थी और मांस खा लेने के पश्चात् कुत्तों की छोड़ी हुई उस मंगल-निवासी की कोमल हड्डी मुझे दीख नहीं पड़ रही थी।

उस सब पर अत्यधिक आश्चर्य करते हुए, जो मैंने देखा था, मैं प्रिमरोज़ पहाड़ी को ओर बढ़ा। वृक्षों के मध्य से बहुत दूर पर, मैंने एक दूसरे मंगल-युद्ध-यंत्र को प्रथम की ही भाँति गति-हीन ज़ूलाजिकल गार्डन्स वाले पार्क में खड़े देखा। हैन्डलिंग मशीन के ध्वंसावशेष से कुछ परे मैं पुनः लाल बेल से घिरे प्रदेश में आ पहुँचा, और रीजेन्ट्स कैनाल को मैंने पानी सोखने वाली स्पंज के समान लाल वनस्पति से परिपूर्ण पाया।

जब मैं पुल पार कर रहा था, 'उला, उला, उला, उला' की ध्वनि सहसा बन्द हो गयी। ऐसा लगा कि जैसे वह काट दी गयी हो। इसके बाद आने वाली शान्ति बिजली की गड़गड़ाहट के समान प्रतीत हुई।

मेरे समीपवर्ती धुँधलके से घिरे मकान धूमिल, ऊँचे और मद्धिम-से दीख पड़े; पार्क की ओर वाले मकान धीरे-धीरे काले पड़ते जा रहे थे। मेरे चारों ओर वह लाल बेल मकानों के खण्डहरों पर ऊपर की ओर फैली हुई थी, और उस अन्धकार में वह मुझसे ऊपर निकल पाने के लिये लपलपा रही थी। भय एवं रहस्य की जननी रात्रि बढ़ती आ रही थी। परन्तु जिस समय तक वह ध्वनि आती रही, वह एकान्त, वह निर्जनता सहनीय प्रतीत होती रही; उसके कारण लन्दन उस समय भी सजीव-सा ही प्रतीत होता था, और अपने चारों ओर जीवन के आभास ने मुझे साहसपूर्ण रखा था। तब सहसा ही एक परिवर्तन, किसी वस्तु का निकल जाना—मैं नहीं जानता वह क्या थी—और तब एक निस्तब्धता जिसकी अनुभूति की जा सकती थी; इस तीक्ष्ण निस्तब्धता के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं।

मेरे चारों ओर का लन्दन मुझे प्रेतवत् घूर रहा था। श्वेत मकानों की खिड़कियाँ कंकालों की खोपड़ियों में रहे नेत्र-गोलकों के समान लग रही थीं। मेरी कल्पना ने मेरे चारों ओर सहस्रों शत्रुओं को चलते-फिरते पाया। भय ने मुझे जकड़ लिया, अपने साहस के प्रति उदित वह भय। मेरे सामने की सड़क सघन काली हो उठी जैसे कि उसपर तार-कोल पोत दिया गया हो, और मैंने पटरी के पार ऐंठी पड़ी किसी वस्तु को देखा। मैं स्वयं को आगे बढ़ने के लिये तैयार न कर सका। मैं सेन्ट जान वुड रोड की ओर बढ़ा, और इस असह्य निस्तब्धता से सीधा किलबर्न की ओर भागा। मध्य रात्रि के पर्याप्त काल पश्चात् मैं इस रात्रि एवं निस्तब्धता से हैरो रोड स्थित गाड़ी वालों के स्थान में छिप सका। परन्तु सूर्योदय से पूर्व ही मेरा साहस लौट आया, और जब कि तारे अभी आकाश में टिमटिमा रहे थे, मैं पुनः एक बार रीजेन्टस पार्क की ओर लौट पड़ा। गलियों में मैं अपना मार्ग भूल गया, और एक एवेन्यू के नीचे की ओर मैंने सूर्योदय के अर्ध प्रकाश में प्रिमरोज़ पहाड़ी के मोड़ को देखा। चोटी पर, मद्धिम पड़ते तारों की ओर सिर उठाये, अन्य दोनों की ही भाँति सीधा एवं गति-हीन खड़ा हुआ एक तीसरा युद्ध-यंत्र था।

पागलपन के समान एक संकल्प मेरे मन में दृढ़ हो उठा। मैं अपने प्राण देकर उसका अन्त कर डालूँगा। और मैं स्वयं को आत्मघात करने के कष्ट से भी मुक्त कर लूँगा। निर्ममता के साथ मैं इस दैत्य की ओर बढ़ा, और तब, जैसे ही मैं समीप पहुँचा और प्रकाश फैलने लगा, मैंने देखा कि काली चिड़ियों का एक झुण्ड हुड के चारों ओर उड़ रहा और चक्कर काट रहा है। उस दृश्य पर मेरे हृदय ने मुझे एक उछाल दी और मैं सड़क के सहारे दौड़ने लगा।

उस लाल बेल से, जो सेन्ट एडमन्डस् टेरेस वाले जल को पूर्णतः सोख रही थी, मैं शीघ्रतापूर्वक आगे की ओर बढ़ा (छाती तक ऊँची वाटर वर्क्स से एलबर्ट रोड की ओर बहने वाली एक धारा से निकला)

ग्रौर सूर्योदय से पूर्व ही घास पर आ पहुँचा। पहाड़ी की चोटी के समीप मिट्टी के अनेक ढेर थे जो एक ऊँचा कोट-सा बनाये हुए थे—यह अन्तिम एवं विशालतम स्थान था जो मंगल-निवासियों ने अपने विश्राम के निमित्त बनाया था—और इन ढेरों के पीछे से ऊपर आकाश की ओर धूम्र की एक क्षीण धारा उठ रही थी। क्षितिज की ग्रोर एक उत्सुक कुत्ता ऊपर की ग्रोर उठा और अन्तंधान हो गया। वह विचार जो मेरे मस्तिष्क में चमका था वास्तविक हो उठा, विश्वसनीय हो उठा। मैं किसी भी प्रकार के भय की अनुभूति नहीं कर रहा था, कम्पायमान होते मेरे मन में केवल एक पाशविक उल्लास था, जिस समय कि मैं पहाड़ी की चोटी की ओर उस गति-हीन दैत्य की ग्रोर दौड़ा। हुड में से भूरे रंग के लम्बे एवं क्षीण मांस के चीथड़े लटक रहे थे जिसपर भूख से व्याकुल चिड़िया प्रहार कर रहीं और चीड़-फाड़ कर रही थीं।

दूसरे ही क्षण मैं मिट्टी के उस प्राचीर पर चढ़ चुका था ग्रौर उसकी चोटी पर खड़ा था, ग्रौर वह कोट मेरे नीचे था। वह एक लम्बा चौड़ा भूमि-भाग था, जिसमें स्थान-स्थान पर विशाल यंत्र रखे हुए थे, सामानों के ऊँचे-ऊँचे ढेर ग्रौर विलक्षण प्रकार के छिपने के लिये बनाये गये स्थान। ग्रौर इसके चारों ग्रोर कुछ उल्टे हुए युद्ध-यंत्रों में, कुछ ग्रब कठोर-सी दीख पड़ने वाली हैन्डलिंग मशीनों में, कुछ एक पंक्ति में जकड़े हुए एवं गति-हीन पड़े थे मंगल के निवासी—निष्प्राण ! सड़ांध एवं रोगों का प्रजनन करने वाले जीवाणुग्रों द्वारा नष्ट किये गये जिनसे रक्षा कर पाने योग्य व्यवस्था उनकी शरीर-रचना में नहीं थी—नष्ट कर दिये गये, जिस प्रकार की लाल बेल नष्ट कर दी गयी ; जब कि मानव के समस्त यंत्र ऐसा न कर सके, वह नष्ट कर दिये गये उन निम्नतम जीवों के द्वारा जिन्हें ईश्वर ने ग्रपनी बुद्धि से इस पृथ्वी पर जन्म दे रखा था।

क्योंकि यह घटना इस प्रकार घटित हुई, जैसे कि वास्तव में, मैंने एवं अन्य ग्रनेक लोगों ने इसका पूर्व ज्ञान प्राप्त कर लिया होता यदि भय

तथा विनाश ने हमारे मस्तिष्क को अन्धा न कर डाला होता। रोगों के इन जीवाणुओं ने सृष्टि के आदि काल से मानवता से कर वसूल किया है—मानव से भी पूर्व हमारे पूर्वजों से उस समय से कर वसूल किया है जब से जीवन का क्रम यहाँ प्रारम्भ हुआ। परन्तु हमारी जाति में रहे इस प्राकृतिक संकलन के कारण हमने निरोध-शक्ति विकसित कर ली है; हम किसी भी प्रकार के जीवाणुओं के समक्ष बिना संघर्ष किये समर्पण नहीं करते हैं, और उनमें से अनेकों के निकट—वह जो निर्जीव पदार्थ में सडांध उत्पन्न करते हैं, उदाहरण के लिये हमारे सजीव शरीर, आक्रमण किये जाने से मुक्त हैं। परन्तु मंगल-लोक में रोग-जनक जीवाणु विद्यमान नहीं हैं, और यह आक्रमणकारी सांधे वहीं से आये थे, आते ही उन्होंने भोजन किया और पानी पिया, हमारे मित्र सूक्ष्म जीवाणु उनके विनाश का काम करने लगे। उस समय जब मैं उन्हें देख रहा था, वह फिर कभी भी न निकल पाने योग्य विनाश के चंगुल में फँसे हुए थे, वह मर रहे थे, धीरे-धीरे सड़ रहे थे, उस समय भी जब वह इधर से उधर आ-जा रहे थे। ऐसा होना अवश्यम्भावी था। दस अरब मृत्युओं का कर चुकाकर मानव पृथ्वी पर निवास करने का जन्माधिकार खरीद चुका है, और समस्त आगन्तुकों के विरुद्ध वह उसका है, और वह उसीका रहा होता यदि मंगल-निवासी दस गुना और अधिक शक्ति-शाली होते जितना कि वह वास्तव में थे। कारण कि मानव न व्यर्थ जीवित ही रहते हैं और न उनका अन्त ही व्यर्थ होता है।

वह इधर-उधर बिखरे पड़े थे, कुल मिलाकर लगभग पचास उस खाड़ी में पड़े थे जो उन्होंने बनायी थी; एक ऐसी मृत्यु से अन्क्रान्त जो निश्चित रूप में उनके निकट उतनी ही अचिन्त्य रही होगी जितनी कोई भी अन्य मृत्यु हो सकती है। उस समय मेरे निकट भी यह मृत्यु अचिंत्य ही-सी रही। यह सब जो मैं जान सका केवल इतना ही था कि यह जीव जो जीवित थे और मानव के निकट इतने भय-प्रद थे, अब निष्प्राण थे। एक क्षण के लिये मुझे सोचना पड़ा कि 'सेनाचेरिब' वाला विनाश

दोहराया गया हो, जैसे ईश्वर ने पश्चात्ताप किया हो, जैसे मृत्यु के दूत ने उन्हें रात्रि में नष्ट कर डाला हो।

गड्ढे में झाँकता मैं खड़ा रहा, और मेरा हृदय गौरव-शील रूप में प्रकाशित हो उठा, ठीक उसी प्रकार जैसे कि नवोदित सूर्य मेरे चारों ओर वाले संसार को अपनी किरणों के स्पर्श से प्रकाशित कर रहा था। वह गड्ढा इस समय भी अन्धकार से घिरा था; विशाल इंजिन, जो अपनी शक्ति एवं सरंचरण में इतने विशाल एवं आश्चर्यजनक थे, जो अपनी कुटिल आकृतियों के कारण लौकिक वस्तुओं से इतने विभिन्न थे, विलक्षण, अस्पष्ट एवं अपरिचित रूप में अन्धकार के आवरण से प्रकाश में आते दीख पड़े। कुत्तों का एक समूह, जिनका कोलाहल मैं सुन रहा था, मुझसे इतने नीचे अन्धकार में पड़े उन शरीरों के निमित्त परस्पर झगड़ रहा था। गड्ढे के उस पार उसके ऊपरी भाग पर फैला हुआ, विशाल एवं विलक्षण वह उड़ने वाला यंत्र था जिसके द्वारा वह हमारी भारी जल-वायु में प्रयोग करते रहे थे जब कि विनाश एवं मृत्यु ने उस पर अधिकार कर लिया। मृत्यु एक भी दिन पूर्व नहीं आयी थी। अपने ऊपर की ओर काँव-काँव की ध्वनि सुनकर मैंने उस विशाल युद्ध-यंत्र की ओर देखा जो अब कभी भी युद्ध न कर सकेगा, और मांस के उन टुकड़ों की ओर जो प्रिमरोज़ पहाड़ी की चोटी पर उल्टी पड़ी सीटों से चू-चूकर नीचे गिर रहे थे।

पीछे मुड़कर मैंने पहाड़ी से नीचे उस ओर को झाँका जहाँ, अब चिड़ियों से ढँके, वह दोनों मंगल-अस्त्र थे जिन्हें मैंने कल रात्रि को देखा था, जब मृत्यु उन पर अधिकार कर चुकी थी। उनमें से एक मर चुका था, यद्यपि वह अपने साथी को सहायता के लिये पुकारता रहा, शायद मरने वालों में यह अन्तिम था, और उसकी वह ध्वनि निरन्तर उस समय तक पुकारती रही जब तक कि वह पूर्णतः नष्ट न हो गयी। वह अब भी चमचमा रहे थे, चमचमाती धातु की अहानिकारक तिपाईयों के समान ऊँचाइयाँ, ऊपर की ओर उठते हुए सूर्य के प्रकाश में······

गड्ढे के चारों ओर, और जैसे कि वह किसी चमत्कार द्वारा अनन्त विनाश से बचा ली गयी हो, नगरों की महान जननी खड़ी थी। वह, जिन्होंने लन्दन को केवल धूम्र-पिंडों के मलिन वस्त्रों में सिमटे देखा है, उन मकानों की प्रशान्त निर्जनता जनित सौन्दर्य एवं उसके नग्न प्रत्यक्ष रूप की कल्पना कठिनता से कर सकते हैं।

पूर्व की ओर, एलबर्ट टैरेस के काले पड़े खण्डहरों तथा चर्च के ध्वस्त शिखर के ऊपर, निर्मल आकाश में सूर्य चमचमा रहा था, और कहीं-कहीं दूर-दूर तक निर्जन पड़ी छतों का कोई झरोखा ऊपर के प्रकाश को प्रविष्ट करता नितान्त श्वेत प्रकाश से चमचमा उठता। सूर्य की किरणें चाक फार्म स्टेशन के समीपवर्ती शराब के उन गोल गोदामों का भी स्पर्श कर रही थीं, और बड़े-बड़े रेलवे यार्ड, जो किसी समय काली पटरियों के कारण दूर से अलग दीख पड़ते थे, इस समय पन्द्रह दिन तक प्रयोग में न आने के कारण शीघ्र फलस्वरूप लाल पड़ी हुई थीं, जिसमें सौदर्य का कोई रहस्य छिपा पड़ा-सा प्रतीत होता था।

उत्तर की ओर किलबर्न तथा हैम्पस्टेड नगर थे, नीले तथा मकानों से खचाखच भरे हुए; पूर्व की ओर वाला महान नगर धुँधला पड़ा था, और दक्षिण में मंगल-निवासियों से परे रीजेन्टस् तथा लैन्गहम होटल, एलबर्ट हाल का गुम्बद, इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट तथा ब्राम्पटन रोड की विशाल इमारतें सूर्य के प्रकाश में स्पष्ट परन्तु छोटी दीख पड़ रही थीं और उनसे परे धुँधले रूप में दीख पड़ते वैस्टमिन्स्टर के टेढ़े-मेढ़े खण्डहर। उनसे बहुत दूर तथा नीली दीखने वाली सरे की पहाड़ियाँ थीं, और क्रिस्टल पैलेस की दोनों मीनारें चाँदी की घड़ियों की भाँति चमचमा रही थीं। सेन्ट पाल गिर्जे का गुम्बद सूर्योदय से परे अन्धकार में डूबा हुआ था तथा मैंने पहिली बार देखा, उसके पश्चिमी भाग में रहे एक बड़े छेद के कारण ध्वस्त खड़ा हुआ था।

और जैसे ही मैंने शांत तथा परित्यक्त पड़े मकानों और कारखानों और गिर्जों के इस विशाल प्रसार को देखा, और जैसे ही मैंने उन प्रचुर

आशाओं तथा प्रयत्नों के सम्बन्ध में विचार किया, उन असंख्य जीवनों के सम्बन्ध में, जिन्हें मनुष्य की बनायी इन चट्टानों को बनाने में प्राणोत्सर्ग करना पडा तथा उस शीघ्रगामी एवं निर्मम विनाश के, जो उन पर मंडरा रहा था, और जब मैंने अनुभव किया कि वह काली छाया पीछे हटायी जा चुकी है, और यह कि मनुष्य अभी भी इन गलियों में निवास कर सकते हैं और मेरी यह प्रिय एवं विशाल नगरी पुन: एक बार सजीव एवं सशक्त हो उठेगी, मैंने भावना की एक ऐसी लहर की अनुभूति की जो अश्रुपात से मिलती-जुलती-सी थी।

पीड़ा समाप्त हो चुकी थी। हो सकता है कि उस दिन से ही घाव भरना प्रारम्भ हो जाय। देश भर में छिन्न-भिन्न मानव जो जीवित रह सके हैं—पथ-प्रदर्शक-हीन, कानून तोड़ने वाले तथा ओज-हीन, बिना ग्वाले के बिखरी हुई भेड़ों की भाँति—वह सहस्रों जो समुद्री मार्ग से पलायन कर गये हैं, लौटना प्रारम्भ कर देंगे; जीवन की नाड़ी प्रबल होते-होते पुन: इन गलियों में धड़धड़ाने लगेगी और जन-शून्य मुहल्लों में जीवन उडेंलने लगेगी। जितना भी विनाश हो चुका, अब विनाश का हाथ रुक चुका था। सभी धूमिल पड़े खण्डहर, मकानों के काले पड़े ढाँचे जो पहाड़ी की धूप में चमकती घास को उदासीनतापूर्ण टकटकी के साथ घूर रहे हैं शीघ्र ही उद्धारकर्त्ताओं के हथौड़ों तथा कन्नियों की खनखनाहट से गूँज उठेंगे। इस विचार के आते ही मैंने आकाश की ओर अपने हाथ उठाये और ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। एक वर्ष में, मैं विचार करने लगा—एक वर्ष में......

और तब एक प्रबल संघात के साथ मुझे स्वयं का विचार आया, अपनी पत्नी का विचार, जीवित रहने की चिरंतन आशा और मृदुल उपयोगिता जो सदैव-सदैव के लिये समाप्त हो चुकी थी।

२६

ध्वंसावशेष

और अब मेरी कहानी की विलक्षणतम घटना आती है। और तो भी, सम्भवतः वह पूर्णतः विलक्षण भी नहीं है। मुझे प्रिमरोज़ पहाड़ी पर खड़े होकर रोने तक ईश्वर की प्रार्थना करने से पूर्व की समस्त बातों की स्पष्ट, उदासीनतापूर्ण एवं सजीव स्मृति है। और उसके पश्चात् मेरी स्मरण-शक्ति काम नहीं करती········।

आगामी तीन दिनों के संबंध में मुझे कुछ भी याद नहीं है। उस समय से मुझे मालूम पड़ा कि मेरे मंगल-निवासियों के विनाश की सूचना प्राप्त करने वाले सर्व प्रथम मानव होने के स्थान पर, मुझ जैसे कई घूमने वाले पहिली रात्रि को ही इस तथ्य को जान चुके थे। एक मनुष्य, जो जानने वाला प्रथम व्यक्ति था, सेन्ट मार्टिन्स ली ग्रेण्ड चला गया था, और जिस समय कि मैं उस गाड़ी वाले की झोंपड़ी में विश्राम कर रहा था, उसने पेरिस तार भेजने की व्यवस्था कर ली थी। वहाँ से उल्लास से परिपूर्ण यह समाचार संसार भर में फैल चुका था; सहस्रों नगर, जो प्रेतवत् छाये उस भय के कारण जीवन-शून्य हो चुके थे सहसा उन्मत्त रूप से दैदीप्यमान हो उठे; उन्होंने इसके संबंध में डबलिन, एडिनबरा, मानचेस्टर, बरमिन्घम आदि स्थानों पर उस समय जाना जिस समय मैं उस गड्ढे के किनारे खड़ा था। प्रसन्नता के अश्रुओं से परिपूर्ण नेत्रों वाले मानव, जैसा कि मैंने सुना है, एक दूसरे को पुकारते तथा परस्पर हाथ मिलाने के लिये अपने हाथ के कामों को रोकते तथा पुनः चिल्लाते

हमारे इतने अधिक समीप थे जितना समीप कि 'क्यू' था, लंदन आ पाने के निमित्त रेलगाड़ियों पर चढ़ रहे थे; गिर्जों की घण्टियों ने भी, जो पन्द्रह दिन से शान्त थीं, इस समाचार को जान लिया और वह ऐसे प्रबल रूप में घनघनाने लगीं कि समस्त इंगलैंड उनसे गूंजने लगा। साइकिलों पर सवार मनुष्य, कृश मुखाकृति वाले, बिखरे वस्त्रों वाले प्रत्येक गाँव वाली गली में इस आशातीत मुक्ति के विषय में चिल्लाते, मलिन एवं घूरती नैराश्य की उन मूर्तियों के रूप में चिल्लाते झुलसते फिर रहे थे। और भोजन के संबंध में! नहर के पार, आइरिश सागर के पार, अटलांटिक के पार से अनाज, रोटी और मांस हमारी सहायतार्थ आ रहा था। उन दिनों संसार भर के जहाज लन्दन की ओर आते दीख पड़ते थे। परन्तु इस सबकी मुझे कोई स्मृति नहीं है। मैं इधर-उधर भटक रहा था—विक्षिप्त मनुष्य। मैंने स्वयं को कुछ दयावान व्यक्तियों के बीच मे पाया जिन्होंने मुझे तीसरे दिन सेन्ट जान वुड में घूमते, रोते एवं चिल्लाते हुए पाया था। उन्होंने मुझे बताया है कि उस समय से मैं कोई अर्थ-हीन क्षुद्र गीत 'अन्तिम जीवित मानव!' के सम्बन्ध में गा रहा था। व्यथित जैसे कि वह स्वयं अपनी कठिनाइयों के कारण थे, इन व्यक्तियों ने, जिनके नाम, यद्यपि मुझे उनके प्रति कृतज्ञता करने की प्रबल इच्छा है, मैं यहाँ नहीं दे पाऊँगा, स्वयं को मेरे भार से बोझिल किया, मुझे शरण दी एवं स्वयं से भी अधिक मेरी रक्षा की। प्रत्यक्ष रूप में वह मूर्छा के दिनों में मेरी कहानी का कुछ अंश सुन चुके थे।

नितान्त मृदुता के साथ, जब मेरा मस्तिष्क पुनः आश्वस्त हो गया, उन्होंने मुझे लैंदरहैड के अन्त के सम्बन्ध में वह सब बताया जो वह सुन चुके थे। मेरे बन्दी होने के दो दिन बाद ही वह अपने समस्त प्राणियों सहित एक मंगल-अस्त्र द्वारा समूल नष्ट कर डाला गया था। उसने उसे स्थिति से मिटा डाला था; जैसा कि प्रतीत होता था, बिना किसी पूर्व सूचना के, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि कोई भी बालक शक्ति-जनित चंचलता के कारण चींटियों के छोड़े मिट्टी के किसी ढेर को नष्ट कर

डाले।

मैं एक एकाकी व्यक्ति था, और वह सब मुझपर अत्यन्त दयालु थे। अपनी मानसिक स्थिति से उद्धार पाने के चार दिन बाद तक मैं उनके साथ रहा। इस समस्त समय मैं अपने अन्तर में एक अस्थिर, एक प्रबल होती एक बार उस जीवन के अवशेष को देखने की इच्छा की अनुभूति करता रहा। अपने दुर्भाग्य पर आनन्द मना पाने की यह एक नैराश्यपूर्ण इच्छा थी। उन्होंने मुझे इस विचार से हटाने का प्रयत्न किया। मुझे इस अस्वस्थ प्रवृत्ति से हटाने के लिये उन्होंने वह सभी प्रयत्न किये जो वह कर सकते थे। परंतु अन्त में मैं अपनी प्रवृत्ति को रोक पाने में असमर्थ हो उठा, और उनको लौट आने का निश्छल आश्वासन देकर और चार दिन के इन मित्रों से, जैसा कि मैं स्वीकार करूँगा, साश्रु विदा लेने के पश्चात् मैं पुन: उन गलियों में निकल पड़ा जो कुछ काल पूर्व ही इतनी अंधकारमय, इतनी विलक्षण एवं इतनी जन-शून्य थीं।

वह लौटकर आने वाले व्यक्तियों से परिपूर्ण थी, और स्थान-स्थान पर मैंने कुछ दुकानें भी खुली पायीं, और मैंने पीने वाले पानी के फुहारे को पानी बहाते पाया।

मुझे स्मरण है कि दिन कैसे व्यंगपूर्ण रूप में चमक रहा था जब कि मैं अपने वोकिंग वाले छोटे-से मकान की ओर उदासीनतापूर्ण यात्रा कर रहा था, सड़कें कितनी कार्य-व्यस्त थीं तथा मेरे चारों ओर गति-शील जीवन कितना सजीव था : प्रत्येक स्थान पर अनेकों व्यक्ति निकले हुए थे, जो सहस्रों कार्यों में व्यस्त थे, और यह अविश्वसनीय-सा प्रतीत होता था कि जन-संख्या का कोई बहुतांश नष्ट हो चुका होगा। परन्तु तब मैंने ध्यान दिया कि उन लोगों की त्वचा कितनी पीली पड़ी हुई थी जिनसे मेरी भेंट होती थी; मनुष्यों के बाल कितने रुक्ष थे, उनके नेत्र कितने विशाल एवं चमकीले थे, और प्रत्येक व्यक्ति इस समय भी चिथड़े पहिने हुए था। समस्त चेहरे दो में से एक भाव व्यक्त करते थे—

उछाल मारता उल्लास एवं शक्ति; अथवा एक उदासीनतापूर्ण संकल्प। केवल चेहरों की इस भावाभिव्यक्ति को छोड़कर समस्त लंदन भिखमंगों का नगर प्रतीत होता था। अधिकारीगण बिना किसी भेद-भाव के फ्राँस सरकार द्वारा हमारी सहायतार्थ भेजे गये भोजन को बाँट रहे थे। कुछ घोड़ों की पसलियाँ भद्दे रूप से चमक रही थीं। श्वेत बैज लगाये अस्त-व्यस्त स्पेशल कान्सटेबिल्स प्रत्येक गली के कोनों पर खड़े थे। वैलिंग्टन पहुँचने से पूर्व मैंने मंगल-निवासियों द्वारा उत्पन्न हानि बहुत कम देखी, और वहाँ मैंने लाल बेल को वाटरलू ब्रिज के खम्भों पर चढ़ी हुई पाया।

पुल के किनारे पर भी, मैंने उस विलक्षण काल की सामान्य विषमताओं में से एक को पाया। लाल बेल के एक झुरमुट से फड़फड़ाती कागज की एक परत, जो एक लकड़ी से जड़ी हुई थी जो उसे उसके स्थान पर रखे थी—वह पुनः प्रकाशन प्राप्त करने वाले समाचार-पत्र—'डेली मेल' का घोषणा-पत्र था। मैंने एक काले पड़े शिलिंग को देकर, जिसे मैंने अपनी जेब में पाया, एक प्रति खरीदी। उसका अधिकांश भाग खाला था, परन्तु उस एकाकी कम्पोजीटर ने, जिसने उसे तैयार किया, अपने मनोविनोद के लिये पत्र की पीठ पर विज्ञापनों की एक अद्भुत सूची दी थी। जो कुछ भी उसने छापा भावना से सम्बन्ध रखता था, समाचारों का संकलन अभी भी अपनी पूर्व व्यवस्था को प्राप्त नहीं कर पाया था। केवल यह कि मंगल-अस्त्रों के एक सप्ताह ही के परीक्षण से आश्चर्यजनक परिणाम निकले हैं, मैं नयी कोई भी बात न जान सका। अन्य बातों के साथ-साथ उस लेख ने मुझे एक विश्वास दिलाया जिसे मैं उस समय न मान सका: यह कि 'उड़ने का रहस्य' जाना जा चुका है। वाटर लू पर मैंने उन मुक्त गाड़ियों को देखा जो लोगों को उनके घर ले जा रही थीं। पहली भीड़-भाड़ समाप्त हो चुकी थी। गाड़ी मे थोड़े ही व्यक्ति थे, और मैं आकस्मिक वार्तालाप करने की मनःस्थिति में नहीं था। मैंने एक खाली डिब्बा खोज निकाला, और अपने हाथ मोड़े उदास भाव

से बैठे डिब्बे से बाहर फैले सूर्य-प्रकाश में चमकते विनाश को देखता रहा। और रेलवे स्टेशन की सीमा से परे गाड़ी ने नयी लाइनों पर झटका खाया, और लाइन के दोनों ओर वाले मकान काले पड़े खण्डहरों का रूप धारण किये थे। चैंपहैम जंक्शन की ओर लन्दन का मुख दो दिनों तक पड़ने वाले ओलों तथा वर्षा के होते हुए भी उस काले धूम्र के कारण मलिन पड़ चुका था, और चैंपहैम स्टेशन पर लाइन पुनः नष्ट कर डाली गयी थी; वहाँ सैकड़ों काम से छूटे हुए क्लर्क तथा दूकानदार बारहमासी श्रमिकों के साथ काम कर रहे थे, और शीघ्रतापूर्वक दोबारा बिछाई गयी लाइन के ऊपर हमने झटका खाया।

यहाँ से लाइन के सहारे वाला ग्रामीण दृश्य उदासीनतापूर्ण एवं अपरिचित-सा था; विशेषत: विम्बिलडन आधा नष्ट हो चुका था। अपने देवदार के जंगल के कारण वाल्टन लाइन के समस्त स्थान कम से कम क्षति-ग्रस्त प्रतीत होता था। वैण्डिल, मोल आदि प्रत्येक छोटी नदी लाल बेल के ढेर से परिपूर्ण लगती थी, जिसका रंग कसाई की दूकान पर रखे जाता मांस तथा मुरब्बा डाले हुए गोभी के रंग के बीच मे था। जो कुछ भी हो, सरे वाले देवदार के जंगल लाल बेल की उन गाँठों के कारण अत्यन्त सूखे हुए थे। विम्बिलडन से परे लाइन से दीख पड़ने वाले कुछ फलोद्यानों में छठे सिलण्डर के समीपवर्ती मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे ढेर थे। उनके समीप अनेक व्यक्ति खड़े थे, और उनके मध्य कुछ सैनिक कार्य-व्यस्त थे। उनके ऊपर यूनियन जैक फहरा रहा था, जो प्रातःकालीन वायु में प्रसन्नतापूर्वक लहरा रहा था। फलोद्यान प्रत्येक स्थान पर लाल बेल के कारण गुलाबी पड़ा हुआ था; दूर तक फैला हुआ नील वर्ण का यह प्रदेश जो स्थान-स्थान पर बैंगनी रंग की छायाओं से फटा हुआ था और नेत्रों के निकट पीड़ा-कारक था। असीम विश्रान्ति के साथ किसी भी देखने वाले की दृष्टि झुलसे हुए भूरे रंगों तक उदासीनतापूर्ण लाल रंगों को पार करती पूर्ववर्ती पहाड़ियों की नील-हरित मृदुता की ओर मुड़ जाती थी।

वोकिंग स्टेशन की लन्दन की ओर वाली लाइन इस समय भी ठीक की जा रही थी, अतः मैं बाईफ्लीट स्टेशन पर उतरा और मेबरी वाली सड़क पर चल पड़ा; उस स्थान से होकर निकला जहाँ मैंने तथा उस सैनिक ने अश्वारोही सैनिक से बात की थी, और उस स्थान को पार करता आगे बढ़ गया जहाँ तूफान में मुझे वह मंगल-अस्त्र दिखाई पड़ा था। यहाँ, उत्सुकता से प्रेरित होकर, लाल बेल की उन गाँठों के एक जाल में, मैं ऐंठी पड़ी तथा टूटी हुई उस कुत्ता-गाड़ी को देखने के निमित्त मुड़ पड़ा, जिसके समीप उस घोड़े की सफेद पड़ी हड्डियाँ बिखरी और कुतरी पड़ी थीं। कुछ काल तक इन अवशेषों पर चिन्तन करता मैं खड़ा······

तब मैं देवदार-वन की ओर मुड़ा जो स्थान-स्थान पर गर्दन तक ऊँची लाल बेल से ढका हुआ था, और यह देखकर कि धब्बेदार कुत्ते का स्वामी अपनी समाधि पा चुका है, मैं कालिज आर्म्स होता हुआ घर आ पहुँचा। और जैसे ही मैं वहाँ से निकला, एक खुले हुए झोंपड़ी के द्वार पर खड़े एक व्यक्ति ने नाम लेकर मेरा अभिवादन किया।

शीघ्रतापूर्वक चमकने वाली एक आशा से जो तुरन्त ही विलीन हो गयी, मैंने अपने घर पर दृष्टि डाली। द्वार ढकेला गया था; वह खुला पड़ा था, और जैसे ही मैं आगे बढ़ा, मैंने पाया कि वह धीरे-धीरे खुल रहा है।

वह पुनः बन्द हो गया। मेरे अध्ययन-कक्ष के पर्दे उस खिड़की से बाहर की ओर फड़फड़ा रहे थे जिससे मैंने तथा उस सैनिक ने सूर्योदय को देखा था। उस समय से ही किसीने भी इस खिड़की को बन्द नहीं किया था। कुचली हुई झाड़ियाँ भी ठीक वैसी ही थीं जैसी कि मैं उन्हें लगभग चार सप्ताह पूर्व छोड़ गया था। लड़खड़ाता हुआ मैं हाल में पहुँचा, और घर शून्यता से परिव्याप्त था। जीने का कालीन सिमटा हुआ उस स्थान पर बिगड़ा हुआ था जहाँ मैं तूफान से भीगा सन्ताप की उस रात्रि में लेट रहा था। हमारे कीचड़ से सने पैरों के चिह्न इस समय भी ऊपर

जाते अंकित थे।

उनका पीछा करता मैं अपने अध्ययन-कक्ष तक जा पहुँचा, और इस समय भी मैंने अपनी लिखने वाली मेज पर चन्द्रकान्त मणि वाले पेपर-वेट से दबे उस लेख के कागज को पाया जो मैं सिलण्डर खुलने वाले दिन तीसरे पहर छोड़ गया था। कुछ काल तक मैं अपने परित्यक्त तर्कों पर विचार करता खड़ा रहा। वह नैतिक विचारों के सभ्यता के सम्भावित विकास पर लिखा गया एक लेख था; और अन्तिम वाक्य एक भविष्य-वाणी का प्रारम्भ था, 'लगभग दो शताब्दि में', मैंने लिखा था, 'हम आशा कर सकते हैं—' वाक्य सहसा टूट गया था। उस प्रातः अपने मस्तिष्क को एकाग्र कर पाने की अपनी असमर्थता की मैंने स्मृति की, जिसे कठिनता से एक मास ही हुआ होगा, और मुझे याद आया कि किस प्रकार मैं इससे पीछा छुड़ाकर अखबार वाले लड़के से अपना 'डेली क्रानिकल' लेने चल पड़ा था। मैंने स्मरण किया, किस प्रकार मैं उद्यान के द्वार की ओर जा रहा था जब कि वह आ पहुँचा, और किस प्रकार मैंने 'मंगल से आये मनुष्यों' वाली विलक्षण कहानी सुनी थी।

मैं नीचे उतर आया और भोजन के कमरे में गया। वह मांस तथा रोटी दोनों वही थी, जो पर्याप्त रूप से सड़ चुकी थी, तथा उल्टी पड़ी बियर की एक बोतल, ठीक उसी प्रकार पड़ी हुई थी जिस प्रकार कि मैं तथा वह सैनिक उसे छोड़ गये थे। मेरा मकान पूर्णतः निर्जन था। मैंने उस धूमिल आशा की मूर्खता को स्पष्टतः देखा जिसे मैंने इतने काल से अपने अन्तर में पोषित कर रखा था। और तब एक आश्चर्यजनक बात हुई। 'इससे कोई लाभ नहीं है' एक स्वर गूँज उठा। 'मकान परित्यक्त पड़ा है। पिछले दस दिनों से कोई यहाँ नहीं आया है। स्वयं को पीड़ित करने के लिये यहाँ मत रुको। तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी नही बच सका है।'

मैं स्तब्ध रह गया। क्या मैंने स्वयं ही अपने विचार को स्वर दिया है? मैं मुड़ा और मेरे पीछे वाली फ्रेंच खिड़की खुली हुई थी। मैंने उस

ओर को एक पैर बढ़ाया, और बाहर झाँकता खड़ा रहा।

और वहाँ, आश्चर्य-चकित एवं भीत, ठीक उसी प्रकार जैसे कि म आश्चर्य-चकित एवं भीत खड़ा था, मेरा चचेरा भाई और मेरी पत्नी थी—मेरी पत्नी जो सफेद पड़ी थी और जिसकी आँखों में कोई आँसू नहीं था। वह मन्द चीत्कार कर उठी।

"मैं आ गयी हूँ", उसने कहा, "मै जानती थी, जानती थी······।"

उसने अपने गले पर अपना हाथ रख लिया—वह लड़खड़ाने लगी। मैं एक पग आगे बढ़ा और उसे अपनी भुजाओं में भर लिया।

२७

उपसंहार

मुझे कहते हुए दुख नहीं होता है कि मैं अब अपनी कहानी का अन्त करने जा रहा हूँ, मै अनेक तर्क किये जाने योग्य एवं इस समय तक अनिश्चित प्रश्नों के सम्बन्ध में अपना निजी मत कितनी न्यून मात्रा में दे सका हूँ। एक विषय-विशेष पर मै निश्चित रूप से आलोचना करूँगा। मेरा अधिकृत विषय काल्पनिक दर्शन-शास्त्र है। तुलनात्मक शरीर-शास्त्र-सम्बन्धी मेरा ज्ञान तो कुछ पुस्तकों तक ही सीमित है, परन्तु मुझे लगता है कि मंगल-निवासियों की शीघ्रगामी मृत्यु के संबंध में दिया गया कार्वर का प्रस्ताव इतनी सम्भवनीय है कि उसे प्रमाणित ही स्वीकार किया जाना चाहिए। मैंने उसी पर अपनी कथा को आधारित किया है।

जो कुछ भी हो, उन सभी मंगल-निवासियों के शरीरों में जिनकी

परीक्षा युद्ध के पश्चात् की गयी, केवल उन जीवाणुओं के जो लौकिक जाति के माने जाते हैं, अन्य जीवाणु प्राप्त नहीं हुए। उन्होंने अपने किसी भी मृत साथी को भूमि में नही गाड़ा, और निर्मम विनाश का वह दूषित कर्म जो उन्होंने किया, एक ओर शरीर की सड़ांध-सम्बन्धी ज्ञान में रही उनकी अज्ञानता की ओर भी संकेत करता है। परन्तु सम्भावित यद्यपि यह प्रतीत होता है, यह किसी प्रकार भी प्रमाणित तथ्य नहीं है।

और न उस काले धूम्र की समाप्ति के सम्बन्ध में ही कुछ जाना जा सका, जिसका प्रयोग मंगल-निवासी ऐसे विनाशकारी प्रभाव के साथ करते थे, और अग्नि-किरण को जन्म देने वाला वह यंत्र एक पहेली ही रह जाता है। एलिंग तथा साउथ केन्सिंग्टन की प्रयोग-शालाओं के भीषण विनाश ने विश्लेषण-कारियों को इस बाद की वस्तु की ओर अधिक खोज से विरक्त कर दिया। प्रकाश-किरणों पर आधारित इस काले धूम्र का विश्लेषण निर्विवाद रूप में किसी अज्ञान तत्व की ओर सकेत करता है जिसकी स्थिति नील वर्ण में रही तीन चमचमाती रेखाओं के समूह से जान पड़ती है और यह सम्भव हो सकता है कि वह आर्गन से मिलकर किसी ऐसे मिश्रण को जन्म देता है जो रक्त में रहे किसी सम्मिश्रण के कारण मृत्युजनक प्रभाव डालता है। परन्तु इस प्रकार के अप्रमाणित निष्कर्ष सामान्य पाठक के निकट, जिसके निमित्त इस कहानी की रचना हुई है, शायद ही रुचिकर सिद्ध हों। शैपर्टन के विनाश के पश्चात् टेम्स से इधर-उधर छितराने वाले उस भाग का उस समय कोई परीक्षण नहीं किया गया, और इस समय यह भाग स्थिति में ही नही है।

मगल-निवासियों की शारीरिक संरचना-सबंधी परीक्षणों के फल, जितना कि शिकार की खोज में फिरते कुत्तों ने हमारे लिये सम्भव छोड़ा है, में ऊपर दे ही चुका हूँ। परन्तु प्रत्येक पाठक नेच्यूरल हिस्ट्री म्युजियम में स्प्रिट में रखे उनके दीप्तिमान और लगभग सम्पूर्ण अस्थि-पंजर से परिचित हैं; और उससे परे शरीर-संरचना तथा उनके ढाँचे से

रही विशेष रुचि विज्ञान का विषय है।

अधिक महत्वपूर्ण एवं सार्वजनिक रुचि का प्रश्न मंगल-लोक से किसी अन्य आक्रमण की सम्भावना है। मैं नहीं समझता कि इस विषय पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। हमारे लोक की सीध में लौटने पर, कम से कम मैं उनके आक्रमण की पुनरावृत्ति की सम्भावना रखता हूँ। वस्तु स्थिति चाहे जो भी हो, हमें तत्पर रहना चाहिये। मुझे लगता है कि उस तोप की स्थिति का पता लगाना सम्भव होना चाहिये जिससे कि अस्त्र छोड़े जाते हैं; मंगल-लोक के इस भाग पर निरन्तर दृष्टि रखना और आगामी आक्रमण को समय से पूर्व जान लेना।

ऐसी अवस्था में उस सिलण्डर को बारूद अथवा तोपखाने द्वारा मंगल-निवासियों के बाहर निकल पाने योग्य ठण्डा होने से पूर्व ही नष्ट कर दिया जाना चाहिये। अथवा उन्हें तोपों द्वारा उस पेंच के खुलते ही नष्ट कर डालना चाहिये। मुझे प्रतीत होता है कि अपने प्रथम आश्चर्य में डाल देने वाले आक्रमण की असफलता से उन्होंने एक बड़ी सुविधा को खो डाला है। सम्भवत: वह स्वयं भी इस प्रश्न को इसी दृष्टिकोण से देखते होंगे।

यह माना जाने के लिये कि मंगल-निवासी शुक्र-लोक में उतर पाने में वास्तविक सफलता प्राप्त कर सके हैं, लैसिंग ने महत्वपूर्ण तर्क दिये हैं। अब से सात मास पूर्व मंगल और शुक्र सूर्य के साथ एक रेखा पर थे, अर्थात् मंगल शुक्र-लोक से एक देखने वाले के ठीक विपरीत था। इसके पश्चात् एक विलक्षण प्रकाशपूर्ण एवं लहरदार चिह्न उस ग्रह के अप्रकाशित एवं आन्तरिक भाग में दीख पड़ा, और इसके साथ ही मद्धिम एवं इसी प्रकार लहरदार आकार वाला एक गहरा काला चिह्न, मंगल-ग्रह के लिये गये फोटोग्राफ में अंकित हुआ। इन आकारों में रही समानता को पूर्णत: समझ पाने के निमित्त किसी भी व्यक्ति को इन चित्रों को देखने की आवश्यकता पड़ेगी।

जो कुछ भी हो, चाहे हम किसी दूसरे आक्रमण की आशा करें अथवा

न करें, मानव-जाति के भविष्य से संबंधित हमारे दृष्टिकोण इन घटनाओं से पूर्णतः संशोधित होने चाहियें। अब हम जान चुके हैं कि हम इस नक्षत्र को सुरक्षित एवं मानव-आवास के निमित्त आशंका-रहित नहीं मान सकते, और हम किसी भी प्रकार के अज्ञात सुख अथवा दुख को जो शून्य से हमारी ओर आ सकता है, समय से पूर्व नहीं जान सकते हैं। हो सकता है कि ब्रह्मांड की किसी विशालतर संरचना पर आधारित मंगल-लोक का यह आक्रमण मानव-जाति को प्राप्त होने वाले किसी अन्ततः लब्ध-लाभ से शून्य न हो; इसने हमसे भविष्य के प्रति रहे हमारे निर्बाध विश्वास को छीन लिया है, जो विनाश का सर्व शक्तिशाली कारण है, वह दान जो वह मानव विज्ञान के निमित्त लाया अनेक हैं, और उसने अनेक मानव-जाति में रही सार्वजनिक कल्याण की धारणा को विकसित करने में पर्याप्त अंशदान दिया है। हो सकता है कि शून्य की असीमता के परे मंगल-निवासी अपने इन अग्रगामियों के भाग्य का निरीक्षण करते रहे हों, अपना पाठ सीखते रहे हों, और यह भी कि वह शुक्र के अधिक रक्षाकर लोक में बस गये हों। हो सकता है कि ऐसा ही हो चुका हो, आगामी अनेक वर्षों तक मंगल-नक्षत्र के निरीक्षण होते रहेंगे, और अंगारों के समान आकाश से टूटने वाले तारे अपने पतन के साथ-साथ समस्त मानवों के निकट भुलाया न जा सकने वाला भय लाते रहेंगे।

मानव-जाति के दृष्टिकोण में इस घटना के कारण जो विस्तार हुआ है, कठिनतापूर्वक ही किसी अतिशयोक्ति का विषय हो सकता है। सिलण्डर के गिरने से पूर्व यह सामान्य धारणा थी, शून्य की समस्त परिधि में हमारे इस सूक्ष्म लोक के छोटे-से धरातल से ऊपर जीवन का कोई क्रम वर्तमान नहीं है। अब हम इससे आगे भी देखते हैं। यदि मंगल-निवासी शुक्र-लोक तक पहुँच सकते हैं, तो ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है कि यह मानवों के निकट कोई असम्भव बात है, और जब कि सूर्य का निरन्तर ठण्डा पड़ते जाना इस लोक को निवास न किये जाने

योग्य बना देगा, जैसा कि अन्त में उसे कर डालना चाहिये, हो सकता है कि जीवन का वह धागा जो यहाँ प्रारम्भ हुआ ऊपर की ओर उठ जाय और अपने समीपवर्ती लोक को अपने जाल में जकड़ ले। क्या हम विजयी होंगे ?

धूमिल परन्तु आश्चर्यकारक है वह चित्र जो मैंने अन्तर में सूर्य के समीपवर्ती जीवन के अंकुरित होने वाले इस स्थान से तारा-मंडल-संबंधी इस विशाल परिधि में मन्द गति से उसके विकसित होने को चित्रित किया है। परन्तु वह अभी दूर का स्वप्न है। और इसके विपरीत हो सकता है कि मंगल-निवासियों का विनाश अन्त को कुछ काल के लिये स्थगित करना ही रहा हो। उनके लिये, और हमारे लिये नहीं, भविष्य निर्दिष्ट किया गया है।

मुझे स्वीकार कर लेना चाहिये कि इस काल के भार एवं संकट मेरे मन में सन्देह एवं असुरक्षा की एक स्थायी भावना छोड़ गये हैं। लैम्प लाइट के सहारे में अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा लिखता होता हूँ, और सहसा ही मैं अपने नीचे फैली आनन्ददायक उस घाटी को लपटों से लपलपाती देखता हूँ, और अपने पीछे तथा चारों ओर वाले मकानों को निर्जन एवं जन्य-शून्य पाता हूँ। मैं बाहर बाईफ्लीट स्ट्रीट में जाता हूँ, और सवारियाँ मुझे छोड़ती निकल जाती हैं। एक गाड़ी में बैठा एक कसाई का लड़का, घोड़ा गाड़ी में भरे दर्शनार्थी, साइकिल पर सवार एक श्रमिक, स्कूल जाते बच्चे, और सहसा ही वह सब अस्पष्ट एवं धूमिल पड़ जाते हैं, और मैं पुन: सैनिक के साथ गर्म एवं प्रभावोत्पादक उस निस्तब्धता में शीघ्रतापूर्वक जाता दीख पड़ता हूँ। किसी-किसी रात्रि को में उस काले चूर्ण को शान्त गलियों पर गहन होता देखता हूँ, और ऐंठे हुए शवों को उसी परत में लिपटा पाता हूँ, कुत्तों द्वारा चिथड़े-चिथड़े किये हुए वह ऊपर उठने लगते हैं। वह कुछ अस्पष्ट-सा बड़बड़ाते हैं और भयानकतम होते जाते हैं, पीले पड़ते जाते हैं, कुरूप होते जाते हैं और अन्त में पागल कर डालने वाले विकृततम मानवाकार धारण कर लेते हैं,

और निर्जीव एवं सन्तप्त, रात्रि के अन्धकार में मैं जाग पड़ता हूँ।

मैं लन्दन जाता हूँ, और फ्लीट स्ट्रीट एवं स्ट्रैण्ड में कार्य-रत समूहों को देखता हूँ, और मुझे ऐसा भास होता है कि जैसे वह अतीत काल के प्रेतमात्र हैं जो इन सड़कों पर मँडराते फिर रहे हैं जिन्हें मैंने शान्त एवं श्रीहत् देखा था; इधर से उधर जाते, जीवन-हीन नगर में चलती-फिरती प्रेत-छायाएँ, रासायनिक क्रिया द्वारा संचालित किसी शरीर में होने वाली जीवन-क्रियाओं का उपहासपूर्ण अनुकरण मात्र और प्रिमरोज़ पहाड़ी पर खड़े होना भी विलक्षण लगता है, जैसा कि मैंने अन्तिम अध्याय लिखने से एक या दो दिन पूर्व किया, और धुएँ एवं कोहरे से आच्छन्न मकानों को धूमिल पड़ते तथा नीले होते समूह को देखना, जो अन्ततः अस्पष्ट-से दीख पड़ने वाले आकाश में विलीन हो जाते हैं, लोगों को फूलों-भरी पहाड़ी पर इधर-उधर फिरते देखना, इस समय तक पड़े मंगल-अस्त्र के चारों ओर घिरे भ्रमणार्थियों को देखना, खेलते हुए बालकों का कोलाहल सुनना, और उस समय की स्मृति करना जब कि मैंने इस चमचमाते एवं स्वच्छ रूप ठोस एवं शान्त, उस अन्तिम महान दिन के प्रातः काल देखा था......।

और सबसे अधिक विलक्षण अपनी पत्नी का हाथ पकड़ लेना है, और तब यह विचार करना है कि मैंने उसे और उसने मुझे मरे हुए व्यक्तियों में गिन रखा है।

प्र० सं०-२-५७ (३१)